

ब्रिन्टा

# क्रुव'अविवे'र्के'ना'न्यना'येव'

ञ्च'ळॅन्







## न्गार क्या

हेन-रेदे-र्नो श्रुरिः विवाय कवाय श्रुश्चिर ख्या ग्री स्वाप्येना 1	
श्चित्रश्यक्त्रीं सेस्रानश्चित्रस्य स्त्रीत्र स्वायक्तित्र स्वायक्षित्र स्वायक्षित्र स्वायक्षित्र स्वायक्षित्र	2
त्रुव्, र्या, श्वः अद्भः स्वः वर्त्ते म्	5
প্রব:রুমা'নসুম'মা	5
थॅव्राप्त्राविराशुराया	8
न्ग्रेन् अर्क्ष्याः हे अर्ड्न श्रीः न्दरः नर्ष्ट्रेः नः श्रुः खुष्या	0
मः अदुः चुः नशः देशः पदेः विषयः श्चेत् चुः छुतः श्चेतः । 3	8
भुनरागश्यायहैं व परि प्रो पर्ये व स्रुव पर्ये कें जा 4	8
न्मो नम्रेन् मी मूँ सामा पर्मे मा किंग	3
नश्चेत्राम्बर्गाप्य प्याप्तक्ति प्राप्ति श्वेष्ट्र या प्रम्य विष्	0
वेगाकेव गर्वे श्रुटियो श्रूबाय येव पदि कें याव या दर्शिय शुनर्गे प्या 6	2
ग्रम्ब्रा त्रम्प्र त्रेष्ठ त्रं व्य क्षेत्र क्	1
श्रुवासुरित्रं के से वार्यायात्र निर्वेषा स्ति हो वा स्ति।	0
भु:दार्ना वेतः कृषा	3

## न्गार क्या

रमयायहेग्राम्योरम्भे ग्राम्यम् ।	
वहिमाश हो ५ कि त भें न्या न हे त त्र शनमो माश सू ५ ५ ५ १	
नगदन्त्र्री गुःद्धयाद्याः सं तर्त्रो क्षेत्र शुः नर्गे दः या	
नगदन्त्र्रीक्त्रपुर्यान्य ।	
हेव'गशुअ'य'विश्व'गशिय'द्राद्रम्य'गव्य राजुः द्वंया	
वहिना हेत प्रवे खु हेत सेंग्र स्थाप्य प्राप्त मान्य मान्य ।	5
कें अः शुर्द्र सम्भाष्य सम्भाष्ट्र सम्य सम्भाष्ट्र सम्य	9
वहिमा हेत्र प्रते ख्रु त्याय विमा मी मा त्या या या यहत हो या पत्र र	
শ্র্মবাপ্নান্ত্রা 112	2
ची.र्ट.भू.य.चत्रा.की.रचत्रा.जत्रा.यद्यट.शू.चात्रा.ज.	
ম্বাশাব্ধান্ত ক্রিশা	3
জ্যক্রিক্টের্নান্ত্র্রের্নাম্থ্যন্ত্র্বান্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রান্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রান্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্ব্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্ব্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্রাম্থ্যন্ত্র্ব্রাম্প্রাম্থ্যন্ত্র্ব্রাম্প্রাম্থ্যন্ত্র্ব্রাম্পর্বাম্প্রাম্পর্বাম্প্রাম্পর্বাম	ົວ
न्गे 'यन्त्र'न् होत् ह्युं अर्थे 'यदिं स्तिं ह्युं न रहेया	7
हःगणगाः सःस्रमाः श्रेमाश्राके व्यसः महिंदा खुला	2

र्रे हे क्रियम् वर्षे अर्थाये क्रिक्य क्रियम् वर्षाय
হা:ৰ্ড্যা
न्गर-ध्रिग्रास्य्यायारी-व्रियासूर-व्रियानस्यानुः द्वा 147
মর্ক্রি'নশ্ব'
শ্রীবাবশ্বশ্বশ্ব
মর্ব্র্ব্র্ মার্ক্র্
নম্ব্যাধ্য ন্মর্ন্ ন্মর্মা
र्मलः हैं हे 'वहेग्रामः होर्'नहेम्'मदे स्थानह्या नक्षरः या शुम्रः ही 'वया खेम्'
ग्रयान्य न्य न्य विष्य अर्के ग्रास्त्री न्य के प्रति प्रति हो से व्याप्त विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय
क्ट्रें तसे दे चे ना निम्न कुला
বালন্ত্রাবাশ্যমর্থ্য 178
वर्रामानुसाम्यात्याक्षेरवर्गामानुस्स्यास्य म्या
हॅं 'र्ने 'हे ते 'हे त 'प्रजेप' प्रके 'प्रशु

दक्के।पासदेरमेसमाउदायायदानम्भागुःस्वाप्तमा	
<u> ব্রুশ্</u> ষ'দেইবা	. 186
हःसरीत्राम्यरःसूनःग्रेःक्षेंत्रभाग्वयःग्रुःमर्डःर्नेःमकुन्ग्रीः	
र्वार्वुर्नु उक्षणवार्रः शेषा ह्यार्वेत्।	. 219
व्याः द्वास्त्रेयः वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर	. 247
ळ'गशुस'ग्री'ळें'गा	. 257
चयोग्रथःयोर्हेरःयोर्हेरःद्धया	. 267
वर्'यदे'केर'सुर्'गोर्हर'कुषा	. 271
ग्रावि'यर्ग्या मिर्हर्स्या	. 273
वज्रुद्र निवि मिर्देर सम्बन्धि	. 275
ক্রমার্করমার্ক্রমার্বর্ব্রমার্ক্রমার্বর্ব্রমার্ক্রমার্ক্রমার্ক্রমার্বর্বর্বর্বর্বর্বর্বর্বর্বর্বর্বর্বর্বর	. 281
शुःकुःमवेःपर्हिनःसःपर्हिनःस्वा	
युःगहें र ग्री रेया ।	
শ্বম ক্রু শর্মি ব্রম্বা মী বর্ম বা	
अर्वे वर्षे वर्षे वर्षे न्या अर्थ वर्षे वर	

#### न्गामःळग

नम्दिश्चित्रायम्	318
वर्देव : धेव : वर्षे :	321
ग्निव संवे के न न न स्वा प्रति पर्ने न प्रति स्वी के मा	
महाकेत्रक्त्रां नवरकेषा मुद्दा मुश्रासद्दा मदे क्या शुर्या	328
নষ্ট্'ন'ন্তু'স্ক্'অ'দেব্লিদ'র্ম।	331
নষ্ট্ ন'নমুঝ'ন'ঠেবাঝ'নতদ্'ঝা	334
शु.पश्चित्रामानादुःश्च्रीत्यमानुमान्यानुमानुम्	336
यश्चित्रः सर्केत् १ वर्षे द्वाया ॥	357
न्नु-स्र-धे-द्रम् द्रीति या शेर-भ्रो स्रा	359
ञ्च स्त्रित्याको सः क्षेत्रका	
<sup>च</sup> मुत्यःसर्क्रेम्'ख्र'नःकेन्द्रित्याकोरःक्षेत्रका	363
ब्रे'नकुर्'म्रोर'क्रुवया	364
ह्युर-ह-नश्चेर-र्केग	367
र्श्चेत्र के वा द्वर श्वेर प्रवा वी स्व श्वे	369

्य मॅर्स्स्य भूत्रस्य म्ह्रियाये द्वा स्वर्ध्व स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्

शेर-श्रूप-प्रय-प्रह्य-प्रग्नुप्रश्नायर्शेष्ट्र-प्रयथाग्रीया

รุ่มเลี้มเลิงเหลี่มหมังและรุ่มโพละรุ่ม สู่รุ่มหนังเลี้ม รุ่มเลี้มเลี้ม marjamson618@gmail.com

# हेतरेदरियो श्री र विवाश कवाश शुः श्री र खुवा ग्री सुवा वेता

७७। । तुः अः र्त्तुः नवरः श्रुवः नवरः र्देः हे विकरः। । नवे रः से नविषयः र्रमी 'द्रस्य वेद'है 'सूर'ग्राया राष्ट्रीर वर्गेत्। | रूर रे द्रस्य के यद्य वर्षे र की से स्थ रेत्रार्थे के प्यत्राम्विमा क्यार्थेन प्रवि भ्रम्मा सायदीम्। यो व्याप्ति स्वयामा यो सामि सामि स्वयानिमा स्वयानिमा डेगायेव नर्गेश ने प्यन पॅव न्व प्रस्था उन् ग्री इन्य स्था विस्था हिस्सा स्थाय न्या विस्य वहार नदे स्रेन स्र नवे वन्यायायन प्राम्य अध्यान क्षेत्रा नुष्या नुष्या है त्यों प्रमे प्रते प्रमेश महित प्रकृत स्रम सह मा के स्री यदे बुद्दिवानी नरन्त्रह्रवारार्षेद्रशास्त्रह्मवासायदे त्यसात्ती देसायायात्रस्य त्येव वावद्दि हिंद नर्झेवर्यालेगाचे नर्गेषा ने प्यम्माई र्चेम् क्रुवर्शे क्ष्यशयेवर्यस्यायशयश्य वर्देम् क्षेवरेवर्ने प्रमेश विग्रम्भुःहे सूर्भुं एने दे रहे वार्षे रहे वार्षे एने वार्षे प्राप्त वार्षे वार वे गिहेन् से वेंग्यम् निमे निके कें सम्स्राम्य मासून पर नु स्रुस्य परे स्ट्रानिक पर्नु ने साम्रीस पर साने ने र नर्ह्हेग्-स-५८-वठशः स्टंस-ग्रेग्-पर्देव्।

देवमा व्यास्ति क्षिया व्यास्त्र क्षिया व्यास्त्र क्षिया व्यास्त्र क्ष्या व्यास्त्र क्ष्य क्ष्या व्यास्त्र क्ष्य व्यास्त्र क्ष्या व्यास्त्र व्यास्त्र क्ष्या व्यास्त्र व्यास्त्र क्ष्या व्यास्त्र क्ष्या व्यास्त्र व्यास्त्र व्यास्

देव भेवा दे देर में हेव परि भर देव से प्राप्त में मार्हेर वर सर सुर शेशशाउत्वाश्यशाउन्देव-न्याश्याम् शामि । वी. तयन देव-वी. के. वे. व्या ग्राम्पर्वेतासम्बा देवे के दार्प्यम्भेस्याये विष्क्रमाये द्वीप्यम्पर् भ्रे गहिंदानर इत्र लेश द्राप्त गणिंदा लेगा शासर न सेता परि क्षेत्र परि क्षेत्र यावार्य्यसम्भारत्ये व्यानिस्रमायर स्वार्यसम्बद्धाः विसा व्यम्परमायी स्वार्यस्य ग्रीशःभ्रेगः श्रॅटः दगेः श्रूनः इसः यरः दगः यः विगः ग्रेटः तुशः यरः त्रः सः स्र नक्षन हु नार्श्य के प्यमेष प्राप्त विषय के निष्ठ प्राप्त के निष्ठ के निष्ठ प्राप्त के निष्ठ के वरानराळप्रसेप्रान्त्रेवानीयान्त्रनार्षण वेयानहें देवयाह्य विवाद यस वि.म्. में प्रमाय की या बेटया पर्ट्र प्रमायेष्ट्र प्राचीत किया हो निया है एक है। सार्क्षेट्या वे या पर्ट्र प यर्-१५२-छेर्-भः स्वाया ग्रीः स्रम्यस्य स्थाप्यः। यस्राष्ट्रिन्यस्यास्य स्थाप्यस्य स्वरं यात्रस्य स्वरं महिन्यसे निर्मा इस.ग्रेश.वृद्य.स्ट्रा

देवश औँ अञ्चार अञ्चार वि अत्य प्राप्त अत्य प्राप्त अत्य वि अत

न्त्रमा **भैं . र. से . र. रा. है . रा. से . सा. है ।** यदे . यस निवस स्वस्त संस्त निवस से स्वस्त स्य

 ने त्र यात्रवायाञ्चन्या श्रुनामदे स्यनुन्न नुष्या गाशुस्य ग्रुस्य त्र यात्रवो नः स्रे तन् न न न न न स्याप्त स् त्राप्त स्थापन्न स्थ नक्षेत्र देवे। क्षेत्र यः व्याका हे केत्र ये प्रतः यह या या प्रति है ते विश्व दे:देर'वी'वावर्थ'भ्रवर्थ'शुंर्कर्थ'थ्व'ग्री'ग्रु'व'र्द्रा' वावव'ग्री'र्देव'र्दु'ग्रु' गर-५८-१वास्यास्य स्वाधाना हो ५-५ सा हो ५-५ मालु गाय-५८। से व्याने गा यद्रा रेगाः जुनाव्यायद्रा रेवः ये के व्यारेग्यद्रा रेगाः जुनाव्याः मन्द्रा अर्तेव नर्डे अरमन्द्रा नर्डे अर् ग्वाबु अरमन्द्रा भ्री अरम नार्डे द्राम ८८। गर्डेट्रंग्लियारार्ट्य वयाक्ष्र्र्रा सर्वस्थायर्डेश्रार्ट्य वया वेंत्रद्रा हेत्रवर्षेशद्रा गर्शेगवहेंगा गुरुषा वात्रवाद्रा हेत्रवेदारा र्शेनायाचा यर्देरत्रद्रो श्लेर्ची विसय हैयान कुः स्वासुयायया नुशन्त्र नक्षेत्रन्त्र राज्य स्राया क्षेत्र या श्रुवाया हे उत् श्रीयावादराया सहर्रित्यार्थेया वेयावहर्ष्यवस्य क्षेत्रित्यार्थित्यार्थः व्राप्ता व्याप्ता सङ्ग्र क्ष्याविष्ठश्राम् निष्ठश्राम् विष्ठश्राम् विष्ठश्राम विष्र विष्ठश्राम विष्ठ्य विष्

मुन्नपर्श्चरकात्रकात्रक्ष्मात

यालुर खुवाश व्यक्त द्यी प्र प्र क्षेत्र व्यक्त व्य

शेस्रश्चित्रुं दर्स्य स्वित्रे स्वित् प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स् न्यात्रूरम्ब्रुरम्ब्रुरम्ब्रुर्म्यात्र्या पर्ने कित्रम्म्यात्र्यात्यात्र त्रितःक्वनशः प्रतः क्रिंग्या विराञ्चतः पद्मेतः प्रयोगः प्रत्ते प्रयोगः प्रयोगः प्रयोगः प्रयोगः प्रयोगः प्रयोगः विष् व्राह्मभागर्भेषाक्त्रभानसूत्राक्तुषानाक्तुः अर्क्केदेःचर-तृः ह्या देःवया नारामी सुनाया है सार्भेनायाप्यन्यमानतृत्रासा वी क्रा वैरक्षः में नास्त्रा नक्षिरं क्रों राष्ट्रवाक्षा महत्रा महत्या महत्या महत्या महत्या महत्या महत्या महत्य वेत लरम्भक्रम्क्रिक्ष्मभविष्रवेर्त्य अहे अस्य सुन्य क्रुं अते सुन् क्रुं अते सुन् क्रुं वर्षा वेशमंद्रः सक्स्रमः शुः कैं नामः विष्टः मुनः हा वसः सम्परः हैः <u> श्रेत्रत्यर्थः श्राच वुर्त्त्या विश्वादेष्ट्रम्बर्म्यूर्यः वृद्धः वृद्धमान्युयः श्रेद्धान्यवायः </u> यन्ता हेर्स्सेस्रसङ्ग्रीयम्ब्रुयत्देवा धेवानकुः ब्रात्सावर्षिवा होत्त्रस्रस्यस्य पदिस्हा साहेत्यत् सुर यत्वाराप्तरः श्चे यत्वारा यह्वा हु ग्वर श्वें याप्तर श्वें याय्य वाश्वयारे राश्वें याया क्रयावारी ग्वा दे म्रासदिः प्रस्ति । त्रास्ति । त्रास्ति । त्रास्ति । त्रास्ति । त्रास्त्र । त्र य5. भेश. पश्चे ८. यश. में अ. पश्चेय. ततु. त्यय. लूच. त्या. या. पश्चेय. ततु. केश. दश्चाया. मेश. तथा. तथा. तथा. व हे द्वराम्बुरमारा निवेदायेम्या सरान्य साम्बेष्ट रहामी त्वासारे सुनसान सुन्य से हारा निवास के माम्बुस में वर्षामदिः नद्याक्षेत्रः त्रम्थस्य द्या देश्याम्बद्धान्यदे ह्या नद्याक्षेत्रः नद्या निष्ठा न्या न्या स्या गर्भेषानामान्यरावरेनसामान्यविषानत्र्रेषेत्रमेनसाङ्ग्रीरामे प्रिम्सान्यराष्ट्रमाङ्ग्रीरा

याः स्वीताः प्रकृतः स्वार्धिः स्वार्धः स्वर्धः स्वार्धिः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्धः स्

 दिश्रेवाशः इसः येवाशः सरः श्रुँदः। वार्रेः चें रः रदः घः सयः ग्रीः श्रूदः विदः दृषः वरः व्ययः वरः श्रूवेः दः ग्रुवः दृषः वार्यः यथः श्रूदः नह्रवासेवे रहा भूत हे वा नुर्ये हा नुर्से हा नहा अर्के हा अर्के हा सर्के हा सुर्व का विवास क्षेत्र वाहि सार नुवा है स शेसशः क्षेत्रान ह्यसः सँग्रास्ट्वेर न् निर्देश नर्भेर् द्रस्य ग्री कें ग्राय यग्य प्राय प्राय दिस ग्रीवी क्क्ष्यां अलेट मार्था प्रदेश क्षा होते । अर्क्केट सार्वस्थाना क्षेत्रा सान्य निवास स्वास्थाना हो अले सार्था स्वीप साम्रास्था क्रुन-हु-नर्बे न-न्ना देवायाय्वे वे स्थान हुन्या न्यायाय हिया में निवास क्षेत्र हुन्य स्थान स्थाय स्था व्यार्श्वेदायाक्षेत्राण्याक्षेत्रायास्यविषास्थे। स्टायोस्यार्थेदाक्षेत्राण्येद्वार्याः स्वायाः स्वायाः स्वायाः *ॱ*८८७वेष'दक्के'न'क्कॅश'श्लु'यस'दिने'र्श्क्षेस्य दे'त्रस'त्रुद'र्से८'८८'त्रुद'र्से८'संद'र्स्कुर'दिन्'र्स्क्रेस'स ૹૄૼ૱ૡ૽૽ૼૺૺૺૺૺ૾ૡઽ૽૾ૺૺ૾૽ૡ૽ઌઌ૱ૡૺઽઌૢૢૢૻૻઌ૱ૢૢૼૼઌૺ૱ઌૹૢ૽ૺૺ૾ઌઌૢ૱ૺૺૺઌ૱ઌ૽ૺઌ૱ૢ૽ૢ૽૱૽૽ૺૹ૽૽૱૽૽ૼૺૺૺૺૺ૾ૺઌૹૡ૽૽ૢૺ૱૽૽ૼૺૺૺૺ૾ૢ૽ૼ इं प्ट्रिन माय्ह्यान्ययाम्बिन तुरम्युरमान श्चेन मान्या ने न्यायहेन ग्वराख्ये श्चेन श्चे नाश्चेया श्चेते प्या विद्यम्पराष्ट्रेन्द्रवर्षात् में हे विद्वारान्यवामें हे विद्याया होन् विवास्या विद्यास्य के अध्यान्यवास्य न्रहेग्रस्सुन्त्रक्केट्राचायात्रस्यो प्रवेदासे प्रवेदान्त्रक्षेत्रम् प्रवेदान्त्रस्त्रक्षेत्रस्त्रम् स्त्रिक्ष नरे.च। नरे.च.के.से.व.कर.चतु.के.द.मे.का.रट.वाश्वा.कै.ट.से.वाशा वसीट.हे.वाशा वसीट.हे.वाशा वसीट.हे.वाशा वाशा व। अळ्अभाविर्मावह्रभाविष्ठात्र्यां विष्ठां श्रूवायाञ्चात्राची अवादवा विष्या विष्या स्त्रीत्र श्रीत्र वा वञ्च सामवेश श्रूवयाची । '૬ૹ૾૽૽૽ૢૹ૽૽૽૽૾૱૱ૹૢ૾ૢૺૢૼ૽૽ઽ૽ૹ૽ૹૼઌૢૹ૽ૹૹ૽૽ૡ૽૽૱ઌૢ૽ૢ૽ૹ૾૽ૹ૽૽૱૽૽ૢ૽૱૽૽ૢૼૺ૱૽૽ૢૼૺૢૼૢ૽૱ૹ૽ૹ૽૽૱૱ૡ૽ૺઌૢૹ૽ यरःश्चिरित्र प्राप्ति अप्राप्ति अप्राप्ति व्यवस्थानम् । क्रम्या क्षेत्र अप्राप्त स्थानि ।

त्रुव ची अवर पहे वा हेव प्यमायन मामायन मामी वाहिर प्यनुत्य प्राप्त वाली वाही वाहिर प्यनुत्य हे मा

चीर.कुर्या र्यंश्वाच्ये विर्ध्याची विर्याची विर्ध्याची विर्ध्याची विर्ध्याची विर्ध्याची विर्ध्याची विर्याची विर्याची विर

क्ष्मिश्चित्राच्याः क्ष्मिः क्ष्मिश्चित्राच्याः क्ष्मिश्चित्राच्याः क्ष्मिश्चित्राच्याः व्याप्तः क्ष्मिश्चित्रः क्ष्मिश्चः क्ष्मिश्चित्रः क्ष्मिश्चित्रः क्ष्मिश्चित्रः क्ष्मिश्चित्रः क्षित्रः क्ष्मिश्चित्रः कष्मिश्चित्रः कष्णिः कष्मिश्वः कष्मिश्चित्रः कष्मिश्चित्रः कष्मिष्यः कष्मिष्यः कष्मिष्यः कष्यः कष्मिष्यः कष्मिष्यः कष्मिष्यः कष्मिष्यः कष्मिष्यः कष्मिष्यः कष

क्षेत्र भृष्ट्रैं क्षेत्रक्षेत्रभः क्रिभ्यक्षेत्रक्

বর্ব্রিঅম'ম'অম'ন্তুদ'নবি'রর'ম'বাβিদ'ন্,'ম'র্মিদ'নবি'নম'নঞ্চর'মম'ন্ত'দ্বিশি। বাল্বর'অদ'বাβিদ'ন্,'বর্ন্ত্রী'মম' मिंहेन्'से'त्र्युम्'डेन्'स्ट्रन्'त्रेर्'त्र्याय्यासे'र्येत्यानम्'सन्'सम्'त्रुःसूस्रायदे'नस्रायम्'न्रान्यस्य वसामेसायसः <u>नशुरशःमरःष्ट्ररःष्ट्रीःव्हेन्।शःभ्रुन्। ५८: नठशःमवेः देः ५न्।शःग्रीः नवे५ ५ ख्रनः सें ख्रनः नवे५ ५५ वहना मरः ह</u> <u>- नर्वोश ने क्ष्रमञ्जेन त्रावित पुर्वे वात्र वरमा इत्राधा यहेन सम्मा न्यो स्थेय सम्मान वित्र व्यापा वित्र सूया</u> क्रे यम, नृष्ट्रेना मदे यम हत्याम क्रे क्रिन् नित्र नित्र क्रे यम हिन् क्रे महिन् स्री मार्थित सम ঀৠৼ৵৻ৠ৾৾৾৾৾ঀড়ৼ৾৾ঀ৾৾৾ঀয়ৼ৻ৼ৾ঀ৾৵৻ঢ়ৣ৾৻৽য়৵৻ড়৾৾৾ঀ৻য়৾ৼ৻য়৾ৼয়৻ড়ঀ৾৻য়ৼৼৼৼ৻ঢ়ৢ৾৻৸ড়ৼ৸ৼঢ়ৢ৾ৼ৻ द्वींश श्चेरावहराष्ट्रदासळसमाञ्चवभाग्ने वर्षे वर्षे वर्षा क्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा स्वाप्त स्वाप्त वर्षा व ॱॸ॔॔ॱॵॸॱॸॖॖॱऄॱढ़ॕॸॱॸॱॸॖॖॖॻॱॴॸढ़ॆक़ॱढ़ॴॱॷॱॴॴळॻॴॸॱॸऻॱऻॖऄॖॱॴॴॷॸॱऄॴॴऄॗॱॿऀॸॱऻॱढ़ॕक़ॱऄ॔ॸॴॴऄॗॱ न-१८-भ्रे-१८-न-नम्बायायदे मुर्चित्र, नम्दर्भे नेयानित्र, मुर्दिन्य-१८। मुर्दिन्ययायादायायदः न्या नम्रेत्रपान्म। वर्षाण्चीर्केन्देवापान्म। भ्रेष्ठ्यानम्म्यादर्ज्ञेम्यानर्केत्विम। कृषानदेक्तेम् स्रूमानुमदेख्या दनद्रपाद्या अर्दे स्वाकार्षेत्राक्ष ह्वाकारवे त्यस्य वात्य कवाका के सेवका शुः क्षेत्रका सम्पद्य सम्भाउद् सिंदिन्यते में त्यस्य निर्मित्र में मित्र मित्र

ने 'क्षेत्र 'हेबर ते दे 'न्यो 'श्चें त्र हियाया क्रयाया शुः श्चें त्र ख्यायव त्या ह्या स्वर्थ स्वर्थ हैं । के 'वर्न दे 'व्येव 'न्यों हैं 'न्या न्यों श्चें त्र प्र क्षेत्र क्

# श्चित्रश्यम् श्रेम्यान्त्रीत् स्वायते स्वायते

বশন্পুন্ত্ৰ্ৰ্ৰী সম্পাক্ত্ৰ্পাক্তিশান্ত্ৰ্বাপাশ্ৰী'অৰ্ক্তবা'ৰ্ব্য্ৰ্যাপা । ব্ৰুদ্ कुन'नर'र्'न्न्या'वे सुन्यासु'यकी । न्न्या'यीया सुद्रिं सेयाय'न श्रीयाय' वरी द्या यो । वर्ते वा स्वर्षि र स्वर्ष क्ष स्वर्षि र स्वर्ष विष्ठ वा । व्यव वा स्वर्ष स्वर् वहूर्न श्रेस्रशाउदावस्थाउदावदे वादावदे वादे कु द्राप्य स्वाप्य कुर देव श्रेश्रश्नात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्यात्रव्या गुर्-छेग शेसशाउद मस्याउद स्वा नस्य से दारे नदे नदि सं वर्यायानमः शुरु देवा सेस्र अवर वस्र अव दिन है में में स्वार सूर विदेश में चलानवे निर्देशकालानिका सम् शुरुष्ठिय। विवास स्वास्त्र निर्देश निर्देश स्यक्तिः अर्वे वर्षे वर्षे वर्षे । स्वर्मा । स व्हेंत्रहेरा व्रिंगःग्रे:मुयःर्गःगुत्रःसहित्ःर्ह्वे:नवरःग्राग्या व्रियःदरः नडर्भामान्यस्य वर्षे स्यानेनामान्याम्य । । सन्तः श्री वर्षामानस्य । यन् ह्रिते श्रेम्। हि नड्न ह्रास्य न् क्री स्थान क्री स्थान क्रिया हि स्थान क्री स्थान क्री स्थान क्रिया है स न्द्राचेरे नर्से द्वस्य विद्यर्के वा हा विश्व स्य क्रिया के स्व स्य के स्व स्य के स्व स्य के स्व स्य के स्व स् नव्यायासुः यार्थेत्य । नेया गुदेः हिंदः गुदः त्रह्यः नदेः ह्वें सः श्वाया । श्रूयः

नवरः इतिः क्रिवः श्रीयायः नभितः गार्थरः। । ग्रामयः परिः नधयः श्रीयः क्रमासे मासे भारावे क्षा । सर्वेट विभारत्वा परिता विमायकेषा । धिट दिरः सर्केरः धें तर्श्वः कें ग्राया से हिंगा प्राया हिं विसाय र्गा कें स्थान प्राया से स क्रवार्श्वाया । पर्देशाया नियमा धीरा श्रुवा सकें प्रश्चेता सकें प्रति। । पर्से प वस्रश्राबिद्रासके वा सिद्धारा स्वास्त्र विचा स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स्वासी स वर्षान्ययाषानाणी । शुषान्याणीन ग्रीषानी है नश्चीषान्य। । । । । । यरःक्रिंयायावाशुयाची से अध्वर्धियाया । क्षेट्राव्यायची द्रार्या द्र्या से या र्शेर-नन्ग्रम । श्रुग्रायायदे न्यायदे रायदे रायदे श्रासून वा वर्षेत्र । वर्षेत्र नकुन्श्वरशास्त्रान्यायकुँनःर्नेतार्धन्। व्यक्तिनःर्याक्षिन्। श्रीतार्धन्। केत्रसद्दाया । नद्याः उयाः नश्याः प्याः प्रशासीः सदः दे। । हे नर्द्धतः ह्यः सन्मन्। विद्वस्य ग्रीया विस्य सुदे सामद त्य सविद नहे दे कु पहें द विषया । दि सुर वर्ष अ परे वार्य प्रति विषय है व अ वा । वन कु अ र्के अ ग्री । ळर्पान्वन हुम्बर्भिया । वन्यामिश हे ख्रेन्यश्वास प्रदे न्यो न विश्वा म्याश्वासायी । प्रश्नेवासवे श्वेदार्से देता देता । प्रदेश मुनागुवा वजुरः श्रवः नवरः हैं हे 'वळरा । निर्धेषा श्रा से निर्वे 'विरे विरे विरे हें निर्वे 'सुव रशमित्रमा । दि से द सि हो द सि दे दिन हो । विद्द

न्युरः अः खुरुः वहेँ अरुः अहं न्या अरः नवे न्या । यारुरुः उत् अविरुष्धेः यद्याः क्रित्रह्में प्रचटः स्याया । श्रित्रयः याश्रुयः गुत्रव्युयः ह्मायः यार्थः यार्थ वा अन्वित्वाश्वराम् रायदे अन्ति वर्षाः वर्षे वर्षाः वर्षे वर्षाः वर्षे वर्षाः वर्षे मुलानर मुन्ने मार्केन । अकेना नर मुन् सेर न्रेस मुन न मुला न गर्रेला विश्वप्तान्त्रीर विष्या न्रीम्या न्रीम्या सीन्या निर्माति सीन्या निर्मा केत्र सुन्य स्था अ.धेश.७ह्रअश.भह्रे.वोश्रर.चतु.चरेवे विरश.१९४.शवश.संदु.वोद्धेवो. कुर्उरिएय। द्वित्वरम्यायायायित्वर्यायायित्यायायित्यायादित्य। वियावकुर्वेर मर्झेदे सेट नत्यायाया | नगाय देव केव सेदे से वया हेया बटा से । सु वाश्रदः ब्रुवाशः ग्री-दर्शः ग्रुवः श्रुवः दुः वाश्रिवः । क्रें स्वशः गुतः हुः क्रुवः वः र्देरावायया विवासकेवानिक्याविवादेराद्रायस्यायहामा । मुल'नर्भ'नर्भग्रभ'रादे'लय्भ'नवट'रे'देर'लय्भ । भूर'डेग्'र्यं अ'पट'र्स्थ्रा' धरासासुराठेवा | द्रायाय्वतास्त्रास्त्रेतास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा यर वें पा खेर हो हो । हि सह द से प्रश्न सम् सर्हे द न दे से स् स् स् स् स् स् व्यायतः विवाद्यम्या स्रोधस्य त्या वर्ष्य वर्षे व

## श्वाज्याः स्थितः स्थायर्जे न

য়ঀয়য়৻য়৻য়য়য়য়য়ৣয়৻য়ৢঢ়৻ড়৻ঽয়৻৸য়ৣয়৻ঀৢ৻য়৾ঀ৻৸৻য়ৢয়৻ঀৢয়৻য়৾ঀ৻য়য়৾৻৻য়য়৻৻ঀঀৣ৾ৼ৻৾ঽয়৻য়ৼ৻৸য়ৣঢ়৻ न्व्यानमान्त्रक्षात्री व स्त्रान् स्वर्धि स्त्रिष्ट स्वर्धि स्वर्ये स्वर्धि स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स् अधि विनर्भाग्रे मर्जे राग्रे राग्रे राग्रे राग्रे मार्थे पार्थे या से साम्या वेत्स्ति वृत्त्वर्या । कुत्ति वहंति वहंति स्वार्थित म्यार्थित विवासिता । दे षर क्रुन् श्रे में त्या महिका श्रे न् श्रे वा विक्त के का से वित्त निर्मा निर्मा के माना स्वाप स्वाप स्वाप स्व नी अन्दे :श्रेन :श्र्मा अर्थे अर्मुन व्याय्व पाने :श्रेन :५। इन्न :५८ :प्यव व्यम मी :५ अञ्चा :५८ :श्रें अप पान्य अया विवर विया रे रे दे दिन तुन कुर निया र हो द रहेरा। हिन सम रे या शब्दे निया की या मुत्र हुया हु निश्च र में र हो। हे ख़िम स त्रुभाव।विवास में निर्मुस में रावधुर नवे भ्रिर है। हे से प्यमा हेव दर सक्व से प्यव ग्रास्तर। हिवरे नवेव त्रे.च<sup>ड्डा.</sup>चर.ची ।वट.क्र्.धेशभ.वीर.ईज.उत्ह्रेर.वा ।वि.य.भ.ड्र.ह्र्यूश.तूर.उवीरा ।बुश.वर्शिटश.राषु.हीरा ट्रेश. व निरक्ष्य सेस्र निरम्पान्य स्वार मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र स्वार मित्र स्वार मित्र स्वार मित्र न'न्न्। नश्चर्नित्राक्षेत्राक्ष्माक्ष्माईहे देवहरक्षेत्राचिश्चर्यात्रहेत्राचिश्चर्यात्रहेत्राचिश्चर्या क्यायम् हे वस्रारुत्याद्वेत्रयम् नगद्रस्यायदे स्त्रुत्यस्य नभून न्ता स्रार्थः वहायदे स्राप्य नि इयायर्चे सर्वे यायवे प्रवाद में वा श्रुव द्वापी द्वाप ये स्थायर्चे सर्वे वाया श्रुप्त स्थाय हा विष्ठा विष्ठा विष्ठा यशन्दर्भे नः इस्र ग्री भः बुदः चुना दुः द्रस्य सुः येदः रहेषा चित्रः नदे । नदे : ब्रेत्रः रहेना भः सुः नहर । पदे : क्रें न्र भः

#### नर्हेन्यम् जुर्दे॥

यरयामुयार्क्षयाद्यार्थायाम्या । व्यारक्ष्यायाः र् निर्वाक्षेत्रभुवर्यासुःसक्षे । विर्वाक्षेत्रःस्कृत्रःस्वायान्त्रीयान्त्रेत्रः त्रय्या । प्रमें प्यायत् भ्रीत्याय का क्ष्या के व्याय के भ्राय के विष्य के भ्राय के त्र्वेदिःनक्ष्मनः चुर्रः हेत्रः यत्रः म्राशुस्रः सस्त्रं त्यत्रः म्राशुस्रः नुष्रे त्रः स्वरः म्राशुद्रः स्वरः स न्याक्षेत्रा अम्याम् यान्ता क्षेत्रान्ता न्त्रो त्त्र्वा त्यास्मुन्यासु त्वे तात्रास्य विकास स्वा **ये स्या उत्** वस्र १८८ है। देर क्या शर्थर ५८ । विषा वस विदेश सुसारा वहर स्रूपिश क्ष्या स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र नने नि क्रिया विम् श्रुम के ना श्रुम मा श्रुम मा स्विम मा स्विन में नि मा स्विम मा स क्षेत्रामहेशवरेशकरा नर्ने ५ ५ माने स्वाप्त क्षेत्रामहेशवर्ष स्वाप्त क्षेत्र महिला नर्मित स्वाप्त स्वा श्वेराहे ळ न से न न है। विस्पर्म न स्थापि न ने निष्म स्थापि न न स्थापि न स्थापि न स्थापि न स्थापि न स्थापि न स न्यवन हर्ने वर्षे ग्रम् ग्रम् केर् विदे वहिया या या या के या हिया या परि नुरः कुनः विनः सरः वर्देनः प्रवेश्येयय। । नेरः त्यान नुरः येः यह या मुरायः र्वेन नम् । श्रेन ने से मण्य से अपनि से मण्य से श्रेन से सम्बर्धः यायान बुर ख्रेत क्षेत्र सळत् खुत चुया कु से सयान क्षेत्र प्रमाण स्थान स्थान विद्या क्षेत्र स्थान स्थान स्थान स सर्वामी सुनगाया मुयान सुरानठरा मी हे या शुः ह्रें या सर्वे या है।

मुर्खा |हे.क्षेर्र्जूच.मुर्थात्रक्षां | यर्या.क्ष्यः वीषात्र्यः सर्वात्रः स्थान्त्रः स्थान्तः स्थान्त्रः स्यान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्र

ल्ड. ब्रब्ट वेच. टेच नव न्याल्ट - व्यूक्त न क्षेट - व्यूक्त न क्षेट - व्यूक्त न क्षेट - व्यूक्त - व्यूक्त

यर्वेचकारायुःचिकात्विकात्विकार्ये। जि.म्.म्.स्वरःक्ष्यःक्ष्यःक्ष्यःक्ष्यःम् । क्षित्रःम् न्यत्रःम् न्यत्रःम् । क्षित्रःम् न्यत्रःम् । क्षित्रःम् न्यत्रःम् । क्षित्रःम् न्यत्रःम । क्षित्रःम न्यत्रःम न्यत्यःम न्यत्रःम न्यत्यःम न्यत्य न्यत्रःम न्यत्यःम न

स्टानिव पात्र अप्तान्त अप्तान्त अप्तान्त अप्तान्त प्रान्त प्र प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त

यहारी दिवा के भारत के प्रति । भीता के प्रति । भीता के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति । भीता के प्रति के प्रत

नभूयाना केत्र सेवि से न्दासहसा पवि वेद् न हैं हैं सत्। से न्या पवि हें न पत् भे नवर्यार्ट्यक्र दे दूँ यत्। भे अके न इसम्म प्रियायाय दिवाया मित्रे विया है हैं मित्। के के मित्र स्वा स्वा स्वा है प्या स्वा के प्या स्वा के कि से स्वा मग्रामित्र मन्त्र मन्ति मन्ति मन्त्र मन्त्र मन्ति मन्त्र मन्ति मन्त सबर्सहर्यायत्त्र दे दे दे त्या क्षे नर्ड सम्बद्धाय स्थान है हे समा से या स्वाप्तक्षार्द्वे स्वा अँप्रयायायायास्य निर्माप्य प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा ग्रीअ भे प्रुन फुँ दूं पत्। भैं प्रजुट में दे प्रदेग अ म प्रमाय अ र हें हे के द र्स्यायह्र्य्या १५ हैं यत्। भे हिं चार्व नत्वायान्व ग्रीयाधी मुन न्नराचेन्'श्रुव्'र्रुं'द्रुं'पत्। क्रॅं'गातुसार्से'र्त्वि'सेदि'गा श्रुवासाग्रीसार्स्रासा क्ष्यां। अभागम्याद्धार्थः दुः दुः यत्। अर्थः म्याञ्चार्थः भ्रेमाञ्चरः म्याञ्चरः म्याञः म्याञ्चरः म्याञः म्याञ्चरः म्याञ्चरः म्याञ्चरः म्याञः म्याञ्चरः म्याञः म्याञ्चरः म्याञः म्याञ्चरः म्याञः म्याञ्चरः म्याञः म्य

चर्वाःस्थान चर्तिः स्वार्यः वर्षः स्वार्यः स्वरं स्वयः स्वरं स्वयः स्वरं स्वयः स्वरं स्वर

द्या । श्चः याश्च अः स्वः याश्च या । व्यान्यः या । व्यायः यायः या । व्यायः या । व्यायः या । व्यायः यायः या । व्यायः या । व्या

न् अस्यान् व्यान्त्रात्यान्य विद्वा विस्त्र विद्वा विस्त्र विद्वा विस्त्र विद्वा विद्

ब्रह्म अव्यक्ष विद्या क्षण विश्व विद्या क्षण विश्व विद्या क्षण विद्या व

वस्ति । विद्यान्ति । विविद्यान्ति । विविद्यानि । विविद

ब्रासेस्था के स्थुर वर्ष मक्ष्र विद्या विद्

र्यमान्द्रम् । द्रमाद्रस्य ।

व्यान्त्राचित्रक्ष्यात्वर्ष्ट्रम्याः च्यात्वर्ष्याः स्थात्वर्ष्याः स्थात्वर्ष्यः स्थात्वर्षेत्रः स्थात्वर्येत्रः स्थात्वर्षेत्रः स्थात्वर्यः स्थात्वर्यत्यः स्थात्वर्यत्वर्यत्वर्यः स्थात्वर्यत्वयत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वयः स्थात्वर्यत्वयः स्यत्वर्यत्वयः स्यत्वर्यत्वयः स्यत्वर्यत्वयः स्यत्वर्यत्वयः स्यत्यत्वयः स्यत्वर्यत्यत्

क्ष्याविश्वर्यविश्वर्यविश्वर्यक्ष्याक्ष्याक्षेत्र। प्रकृति । श्रिंत्र श्रे प्रयाप्य प्रकृत प्रत्य श्रे व प्रत्य व प्रत्य श्रे व प्रत्य व प्

यश्यत्व्याप्त्रवेश्चित्राचे स्थ्या ग्राम्य स्थ्या यश्यत्य । व्रिस्स्य स्थ्या व्यव्या । व्रिस्स्य स्थ्या । व्या ।

यक्षेत्र। विराशेस्याये स्वाधित्याये स्वाधित्ये स्वाधित्याये स्वाधित्ये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्ये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्याये स्वाधित्ये स

प्रवे द्रश्रक्षर्वे, शुर्षण व्यवस्त्र क्रियं क्रियं व्यवस्त्र व्यवस्त व्यवस्त्र विस्त्य विस्त्र विस्त व

## बुव जुगान सुराधा

प्रविश्व विश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विश्व क्षेत्र क्षेत्र

वश्रुश्वायदेख्यानुःहश्यश्वाशुःयेवद्ख्यान्द्वाख्याद्वाच्याचीःश्वाद्वाच्याचीःस्यादर्धेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःक्षेत्रःख्वाच्यःच्याचीःस्यादर्धेन्यःख्वेन्यःव्यवेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यःख्वेन्यः

वळवाची विवराग्यरायदेश्यकें र होता का सकें या सकें वा विवास करा विवास के विव सर्केग न्दर मुद्र सेंदर दें रागुन सासुर गुद्र । सर्गेद हिंद रहं या निवेद नक्षेत्ररावे हे अ वर्ते नम् । अर्वे द्वारा स्थान स्था ब्रिंट्र अहेश विंत्र श्रुव पर चुव क्रीश क्रिंवश । दि सूर वार्शेय वहवा श्रुवा शुं नें र र्रें वा । ररं या बेया प्रथा र हो र से र रें या हे या शुरा । यह या हे र रें हे से समाद्या निकास हिंदा है से समाद्या निकास है से समाद्या निकास है से समाद्या है समाद्या है से समा नशर्या वित्रास्य वित्रास्य में दिन्द्र मार्थिय दिन्द्र वित्रास्य वित्रास्य वित्रास्य वित्रास्य वित्रास्य वित्र इस्रथः देवः तुः सद्रथः से दः चहरः चरः च । सिः वरः चहरः से स्रथः वासरः स्वासः इयान्युयानी । नरुयायळं ययार्थेनानी भ्रीतापिर पर्देरायी । विना यश्याकुर्भे प्रवियापस्यास्त्रिं म्यास्या वियायाप्र विराधन्या भीया वर्त्ते न प्रत्या सुर्वे । द्वी वर्षे अ त्या मुख्य न दे न वे न या स्था न दया ग्री। । अह्र द्र्रीत विग्वान ५८ ५ मा के अप्तर्हे व भी र नर्शे। । अर्के गा गर्अ अपी व क्रमशःहेत्रविषाधे मक्षेते सम्भा विम्या क्षेत्रव वर्गमा सम्भामा धुरःर्वेगःर्नेग।

वित्रावदे तदे त्यस्यस्थान् स्वराध्या । देटानुस्याची वित्रावदे तदे त्यस्य स्वराधित । देवा स्वर

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।।

ब्रुम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा।।।

व्युम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा।।।

व्युम्भव्युम्भव्येवा।।।

व्युम्भव्येवा।।।

व्युम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा।।।

व्युम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा।।।

व्युम्भव्येवा।।

व्युम्भव्येवा

## धेंव न्व नावे र शुर आ

्रञ्जा । प्रिन: एव: ग्रीन: श्री: गाविन: श्रीन: इत: इत: व्हा । व्हिल: निवन: नक्षेत्र'रा'यम्भाग्री:ह्र'न'र्ज्ज विग्रम्भार्यर'सर्वेर'त्रम्पन्। विष्याया के वर्षे या ना से वर्षे नवे हेव नवर वरी । भेव फु हेर नगव रेव केव भेष शुर वया । छेव सळव'गुव'ह'श्वेट'र्स'त्येव'रावे'र्ह्ये । क्रुव'ळट'सेट'रार'श्चे'तर'हीव'र्छ्य क्रेंनश । खुशःश्रेंग गर्धे न कुःधे कुः तुरः निव्य । श्रुरः नुः वहेग पदे पकेः नः इवः मः इतः । भी निर्दे हे अः शुः शुअः इतः मीनः अः निवा । दग्रमः विवा । या वर्ष्य स्त्री प्रविष्ठ वर्ष । दिश्र प्रायम्बर से म्हे प्रवश्ये से स्वर्थ से स्वर्थ से स्वर्थ से स्वर्थ से स्वर |इ'विट'इ'न'इस्थर'गुट'र्श्वेट'न'द्रा | द्रो'र्स्केन्यस्य सम्यान वेद्राया हिना हुन्या द्राया द्राया विद्राया विद्राय र्रस्थास्यानस्यागुन्सी वित्नह्नासी रूप्तिस्य स्वासी यी। विश्वान्येयायान्यावयात्रमान्यान्ये निर्वानविमः केवार्याः भी नरः विवः ग्रीशः क्रेनिया । इसः न्याः नससः भः ने । धेसः इत्सः भः धी । इवः न्तः नियानिव नवार्षे दाके वार्षे भा । नश्रूव निर्मा कार्ये के सम्मानिक वार्षे । श्चुन य श्वेद र्ये र हो द यर हो व र हो या है तथा । यद हे द खेद र खेद र खुद र व है र

निवन्त्र । । सर्गुरवर्षे नगुवग्यरिन वर्षे । सर्वे दिस्त स्थानि नदे हिर दिन प्रति । विर कुन से सस सके वा दिन समर वित वी स मेन्त्र मुह्म कुन से त्युन प्रम् । योग्याय सम् सर्वेद त्र या मुख्य स्था स्था स या । नर्डें त'य'र्ग'र्से अ'र्से न'यर'री त'री अ'र्से न आ । विंग'यरे 'खुय'य' मिलेट मिले में में मिलेट ग्रवश्यास्त्रम् सर्वेदः स्टार् प्रदोषः प्रदेश्यम् । स्ट्रिन् स्ट्रान्यः स्ट्रीनः ग्रीयार्स् नया विवासराया श्रुरार्स्य विवासागुवाग्री न्नगानेन्द्रायह्यायर नेन्योश र्हेन्या । ने के नेर्याय्य स्थायनिया श्रुवःसदेःगिवी । इसः द्याः द्याः वैयाः वैसः सरः याशुरसः सः या । वर्षे सः सः श्रेव्यायते ते या प्रमुद्रा श्रुव्या । श्रेव्याप्तर वर्षे या हे प्रश्रुद्र वर ही वर्षे या र्क्रेनमा । ने नम कुन हो हो नमें निवन क्रिया हो । नमन न क्रिया हो निवन हो निवक हो निवन हो निवक है निवक हिंग्यायस्य पर्सित्र पाणिया । शुक्र प्रविदे स्यादि में मुन्य स्थापिया नम् । न्यामित्रामित्रामित्रम्यित्रम् वित्रस्त्रम् । निर्द्यम्ययाः नवरःक्षेत्रं प्रते प्रते ने श्रामित्रेत्रं प्रति । व्हिंया प्रिते मुन्य परि में प्राप्त स्थयः विनर्भागम्ब केटा भिर्मित्र विरामित्र में निर्माण के निर यम् भ्रेत्र भ्राण्य प्रत्य प्

## न्गेंव सर्वेग हे श इव शे न्द न शें न शुक्षा

ल्य मुर्हेर नुः द्वं वायवर न्याय में राया इयया ग्रीयायर पुराय पुराया विष्याया विषय विषय विषय नर्गे द. ग्राट. १४ मा भी जुरात बिरात बिरात में मान में मान में मान क्षेत्र त्या मान मान मान मान मान मान मान मान च्यायायायात्रेयाव्यास्यायायाव्यायायात्रम्यास्य स्वाचीत्राया स्वाचीत्रस्य क्षेत्रस्य स्वाचीत्रस्य स्वाचीत्रस्य केंद्रया ८८.र्जिय.श्चेष्ट्रयन्या.स्यमा.श्चिमायारेष.र्थ्यत्यात्रेष.श्चेष्ट्रया.श्चेष.श्चेष.श्चेष.श्चेष. षकुतात्त्रेत्रास्त्रीट्रेय्याक्ष्यात्रविद्योक्षात्रविद्र्ये म्याक्ष्यात्र्याः विद्रम्याक्षेत्रात्र्येत्रास्त्र सम्मात्र वित्यात्र क्षित्र प्रवस्य सम्मात्र सम्मात्र सम्मात्र सम्मात्र सम्मात्र सम्मात्र सम्मात्र सम्मात्र सम्म मश्यान्यन् न्त्रा अवद्भून्त् अइत्रे वार्षे वार्षे व्यवे हे शार्षे न्यवे करानु मश्रु सावक्षाये मश्यान्य न्याया है। वसरा उर् सिवेर राजा सुगा पर्कवा वी । वर्दे सूर सरसा मुरा पर्वेस थ्व प्रदर्भ ने वे ने नवेव मने गर्भ न्य नर्वे अप प्षर न्य प्रमें म्य मदेः सरमा क्रिया वर्षे साथ्य वर्षा देवा मान्य दिन वर्षा सुः ध्वा प्राप्त वर्षा वर्षे वर्षा गिनेग्रामा वहेगाहेत्याहेत्मा भ्रेमातुःवर्षानवेः।वार्वेः श्रुमाना व्रातः ये द्राया भ्राप्तरायी इसमारी क्षेत्राया सरमा क्रमाय विस्ताय स्मा

दे 'चित्रेत मिलेना श्रापा दे दे 'चर्से द्वस्य प्रचा मी 'क्कुं सम्भाग दे पे 'चित्रे स्वयं प्रचे क्षियं चित्रे स्वयं चित्रे

इसराग्री से हिंग क्रिया श्री द्याया स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वा रासेन्या न्न्यसार्सेस्यम्स्यसायास्त्रम्यम्न्याया नेसम्नानेया ग्रीशक्षेत्रेत्या क्रूनशक्षश्यान्द्रेत्यक्षेत्र्या सेस्रशक्ष्यस्य ग्रीः क्रेंत्राया ग्रद्धानः क्रें अरुषान्य स्वया व्यया इससाग्री मुलारी सुप्ततायसायन्यायि मेरिप्ति मान्यस्य ग्रीप नेन नर्भेत्रा धे मेशन्यमा हु सेन या क्षेत्रस्य न स्थानिय से । इत्यान गश्रुम् इस पर द्वापा द्वम्य सूद्या सुन्द्र दक्ष प्रश्रे क्या से किया भुः सर्द्धं द्रशः सः से द्राः पा दर्दे दः सः द्रवाः वी शः सः वी श्रः सः वा श्रवाशः द्रवाः वी शः हे नर अर्वे अपा ग्रम्य अर्ग स्वान्य अर्थ निष्ठ विष्ठ व इस्राधरः वेषान सुरः वेष्वायस्य प्रम्यः मुद्रस्य परः वेषान विस्रसः इस्र ८८. श्र. केय. ता श्रे. अक्टेट. इसस्य नर्षस्य स्था सर्ट. ता. इसस्य प्रेय. १ म लूर्याश्वीयरिटायारेया.जया. इत्रास्त्राच्याया श्रीरासायशाच्याया की र्वे त्यमानम्यान्। यो नेमार्ये दम्भामा वन्मामान्दामा वि ८८.८.केर.वैर.यह.अ८४.के४.यह्र्य.केर.वर्य.केर.वेर.व. यावर्याया शुःदवःवय्यायद्यायदेश्यावायीः याव्याया धदःद्याःयावेद्रः शुः समयः यात्र सारा से समा उत्रम्म सामा उत्राचा ने वा सामा विवास रास्त्री यदे द्या वे सरमा क्या यह मार्यहर यदमा क्या यी सुरके प्रवे प्रवे प्रवे

#### ह्रवःयदःद्रवाःसः इस्रशः श्री

च्यान्तरे क्रियां में न्यान कर्म स्थिति । व्यान स्थान स्था

वित्रःश्चित्रः वित्रः शुःश्चित्रः त्रः केत्रः वित्रः वित्

यदी विस्थानमाञ्चीतानदानम्बर्धानित्र विस्थान्त्र विदायाञ्चीत्रमान्त्र सर्गेत्रसं मुग्रमः हे के ध्रुत्रम् । वस्र राउत् सित्र पित्रेत् वस्रअः प्रवाहन क्रांसके वित्र । । दे निवित्र गाने ग्राया स्मादक या वे । न्वायम्य वर्ने न्य व्याम न्य वर्ष्ण्य । न्यो वम न्य में न्यम में व्याविता । यदिया हु देव द्राया अर्केया शुरुषा । वि शुरु के राया श्रमा प्रक्या ये। । विया वशर्मेवानवेत्यसायराङ्ग्रेवा निश्चनारान्यात्यास्य पुरावस्य विरामी गर्डे या सुमा पळवा थे। भ्रिना या के सावा सुमा पळवा थे। । दमे पद्म से वा न्या तक्ष्य त्या विश्वाय ह्या हुर्या सम्बन्ध विषय न व्यन्तरे भेन वर्षे गाया विवास श्रुम वर्षे हे मुखान श्रुस नहसाया । नि मश्रास्यामश्रादर्शे नायने न्यागुन् । यहीं माध्य कि निमान स्वर् नामश्राद्धें ना नर-निया । भे अपूर्व विवाय महामा भे या राज्य हैं। विवाय महामाना भे यम्। तुङ्ग् निङ्गे यत् हें नह ते के तु अहुँ विश्वयम्य क्ष्य क्षयः क्षयः विश्वयम्य विश्वयम्य विश्वयम्य विश्वयम्य क्षॅ ने सन्तानी दे पे इसम्यायायाया दि से प्राप्त के विष्ठ प्रार्क्ष विषय प्राप्त मित्रवर्षे क्रमास्त्रिरायायन्य क्रिं क्षाम् मार्थि क्षाम् क्षित्र क्षाम् क्षाम् विकास कार्यन्त विकास कार्यन्त विकास कार्यन का थाकरातुःविकेवान्ता और् निर्मे ने ने ने निर्मात्र विकासका वर्षे वास्ता व्याकरातुःविकेवान्ता और निर्मे ने 

इश्याद्रहेश्याविष्यक्ती स्त्राच्या ह्या स्त्राच स्त्राच ह्या स्त्राच ह्या स्त्राच ह्या

#### क्र्यायास्य त्युरार्से । नरानु वार्षेन्य प्रस्य स्वर्धाः स्वीतः स

ग्राम्भ्राप्त्रम्यायात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रेत्रम्भः निष्ठात्रम् । प्राप्तिम् धरागुरावेषा वारावीयावद्यात्याञ्जीयात्तुराधारमा देयार्गेराग्र्यापारमा नगुरक्षेत्रअभार्या नक्षेक्ष्यात्रअभार्या अर्केन्यात्रअभार्येन्या बस्रश्राहरे हे नर है नदे नदे नदे न क्रिंग मार द्वार नद्वार व ग्रीसप्देनस्य प्राप्त इस्राय ब्रस्स उत्तु र्शेषा परित्य रेत्य वित्र स्तु ग्रीत्य क्रियाश्वास्ते स्वाद्य नवदन्यस्य नदे नर्भे न्यस्य भी स्वा विन्ते वा विन्ते वा विन्ते विकास के विवास र्रे नकु धूर्य परे वस हे ८ उटा । वसस गित्र वस ग्रीस पर्के वर से ग नित्रान्त्रस्यानदे नर्से द्वस्य ग्रीया हिंद् सेंद्यानग्रेय क्रिया विश्वर ठेटा श्चित्रःश्वायाधितात्रताष्ट्रवायाद्या श्चित्रावदास्रेता । अव क्षयास्य प्रताप्ति वर्षे द्वयय ग्रीया विद्ये देश द्वर्ण विशेष् म्यापक्के सेन्या । स्याप्त विष्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य । यान यो सञ्चेत्र स गरायाञ्चेता अनुत्रामहासूरामा निम्नुत्रामा अनुत्रामा । अनुत्रामानु सिन् ग्रेश । श्रेव नन्यायां वे प्येन्या है याया विवा । श्रेव ना सु के रास्त्र रायदे । लु.सर्वेश विम्.यदु.रूप.र्रे.रर.वैर.सरमाभिमायमा क्रिय.कु.मैकाय.

इसराग्रीसासानसूयानदे। भ्रिमें निवेश्वेषासाइसराश्चेत्रामसर्गेयागुराहेग। श्चेत्र'रा'वर्दे'धे'नर्सेन्'त्रस्य ग्रीया । यदसः क्रुयः पश्चत्यः प्रान्त्यः स्वी । न्वाद में हिर्द्याद त्य सेवास रादी विश्वासर वावस रादे सु इसस द्रा । कुलारी क्षेत्र निर्मा केरा निष्य प्राप्त करा मिल्य प्राप्त केरा मिल्य केरा मि कें दिरावदा सेदा सुवा सुका केंगा । गानव द्वा प्राचे ना में ना प्राचे । दियो । नःवर्ने धिर्मा क्षेत्रं गुर्वा विश्वर्तं द्वर्यया धे ने शः स्वित्रा स्वित्रा नर्सेन्द्रस्य भे भे सायस जुरानदी । न्याय सुमा है स र्वेन पर रेने वन्दर्दर्स्यान्से द्वीयान्ये । विद्वत्वे स्त्रित्त्वा न्ययाः विद्वा शेशशास्त्र में ना क्रिंट सहित संदी । नश्र सार मुना सदि नगा भी शार्मिया हि त्रमःक्तृतःयमःष्ठ्रस्यःस्यावेतःयवस्य श्चेतिःयन्याःस्यायाः स्यायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वाय र्शेवाशःग्रीःभ्रवशःशुःवर्धेःवःवदेःभ्रमःवाददःवमःसह्दात्। द्वाःसेदःदोन्ताम्यःवर्धेवाशःवदेःहेशःभ्रुदःग्रुदःवमः त्युः र प्राप्तः वर्षे र सः <del>इ</del>स्सः ग्रीसः वासुरसः स्।।

## मुः अदे गुः नशः रे अः पदे शुग्राश र्रे व गुः छ व र्रे रा

७७। । भें भुः क्षे। नगवः देव नाशुस्रः ध्वः चीः हे नईवः त्वः सः नसः । इसरायास्त्रापळ्यावेटासूनरासुरसळेटी निहेन्चळेदारीसार्सर्ट ग्वर्भाभ्रम्भावर्भाष्ठ्रभाष्ठ्रप्रदेश्वर्भाष्ठ्रप्रम्थ्या रेव में के प्दी हिन क्षेत्र क्षा गुव हुन्य बिट कुषाया धुव सेट नु गविषायाया ने प्देश्व की क्षेत्र नु प्रयास इससाग्री पहें तर्भे राभ्रे या ग्रुसाया रमा यसायमा है भूत त् । विस्तराम् सुसायमें निवे सुसायि सामित वि'न'केद'र्नेदे'विष्णची नुस'नवर'ष्य । न्रामें कु केद'र्ने स'म'सर'नु नर्षण । न्राम् प्वित्रसुग्रम् प्रस्य प्रम यद्ययः परः भरा । वः यरः देवः यळं वः गुवः हः द्रययः शुः त्तर्या । गुवः ग्रटः वश्ववः पः क्रुयः पदेः के दः दः वर्ष्या इस्रायराष्ट्ररायदे हे सासु लुग्नाया भेटा। विस्रायस्य हो दायायद्या वटा वेटा गी समुद्रा क्रीदा गर्डि वेटा सी सु र्नेत् १६८ म् मुद्दा वर्नेत् १६८ केंग भेषा ग्रे श्रें त्र या वेषा नयस श्रें सामाणा साम्राया नसूत्र परे १ हान शे वर्मे च्ययार्श्वेटाहे चिटाळ्याण्चे येययाण्चेयात्र क्या चित्राचितात्र स्विटाहें ग्राया নশ্লুন'ব্রিমম'নার্ডন'মম'ন্স্রুর্ नक्षेत्र मः मेत्र में के दे सहे मा मुत्र मुन्य प्राचीय के हो। हे भूष मुन मुन क्षेत्र में प्राची । पश्चित प्रम यमाः हे अन्तरः विवा देवा । माश्चर्यायः भूता नभूतः वर्षेत्रः देवे देवः नुवे देवे त्रात्रः प्रति वा स्वा देवा । हेशमें पहेंग नर्गेश पर्मे नवे नेंब होन पवर नेवे बर नुः सप्तु न सेन सेन सिन्यू न निष्युव सुः र्सेन प्वन्श मर्थित् वस्य रहन भी में न क्रिन्स के न न न न स्थान मार्थित स्थान स

इसर्सेन्या स्वाप्त विस्त्री प्रतिस्वत्य के प्रिन्कुन् विस्त्रु से महित्य प्रता प्रताय प्रताय के स्वाप्त के स्व <u> ब्र</u>ी:सदे:तु:कॅत्-तु:से:दशुर:नदे:केट्। ८गॅत्-सर्केग्।याशुस्र:ग्री:बिट:तु:ह्रॅग्यर:पर्रेस:ते:पर्रे:श्रॅत्ग्रीस:ग्रीस:ग्रीस: इस्रायर प्रमाय प्रमाय विवस्य प्रमाय विवस्य प्रमाय स्थाय मान्य प्रमाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय नक्कनःनगदःनञ्जी श्रुदःदर्गुद्राद्यः। वदःसःश्रेषाश्रःवाश्वःसुरःषावदःन। पाववःग्रीःसुगाद्यदःवोवःसःद्रदः युगा-द्वर-पादर-व-र्शेगार्थ-प्यवर-युग्यशः र्श्वेत-द्वर-विय-प्यर्देत-दे-पादर-व-इ-उद-पाय-के। गुर्रे ने स्व त्र्रा हे र्वेत क्रुत ५ . बुवास ५ स. १ सम्बद्ध व स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त ড়৴ড়য়য়ড়৾য়য়ৼ৾ঀয়৾য়ড়৾ঀৗয়ৣয়ড়ড়য়ড়ড়৾য়ড়য়ড়ৣ৾য়ড়য়ড়ৣঢ়য়য়৸ড়ৢঢ়ঀঢ়ড়য়৸ড়৸ঢ়য়ড়ড়য়য়ড়৸ড়ৢঢ়য়য়৸ড় ড়ৢয়৾৽৸ঀ৾৽ড়ৢ৽য়ঢ়৽৻য়ৢঢ়৽য়৾য়৽য়৽য়ড়ৢ৾য়৽য়৽ৄয়৽য়৾য়ৣঢ়য়ড়য়য়য়য়ঢ়ঢ়ড়৽য়ঢ়৽ড়ৢঢ়ৼড়ৢঢ়৽ঢ়ৢঢ়ৼ৾য়ৢ৽য়ঢ়৽য়ৢ৽য়ঢ়৽য়৾৽য়ৼ৽ क्षप्राविष्ठान्त्रा मान्त्रार्देत्रमञ्जूनायायातु सारासञ्च उत्राप्ता वृत्ताः यात्रा मान्त्रमामान्त्रम् सारादे रें प्र ब्र्यासार्या होता कर्ना स्वासी हैं है क्रिया प्रेय हित्त्वरा *3८.२.७.*नवे:२न८:२८:हेश:मात्रद:श्रॅमाश:म्:मःथा द्यर्यविष्येग्रयम्यार्वे ययर्वे ययः दर्गे ययः धेव है। स्रमः क्षेत्रः स्रमः वेषः यय। दरः से सः से विषाण्यरः के र्स्से व |व्यव-याङेग'र्ननर:क्र्यशःग्रेशको नेभुम्। |रे.क्रें:याश्वर:क्रेव-नश्नर:पंपी |रेश-नमःर्बेन-नु:ग्रुम-पर्वे। |र्ननर येन्द्रदेन्द्रभः मुनः येन्। विःयः नर्द्धनः यः यमः येन् ः यून्। वियः मशुन्यः मः वृत्रः मः स्यः दर्वेनः व्यः ये ૹ૽૾ૢૺ<sup>੶</sup>૾ૡ૾ૺ૾ૺૢ૱ૹૻ૽ૣ૽૾૱૱ૡ૽૽ૺ૱ૹ૽ૢૺ૱ઌૡ૽૽ૹ૽ૢ૽ૼ૱ૹ૽ૣ૾૱ૹ૽૽ઌૢ૽૽૱૱૱ૹૹ૽૽૱ૹ૽૽૱ઌૡ૱ૡૡ૱ૡૡ૱૱૱૱ૹ૽૽ૢ૱૱ *न्नार्वित्रप्रियायित्रप्रियायवित्रप्रायवित्रप्रायवित्रप्रायवित्रप्रायित्* नभगभासभा न्येतात्र्वेरासकेंगागेभार्स्नेनान्येत्राग्रीभा स्रित्रन्तस्रेतायायनन्त्रभा नित्रभान्येता वर्षेर्रे दे दे वि वित्र दुर्वा वर्षा वहवा यर हा । भू वे अहेश यर अहा । वर्षा हे द ह्या य सुव वही व धेवा विभागशुरमाम्बरमान्द्रत्यमान्द्रत्यमान्द्राच्यान्यस्य वस्रुद्रार्भेषामान्यस्य होत्रायस्य

यमायायहुनामायार्भेमार्भावतुरानाकुरायमासुरमायाष्ट्रमायोत्। नामरासूनामाग्रीःर्भेमार्भाते स्राम्या यसम्पर्दर्वा वर्षे वर्षा वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे र्शेट यम प्रवास मान्य विष्य मान्य स्थान | द्वर वञ्चर से द प्यर प्रकट हो द पा । स्थित द विवास के सामना । दिरे श शुकार्म व गुर द सुवा वर पर्सी । दे न्यादनन्त्राम्यस्याउन् ग्रीस्य म्याद्यस्य ने न्यन में त्रात्व विस्यास्य स्याद्य स्याद्य स्याद्य स्याद्य स्याद ર્શ્કે દરશેવા વરા ગુવદ વધે : શ્રેુ અ.વુ. દ્રસાયા ગુવા શ્રે અ.વશ્વ વા ખદ દ્રમાશ્રે માત્ર વચા ક્ષમાં ગુર્વે છે. સુવચા વદ્દેમા र्क्षेत् चुँत् चुै र्वे प्राप्त प्राप्त स्याप्त स्याप्त प्राप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त क्रुव-५-७८-७मास्व-१८-८-१ मुन-५-१ याय-५२ कुव-५६मा अप्य-५२ कुव-५६मा समित्र'न्गित'न'न्न'। वावामित्रमासूत्र'न्तुन्माराम्। सामित्र'न्गित्र'निः मित्र'निः स्तिन्। साम्। क्रिंशः क्रुवः ५ : या प्रकेषः या ५ : या प्रकेशः क्रुवः विवादाः उत्यानी श्रासे दिस्र शास्य प्राप्ते वा स्वादा विवादा विवाद য়৻য়ঌৄ৻য়৾৻৴৸৴য়ৢয়৻য়য়ৢয়৻ড়৻য়৻ড়য়৻ড়য়৻ড়য়৻ড়ঢ়৻য়ৢয়ৢয়৸য়৻য়৾ঀ৻য়৾৾য়৻য়য়৸৻৴৻ঀ वीयावाशुराष्ट्रेरावाशुरयाय। वक्कुरारेयावायदाधिवार्द्यायकुराञ्चायात्र्यात्रास्ययाःग्रीयळंदानुरावायवारवींत्र ॱॸ॔ॸॸॱॺ॓ॱॠॸॺॱॶॱ୴ॸॱऄॕ॒ढ़ॱॾॆॺॱॻॖऀॱॿॎॺॱॡॸॕढ़ॱॻऻॶॸॱऴॕॺॱ୴ढ़ॱॺॱक़ॕॸॱॸढ़॓ॱख़ॖॻऻॱऄढ़ॱख़ॱॿऀॸॱॿऀॸॱक़ॕॱॺॾढ़ॱॸ॔ॻऻॱ भ्रःकेंशःशुःभःश्रेंदःत्रमःक्षेशःपःश्रह्नंदर्गेश। देःश्रह्णंदशःद्वदःषीःश्वेंदःतुरःदुःशःश्वुमःयःदवाःयःवाशःश्ववशः वीः वतः क्रेंशः रेक्षः वृष्ठिशः ग्रीः इत्यः दर्जे रः पृष्टः अवः रवाः इस्यशः वन्तिः अविश्वः अविशः पृष्टः । १३ स्थः पेतिः अर्देवाः वीशः निष्ठाः से स्त्राप्त स्वर्या स्वराप्त सामा स्वर्या स्वर्या से स्वर्या साम्बर्या साम्बर्या स्वर्या सम्बर्धा स्व देशक्ष्मित्रासक्षेत्रक्षा हे.चर्ड्कर्स्ट्रायमाळेवर्सेदेख्याम्चे.येशनबराजमा व्रवस्त्रायमास्त्रीरकार्स्नेट्रे. शुरायात्र । विवासागुत्राश्ची अर्केवा शुरारे हे वेवा । श्राया ववर श्ले वेदे यह वारे वाका द्वारा विकाया श्रुरका य

नस्य। सुन्रुव्यादर्वे द्राय्यादन्य। वर्षेरान्ये क्षाद्येष्य। देशवर्व्याद्यं वर्ष्यावे सेस्यावर्वे वर्षे नम् ननः हैं वा सेन् ग्री हीं ना वेंदाने साम्मा सामवरायन कुसमादेवा कु हिंदाने सामेवा सेन् वनसासेन् प्रमा वर्ने वान्गवासुनि स्रुटारु यार्ने रुयासुनायायाळे नयासुस्ययास्याराने स्रूटारु स्रूवासायासिन वेयायान्। स्रूवा समाग्राम् ग्राम् न्या स्वर्त्ता स्वरंत्र स्वरंत्र स्वरंति । त्या स्वरंत्र स्वरंति । स्वरंति स्वरंति स्वरंति स्व डे'प्परः बे'प्पॅरः नर्या । नर्हेन् मः कु'र्नेदे क्रुन् नत्नेन स्ट्रेन् 'छेमा'ष्परः । विसः स्टर्मे 'या मन्यसः मः स्ट्रमः नर्हेन् मः क्कु सम्मान प्रतित्व प्राचीय के। ने १ भूम खुद सें माने प्राचा श्रुप्त प्राची सें प्राची के खुम प्राची के प्राची के प ૡઃૹઽૹઃૹૢૹઃૡૡ૽ૺૹૢૢૣૣૣૣૣૣૣૣૣૹૹ૾ૹૣૹઽ૾ૹૣઌૹ૽૽૾૽ૼ૽૽ૣ૽ૹ૽૽ઌ૽ૡ૽૽ૡ૽ૺૹ૽ૢ૾ૼૠૡૢ૾ઌૢૹ૽ઌૹ૽૽ઌ૽ૹ૽૽૽ૢ૽૽૽ૣ૽ૼ૽૽૾ૢૺૹ૽ૢૼ૱ઽૣઌ૽ૼ૱ૹ૽ૢ૽ૺ૾ૢૢ૽ૢૢૼૢ त्रशत्तरःचित्रस्यापरःत्रम्यापःभुःचित्रेते अर्चेत्रत्रःचम्यम्यायः चेत्रसःदेशः चेत्रम् त्राप्तः सुत्रसः सुत्रसः यदे न्या क्षेत्रा न्दा क्ष्याया कुषा निविदा १९ यया शुः त्वर्या वया यया निक्षेत्र स्वाप्त मान्दा क्रियायायाये देयाया য়য়য়ড়ৢঀ৻য়৻ঀৢঀঀ৻ঀয়য়য়৻ড়ঀ৻য়ৼৄ৴ঀ৾৻য়ৼয়৻ড়য়৻ড়য়৻য়য়৻য়য়৻য়য়৻য়য়৻য়য়৻য়য়য়ৢয়ৢয়য়৸ড়ৢয়৻য়ৣ৽য়ৄ৻ रेयायार्वेरायायविवायायायाये। भ्रुप्तविदेशार्वेवायमाळम्यायार्वेमारेयावेयायायाराप्तराम्भ्रूरायार्वेदेश्वयाया सर्वे तार्यादर्भितारा द्यान्ता नुया कु नित्या सुन् ने यारा दया ग्रीया से स्विता प्रमान्तर विद्यान से स्विता स् *विदेशः* ग्रायः कें विदेशकें विदेश देशः दर्श विदेश द्री विश्वायः यह दर्श के स्टेश्च दिन्दे देशे स्वर्थः स्टा कुतः विदेशें हिन गै'भे'भेर्यान्तर्पराज्ञ विद्यायायात्रवात्रवानियायायायायायायाः । देरायराक्तुराक्षेते प्रवरावश्चाराविया ૽૽ૼૺ૱ૹ૽ૼૼ૾ૼ૱ઌૡૢૻઌૹ૾ૼઌૢૻ૾ૹૼઌઌૢ૱ઌૹૢૢૢૢૢઌઌ૽ૺ૽૽ૺૹ૽ૢૼઌ૱ઌૢ૽૱ૢ૽ૡૢ૽૽૽ૼઌ૽ૣૼઌઌઌઌ૱ઌઌઌ૽૽ૡ૽૽ૡ૽ૺૡૢઌ<u>ૺૺૺૹ</u>ૺઌ वर्दे के या थे 'रेग्न्य' थें।

ग्वित्राय्यारेयार्थेग्यार्थीःनग्वरळेंयाञ्चन्यासुव्दरळेंयाविःसर्वेदर्थेःनहेग्यायावेःन्वेयायाःवेर्गे म्ययम्बर्भः स्वर्त्वात्रात्वेत्रसम् द्रयासदेष्यासदे द्वीमः धेवासम् द्रयासमितः स्वरे द्वमानवे मास्य के माहिदेः ब्रेटानी त्रयायानर के यानाट एक दाया देवे सामकु दाग्री ह्या या स्यया या है। व्यः ध्रमाः व्यतः माशुसः (र्यानमुद्रसः ध्रमाः) व्रक्षः । त्रुः सः देः प्रस्रसः उदः मार्डमः व्याचिमः प्रदेशः प्रस्रः सम्रामः सम्रामः व ग्विराने भेरामदे इत्ये हुन्य विद्या मार्थिय। स्टार्के अविदे स्ट्रेटानु वहे ग्रमान्दा सहस्रानु हुन्य व्यापन स्टाया महिस न्या वेशर्शेन्यायि केन्यायि केन्यायि केन्याया कर्णाय कर्णाया केन्याया वेश्वाय विश्वाय धीत्रभूष्यः नुः विरुषः श्रेष्रषः चीत्रः चीत्रः पार्तेतः नुष्या वाल्वनः खुरः मुरः श्रेषाषः यः खुषाः यः वर्षयः गुरः हिषा वर्णयः र्ळेश मार मी के प्यर में मा सर सुमा द्वे द्व प्य मातृमार करा नत्त् है प्यने नर्श श्रुर मी द्वे मार इस श्रुर निव र्राची गुत्र र्श्वेर जुर कुन ग्री सेस्सर्र प्रमान्य पर जित्र जी सर्श्वेन साम सेवास गुत्र र्श्वेर प्रवर्ध सप्तर । गिर्यानुदे मुर्यायम् मदे मुग्यार्भेन्यम् र्रोन्यम् रामायाके। यर्रे हे सुनामरामके मर्पेदे सुगामिन्य विराधिमा

निक्ष भ्रेन्द्रश्चेत्रभेत्रभेत्रभेत्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभेत्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभेत्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभेत्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्याः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभवयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभव्यावयाः भ्रेन्द्रभवयः भ्रेन्द्रभवय

श्रेवाशःक्रेशःग्रेःश्रेवाशःयःग्रःनःग्रेन्दाः इस्या । यद्यः क्रुशःवासुद्यः यः रमः हुः विः विरः मरे निरं क्रू रः शुरः म। । यदे 'द्या'म १९८' श्रे अः द्र्यः मधे स्ट्रे अः अव्वर्धेरवे विरामिता विषय विषय । भूति । भूति । भूति । भूति । गुलानुसान्गान्दासी भीत्रम्यसान्दा विर्मे नागुना में इससाही उस नम् । व्रस्र रहः भूदः दुः नद्याः वी शः के सः नसूदः हैं। विः व्यवा सः से। । सरः गुर्-द्रमायापदे अवदर्द्रायहमायदे से समाउद वसमाउद गी देवर् **अट.र्चा.सर.क्र्याश्र.सद.शटश.क्यश.ग्री.ग्री.तसट.र्चर.ग्री.क्र..क्र.क्र.यह.** विवासम्बा देवे भ्रम्प्रम्य स्थाने के साम माने स्थान गुनःर्सूरःगुनःर्सूरःग्रे देयायायेग्यायायराग्ययायह्यासूराग्यदायरातु। इस्रभः नृतः । भ्राह्मस्रभः सः यः यन्तु वाःसे । नर्जे नः स्थानमः श्रूष्टः यः नर्थनः त्र्यः कें सः हतः कें वाःसमः न्नाः स्थानियः न श्चे व सदे से भारा प्यतः हो त त्र वे स्वार्धिक स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्व मुगन्धुगन्द्रन्त्र्यस्यायवस्य सन्ध्रात्व ग्राम् व्याप्तात्व ग्राम् व्याप्तात्व ग्राम् येत्याचेनायानम्दित्र्र्सूरानरातु। नद्नानीयाहेरस्रेदानयम्यायायदे नवी न सन् रा । न स्रव न न प्रवर्षे गुव त्य वा न सव न न । । विन स र हे न द्व व र्ह्म नवर मुन्यायायायी निश्चय प्रदेश्वेर में मेर मेर मुन्यया हेर मेन हिल र्य्यायानक्, श्रुँच.मी. कुथ प्रद्री अंचयान्त्रेषु भीचयातम्, त्रम् हुषु खिटा सूर्यायात्रा स्ट्रीयायात्रा अटया. इंशःशुःनक्तुन्सेन्द्रें शःश्रीशःन्तःसुन्। श्रुन्। सुन्निनःस्रोन्निनःस्रोन्निनःस्रोन्निनःस्रोन्निनःस्रोन्निनःस्रो

र्ट्ट्रिश्चर्ते श्वरात्त्र विश्व वि

चित्रमः इ. चतुः चित्रमः सुर्वः साल्यः स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य सुर्वः स्थान्य सुर्वः स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य सुर्वः स्थान्य सुर्वः सुर्वः स्थान्य सुर्वः सुर्वः

ૡ૱ૡૼૼૼૼૼૼૼૼૢ૽૱ૡૺૹૼ૱૱ઽઌ૽૽ૺૡૢ૱ૹૄૢૼૢૹૣ૽ૼ૱૱ૢ૱૱૱૽૽ૺૹૼઽ૱ઌ૽૽૱ૡ૽૽ઌૢ૱ૡૢઌ૱ઌ૽૽૱૽ૺૡ૽૽૱૽ૹ૽ૢ૱૱ઌ ळग्राप्तरावरुरामा क्रेंप्या क्रेंप्या क्रेंप्याप्ता व्याप्ता विष्टा प्रमाणित विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा *चुर-*शॅट-श्रुअ:पदे:प्रेमिश:प:प्टा प्यात्रश:वॅट-वॅप्टो गट-व:शेर-श्रु-त्याक्रमश्रामा |गट-व:शेर-श्रु-त्या ळग्राया । इसार्व्हेस्या दे सासे नास्त्र हिना । बुग्राया हिनाया में सासे सम्याने या । हिनाया मने यो ग्राया सहता यरःशुरा । पर्नेवःयःगरःविगःवर्शे नः इससा । वरःयदेःयसः ५ : यह् गःसहं ५ छेरः। । क्रें सः इससः वससः छनः क्रें वः यनेश । हिन्यानने येग्रायाहर्याय हुन। क्रिंत्याय वर्षे वात्र स्वया हित्र । क्षेत्र या उत्तर गुत्र ही दिन ही हिन |गर-विग-नरे-न-सरद-सहर-रेग । हिर-य-नरे-येग्रय-सहर-यर-कुर। । श्रुँन-य-गर-विग-ग्रुस्य-याधी [बुनायाः ग्रीयायम् वित्रायाः प्रत्याः गुवा । वुः गविनाः यविवः तुः ह्याः यश्चुद्याः देया । वितः यायदे । योगया यह तुः यद्याः युद्या |गरःविगःविर्मरःवरःवर्धेःवःधे। ।शेस्रशःवरःगुवःग्रीःहेवःग्रुरःवेरः। ।ग्रीरःदरःदशरःगवेवःग्रुरःधःदेश। । । । । यः य ने 'खे या शः सहं नः प्रमः श्रुम्। । या मः वियाः क्रें शः गुष्ठां स्वार्थः श्रुधः श्रुमः । या खंदः वि नः य याद्रः याद्रः अरः अह्रं याद्रेश । विद्रायः वदे योग्रथः अह्रं यरः क्युरा । द्ययः वे क्ये यादः श्री अः यथा । युवः શુયાર્સ્કવાયાર્ને ત્રાવર્ફે ત્રા સુત્ર કરા | નિંત સુત્ર સ્થિતા સુત્ર સુત્ર સુત્ર ના સુત્ર ત્રા માથે ત્રાથી માથે |ग८:वेग:क्रेअ:पर्याय:सम्बद्धाः | दिगाय:कंय:यड्य:पर्याय:याध्याःवेटः। |येयय:उद:प्रयय:उट:र्यादगदः देश। ब्रिट्-व्यः बदे-व्येवाश्यः सहदः प्रयः शुद्धः। बिहः क्रुवः श्रुदः वेदः वालीवाश्यः यः व। ।श्यः दवाः क्र्यः वुवाः वार्षे शःशुद्धः वैदा । वर्त्राधित्रः भ्राप्ते राश्चरायात्रे या । श्चित्रायायते । योवायायहत् यराश्चरा । क्रियाशी । विवर्षरायी वर्षे | प्रयम् अ। यदे । यदे व अ। या श्रुप्त अव । । व्रुप्त यदे । स्रुप्त या प्राप्त विष्ट । यदे । यो वा अ । स्रुप्त अ श्चिम् ।धिनःवर्द्धेवाःवारःविवाःसुःस्रेवायःग्रेन्। ।घसयःउनःक्ष्यःग्रीयःयसयःसहनःवेनः। ।क्षेवायःगुरुःन्वनःनुः

यक्षीटश्राच-व्यविश्वान्तरः संशिद्धः सूर्या । विद्यान्तरः स्वान्तरः स्वन्तरः स्वान्तरः स्वान्तरः स्वान्तरः स्वान्तरः स्वान्तरः स्वान्तरः

त्रै,योलट. व्रीका यट प्रहूट , व्यक्ष अव क्षेत्र , या क्ष



द्धाः न्याः क्ष्यां व्याः क्ष्यां व्याः क्ष्यां व्याः क्ष्यां व्याः क्ष्यां व्याः क्ष्यां व्याः व्या

बर्मावियः तायटः सार्ट्यतुः केशाः स्वयं शक्तवं स्वयं स

# शुन्याग्रुयावहें दायदे प्रो प्रश्नेद पश्चेत प्रदे कें ग

अश | वि.मू.यी.मे. भ्र.धे वे वे त्या पर्नरः भ्रुवमावाश्वमावहे वामवे प्रवे वाम्युवामा वा यगुर्वास्त्रित्कुषानवे न्वरासे देना स्ट्राम्य सुन्या सुन्या सुन्य प्रदेश निवे निस्ने व निस्ने निस्ने व स्व यदे र्झे धेव प्रमाये वामाया प्रभू प्रमार्हे वामाप्तो प्रभू व सुरम्पायमायमायके प्रदे ह्वामास्याव के प्रमायमास्य लूर पर्यात्र सूचा या कूर जूचा याला साम्राज्य सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध विष् मश्रम्भाराष्ट्रम् । प्रभायेत्रकेषानश्रम्भ्यायाष्ट्रेयायाम्येयानदेःनुभाशुःश्लुनशादर्वेदिःन्मे।नश्लेत्रेत्रिनप्यन्यम् सकूर्त्याक्चि.कुर्य्यत्वमा चर्चीय.ची.कंभासीर.धभाक्षेत्र.श्रयाता.क.कू.वा.सीर.परीया.च क्या.कं.श्रुं या.रीत्र.विभा व्दीःभूत्रहेषा दिः वित् भूत्रयात्राश्च्याः वित्यवे त्यो नस्ने त्युवः सूत्रायः स्थितः स्थितः सूत्रायः वित्रायः व वे<sup>-</sup>बे-सुश्र-देव-र्से-के-र्चन-पवे-दर्गेश-प-सर्केग-तु-के-च-पीव-पश-लेव-तु-येग्या नेते कु अळव ग्राम् धेवावा भुन्या सुराया सुराय हैव परे प्रोप्य सेवा विश्वासाने ने निर्मेद सर्वे ना ना शुक्षाया श्रुन्य ना द्या निश्वास्य निर्मा यरयाक्त्र्याचे यापार् रहुं राया क्रियामा वस्या उर् क्रि. नवे हेव र उरा श्चेतः सः वर्षा वर्षेतः दस्य सः क्षतः सेतः वर्षेताः सा ददः दर्शेतः से सुरः वा सेः ८८ से साधित मी पार्वे ८ समा से स्वामा सा से समा सुर ५ वर्ळटाकु नःश्रेमशया व्यव व्यव द्वा पुरसे दाया पुरसे दाया वि व्यव वि व्

क्रेंत्रायायदी हिन् ग्री नक्ष्र्तायाया हेत्राविषा या हेता त्या नक्षेत्रायात्र भावता गडेग नशुर्य पाय कर् कर् ग्री र्नो न न सम्बर्ध स्थय गुरुय पाये नश्रवास्थासे अक्रिया दिना स्था निया निया है। अक्रिया निया है। अस्य न्द्रश्रेंद्राची सूचा नस्यायश्रा वर्षा निर्देश स्था ने से स्था स्था ने से स्था स्था । वा नन्ना उना मी क्रेंव मा श्रमा का है उव एया मी नेव नु खुका दुः हा ना खुका व न्यून्यानिकायावरानिके स्रोते स्वापायायके निकार्षा स्वापाया स्वापाय निव्याणम्यापदे में महिम्दु स्वा हु हु निम्म नर्षा नर्षा सम्मे न्वीयायरायर्द्वरात्याः नेवातुः भ्रावाते यरया क्रया क्री राज्या हिता वया यर्यामुयायायायाविरासुन्यायम् वृतेत्तुर्नात्त्र वर्गेदिः क्री 'चायमा वरातमा केंदा द्वीत मी 'चा क्षेत्र क्षेत्र चा प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त विगार् हुं अरमर हूँ वर्ग अर अर कु अर के अर्दे अळ र नर माने मायर है। यार विगाः अर्थः क्रुश्रायः वे क्रुन्यः शुः शॅरः । । दे वे र्द्वः वर्धे दे र वे शे वर्धे हो । श्रे भी नित्र में कि त्र में स्थान कर स्था । भ्रु भी नित्र में कि नित्र में सित्र हिर्यर क्रेश क्षेत्र वश्चर क्रेंत्र पिते क्रुंत पिते क्रुंत पिते खा सहसा क्रुंस पित् क्रुंस या श्री शाया स्वापा महासा विश्व महासूत्र देव श्री विष्ट्रेत प्राप्त स्वापा स्वा मान्त्री त्यास्याम्ब्राम्य देव्या वेयमम्ब्रा नेवयदि सून्देया निष्ट्राम्य ५'वर्भ'न बुर हे 'हे 'शेर'वर्कें वे नर रुष्ठा अरम कुमाय हुन रा क्रिंशायायमा नगे। यनुत्रायायमानसूत्रायि ह्याम्यायायमानस्य सर्क्रेयाःमाश्रुसःश्चनशःयाद्रशःयहेदःहरः। श्चनशःयमेदिःनश्चनःग्चः म नर्जन भावना अन्य क्षेत्र निवादिया सुरा केला निवा केल केल नग्री'न'नुस'यन्दे'न्स्र'न बुद्दा हो हो हो देखेंदे'नर नु मृद्दा हो सहस्रास्य ग्री' सक्र्या-अरमा मुम्या भुनमा सुः सक्र्या । वर्ने नः कवा मः न नः न्या मः न सम् શુઃ અર્જે વા : ર્જે અ વ્યાસુન અ સું અર્જે વિ | ર્જે વા અ સ્અઅ : શું : અર્જે વા 'દ્રવો 'વદ્દ્ર વ वाश्चनशासुः सकेदि । नन्नाः हे सेन् वर्के वे नन् न् भूनसान् सुसावहे व र्यरायार्द्रियायायवे रहायी दिवासी स्वायाय हिंदा राष्ट्रा वियायवा गशुस्रान्त्रुप्तान्यम्याशुद्राप्यान्त्रेयान्तेयान्त्रेयान्त्रेयान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र नर्हेन्याहेशह्रेशह्रेशहेन्दुन्युवा निहेशमर्शेट्नदेहेशह्य केंगिते केंगित्रे पार्टे या द्वी या दि गशुसर्थेर् प्रमा र्गे वर्त वर्ष भूत्रम् शुसकेर प्यत् कर् भूत्रम् वर्षे मा नन्गःहे श्रेन् पर्सेदे नर्न, श्रुन्य मास्य यहिन परे ने निश्चेत् न वेशमान्त्रमान्द्रिमा नद्ध्यम्भमात्रुम्पुमार्थेषावेशमान्द्रमहि राधित राम्या नन्ना नहें न् राहें नामा न न मान्य म्या निकासिक्ष्या स्ति स्वार्थ स्वार्

देश्याच्यावार्य्य विवादियात्य विवादियात्य विवादियात्य विवादियाः विवादियाः विवादियाः विवादियाः विवादियाः विवादिय विवादियाः विवादियः विवादियाः विवादियः विवादिय

<u> शुःर्शेट त्र राणे मो श्वराचिया उत्राध्य एक एय के राट्टेश शुःर्शेश त्रा शे</u> गुर्दर्भविः वित्रुत्विर्भाताः अव्यक्ष्याः विक्षाः विविष्याः विद्रास्य । वर्हेगा नगे वन्त्र वा भुन्या शुर्ये दाव्या में या नु रा ही या नी किया नु ही व रार्ड्यायवरान्नो वर्त्रान्स्यासु स्यास्यास्य स्थान्य स्थित् होत् रास्ये। वर्ते हे यान्वेन्याने भुन्यादर्वेदे नक्ष्या चुः क्षेन् क्षेत्र सुन् क्षेत्र सुन् चुन् चुन् दशः ध्रुया प्येद 'यः वेदशः यः उत्रशः यायः के रहं यः श्रेयाशः विदः क्रुशः नेशः यर्स्स्रिं हेम्भूनम्दर्वसूत्र्वम्ग्वस्र देशः भूत्रायाश्वसः वित्राये देवोः नश्रेव-र्-नश्चनश्रामधेव-मश्चित्रायाध्याप्त्राम्याध्यायायायाद्वेव छे बेगनईन्नुन्वज्या न्। हिन्न्न्न्ययार्थेयायार्थेन्ययायार्थेयायदेने स्थर अ'र्गे अ'रा'णेव'राअ'र्श्वेव'णअ'राबर'र्ये'राह्माव'द्याद्याद्याद्याद्यो'रा'र्श्वेरअ'ळे' नशः र्र्भेत्रायसायः श्रुवार्याय नित्रात्। वहसान्धयः निवरं र्वेशः हे स्ट्रेसः सिव्याप्तर्म । गुन्न हुन्वर से दे प्याप्त विवादा । दे द्या गुन् शे हे रा शुःनन्नाः र्सूनः वेदा । न्नो नः विदे न्ना वस्य वदः स्नः तुः नर्से । र्सूनः सः सः व से न प्रते न सूत्र म न न । । सहया न पर्ने प्यम ह्या से दे न प्येत प्रत्य । न मे नःवर्दे भिरावर्त्ते नः सास्य । । निर्ने सामित्रे व दस्य प्रस्य विष्टुं नु नर्भे वर्भे नर्भे नर्भे के दार्भी।

## न्नो नस्रे व श्री स्वापायर्गे ना र्केना

न्वें यायया नेवे सून नुः क्रें व पवे सून वि स्व पाने का सून पाने क नवना से समान्य स्वाप्त रेंदिः देशायदर सुमा मार्स्र अपते विकामहेंद्र देवका सन्तर्त स्वत्वा सुमायह्वा हिन वयार्स क्षेरावर क्षेर नु व इवावया दें या या या र्यो । विन इयय निवे व क्षेत्र वी । नश्रेव ग्री श्रें या पर्वे श्रुन्य शुप्तें पर्वे पर्या ग्रेन ग्रुय ग्रें या विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व गशुस्राग्नुसारायसास्त्रे नाधेवायसात् विस्त्राम् सुसायित्रायदे गाटारु भ्रुराग्यर स्वानस्य भ्री शुर्दर वर्षेवारास्य म्यानस्य भ्री म्याया ३.ज.जूटम.श्रुट्रगटर्भ्यायर्जनाम् जूर्यास्थान्त्री.जूट्यास्थान्त्रीया नमा वर्षेत्रःचवे सूना नस्यायमा बराचाया सुनमा वर्षेता द्वीमा दे पार वहिना हेत्र प्रते खू त्या श्रेन्य राश्या वर्षि मः प्रते सूना नस्य त्यश क्रेन्य शे वुशाने। रराधरायिरायये पर्देवार्यस्य परिष्या । विद्या हेवा थे लेशाशुः विवाः श्रुविः यमः वुषा विषावाशुर्याः पेवा देशावः दर्गीवः अर्हेवाः यशिष्राम्रीभाविष्ट्रायदुःस्यायस्यायभाश्चित्रायशाः स्ट्रमाम् भुन्यासु सेंदाद्यायया द्वेदारा रें (वृष्टियाया भुन्या सुन्या सुन्या न्द्र्याला न्यो तर्वा भारत्या भी यश्चा श्रास्त्र व्या त्या यश्चा या वि स्त्र वि स्त् सूर्यापि द्वीं त्रमा से समाउत वसमाउत ग्री देव दु से पात्र मारि सुप्त यशयद्यामार्ट्यायामवे यह सम्बन्धा स्थान स्य वर्दे व्याया निवे वर्त्तर प्रिंद्या हैं व्याया द्वी व्यक्षेत्र ही हैं या पा तूर्या वा श्रुट-दर्गेश नश्रुट-गु-दमे नश्रेव-गु-र्श्विय-पाया वर्णान मु-सर्वेद-श्रेट-र्रे प्रश्न श्रुपि श्रुप्ति श्रुप्ति । प्रिन्स ह्रिप्र श्रुप्ति । प्रिन्स ह्रिप्त श्रुप्ति । र्शे नित्रा । भूनशायमें दे निवास में निकास मार्थिया । देशाया शुर्शाया भूना नशुरः गुःषदरः देरः अरः रुअः ग्रीः दनरः वी अः नश्चनः विः वृः विशः ह्वरः परः। ने सूर्वश्रुद्दान कुर उद्दान्ते विषय स्थूद्दान श्रुद्दान सूर्व स्थित स्य मेदेनम्बर्धरायम् नस्ननः चुःब्रानः सराधरास्त्रमः । द्विमामाम् सामा सरायराश्चराचार्गेवा विशामश्चर्यासाध्या विमासावसाररातुसाया न्यगान्यान्यान्युरः श्रुनःयाने वियान्नराने के त्या में राख्रान सूरानया नश्रूट गुःश्रूपाठेवा र्वं अशुट नाया श्रूपाठेवा द्वो नश्रेत् श्रूपाठेश नश्रुट नायाञ्चायन्त्रो नश्चेत्र ने मश्चिमान्त्राच्याच्याक्षेत्रान्त्रो नभ्रेत्। भ्रेः कर्मार्श्वे न् ग्रान्यसुरानायाः करमार्श्वे न् नम्नना गिविःष्ट्रःनशुद्रःनःषःर्धेदशःह्रगिषःदगेःनश्चेदःनठषःत्रःश्चदःदुःर्धेदःसःदेः नविव-र्-र-र-मिश्रामार-र्-रम् राय्यान् न्यान् । नश्रेव-र्-जात्र-र्-जार्थल-श्रुय-र-ग्रीय-ए-हेयाहिय-सिंग हैय-वह

व्यक्तिम्बान्यविष्ट्रिक्षात्त्र्वेषात्त्र्वेषा नर्ज्ञान्य न्या न्या विष्या न्या विष्या न्या विष्या न्या विष्या वियानश्ची नात्रापदी वयान बुदाक्षे है श्चेत्र पर्के वे नरात् मदानिष्या इययाग्री सर्वे ना यह या मुराया भुनया शुः सर्वे विदे निर्दे न स्वाया निर्दे न नः इस्रयः ग्रीः अर्क्रेनाः क्रियः श्रुप्तयः श्रुप्तयः विद्यायः इस्रयः ग्रीः अर्क्रेनाः न्नो वर्त्र वा भूनशास्य अकेर्दे । वर्षा है से दार्के वे वर्ष वर्ष वर्षेत्र नु नर्द्ध न स्थान बुद नु निर्मा स्थान स्थान में निर्मा स्थान में निर्मा स्थान स्ग्रायान्द्रित्यायान्त्रा । वियायम्यासुस्य त्र्रात्राम्या गिरुश्रामित्रेष्णराहेशाहेशाहिशा नद्वा मान्येत्रा नद्वा भर इययाग्री सर्वेग यह या मुराया सुनया सुनया हो। विहें द कवाया दर न्या नः इसरा ग्री सर्वे ना र्के रापा भुनरा सु सर्वे । किं नारा इसरा ग्री सर्वे ना न्नो त्र्वर्यः भुन्यः शुः यकेर्दे। । नन्ना हे श्रेन् वर्केंदे नम् न्नो नश्चेतः नु नहुन नम्भाग बुद नु नम्भाग विश्व महिशास सेंद नि है शासु हैं वितः क्षेत्रा वदी त्या नु या शु अर्थो न यो वित्त न यो स्व अर्था अर्थे वित्र स्व वित्र स्व वित्र स्व वित्र स्व प्यतःकरः भुन्यान हेरामा नद्या है श्रीतः वर्षेते नरः दुः द्यो नस्रेतः दुः वेयः यः नद्याः नईदःय। नईदःयशः म्बुदः दुः म्बेर्यः वेशः यः म्बिदः नहितः यः धेव प्रमा नन्ना नहें न प्रान्नो नम्रेव नु ले मार्थ के ना नहें न प्रान्त सक्रा र् हिर्चे कुर्यानि निस्ते विष्टे स्थान स्री देर हिर्चे से निर्मे निर्मे कर्

वर्गुर्रानाधितायमा न्नो नम्रेन्त्र वेमायवे भूनमासुरित् ग्रीमाभूत ग्वित्रासर्वे न्द्रा हिन् ग्रीयान्ने निस्ते त्राह्यास्य म्ह्रीतान्द्रा सक्रमः नुः निष्णाः नीः कुन् वाः निष्णे निष्ठे वाः निष्ठ सूर्यासदिः र्वेनः र्ह्वे स्थानः विदः हुः वावा के निर्मा है सार्या विदः स्थानः स्यानः स्थानः स्यानः स्थानः नेशयन्ता र्रेनन्येवन्तुः शुर्व्यस्र्रेनन्येव श्रीशया बुदः नुः वार्रेवः वेशन्वेशम्या ने धेन या विवाशया गुरुष्य मेरे धन है सा है सा है सा है सा वेश न बुर हे हे शेर पर्केंदे नर र् मर गहेश इसस ग्री सर्केग सरस कुराय भुन्याशु अकेरी विर्दे द कवाया दर ज्ञाया न स्यया ग्री अर्केवा के या था भुन्याशु अकेरी किंग्या इसया ग्री अर्केग द्वो पद्वा या भुन्या शु अर्केरी नन्गां हे श्रेन् पर्कें दे नम् नु न्नो नश्चे व नु न इव मश्या बु न नु न से व क्षेत्र नु न से व क्षेत्र न से व क् <u> न्यंब क्रियाने 'न्यो 'न्यो क्रियान्य प्राप्त 'व्याप्त 'व्यापत 'व्याप्त 'व्यापत 'व</u> ग्रिमाबेमावहूरी श्वराममानुवामा सूर्या नेमाव्रित् ग्री त्यो प्रीय प्रीय स्थित ग्री स्थाप सूर्या स्थाप स्याप स्थाप स याधेवा विवाग्राम्यानश्रुम्य स्वाधिव केवारी के प्रमुम्। हेराम्येग्या केत्रसं त्रु दान्य नशुदाद्वीय। नशुदास्य माने द्वा नहें साम इसम ग्रीयार्थ्यवार्वार्डेन्'सःस्वायाः स्थिन्'ग्रीयाश्चरयाः ने । स्थारवाः वीयाः श्वरः क्यात्रान् निष्ठान् निष्णा मान्य निष्ठा स्थान स् न्स्य-न्य्याक्ष्या हे क्ष्र-त्ययाक्षान्य न्यान्य वार्याक्ष

हे श्रेन वर्के वे नम् नुःश्रेया यार्केन या व्यवस्था श्वर विया पर ने प्रविव नु। वन्या श्रेट्यदे लेशनश्चित्रश्चाट्य श्रित्य श्रेष्ट्र श्रेट्य स्थित प्रस्ति स्थित स्थत स्थित स्थि श्रेवावार्डेट्रप्रश्रूट्याने श्रेवावार्डेट्रप्राय्या श्रूर्वेवायर वर्गेद्र्य । यद हेशरशुःर्स्त्रेनर्ने | हेशरशुःनक्षुनर्ने | हेशरशुःनकीनर्ने | वालवःपन्देः <sup>१</sup> भूर वसवार्थ पर न्वा वर्डे स्राय है 'द्वा वी साहै : श्रेट वर्डे वे वर द्वा साहित सा येव सन्दर्भ वर्देन स्थालें वा स्रम्याधे सामाना हुव नुः श्रुप्त वर्षेते करादरा वर्डेशायदे करादरा हिंशायर वशुरावावा सेदायदे वादश यश्रस्रम् वेवापाने निविद्या निवासी नि वयान बुरा क्षे हे श्रेन पर्के वे नम् नु सा ही वाम से वाम नि पर्ने न पर व्यवास्त्रमध्येस्रस्ति ह्वानुः द्वान्तिः वर्षुदेः कटान्दा वर्षेस्रसदेः करार्धे अयम् शुरायानवा से दाये वात्र अस्य श्रम्य हो यनु वे कराद्रा नर्डेश'रादे'कट'श्रुंश'रार'दशुर'न'नवा'सेट्'रादे'वादश'यश सुर'हेंवा' यर नश्चीर्दे । प्यव या भृष्य प्रति अ यस ग्रम्भ प्रति स्व वि स नक्षन या ला हे आ शुःर्क्षिन नि | हे आ शुः नक्षुन नि | हे आ शुः नक्षित हो | क्षित्र न्यंत्रः श्रेश व्ययः भेत् ते । विन्यः वेषायः वेष्यः वेष्यः वेष्यः वेषः वेषः वेषः वेषः वेषः नर्हेन्द्री

भुनशःवर्गेदेःनभ्रुनःगुःव। नगगःयदेःनभ्रुनःगुःदे। कंदशःयः

र्शेग्राश्वादियाःहेत्रायिः श्वायाः र्ह्हे स्यापित्रित्रायिः श्वीत्रायाः स्वायाः स्वयाः स्वयः स् शेशशास्त्र वाराधरासुरावायावीर् दिन्दि वास्तरावी शास्त्र वाल्व वेत्रत्नव्याः हिंभे द्रा द्यो व्यव्याः भूत्रम् सुर्गे स्वर्गा सुर्गे या स्वरं ८८। क्रेग्रायदेः मुर्ग्यायाः स्थायाः स्थायाः स्थायाः वर्षेष्यायाः स्थायाः स्थायाः स्थायाः स्थायाः स्थायाः स्थाय नरःगिनेग्रायःयःग्रायःयदेःश्रेय्याःश्रीयःभ्रुदेःहेत्।न्य्यायःयःयःयः नरःग्नेग्रायः प्रदेशा ग्री पर्ने भेराचव्या क्षे स्या स्वायः ग्रीयः स्र स्वीतः रायमानिन्यायात्रीयमानिन्यायात्रीयमानिक्षात्रीयम् रेव बर में कर मावयान रा अहेव धर वहें मारा श्रेमशास मुश्रास श्रम्याने गुयायमा गुर्नेया केयाया श्रुवया शुर्ये माया श्रीवाया नसन्दा बन्धमायनुन्यकेमार्द्धनः कदायायदार्के सन्मेवि सर्वे मार्थः नुदेख्तुः लेशनश्चेत्राने सुगान्दा नगुरः श्चे नुः नायश शहे वारायहें गा मन्द्रा बेट्रिन्धूर्यान्द्रा गहत्यस्यर्वेग्यान्द्रा क्रुस्र्स्य नशन्नो वन्त्र ही के व्य हिंग्य रेश से होन पर रन ह हुट नदे वाट बग गठिगाणवाकनात्राणमान्नो त्रुवान्गेवासकेंगान्मेशाक्षान्ते त्रात्रान्नेशा नश्चेद्राद्रमें अःभेदा रमः तुः हुद्रानदे में अः ग्रेः क्ष्यः नुदे कः भुशः इं अः पदः

र्देग'मशन्त्रे'न'दर्। भे'गर्डर'नदे'सुग्राश्रु'देर'न'सेग्राशनेद्धार् नशःग्रहरःश्रम्भुवःनःश्रीमशःश्रुनःप्रदेःनश्चनःग्रुःह्रस्रशःद्धवःनिव् त्रः नश्चनःमदेः भ्रें न्यायेग्यायः स्राम्याया श्वनः स्राम्यः स्रामः स् नहेव'या न्यायदे के या कुवान विवाधिन या गुना के या ग्री हे या शु वज्ञर नवि के अ अप न नवि प्रमा प्रमा से से से प्रमा से से साम है। पायान हें वायान करा श्रुन्या पर्मे विषय श्रुन्य मुन्य स्था विषय स्था निष्य स् न्वीया न्वो नम्रेन् श्री स्थारवि से सम्बन्धियाया से वार्यन्य स्वायायाय वुर्द्धस्य प्रामित्र प्रमानस्य स्थाने स्थानित्र मित्र प्रमानित्र प्रमानित्र स्थानित्र वुरावार्षेर्याथ्वाचीर्यात्यावन्याया द्यायार्थेयायात्रीर्याचार्यार्थे द्वीयाया ने नर्के न न में त्राप्त का की वाका क्षुनका वाक्षुका विदेश में त्राप्त ने विदेश की क्षुन की क्ष्य की किया विदेश विदेश की किया यायर्वेषायायायायर हेरान्षे छुवान्दरन्षे क्षेंदाष्ट्राची स्थित्या स्तर्भे स्थायान्दर्भे याया स्वर्षे यायायाया होत्र यर सहिंदाय पर्वेष प्रवासित सुना से वास्त्र सम्मान्य मान्य स्वेष्य मान्य सि

# नश्रेव गावशायव पाग न कु प्राये श्रें या प्राये गार्के गा

नर्डें अ: इस्र अ: ग्री: नक्ष्म न व्या के अ: स्वा विका स्व विका स्वा विका स्व वि नश्ची । गावन पर है क्षेत्र तसमा अ स नश्च नहें अ स ने नग मी अ है । श्रेन्द्रहें ते नम्नु अ श्रेन्य येन्य मन्ना श्रे के स्थाय श्रेन्य मन्त्र हुन र् श्चान द्राते वर्षे कर द्रा वर्षे अपने कर श्चिम प्राप्त वर्षे अपने वर्षे अप येन्दियात्रयात्रयान्या त्यापान्द्रा देवार्यदेश्वाद्रा वेद्याद्रा वेद्या बुगारान्दा कुवान्दावार्वेषायकेदावान्दा विषान्वसर्वेन्द्राकेवार्येन्द्रा नुसासाधित परि । वासा सुरसा है। नुसासाधित परि । वासा सामा सुर विवा श्रेन्द्रिः सासान्त्राची नरात्त्री साचित्रायाचेत्रायान्त्रा श्रीः स्टर्मायाञ्चीत्राया ८८। इत.२.श्च.य.८८। तर्येषु.कट.८८। यक्ष्र्यासप्र.कट.श्च्रियासर.पर्येर. र्रे ५८। १ अ.भ्रेव.राष्ट्र पि.चम.स्रेरम.पे.२ म.स.ल्य.राष्ट्र पि.चम.त्यस.स्रेर र्येग्।यर्।वर्गेर्ये ।यत्।यग्।वर्ग्निर्भं।वर्ग्नेश्वाय्यग्रायः न्याःवर्ष्यः इस्रमाग्री निस्तानायाहेमासुनार्ने हिमासुनार्ने हिमासुन न्त्री द्री विश्वाहेश क्रिंश विश्वाहेश विश्वाह महिन्न सह मा स्वाह महिन्न स्वाह स्वाह स्वाह स्वाह स्वाह स्वाह स

र्वेदेःगशुरःचवेदःचर्गेर्यस्या ।

### वेग के द गर्से क्रिंट गे क्रिंस राये द राये के या द या द में रास्त राये ह राय

७७। | मनःवर्ग्यस्थः क्रियः नःगुनः ग्रीः निस्थाः । व्रिःसदेः वनसःयः गुरुपान्त्रम् । विवाधिके द्वियार्थिक विश्वास्त्र विवाधिक विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास वर्गे द्रा विदेशमार विवासिहर अववस्थे दासवे सूचा नस्य दरागुद विवृत्सी हे शाद्ये मार्थ देश दरा ढ़ॺॺॱख़ॱॸ॒ॻॺॖॱॺॺॱॺॺॎय़ॼॎॖॸॱॻॖऀॱॺॱक़ॺॱढ़ॺॱॿॺॱय़ढ़॓ॱॸ॔ॱढ़ॖ॔ख़ॱॾढ़ॱढ़॓ॱॺॢ॓ॸॱॺॺॱॼ॒ॸॱढ़ॖज़ॱॸॣॕॿॱॸॖ॔ॱॺऻढ़॓ॸॱॸ॔ढ़॓ॱ भूषानवरानी भ्री में र्नानी शाने नामा केता में दिया श्री भ्री राहे प्रमान्ना नदे खुषा है। के मेर शामाना मेश सर्वे राज स ग्री:तुअ:देर:ब्रुअ:येग्रअ:पर:ग्रुअ। ग्रह्म:बेट:येट्:प्रेट्:प्रेट:यदे:अ:धुँग्रअ:शु:दर्गेद:सर्ळेग्गंगे:हेद:द्याय। प्रवट: क्रिंग्राया विटाक्यायर र सुन्या विटाक्यायर र सुन्या सुरायकी विद्यार्थर गवर दें न भून भून द्वा । नन्ग मे य ग्रुट क्न से सय न भे न दें। शिंग य नदुःन्याः वः नत्यायः प्यो । यदयः क्रुयः न्यः यस्यः न्यः यस्ति । नन्गामी अः हैं मा अः पर्वे ग्रुट कुन श्रेम । ने ट त्य अग्रुट कुन से स्थान से न र्दे। विश्वायम्यम्यम् मुस्यम् भूनश्चर्याः श्रेयश्चरम् स्थ्यानभ्रेत्वम् मुस्यम् न्यस्य उत्ति स्थ गवि:दग ।गशेगःसःयःशॅगशःसेदःसःदरः। ।यगःसवेयःसूरःसद्सः वैदुइदे। । मरामिवन यह सार्चे मामिका मुम्हिन से पी सर्वे मा रादे ह्या | द्रा मुस्य स्वाप्त न्या । मुस्य स्वाप्त । मुस्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वा म्नावासेना विसासियित्रावस्यागुवाह्यास्य स्वीतास्य विसासियास्य

नई'सू'र'इ'सह'वे'नृष्या प्रहाने'सह्यू प्रहाला न्हा हैं'नहें' नहें। अनुनहें। अनुने स्नहें। अनुने 5 नहें। अनुने हैं। अनुने हैं। अनुन र्ने के अर्दे राश्वामा मान्य विष्य अस्यासास्य स्ट्रा ने के का ना है सुन् वर्ष मश्या नर्गेव सर्केम मश्रुय श्री ननेव सन्दा अदय मुयान स्वार स्वार सेससन्दर्यसम्बर्धान्य हैन होत्र होत्र न स्वर्धान्य हैन। केंग्य न हेन लूरकाश्री क्र्याकाराष्ट्र क्षरपाबर कुष्राम् क्रूका मी र मिर्ग स्थानर <u> ५वा डेट नश्य मुर्ग स्थे विच पदे क्षेत्र मार्ग अपने प्रविद केट ५ मुर्ग हेवा</u> डेममानिविद्यास्य विद्या केटा । नर्र से प्रारानक्या से विद्यास्य सहिए स्वा । प्रेस स्यया स खुर्यापटान्वा सिव्यक्तराये । नर्डे साध्वादिरान्य राजव्याविरादिरा র্ব্রিলাঝানস্ত্রি:ক্রিঝানাস্থাঝানস্থানস্থানাস্থ্রীনানাস্থ্রীরান্ত্রন্থান্তর্বান্ত্রীরেমামাননামর্বি, গ্রীরাঞ্চা न्यस्वत्वारायस्म्रात्वा क्षात्वा है से दे से द्वा दे स्वाप्त के सम्बन्धा के समित्र क नशुः वा क्षेर पा क्षेर्य पा कार परि क्षेर विषय । प्राप्त क्षेर प्राप्त विषय । प्र श्रुवाधितः विवासाय विवासित्य । विवासित्य विवासितः विवासितः विवासितः विवासितः विवासितः विवासितः विवासितः विवासि उट्-च-१वाया भ्रिःवयवायः द्वो च इस्ययः यः ह्याधः स्टा विद्रस्यः यः क्रॅंट.चर.रं.जुर्माश.चर्चमाश.वशा विम्.ज.क्र्य.ग्री.वर्ष्ट्रर.जू.चर्झेर.च. ५८। १८५ग मव्य ५गे इसस न् न् स्वरं केत केत से र नर्शे। वेस संग्रस्थन



*च*र्त्र,यःक्त्रश्चर्यस्थानारःसेवायःश्वरःह्या स्रवाःवाशुस्रःचरवात्रयःह्वयःयःतुःचवेःवेवःवित्रःवाह्यःक्षयःक्षयः वयार्से श्रु राष्ट्रे वर्षसायायदी श्रुसात्। वारो वत्वा सेवासावसाय सावते सवतात्र सवसायते सेससा उत्त हससा र्चेनाः सः सेन् नः त्र सः नः त्रुतेः नरः न् र्र्धेरः प्रतिरः नः न् नः विनः नरः न् त्र सेनः नश्यः क्रीः सूनाः नस्यः पेनः क्रीनः ब्रम्भासेन्यमार्स्स्रित्त्रः वेद्याप्ता न्त्रम्र्स्त्रित्तान्यस्य दिः स्त्रित्तान्यम् स्वाप्तस्य विष् *न्*रा वन्नाभेन्यावन्नाः तुः यद्देवः यदेः क्वें स्वायरः वें स्यने देः सम्बन्धः यम्यन्ति वे स्वायति विवादिन स्वाय र्शेट दश अन्य स्थान स्था र्ट्याच्या स्वाप्त स्व ৾ঽ৾৾ঀ৾৾৽য়ৼ৽ঀ৾৾ঽয়৽ড়ৢয়৽৻ৼৢয়৽ড়ৢয়ৢয়৽য়৽য়৽য়৾য়ৢয়৽য়৽ড়ৢয়৽য়৾য়৽য়য়ৢয়৽ঀ৾ঽয়৽ড়ৢয়৽ড়ৢয়৽ৼৢঢ়য়৽ ग्रम् गर्नेन्यात्रमास्यास्यास्यान्त्रमानेत्रानेत्रानेत्रात्रेत्रम् गर्मिन्यमान्याप्त्रम् स्याप्त्रम् स्याप्त्रम् मायमान्ने नदे निर्मान्दे से निरम्भ स्यानदे देवायमादि सम्याधिन द्या सिर्मान्य से समाउव गाँदायदर नक्रे-नःश्लेशन्यन्यन्त्रुनःकुनःकुन्नन्त्रुन्ने निष्ट्रेन्ध्रन्तुदेःचेनानःकेन्निदेनम्बर्भेन्तुन्त्रीःक्र्यानन्तियन्यस्य द्यायर नश्चरमानेता वयायानश्चन द्यायरमा क्रमाया विष्या दे निविद्य दुः निद्या में भाग्य र द्यो निविष्य महेत् मी भू देत् प्रभावेषा पाळेत् रेवि र्ळे भाद्रा सह्या नवि भूनमा वदे र मुरा कुन हु से समान भू दिन स्थायसाया नभून'त्र'देश'सर'सदस्य कुरा ग्री'वें 'दसदर्भेन'तुर्भ। दे 'स्रे'त्रदर्। मृति'दर्भस्य दर्भन्य सुदे मृत्रस्य सुत्र য়য়য়৻ঽৼ৻৴য়ৢৼ৻৴৻য়ৢ৻ৼয়ড়৻য়ড়৻ৼড়ড়৸ড়ৣ৽য়৾য়ৣ৽য়৾য়৻ড়৸য়ড়য়য়৻ড়ৼ৻য়৸ৼয়য়৻ড়ড়ঢ়ঢ় ैंबन्यायायेन्यात्वयाय्वित्यविष्ठीः सबदाया<u>र्ह</u>ेन्यायाग्रीः वत्यनुत्रेयायश्चित्याये नवे भेर नवेत के र नु र्श्चिट नर दशुर नदे सम्बद्धान श्री सम्बद्धान सम्बद्धान न स्वत् । स्वत् । स्वत् । स्वत् । स्वत् । स्वत् । स्वत् रम्भेन्याडेयाः सुदेः यहेः

वनशर्वश्रुस्त्येव्यांत्रे सेंत्रायां से नवन्तु प्रवर्षे क्रिया निष्यं क्रिया निष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं वीयायात्रयायात्रयात्रयात्रयात्रयात्रये येयया उदावयया उदाग्री देवातु । यदा दिवाया पदि यद्या कुषाग्री वी वयर देव र्चे के हे वया ग्रह र्चे न यर ह्या देवे ही र दु कुया न ख्राय दि न वया यदि द्वाय ग्री ही वर्ष र हो गाया केव्रसिदेःवार्के क्षेत्रं स्वार्थः स्वरःवा व्यरः देश्यायः १०२ क्षेत्रं व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्य यःभ्रेमात्र्यासक्केःसप्यश्चिमायान्दा सुकाग्चीःमाश्चाय्यादेःक्केंन्यं साग्चीःनुदान्दान्यान्याः स्वासान्यायः नुरः कुनः श्रेयश्राद्यवययश्चर्यात्राचा । वर्षे द्याः शुः पार्थे व्या है : क्षेत्रः क्रॅंबर्ग्रेरेरविवरग्नेग्रथर्भर्ग्यवर्षेयायर्भराम्यायर्क्षे यरयामुयाहाउटालेयाक्षात् मूटार्सिकेत्री ग्रानाग्रयालेटाग्रेटाराग्रया या हिरावेराचा ररावी देवाहेशाशु विवाया श्रेरायर गुवाह श्रेराचा ल्रिस्सार्भुः बदःया धरः द्वार्यदे त्वाया वेवासः स्राधरः व्यायाः विवायः व्यामा येगमारम् इसामर वें या नदे ने सामन उत्ते निया मे सामा उव वस्र र उर् ग्री देव भ्री भ्रेम सव सम् ग्राम दे भ्रेम दिया में या नम् ग्री सव सम् ग्री सव सम् ग्री सव स्व सम वरि:धिर:प्रा अपो:भेर:धर:ग्रु:वरि:धिर:प्रा वर:भेर:धर:ग्रु:वरे:धिर: ८८। बटाकुन'ग्रे'सेंग्रा'ग्रे'केंश'क्रांस्यर'पेंटरा'सु'हेंग्रायर'ग्रु'नदे' धेरप्रा व्याव सेरप्य प्राप्त प्राप्त हैं ग्राय प्रे व्याप्त हैं ग्राय प्रे प्राप्त हैं ग्राय यर ग्रुविर भ्रिर वार्शे र्श्वेर प्यर प्रवाधर सम्दर्भ ने विवर् । यदवा श्रेर वर्रे वेशन्त्री नश्चारा न्यावर्रे दशन्त्री हे श्रेन्यर हे सारा

न्यामी निर्देश के अअअ उदा श्रिअ उदा मी दिन मी भी स्थान र मिर्स में स्थान नवे भ्रेरप्रा में वानर मुनवे भ्रेरप्रा सुनो से रामर मुनवे भ्रेर र्धेरशःशुः हैवाशः धरः ग्रुः विदेश्चेरः दृष्ण व्यावः सेदः सेदः धरः प्रदारा विदेश यदे नुर कुन देश यर हैंगश यर नु नदे नु र गर्श हुँ र जर द्वा यर न्नर्नित्रित् विशयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् विश्वयम् र्बेसामार्बेनाचुरास्रुसामदेन्त्रायमानर्बेस। नेत्रसास्रमानन्त्रामान्त्रमुत्ते चुराकुनाग्री सेससाग्री गुत्रह्मेरामासया नहनः स्रे| हे : क्ष्रूरः क्रें दः क्री : न्वा नर्डे सः सः क्स्य सः क्षेत्रा या वें न्रः स्वा या स्वा यो : हे सः क्रें न् : वस्य सः उन् श्रूट्या:बिटाधीटाधीयादी:द्वाप्ययाञ्चरावेवापादी:प्रविद:तु:प्रूप्याचीयाः ग्रूटायेस्ययः उदःश्रयः उदःशी:दिद:तु: हेशः श्चेॅर् दे दे स्थयः हेद विया यदियायी चर द श्वर्याद्या वस्य च्युत्त श्चर्याय स्वृत्य विद द च्युत्त स्वर स्व नुष्यसम्या नेटावमार्सेयायार्सेट्सी मुलेटा ।याववरमी र्वेट्सपटासूटसी मु। रें हेर नक्षेत्र पदी | कर दें पेंट्य शुः श्रूर नर हा | वि स्व के यहें से हा विरा । ने नविव न् राया धिव निय विश्व या । वि न निय के व न निय निय न ८८ सुर्भेग्राश्चर वर ह। हि क्षर ५ मा वर्षे या हुन । श्वें मा गर्वे ५ त्या र्शेग्राया अस्त्रा । दे निविदार्श्या गर्डे द या से ग्राया सुरा । सुर से द स्वर क्रवाशुरार्वेवार्वेवा श्विवावश्वायारायविवायायदेवाहेवायेन। श्विदायये सर्हें प्रशः र्रेषा विश्व विश्व विश्व विश्व के रःइःम् अःदृः भुङ्कः अद्ग्यञ्चः वेः द्वुः वेः दे। इः मः इः म। अः अङ्ग अः अः र्शे. में . हें . तं . त्रें दी वेशक्षता विश्वास्त्र में स्वाची या बेर शायव हे र या हे या निश्वास ग्रें :ळुवा:विस्रशः क्रें दासे दा हिंदा विद्या विस्रशः इसामर द्या दिन्य विस्रा शेसरासेन्यते रहेवा विसरा ग्रीया विषया विसराय रेवा हिता हैवा राष्ट्रिया विसरा विसराय रेवा । डेशःशॅम्थानर्ष्ट्रें नान्दर्श्चेत्राययाग्चीयायवयानम्बदायमाग्च। यने दी न्दर्रिनाम्बन्ना सुयाहेत्राग्ची नुदर्गः योत्रा क्ष्याम् इ.सूर्यासाल्ययाची। धारापुरीयाच्यात्र्याच्यात्र्याच्यात्र्यात्र्यात्र्याच्यात्र्याः धाराप्राप्ताः सूर्याः स्थान्याः वाशुक्षाग्ची न्रेयोग मह्मायोग मारा नर् क्षेत्र केटा नर्रे भागावे क्षेत्र मायोव केवा भूनमा क्षेत्र न्वेद माया स मर्थेय। हे क्ष्ररः श्रृंत्रः ग्रीः श्रृं मार्था प्रह्मा में हेट त्र श्रृं मार्गा हेट हे शर्शे मार्था हे शर्हे शर्हे शर्हे शर्हे । म्बितः सहमा स्वरं ब्रुट्याबेदाद्याकेदावनाम्बेदाने न्यूट्याक्षुटाक्च्येतायनामी म्यूट्यादे सहित्यमा क्रु**यां विस्त्रा** यार्डेमा ने प्रवित्र माशुस्र मेस प्रवित्। विश्वास्य स्था अप्रम्पस्र अप्रम्म अप्रम्म अप्रम्म अप्रम्म अप्रम्म अप्रम्म भ्रम्य स्था म्या मार्थित होता हिता होता होता होता होता होता मार्थित स्था मार्थित होता स्था होता होता होता होता इस्निन्नो वन्नास्य वित्रास्य वित्राम्य वित्रामन्त्र। स्री क्षित्र सम्मिन्न स्त्राम्य स्त्री निम्ने वित्री स्त्री स लय.जवा.यबु.रटा श्रीम.जवीर.की.स्वामासम्बर्धरायाः स्रीट.यदु.लय.जवा.रटा रग्रीय.सक्र्या.सक्रूट.स.स्रायामः क्रॅंशःध्वःचीःन्वेंशःयः सेन् प्यनः र्केन् प्यवायः स्वायायः रेवायायः रेवायायः रेवायायः रेवायायः स्वायायः रेवायायः रेवायः र्में र नग र्र क्या या या स्वाया यह नयस म्या स्वाय वर्देग्रथःसन्दर्। खुर्यायाद्देशः चुर्यासः श्रॅम्याश्चर्देदः सम्बन्धदः श्रॅम्याशः श्चेदः नवेः प्यताप्तदः। दर्गेशः हेत् श्री शित्र स्वर्धि वश्रेत मात्र श्री वश्रेत मात्र श्री श्री स्वर्धि स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्धि

नश्रमानि । त्रित्तामा । त्रित्तामानि । त्रित्तामान

ह स्ट्र-प्राचन के त्राक्ष के स्व प्राची के प्राचन के त्राक्ष के प्राचन के त्राचन के त

स्त्रमः त्रज्ञभः तुः स्रे पद्भेतः निर्मेष्ठेतः निर्मेषः सम्याने निर्माणाः प्यानः स्त्रमः स्रोत्रमः निर्मेष्ठः न बेगान्स्रवन्त्रस्रस्यान्स्रोन्द्राचेगान्स्रवन्त्रीःद्र्यान्द्रावन्या वेगा केत्र पुरशेसश नश्चे प्रवासे वा केत्र ही। বর্ষার্বির্যার ইবাক্টরাবার্মার্ট্র নির্বাই্ষানাক্লনেমার্বার্মারার্ম্রার্বার্মার্বার্মার্ক্রামার্ট্রামার্ক্রামার্ दब्धानु देशायम् दब्धुन र्वे । दिशान्य सम्यास्त्र साम्री विश्व सम्याने प्रति सम्याने सम्याने सम्याने सम्याने सम रुटःनशः श्चुटःग्रवशः न्दायः वर्त्रेयः नदेः भ्रुनशःग्रविषः रुद्धः स्वः त्वुटः ग्रीः श्वें सः सः नृटः ध्वतः से व्यवः प्रस्यः स्वरः ग्रीशः न्नः अवअः हेतः म्रीः इतः पुःर्वेतः पुःरावेतः क्रें माः यवेतः न्नर्यः त्रयः त्रयः म्राहः न्वयः विषयः विषयः विषयः ल्यं स्थान विष्या के त्रीत के त्रीत के त्राचित्र के त्राच विगास्त्रेन्डिं साम्बुन्सान्दासामबुन्सामी न्वन्यो सामने सुगामी विद्यसानु सावर्केवानमावशुन्यति स्हुंवार्मी नविदःश्चेशन्दा नगे।वनुदानश्चरःगे।हेग्यानाईन्।श्रेग्यानावनुवानावाना सर्दे।श्रेष्यानाकुःमार्श्रेग्या ष्यभःहे ः सूरः वज्ञुदः च ः इस्रभः रेषाः परः ज्ञुभःषा देः क्र्रेषः क्रेदः परः दण्यविद्यात् विद्यात् विद्यात् वि र्वेन। सहस्य नर न्याय नवे सरसा क्ष्या ग्री नसूद पारेद में के न्य दे सहस्य। सर न्या पदे न्यो पदे नये न्ये स्थि यित्रेत्रः श्रीः अर्थोत् रश्रीः भेत्रा सुरः देन् रश्रीः यात्र या स्वतः सुर्वे र्पेया सुर्यः से स्वयः सीत्रः रह ग्वन ग्री र्ने न ग्रेश ग्राट पट श्रुव जुश प्रदे ग्रवश भ्रवश पुर उंश प्रव ग्रिव गर्श विवा हे र प्र प्रदेर र्ने व छुवाःक्ष्रेरःवेशायराविषाःगोशाःहेदाःश्रळदाःवर्वाःवे हेर्रः चुवेःश्चरःवशायाः श्वॅरः नुःव्यंगाः पवेः र्वुवाः सविः इवाःक्ष्रेरःवेशायरः चुश्चर्वश्च चुःश्चाःवार्देदाः छेः नविः हश्यशायेदाः वदिः क्षुः चुःवाः छे दशाः ण्याः स्व्यं

व्यात्र स्वर्ता । । व्याप्त स्वर्ता स

#### नुरःश्रृं अः तुरः तुः यो तः खुं यः नीः कें या

७७। | वर्से गु.री च्राः क्रवासे समा निष्ये स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा यदे खुवादी अवसासे दार्से के तारी मा दे न क्रेन हैं दान स्वर्दे दाया थे मा नुस्रशःस्यायाः स्टर्शः प्रदेशान्याः नद्यन् । वयन् प्रसः देनः नुस्रस्य चुर्यान्य। विवायान्द्रान्यान्द्रवान्यान्यान् । विद्रान्ताः वित्रान्त्राः नश्रुं। विश्वाश्रुद्यायाष्ट्रम्। येययानश्चेद्राक्षेत्रायास्त्रम्। येव क्षिया प्रति । वर्षे द्वार प्रति । वर्षे या प्रति । विव प्रति वर्षे या प्रति । वर्षे या न्दानिविष्यम् न्दार्भिते हेते ग्रुट्क्रिनायमा श्री देसामित प्रिंद्स देन स्थान र्श्वेन'वह्गामी'सेसस'न्रसेन'रेस'ठन'र्'पेन'वेट'। र्वेम'सर्श्वेन'सेसस' ळॅॱग्रथःन तुरःनःथःश्चेॅरःन्र्रेशःसह्गाःगशुयःग्चेः।ध्रमाःयेदःग्च्रयःपःहेदः गहेशसदेख्याशस्त्र न्यामर्गेट्या इस्राम्य गुःस्या गुःस्या गुःस्या नश्चेत्रअर्केत्रमः विश्वाम्यायायायायात्रम्यवे सुमायोव न्याये विश्वास्य विश्वास्य हें में हे दे सुना न वे अ सूर र्श्वेन पहुना गाहे अ रे अ उन नु न बु र न दे खु य या विगायमः र्सेन सेसया कें गया येन ख्याने। सेन प्रेंन में सिन येवावा अळवाकिनान्याध्यापि द्वापा स्वाप्ताध्यान्याध्यान्याध्यान्याध्यान्याध्यान्याध्यान्याध्यान्या नु:मुना:नाशुस्रावळवाने:धन्यना:ननुन:धास्रवा:पा

नुसर्से नापसरमंदे भ्राट साया न द्वासा सदसर्हे ना सुर ५५ ना ग्राट सुर नमा वयार्से शुराने जिरा छन ग्री से समान श्री राम दे रे निर्मा गर्मे । क्ष्राम्याद्याची । श्रियाद्वेत्राद्वेत्राचीद्याः श्राम्याद्वेत्याः है क्ष्राराह्येत्राची है प्रमार्थेत् ची है प्रमार्थेत् च है प्रमार्थेत् च है प्रमार्थेत् ची है प्रमार्थेत् ग्नेग्रं पर्ना पर्वे अपाप्पर प्राप्तर हैंग्रं प्रदेश्यर अप्राक्त अप्राह्म ८८। यह क्रिन से समाद्र प्रतासे के ते से साम क्रिन से साम समारी मा यन्त्राचित्रन्त्र नन्याः भेरः वद्दे विश्वानश्ची नवरः भ्वेतान्येत् श्चीशास्त्रान्य सेनायाः यट्ट्यायर्ह्यायाये न्याया क्षेत्र प्राप्त विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य इंशः ह्रिंशः ह्या दे द्वरा ह्या सरः सुनसा सुरद्ये नाया वसः सुद्यायमा से खूँ या नायी से सम्मानीया विस गुश्रुद्रश्रादाःक्षेत्र्य देग्क्षुःतुत्रेग्वस्रसायस्य प्रमुश्रात्रस्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य शुःग्रस्या नन्ग<del>ाश्चरदे</del>लेशनश्चीःनन्स्रादनेत्स्रान्त्रान्त्रान्त्रा ळुन'श्वेद'र्से'य'सळेश'ग्रे'नर'त्'म्द'ग्वेश'हसस्य'ग्रे'सळेंग'सदस्य कुर्स यशिया नन्यासिरायने विसानशी नःनुसायने वसान स्रामे हो से निसान क्र्यःश्वेदःर्ये त्यायके या ग्रीः नरः दुः के या द्वाया ग्रीः यके वा विः नः वर्देदः कवायः ८८.येत.यदु.क्र्अ.स्यमातासीयमाशी.सकुत्। श्रिय.टेस्य.टेस्ट्यूटमाशी.

गर्रेषा नन्ग भेरक्ते वेश नशे ना नुश क्ते व्यान सुर हे से नुम कुनःश्वेदःर्से त्यः सक्षेत्रः ग्रीः नरः दुः र्क्षेत्रा त्रा स्व स्व त्रः श्रीः सर्केता त्यवा त्रः या ग्रीः कुनः से ससाद्मादा श्री मासी विष्या प्रदे द्वी वित्त स्मारा विष्या सुन सामा सि बेशहेशनर्ह्स्यायह्म्याय्याम् प्रस्याम् प्रस्थायां विद्या यसः स्वार्याः विद्यानासे प्रस्तिना स्वार्ये । स्वार्ये Àस्रयानभ्रेत्राच्याचीयासे केंवापम् अस्याने चित्रक्वासार्वेनाची वर्षा वातृतावरावा बुतावराचित्रसूत्रा यदे नमसम्म भुगमा इया में दिर नह मार्श्वे द्रायस स्म महम निमाना है। विमाना निमाना मिता ना स्मिन য়ৼয়৾য়ৢয়৻ৼৼয়ৼড়য়য়৾য়য়৻ৼয়য়য়৻ঽৼ৻ৼয়ৣয়৻ৼয়ৢয়৻ৼয়ৼয় रु'गर्रेषा नन्ग<sup>भ्रद्द</sup>लेशनकी नगा क्रेन्टिन्ना क्रेन्नावदन्न ग्वित्र'न्ग्'तु। श्रुत'रादे'र्र्र प्रवेत'न्र्। कुष्य'विस्रर्था श्रुप्र'र्मि नर्झें समारावे रहार विवासी रामे रामे स्थान में माराविक राम रहा नश्चित्रप्रमञ्ज्यानर्दा नश्चित्रायायाहेत्राशुः धेत्रस्यवेर्वो नवेरहानः क्रियायायवे यह या मुया मुयाय हारा वित्र या के तर्थे त्या मन तर्थे निष् कुनःशेस्रशन्द्रवादे केत्राचे स्वर्भा क्षेत्र सेन्य । स्वर्भन्य । स्वर्भन्य । स्वर्भन्य । स्वर्भन्य । नग्री नमाग्रम नुमायमे नमान बुमा हो हो हो नुमा हुन हो मही मान स्थाप करें

ग्री:वर:र्,क्व:वं:बेर:यं:पर:र्वा:यर:ह्वांश:यदे:ग्रुट:ळुव:ळेव:यॅ:वः शेशश्चान्त्रीत्रा शिश्चश्चात्र स्थानश्चरान्त्र । नगुर्दे । अ'ग्रेंव'न'इसस'न्ग्रेंव'नर'नगुर्दे । न्न्ग्रेंस'संस्थरा ८व् १४४ १८८८ वर प्रमान्ति । विश्वयम् माशुस्य म्हेर श्वा स्वरम् शुस्य प्रमान् से स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्व यर नच्चीर्ट विश्व नहें न प्रति भ्रम्य श्रा श्रें द्वारा श्रेयश्व मान स्थित हो न प्रति । विदे ही श्रें या न स्व ल्रिन्यदेख्यायाध्येवाया वायाहे र्स्स्यान्येवाया हेवाची हेवाची नुमानुस्यायस्यायार्स्स्यायार्स्स्याय्या व्याते। श्रूमप्रम्म्यम् वर्षायार्थयायी सम्यास्य सम्यास्य सम्यास्य सम्यास्य सम्यास्य सम्यास्य सम्यास्य सम्यास्य वस्र अर्ग स्थान विष्य स्थान विष्य न स्थान विष्य न स्थान स्था गर्सेषायदेनसात्रदानी स्निनाद्में त्रीया विसाधार्दे राते। यद्या स्वर्वे विसा गर्रेण वेशस्य नश्चरत्र शहेशन हें शहेर संदेश संभाग न्य नशक्षण न्य नुसार हें व हा ह्या क्ष्मा के अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु कि विकास के स्था विकास के स्थान कि अरु अरु अरु अरु अरु अरु अ गशुसन्दा ग्वित प्यत्यक्षें क्षेत्र क्यायर द्या यस सक्य सञ्चर्य स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र

त्रियो सुत्रास्त्र स्वरास्त्र स्

वह्रमार्शेश्वराक्त्रीं म्यान बुरानाया वह्रमार्थेशायेदानमें शावीता नेवे क्ष्यादी मार्थिया वरेनशान्ता सुनशावर्षे ર્શેનાયાર્શ્યેલ વર્શે :શ્રું માનવે :ર્જે ના ફ્રયયાર્શ્યના સુમાગ્રુયાન યાને માના નાને સ્થયાન ગુમાનવે :ર્જે નાવે :ર્જેના :શ્રું મા क्षे द्विनायान्य दुः तान्तुनायान्य देश्यम्य क्रुयान्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स् वस्र उर् दर्। क्रिन द्वें दर्गे दर्श मुर्ग वर्ग से दर्श वे रान ही। नशः श्चे नायदे दर्भे नामान्य दरमान्य द्या ह। श्चे व संदे स्ट नानेव ५८। द्धयाविस्रश्राभी स्टानविदान्ता नक्षेत्रस्य स्टिस्टानविदामी प्रमा नदेः इन्नानन्गामे अन्नम्भियान्। नम्भिन्नु नम्भियान्। नम्भिया याहेशाशुणि स्टानवे नवे नवे समानेशा हे क्ष्र रहेन शुने नवेन या नेवाश रान्यान्य्राम् प्राप्तान्यम् क्रियायान्यः क्रियायान्यः क्रियाम्यान्यः व्या केंद्र'र्य'य'र्न'हुनवृग्रथ'रवि' जुर कुन'र्ये अर्थ'र्पव केंद्र'र्ये इस्था ग्रीय' व्यादा से दारा प्याप्य स्ट्रिया साम से स्वादा स श्रभागी र्श्रमान बुदावश र्श्वे दाया सुनया में के द्रमयाया है प्रमानक्ष्रनाया ने निवित्ता नन्या सेर पर्ने वियान की नया ग्रामा नुयापरी व्यान बुर है द्रश्चर्यक्षश्चर्यक्ष्याद्वर्यक्षर्वित्वर्यक्ष्यविष्ठ्यः विष्यद्वर्यक्ष्यविष्ठ्यः विष्यद्वर्यक्ष्यः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः

नश्चित्रत्रभ्यान्त्री निःवः निःवः वित्रः स्वितः स्वतः स

वि' ग्रेन्' मध्य । श्चर्म ग्री अर्केम ग्राम प्यम प्यम प्रमास मिन न्नायाणी विर्मे निर्मायिक वार्मित विर्मा विर्मे निर्माय विर्मे निर्मे नि वर्ते वर्षा । श्रुवानर हो दारि श्रुवान प्येता । वर्ते निर्देश स्वापित र्भयानदी सिस्रार्गी ह्वानान्य निरामाधित । वर्गे नदे सी ने सामना मेन निष् न्दीरावदीत्रिः अः केत्रः संधित्। । न्यः के सः देः सः नशुनराः पर्या। । सरः चि देराम् स्ट्राम् स्ट्राम् स्ट्राम् स्ट्राम् स्ट्राम् स्ट्रम् स्ट्राम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् स्ट्रम् नन्गानी या हे नामाने निवाहा स्रायाना नवना विनाया सर्वन विष्युसाम दे निवादा हैं निमान करा है। यही स्राया व्ह्या नेटर्र्यानन्याः केरव्ययातुः विन्। विष्ये धिः श्रेन्यायेवायायरः विन। निः र्रट अटश क्रिशरेग्रिश शिश्री । अटश क्रिश श्रुश शुर ग्रुर हैं। । ५ दे नन्गामी अरिः त्यारी या । देगा यर दर य श्वर पदे त्यय न इयय है। श्चित बेर्न्स्ड्रुव्सिटे सेवार्यं वर्षे त्या हिंवास्य के त्यु स्ट्रेस्ड्रा विद्या वीर्य दी । नर्र्नान्रे त्यासर्वेद्रान् र्वे साबेद्रा श्री । व्यान्ता व्यासेद्रा स्थान न्यायः न्यः श्रीया वियान हिना वदी व्याहे यान हे या हो ना हे वा श्री श्री हे वा श्री श्री विया से वा स्था से वा स्था से वा से व शूर्रिय । श्रुरायाक्ष्रयायर से दाया थ्या । विष्ट्रया विष्ट्राय से या विष्ट्रया विष्यु विष्ट्रया न्त्र वित्राम्बुसन्दा नर्से ह्रित्रे सेन्य स्ट्रम् हिर्दि।

चर्चर-चदेःक्ष्याचरे यस्यम्भागश्चरमान्ध्रस्य छेर्न्। हेर्न्छे द्वर्र्ः दुर्न्यसःस्र्रास्त्रम् छ्याने। सासेससः ठवःवस्थारुन्ग्रीः र्नेवःन्धुरन् । अपन्तिषार्यसः र्हेषायायवे यस्या क्रुयाग्री ग्रीःवस्य वर्षेवः यस्। व्री देवे श्रीरन् <u>२ूबायदे व्यानबुर क्षेटे बेट व्या कृत क्षेट वें या सकेश ग्री नम् ५ कुया ब्रब्ध ग्री क्षें साम बस्या उटानबुर व्या</u> र्श्वे दिना स्वयमार्था के स्वयमाया निष्ठा त्राया निष्ठा है मार्थी स्वयम् विष्ठा विष्ठा है मार्थी स्वयम् विष्ठा है मार्थी स्वयम स्वयम् विष्ठा है मार्थी स्वयम स्ययम स्वयम स्ययम स्वयम क्ष्यायदेश्वर्थायद्राच्यश्वर्थायद्रयाक्ष्याक्ष्याच्याः व्याच्याः व्यायः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्यायः नर्वेर्यायम्यम् सह्तान्या । हे स्ट्रम् स्वानी प्रतिष्य में या । नि कुन मुन्न असे न भेर निर्मा । जुर कुन से समा निर निर्मा । निर न्यान्त्रेयानविवायव्यानाः सून्। । नन्याः यहारवर्षे त्यासवः हेवः न्। । ग्रहः कुनः शेशरात्रे नश्चेत्रात्री वित्। वित्रक्ष्य शेशरात्रित्र तश्चराया विश्वाया नवितः न् नक्षानः मन् नक्षा विश्वयम् मश्रुयः महिनः स्वार्थयः स्वर्थयः स्वार्थयः स्वर्थयः स्वर्ययः स्वर्थयः स्वर्ययः स्वर्ययः स्वर्थयः स्वर्थयः स्वर्ययः स्वयः स्वर्ययः स्वर्ययः स्वर्ययः स्वर्ययः स्वयः स्वयः स्वर्यय नमसःस्। |देवमा देटर्स नद्या कें प्रमुक्ष मुःस्पि । विकास्मानम् विकासमान 

योश्वर-प्रदेश्यान्त्रियान्त्यान्तियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त्रियान्त



ययर। इति.चिर.क्र्वायमार्ममायम। देग्ह्रमार्झ्र्वायवे मेम्रमार्भ्केत्रमार्भ्केत्रमायार्भ्यम्भवायमान्। नःवाक्षे क्षेत्रायाने प्यमानुस्रायाचे क्षायम् वम्यावे खुम्यूम् इम्यायाक्ष्मायत् पित् के सेन्युम्। য়য়য়৽ৢঢ়ঢ়৾ঀ৽য়য়ৣয়৽য়৽য়ৣয়৽য়৽য়ৢঢ়৽য়৾ৼয়৽য়ৢয়ড়ঢ়য়৽য়ঢ়৽য়য়৽য়ৢঢ়৽য়য়৻ र्श्वे द्रायायायश्चरायम् ग्रास्थे वेशन्ता क्वेंबन्देयन्तर्ये प्रकाण्या ने क्ष्राक्षेय्यानक्षेत्र निरक्ष्य केष्यान्यवानम् । म्बर् से एर् यानर ने सर्या निमाने र से वाराया स्माना याना सम् शेयशक्त्रगुत्रायायाष्ट्रमानुस्याने स्वतं ने स्वतं शेयशार्षे न्त्राते ने न्त्रामी सूमानस्यानस्यानमें सामा सेवानावासूनानस्वानरान्ववान् स्रुसामदेशसेससान=राजसान्तीसासे केनामरानेदेशमनसावादह्नान्निसा नमा ने प्यट हें त्र नु रह हिन वन भाने व्यास तुवास पर वावत हुवा नह वा वस हों वा नर से तुस प्या वावत दे या दे श्रुवाया श्रेदार्थे रामु दर्गे अयर क्री:देव:नङ्क्षवःधर:परेंद्र:धशःईवा:सर:रद:पर्वःधःवर:व्राद्वेश गशुरमःनित्। श्रुवःपवरःभ्र्यःपव बुरः दमःदेवेः वश्चवःपवः श्रुवः परः गशुरमः पम। श्रुवः पः श्रुवः परं देवेदः यदे ने दारा साम स्थाप स्थाप स्थाप के प्रवेश स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप है स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स <u>यानुत्यः मुः इस्रर्थः यः भुवार्थः य हेः यः क्रेत्रः ये स्थारः प्यारः सुत्यः यदिः यानुस्रर्थः यः द्रस्रर्थः यो स्थीः सम्रीत्यः पु</u> <u> न्वीं अःश्री । विश्वान्तरः क्षें अः नुरानुः वेत्रः कुष्वः न्तीः कें पायने न्ते निर्वाश्चे अः भ्रीरामः क्षें निर्वारम् विश्वान्ते कें श्रीः में हिः</u> वया हेदे यस रेस के कुर महिमारा नरे सुर सँग्या वस नसूस हे रन मवस से सूर (१६६०) सेंदे न्नें ब्रुवे केंग १० वाने हेन न्यान सून क्रेंन क्रेंन क्रेंन क्रेंन क्रेंग हो या है। ।।

## श्रुवाश्चारेत में के से वासायान्य वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र

७७। ज्ञिस्य मुन परे प्रत्य दिन स्था सुना प्रक्रिया विष्टे स्माई मासून वविशक्ष्याद्धरावन्र्र्वेशयाक्क्षयम् वेन्त्रा व्यान्यरावी व्यान्यरावी व्यान्यस्य विषय्यायरे स्वन्त्र स्वर्त्ता ने निव्यानिवारायान्या नर्षे सामाध्या प्रमास्य द्विताराय स्थिता सामा रेगायर्ट्याव्यक्षास्य वर्षे वर भ्रेशन्तुवन्वानवे।विवे भ्रूना व्यवसेन्यक्ष्मिन्यो शरशः क्रिशः वर्द्वसः वर्षा द्रायः क्रियः वः त्रुयः श्रुवः वः वः व्यः वीं विक्रम्भित्रास्य अकेटी विक्रम्भ सम्बन्ध स्थान हो स्थान से नाम रास्री । द्यानी सूँ सारवदायेवासाराधिता । धिदाग्री सूँ सारवदायेवासारा म्रे। विश्वश्राह्म देवा स्थान विश्व विष्य विश्व स्वा नस्य गुत्र यस र न हुर्जेय। | रवा इसस न सुर विर धेर गुर र न वर्रे द्रवार्य श्रुट्यवा । इट श्रेट वाशुट्य पदे व्यय हे र्श्वे वार्य व्याप्त । नर्भेन्द्रस्थायने प्रेश्वास्य स्वर्था ग्री:न्यानहुवाही ।मान्दान्यन्दान्यके नदे स्वयाविषया रादी ।श्रीन्यदे

सर्के प्रशादमें न के प्राप्त विष्ण विषय प्रशासक मार्थ र भी विषय प्राप्त मार्थ र भी विषय र भी व मुन्नभून मुन्न नि के निर्भूत पं के ने संबेश मुन हिंद नाई न सुन ने ना पर र्श्वेप्या वेशसेम्ह्रिम्सव्यक्षिम्ह्राम्स्य देशम्य देशम्य वेशम्ह्री नेत्रयम्स्य वेगा रेयान ही ह्यामा सुन्त म्याक हु ह्युगमा हे प्यमाया सुन्त हिमा ही ख्या हा माई गासुन प्यचु नगमान रासून डेना'सर्केन्'नार्केन्'नदे'त्यना'रु'नाहन्'न्या मुन'न्यर'नी'भु'सर्नुन'त्नुत्य'रु'नडुना'स'न्र'र्'रुस'सङ्स' हा नगर मुँग्राय अर्देव पर नगर नगर नवे खु इस्र र न में रास केव में सहर्रित्या बेशस्यायी से हिंगाहेदाय देव मन्त्रीय से स्वापके से विस्तर ग्री:ख्याविस्रशः क्रेंत्रासेट केटा | ख्याविस्रशः इसायर प्राप्ट व्या क्रिया रोसरासेन्यते द्वा विसरा ग्रीया विषय विसराय में या भ्रीत हिंगार विषा यय य न मुरायदे ने माया वया विया है है या नव भी ने के वि हैं न । गुराया अर्थों व नवरःतुरःनदेःक्षेत्राश्चर्यश्चेत्रःवेत् । देःक्षेत्रः कुषःनः ग्रुस्रशः स्तः हुन् मुर्ग । सुमानायमः यन्यानी सर्वी त्यः यवया यविव न् । स्रामेन स्राम कुन'सर्केन'रु'स्र-'नश्रुव'वया विर्ते'गुव'र्नेव'रु'यरमाक्रुय'र्ध्व' र्वेता डिकार्क्के मानिके का श्रीका को केंगा वर्षे स्र श्रीसानिके से नाका वा सुकार कें का में का मार्थ्यासी निया निया । अस्त्र निया द्विया विस्त्र मार्थ है । स्वित्य स्वित्य स्वित्य स्वित्य स्वित्य स्वित्य स <u> ५८। विरःश्रेश्रश्चर्त्रभाद्यः श्रृत्याद्यः राश्राम्या विराधवार्यः स्त्रा</u>

#### भुःस्रान्येनःकुवा

ग्री अर्गे व शुर केरा | नर्र केर केर न्यर नव व केर केर नव र वह व व कर केर नव र वह व व व व व र्ट्रश्नम्भश्रास्त्रश्याप्तरात्वासित्त्वार्यात्रे । वर्ष्ट्रसाध्यात्र्यराव्या यात्र अपदे र या ने या अपदे या अपि । विश्व क्षेत्र य वर्षे र यह श्रा श्रुव द्वर अपदा स्था स्या वळ्याचान्द्रासळेद्राक्षेदान्ववायाचान्द्रा । ह्रेयाशुःधीः स्टानश्चवावेदः मर्शेषानाधी | निर्माना सुनाबनानी रास्ति । महारास्ति। र्ह्मार्यायाये ग्रीता क्षेत्रा केत्र स्त्राचित्र म्याचि स्त्राची स हिंगानग्रम्। रि:रनःश्चीरःनवि:हे:ब्लूशःनक्तुनःपःवदी। । सरसःक्तुशःवीरःरुः न्येग्रामः हे स्वानः धेया विर्धे गुवः इसन् वा विदः यः श्रेन् प्रमः विवा अि दे गु र र द्वाराष्ट्र वि दे हु पा की वेशवान नि व र या नि व र या नि व र या महार या नि व र या सहया नि व र या सहया न नु निश्चुन गुःस्ट त्याव श्चिम्य स्यस्यवमा स्ट मी त्यमास मिर्षेद्व नु सुर सुर मु मे स्ट दिव केटा मिर्यास सर्वेम श्चित्रची ख्या क्विरे हे से निश्चन च्विरे श्ची विराधित के कि निराधित ति स्वित्र निराधित कि सामित्र निर्माधित के स्वित्र निर्माधित निर्माधित के स्वित्र निर्माधित के स्वत्र निर्माधित के स्वत्र निर्माध हिंद्राग्रुपाःस्द्रायदेगाःसायाः श्रीत्या वेशःभुःभेदावहेशवशदेशवश वश्चवानुश हैं। या या विवायहेषायद्वा देववायश्चरात्वाया विवायश्चरात्वायः स्वायत्वायः स्वयत्वायः स्वयत्वायः स्वयत्वायः स्वयत्वायः स्वयत्वयः स्वयत्ययः स्वयत्वयः स्वयत्ययः स्वयत् वेगमामळेंगमाबेटार्स्यमाम्यामहेंराया नगरार्सेगमायास्य स्वाराप्य प्रति स्वाराप्य स्वाराप्य स्वाराप्य स्वाराप्य स

इससार्ग्रेसाराकेतारी सहरार्ग्या वरायते मुखासक्तानहतासरा गुर्रेग क्रम्भामार्श्वे द्रायाके धी अवराष्ट्रीत पर गुर्रे वे व क्ष्याविस्र सारी: सुर-पें-पेंर्स्य सु-ह्रेन्य साम-शुर्-रहेन ह्ये-प्राह्म स्वराह्य स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स र्यः हुः (ब्याशः हे र दुंषः विश्रशः इश्राधरः द्याः यः दृरः श्रुवः यरः श्रुरः हेगा विस्रयाग्री:द्वयाविस्रयाञ्चीतासे ५ किया विस्रयान्य स्यापरान्या ५ म्या क्रेंबर्श्वस्थासेन्द्रपटेर्द्धवर्धिस्थरग्रीय। द्विवरित्रस्य स्वर्धितः हिन्नसः र्नेन । डिसन्द्र्नाया द्युर्वेन्य विन्नेन्द्रेन्य विन्नेन्द्रेन् गन्व ग्री ने में दे के वा विस्था सर्गे व कि ने ने न न न न ने के नन्गानी र्ह्ने र्शे अपर्ह्ने निष्ठे त्या । श्रुत्य न न र तुर न दे रहे न य ह्या य हिया वेद्रक्षि ।देळे कुष्य च व्यस्य प्रम्य हुद्वेश । ध्रम्य प्रस्ता वीर यर्गे यानवगानवेत्न्। विस्तेन् च्रा क्रियासके गान्ते गुव-देव-द्-अदशःक्रुशःशुर-विवा

वर्ते न्द्रवाळु न्व्यास्यास्य मुनामये हें हेये मासुन हें ॥ ॥

#### न्ययायहेग्रयाचेन्यीः नगयन्त्र्रीं गुःकुंवा

ভঙা বি'র্ম'ন্য'ন্তা বশ্বনেষ্ক্র'হার্ড্রখন্তা মন'ন্তিন'শ্লান্তিমানী ম'ন্যায়' र्हे हे प्रह्मे ग्रथा हो दालपा वारे गा सुमा गरिया हो या मी गुमा दर हिंदा प्रह्में द परिः सूर प्रवेद्यापर गुरा के दे है यवगर युव स्थायुरम के दार है दि गुरा क्रेंट्र परे ट्रायश क्रेंच साइस्सर ग्रेडिं में र सूर्के ग्राय इत्र हैं न <u> ५८.७, अपु. यार्थे त्यार्थे त्यार्थे हैं हैं ती यायक्ष रात्यार्थे रया श्री श्री रात्रायया</u> न्ययः हें हे वहे ग्रथः हो न के तर्रे सुर अर्च ग्रा अहि न व्या व्या न ग्री स्वा र्थे निवा वित्र निव्य निवास स्वास्त्र निवास स्वास निवास स्वास निवास स्वास निवास स्वास निवास निवास स्वास निवास स्वास स्व धर शुरा रट गी श्रुवारा विदे हुँ त्यरा दिंद ने र तर्श्वरा वर्श्वरा पर्से सारा दट तर्द नदेः धे : ने यः राः यह यः क्रुयः नुहः ये ययः १३ र रहः के यः क्रुँहः युहः यदेः येन्यर्गुरा क्र.लक्षेत्रत्रित्रहे क्र.व्यान्तर्भाति क्र.व्यान्तर्भाति क्र.व्यान्तर्भाति विष्यान्तर्भाति क्र.विष्यान्तर्भाति क्र.विष्यान्त्रत्भाति क्र.विष्यान्तर्भाति क्र.विष्यान्तर्भाति क्र.विष्यान्त्रत्यान इमार्से है। । इसदार्से सर्केमानी र्से इस्प्रया उन्हा । मार्या द्राया दर्या निर् र्देव सहर ना हिंहे पहेग्या छेर त्या स्वाप्तक्या विकासका मुखा ना हैं हे प्रकट के द रें या ही द ही या है न या भी या हि ए हो या या है न यह या या हो द के द र्स्य हिन् श्रीया कें नेया थे नेया श्री यानवादर्शे यया हिन श्रीया कें नया निवा यायी ५ नहाँ या दी दारी या देन या निवा आर्थी स्वानहाँ या दी दारी या

क्रेंनर्भः नेवा धेः नेर्भः द्युदः वाद्रशः श्रुर्भः धरा श्रीतः श्रीत्रः क्रेंनर्भः नेवा यहः नइंशः होत्रः होत्राः क्रेंन्यः लेग द्वेः भंगाः स्र सहोः प्रथः होत्रः होत्रः क्रेंन्यः लेग नुर्ले दूरनहें हे ज्ञान्य ग्रीय ही द्वारीय हैं नय की नुर्के यन ग्रीय ही द ग्रीमार्स्रेनमान्त्रेया दुःषोःनेमार्भे स्थानेसार्भेन स्थानेसार्भेन स्थानेसार् रोह्ने अ: ही व: ही अ: हैं न अ: वेव हें न इंव : कें अ: ही व: ही अ: हैं न अ: वेव र्रेट.य.जेश.रच.शेड्नेश.चैत्र.चैश.क्रेंचश.जेग व्यःस.ले.जेश.ट्यय.चश. <u> च्रेत्रः ग्रेशः क्रें नशः नेवा कॅशः हे 'र्द्रायम्प्रायः रेत्रः क्रेत्रः ग्रेशः क्रें नशः नेवा कॅशः</u> ग्रे मुयर्भ र्से दाप पाळे दार्भ रा हो दा हो या हे ता विष्ठ र साम हो दा है वा विष्ठ र साम हो दा है वा विष्ठ र स ययः चित्रः मुक्तः द्वित्रा वित्रा पाल्यः यदः द्वित्रायः यदः द्वार्यः वाश्वयः मुः द्वार्यः गुे.कें.कूर्यात्रास्त्रत्रत्राज्ञीत्रानुष्यास्त्र्यास्त्राच्याः श्रेश्रश्नात्रम्यश्राभीशाचीत्राचीशार्क्केनशालीन न्यवार्चे न्यार्थे द्यादर्रिन्साइययाग्रेयाग्रेवाग्रेयार्द्विययान्वेव क्रियार्स्स्यया ग्रीय ग्रीय ग्रीय केंद्रियय केंद्रिय या प्रमाय केंद होत्रकेत्रसेतिः भुः कें नायाया नाहेत्र प्रान्ति प्राप्ति । स्मिन्य समिन्य स्मिन्य समिन्य इसराहेत्यक्तर्त्रानुगानुगायेयानासेत्यर श्राया हेराग्रीन्यर वशा क्षेटामर्देवामवयान्दाकुः भ्रमा नमामेदिन वहंवान्दाकुयायमेदा देवाःवार्रेत्रःक्षुः८८ःसःव८वाःषःसेवासःधःवार्रेत्रःववोवासःवत्तुदःसेःस्रेःसः

धेव शी गर्वे द सा अ खु से कु द त्विया स से या अ से दे त्व हु द न दे या वे द र स न्दा तुरविभागन्गानव्रम्भाभार्भग्रम्भान्द्वारानवेषार्वेद्रमा वस्र १८८ वस्य वस्त स्तर्भेत्र स्तर स्तर्भेत्र स्तर स्तर्भेत्र के नर्भेर्मु अप्वेरासु अप्येय अप्याने नार्या विष्युम् अप्येय विरादर्भेरानः कुरायायार्सेन्यायासम्बद्धान्ते वास्ययारु नार्मे दावायार्थे दा कुरायर सहित। सर्रेर के स्थाय बुद की निर्माय संदे दिव बस्य उट पीट नवित्रः त्यानासरः सहिन् न्यार्थिया क्रिं प्यासूक्ष्णा है। स्ता क्रिं के हि क्रिं थासात्त्राहार्वे विष्ट्रम्य विष्ट्रम्य विष्ट्रम्य विष्ट्रम्य । यह विष्ट्रम्य । यह विष्ट्रम्य । यह विष्ट्रम्य । ग्रेन्दिन्नु लु द्रमार्श्वन स्रोत् स्रो में न्या स्रोत् स्राम्या स्रोत्स स्राम्या स्राम स्राम्या स्राम्या स्राम्या स्राम ५८:श्वेंन:सदे:सुरारमाधेंद्रमाशुराद्येंद्रसेंद्रमुद्रासदे:श्वेंस्सें अग्रेत्रायराष्ट्रः श्रुवायाप्तराष्ट्रं जीयायस्त्रायदे श्रुवायापदे हुँ त्ययादे र व्रमायम् भाष्ट्रीया भाष्ट्री प्राचित्र सक्ष्यया व्यवस्थ स्वर्म स्वरम स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वरम स्वरंग स्वर हेदे ह्या श्रास्य स्वा ग्री स्टा चिव ग्री अपा नुस्य । श्री व्या पार्वे दाया पार गैर्या ग्राम् भेर स्वाप्ति निश्चम्य स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व अन्तर्गेत्रः अर्केना नाशुअः श्रीः श्रीतः क्षत्र अन्तरः । । वहसः न्ययः नालेतः हेवेः ग्नेन्'ग्रे'सर्र्म्रिन्य'ग्रेया ।र्स्रेन'स्यय'येग्य'पर्न्नस्य सेन् मुन्ना विदेखासुन्नाम् विद्यासम्बद्धाः विद्यासम्बद्धाः विद्याः नर्हेत्। डेशन्यत्देत्रेगान्यदुत्वोत्येवाश्योशन्त्रभूव्यनदेत्रेर्म्यत्वत्रम्बर्भ्वयायशन्यत्वाह्यस्य व्य-द्रमण वर्षा मुर्ग वर्षे । वर्ष विशा

# यहेग्रथा होत्र केवार्थे त्या महेवाव्या निया श्रीता प्राप्त विवाद स्था निया स्था निया

७७। वि.स्.यी.मे.यह. झे.म.से.ला मितायीय.समे.सूचमा.येस. सद्या ब्रिया श्री । श्री प्रवाद स्वार्ट्स वार्थ द्वित स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ वहिनायाः यहंदायि। हिंहे वहिनाया ग्रेटाया न तुरावया। यमें वादेव क्षेया नक्षरायान्हेंद्रास्त्रम् भित्राये । इतायम् राष्ट्रेर् स्वेराहे केदारेश मुन्निया है। विश्वाचना पर्यो प्रदेश सुर्या प्यापके प्रदेश दिनाया परि केंग्रीया गुर रेव र्रे के प्दे छे १ १३ अअ मार्थे र कुन् माव अमार्गे र प्दे पानु एवीं न वे न श्रृव प्दे व ही श्ले अन्त न वो प्दन्व ही । ब्रे.ज.रवा.जन्ना ने.लट.क्र्य.चैतु.पद्यीट.वा विवाय.टटा वर्ष्ट्य.संद.मे.प्रे.वी.के.वी.साल्य संस्थातमा स्थ्रीया गशुसन्ता वळन् हेन् हें सम्मशुसम्मन्तियाने। सामसामह्य मनन्मशुसाम्भी खुन्हें ग्रमामी खेन न्त्र मसस उन्नॉट-नु-वर्षयानदे वन्यायायनन्याने वाज्ञायाके। ने यायमा न्नामे वाजी न्नॉन्स्यान्यके न्त्राप्त र्शेनाश्रायाः सांस्वाशायम् सर्वता युवार्मे हे र्स्केन पूर्वताची दुष्य वश्यायुन प्रते खुणी प्रसाम्बर्ण यम् उव ची प्रम निव इसामर निवास विकारे निवाक्षेवान र र्स्स्याम क्षिया निविद्य निविद्य निविद्य निविद्य निविद्य निविद्य निविद्य ळेत्रप्रा वात्रप्रात्यमानुरायो प्रभेत्रायारमाळ्यायानम्भराञ्चेत्राम्याम्भाताञ्चेत्राम्यान्यस्य विःक्वमान्यराज्यायो लमार्यात्य्यम्यात्राम् विमाण्याः विमाध्याम् म्यात्राम् म्यात्राम् विमाध्यान् विमाध्यान् विमाध्यान् विभागान् विभागान तुःर्वेदःतुःस्रेःत्युरःतःसेवासःत्वेंसःवायःक्षेदःरेंःयेत्यःत्यःत्यःत्रस्यसःग्रीसःयदःविवार्वसःसःयोदःयरःयदः

र्थेन्द्रस्य भेन्छं स्टाहेन्थे न्यान्ने टाक्नुयायह्र सेदि ह्यां व्यापावदायायाय हर्ने नेन्या हेवा सराङ्गन डेगानग्रानभ्रेत्र ग्रुख्याकी सर हित्र भ्रात्र हेगा मी शात्र माया है हे यहे गाश होता लया याडेया:स्या:याहेश:ग्रीश:ग्रीया:न्ट:बॅन्:य:वहें व:यवे:श्रुर:यबेट्श:यर: गुरा डेम अन्डिन नर्गेन नर्भेन हा रट मी श्रुम् रामे रहें यस दिन हे र तर्से सा हि र्नेदे र्क्ष्मियान्यमा द्वा के प्राप्त के प् ग्नितः हेते वहेग्रयः प्रस्ययः उदः वहें स्था । द्रायः वें केंद्रः देवे द्रायः सक्त स्वा स्वारा रवा विवादित सेत सेते स्वार वार्ते व द्वा पर्वा । रेगायरे कुषारे क्विंत्र नत्मश्रायकंषा विमायरे तप्त्य परि सुन्त् शुन्दरेन न। विशेषित देने निर्मास के निर्मा विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य यासुर्दः औरनद्वासनुर्गे इन्द्राद्वायापुर्ने सुराया स्वी सुदी सुद्वी इन्ने ष्युः वेरिनी। माङ्की वैरिक्षेट्ठा अन्नार्भात्रे हुर् कुर्तु मूर्त्वा मेरिनी स्वामा के मान्य सकें राक्षर प्रवास

नेव्यवक्ष्र्त्यकी हैं। कैंशहेन क्षेत्रपातिका के निर्मा हेव श्रु न प्रते खुषा पर शे श्रु र विरा । वनमाया सम्मायते यहेगमा होन अन् क्रिंव या विक्रिकेव प्रवन् प्रविक्षियायाया स्वाप्त प्रविक्षा विष्टे विक्षा वि नदेरदर्यम्भामार्वेभाग्रद्य । भ्रुषेरकःस्वाभाग्रः होद्राह्मम्भाग्न्य । वक्षयाची । भ्रुवा मदे प्यो प्रेश में या मार्श्वेत सह द हिटा । श्रेवा या मदे सर्वेत कःश्वःक्षेत्रायान्यान्यस्यया वित्रःस्यान्याः केत्रःस्यान्स्ययाः सहराम । श्रुवामिता क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया प्रस्ता विश्वास्त्र से क्षेत्रायन्याने में द्रात्यान्य । द्रायाने देशका में द्रायाने में द्रायाने में द्रायाने में द्रायाने में द्राय क्यान् प्रवास हि न्या विकास वि न्युर्न्न श्रेवायम् अह्राया स्वायक्ष्याची । वातुस्र के तुर्वास्त्र से । क्षरावि निहरायन विवासिंदा स्ट्रिया विवासिंदा विवासि ह्यस्य प्रति द्वेषा सुर्देद प्रति व स्थित सुर्वा । वि सुर्व प्रति व स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स वन्याया सुमा पळायाची । द्वाँ वहिमाया पवे द्वाँ श्वाहेया श्वीमा से हा । निर्मामाया क्रम्भामात्युमावहँसमासहँदायवै । दूरमानुनावसमाउदार्भुतानवे सू। नवीवार्या श्री नवा त्या सुवा तक त्या नश्री । व्हुँ। नश्रीत्य तिस् के तर्भिते स्था यवि'य'यात्रश्र'मदी । भ्रु'य'श्रेयाश्र'मदी'ययोगशः स्वीत्रश्रेत्र हित्र हित्र । ८ । थे प्रात्र अप्ति र्मा मान्या हेन त्या मन यान्य मान्या ने या निया मान्या मान्या है ना स्वीता संभीत्य स

बेशःश्रॅमशन्दा वर्पाःश्रमशःश्चेत्रं त्रितः देमावयाद्युरावाध्रमाववश्चरम्भेयावरात्वर्षे वित्रास्तरे नरः कर् सेव्या विराह्मस्रसायदे न्यान्वन पुरवर्षे नरः श्रीसा विषाने प धे नगद स्था तर्द ने हो । धे ने श उद ही हैं हे तर्दर राधे था । अर्वे र्ने :कंयः प्रायक्त्र र दे : द्यायः द्युर :बेटा । प्रयोगयः इययः प्रक्राः प्रर वर्गुर्रायामें द्वारी | दार्शे हे नईदास्य निर्मा निर्मे । नदेव'स'न्दा केंब'ग्री'नदेव'स'न्दा न्मो'त्र्व श्री'नदेव'स'न्दा दे' नविवामिनेग्रासन्दा रेंहेन्दा देवारी केन्द्रा महाद्रा यश्रामी रेग्राश्राल्यायायायययाउट्दार्या क्षेटार्स्टा ध्रमाक्चार्टा ग्रयर र्श्वायान्ता रेवार्श्वायायीः स्वेदे विदासरा व्ययया उदादा विदासरातुः यट.य.इ.स. क्षेत्र. कष्टा. ग्री'ननेव'म'नम्। ननेव'म'ळेव'मेंदे'त्रीव'ग्रीय'नक्षनय'ग्रीय'ई'हे'र्स्सेन'य' के मो सेंद्रमा धरात्रा है है हैं तास दर्भ त्रसम त्या देश हमा स्वामात्र मात्र मात्र मात्र का मात्र मात् हेव परी क्ष्या पार्य हु याव्या पार्य पर हु या है है रायदी विश्व से याया या सुर विश्व पर हार्ये । निर्हे गर्डेन् पदे नगेग्रा ग्री र्सेंग्रा श्रम्भ उन् ग्री गर्देन् पन्न प्रसे नदे নমম'ন'নর'ন'য়য়য়'ড়ৢ৾৾৾ৼয়'য়'য়য়য়ৢঢ়'ঢ়ৢঢ়'য়ৢঢ়'য়ৢঢ় सेसरान्द्रभूत्रासरान्द्रास्या स्टान्द्रास्य स्थान्या स्थान्य स वि'र्वि'रेवि'षो'नेवा ग्री'र्हे हे सो रवा रुपवर वा इसवा ग्रीका वर्षे वा हिराह्या

पर पहें समापारी वारी । के सुद्धा ते सुद्धा के मेह वारी हु वारी है क्षें मेडूपणमेडूपण हैं। कें ख्रुपण दें इगा सूप ने 5 कें प्राप्त विवा धिरकाम्यक्तीकार्यम्या हैवास्य द्रमूच्याच्या विद्या द्रियम्बर्य हैवास्वयकार्यः वरुषा स्थानिस्य क्रियास्य स्थान वे नर्र : यश कुया विकादे के शास धेव यश कुया | र्वो पर्व सु क्षेत्रायास्ययाययाम्या । प्राप्तायायाम्या । व्याये स्वायायायाम्या । व्याये स्वयं स्वयं स्वयं । नः इसरायरामुया विसासित्य धेट दे मुः सर्वे त्यरा सि दे विट इसरा गुन्यशक्ता । कुनिसे यशका कुषाना है। । कुन्ने हीन यशका कुषानर गुरा हिंहे धेश दे रेद केद स्वा श्रिक्स स्वा दि स्वराम न यरयामुयान्द्रते केंया ग्राम्यने वा विनेत्र यामुया ग्राम्य वाया या व ननेव मन्दर्भनेव मनेव केंग पदि द्वा मी अ नत्त नर्म अ अ श्वर मने मुंग्राच्यरायराज्याम्यायराज्य हेगा क्राक्षेक्षेक्षे भी पृत्व व द्वापत हं आहं आ के के के के विश्व के सक्तर्यात्त्रेराक्त्यात्रम्थात्वात्त्रव्याच्या चित्रयाष्ट्रियाच्याः स्वायाय्या स्वायाय्या स्वायाय्यायः स्वायाय सक्समायने त्रमानु न्वें मार्थे।

हैं अते प्रीयायिक के प्रमान के प्रम

र्विः हें हे र गु रवि हो न या है यो अ अर्जन या ने यश वें र वें र वर्षे अ स्ट्रेट देंग नर मशुश्रा शुंगिर्देव नमीमश्रा महिमा स उद स्रथ्य उद रहर नडर्। द्धरादर्शाल्यासा गुर्नेन गुर्नेससारे रे देस नर्डे अ'धून'यन् अ'न्यय'र्हे हे 'यहे ग्र अ हे न' के न' से 'भू अर्दे ग अ हे न न ग्र चमुर्यासदे सूर्यय ग्रीयाय विवाय । जाना निर्वेश सूर्वाय भीर खूर्वायः वर्रियाना सुमा अळवा मुना वनश देंगामी मान्न इससा न्रान्य स्थान ग्रथायायायायात्राङ्ग्यायायम् सुन् नेतिःस्रिम् हिर्मासुन्नि स्यानितः ग्रे ग्रे नगर स्वा इत्यर स्वा देर श्री रूट प्रवेत हे हे त्वा स्वा सूर वस श्वेरःगो रहः नविव वि शेरःशेरःगे श्वेरःश्वव रशानिन शामि रहानिव रहेः न्यरःस्। न्ययः वरःश्चेवः सेयः श्चेः स्टः चित्रः गैः खूटः ग्। क्षेः वरः ग्रवः र्ग्रा अग्रीत्र प्रम्याश्यर हैं हे दे रहा रावित खूक्य सर्ग्रा श्रुवा श्राम् श्रिवा श्राम् श्रिवा श्राम श्रीम श नशर्हे हेते अपवि वेजा अरुप वर्षे अप अर्हे हेते देन व केट दे वर्षे अ नश्राहें हे ते गुरा गुराग्री र्वे गार्या ने नित्र होता है ते है ते हि ते हो । बस्र रहा गुर-र्हे हे प्यनर-विदे रूट-विवेद-नर-अळअअ-अेट्-प-ट्र्अ-तु-विदेवा-हु-गुर्रसदे है देव हुन स्वाप्त वहेन सदे से सुदे निर्मेन सुदे से प्रमान

मुंग्रान दुर पर्से नर गुर मर नमम मही औं नई र गुर्है। यम निविध देन देन त्रित्रः क्वत्रयः क्तुर्यः यात्र्यः यात्र्यः यात्र्यः प्रदायः यात्रयः व्यव्यः व्यव्यः क्षेत्रयः यात्रयः क्षेत्र वित्रः क्षत्रयः क्तुर्यः यात्रयः यात्र्यः यात्र्यः यात्रयः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः क्षेत्रयः व्यव्याः व्यव्य गहग्रामा मुयाना विनानन्या हैं हे प्रकट के दार्थ या विना के या किया के वा थे ने अ ग्री अनिय वर्षे अ अ श्री व श्री अ र्से न अ ने न य थे न न इ अ श्री व गुर्भः र्ह्मेनर्भः नेग ष्रः र्ह्में मह्म राह्मेर्यः ग्रीर्मा हिन्द्र स्त्रा स्त्रीय प्रे से स्वर्धः स्त्रा स्त्रीय प्रे से स्वर्धः स्त्रीय स्त्रीय प्रे से स्वर्धः स्त्रीय स्त বার্মাস্থ্রমানমান্ত্রির শ্রীমার্ক্রিরমানীবা মহ্লানহ্রমানীর শ্রীর শ্রীমার্ক্রিরমানীবা र्ने.म्.मी.र्भान्यान्त्रीयान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्र से देश ही वार्से नया ने पा नायत्या से देश ही वार्से नया ने पा है। नद्वानार्ययाचेवाचीयार्क्षेत्रयार्विना र्राट्यानेयार्गार्थकेयाचेवाचीया क्रेंचर्या भेग व्याया भेराद्यया वर्षा होत्रा होत्या के वा के राहे देवा वर्यायः रेवः केवः ग्रीशः क्वें यशः भिषा केवा ग्रीः ग्रीः ग्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः विवाग्रीयार्केनयाः निवा विवायवास्यात्रात्रासार्हे हे प्रकटा केवार्यया विवा ग्रीशः र्हेनशः नेग न्ययः न वरः र्धेशः ग्रीवः ग्रीशः र्हेनशः नेग ग्राववः परः बुँग्रायायञ्च द्रायाशुयादाचल्ग्रयाये दिरायाय्व सुत्रासाद्याया स्यया विग्राम् । सहरामदे पद्मेव प्रमा क्रियामदे व्यासवि प्रमास विश्वा न्यान्त्र्रम् स्थान्या स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र

नश्चनःप्रदेख्यायः क्रेत्रसुद्धः अधिकः नदः गातः वद्रुवः प्रः वः व्यव्यव्यायः स्युवः श्रीः वःक्। शुःदवःश्चें वर्षेवाः द्रद्रमा सूना वःश्वाशाः शेस्रशः शुः सूना वस्या <u> न्वाःह्वाःक्रें अः मुद्रःवाउदःवाबदःवः श्रें वाश्वःयः वाबुवाशः उदःश्वेः न्दः नुदः</u> वर्वेदिःगर्वेदःम क्षेटःगर्देवःग्ववरःदरःकुः भ्रम् देगःगर्देवःसुःदरः रूप्तन्ग नरःगर्नेत्रन्द्रतः न्द्रम् वादर्गेदः वार्यम् वात्रम् वाद्यम् वाद्यम् वि वर्हित्या अः कुः से कुरः विद्यवायायायः सेवायाया सेस्या से स्वर्णे विद्या स्वर्णे गर्वेर्ना वे हि. विगास्मा शे क्षेत्रा सक्त रचा र्या सेता विश्वास वनायाः क्रेत्राचराळ ५ स्था स्वाया स्वायाः क्रिया साम्या सम्या सम्या सम्या सम्या सम्या सम्या सम्या सम्या सम्या ग्रम्भन्य वस्य उर् पुर नर्स सहित क्रिन यर सहित सुनर सर्दिन समुन्मेन के निर्मान में निर्मान में निर्मान में निर्मान में के। न्ययावर्डेर्वेर्वेर्यार्थेन्। न्ययाःसन्दर्यावीःवहेन्। ख्राहेवार्याः ॲव-५व-वा-ॲग्रथायायस्थाः उद्-त्त्वः वाध्यमः में न्यूनः वीदः वर्षः वीदः द्वार्यः विवा विरः क्रुश्रायरः चित्रः चित्रायक्ष्या क्रिया विश्वायात्रः भुग्राश्राद्याः स्विः क्ष्या वयागर्येवानानिनामयात्वायार्दे हे वहेग्यायात्वेद्र केवार्येवे श्रुग्यायावे हैं। यशर्दिन् वेरः वर्द्वेश व्याशान दुवे विरास्ना वर्ग्यश्राम विवाशामवे हा नकुन्गी सुन्य। धेन्य अदय कुय गुर् सेयय। कुर स्ट न्यय में स्वापय वर्गे। क्रूभःश्रुट्-श्रुट्-अदे-क्रिंग्शन्द्रान्यक्रशः प्रच्याश्राम्यः गिनेवर्हे गिनेदर्शे खुर्के गिर्श्य है स्थान्य सुवर्द्ध मिने हिर

वहिग्राश्चेर् केव्र में वा वेस्रा भेटा दे छेट्र प्रो अपनिवर् दें दिर् दु दशनभून गुःदिन द्रस्य शाया भ्रेसाय शाया है साध्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य हैं है । सुर्यान्या पीत्र या सुर्यात् हो र से त्र तु सुर्या ने स्वर्या हो त्र हो सान हुन प्रम्य हिंदू ने के बेशन्भेन्य महत्र विशेष मन्त्रीत्यम्क्ष्मा नश्चा क्षूर्या क्षूर्यायार स्टानी मुग्रायाये क्षूर्यायाय स्टिन् नेर वर्षे अ'राया र्रे वाया न दुवे कुषान स्थान्दर न राये होत क्षा न या न सर्वाचसर्या उर्देन वेर की इस सर क्षेत्र दर्या वर्षेत्र ये स्था की य गुन्नपदे हें हे दे स्वाधार्या ग्री रहा निवादी करा गर्ने व से गार्से व वस्र र र में मोर्ने द्राय से स्वाय प्रति सुद न से द में द में त में य नक्षन्य निष्या देवा के कि वर्षे के वर्षे के वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे के वर्षे व सर्वो न्यायम न्यायेव। नृष्ठी सर्वो न्यायम न्यायेव हे न्यावम नृत्तु हु हु हु हु न्याय हु हु त्य नृत्तु व्यापा सूर प्य र खुम क्रिन्य दिन्। विष्य दिन्य प्रिया प्रिया क्षित्र हैं प्रिया विष्य प्रिया विर्धे प्र वर्र क्रियं निया में या सुर्य होता । वर्ष वा सुरा ग्राहर महिंद पा स निर्देश विष्या निर्देश विषये हिंग विषये हिंग विषय निर्वास निर् 

नश्चन्त्र्यान्त्रिश्वर्षित्रः द्वान्त्रः विष्ठवार्षित् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् नश्च श्चे विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठवार्षित् विष्ठत् विष्यत् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् विष्ठत् विष्यत् विष्ठत् विष्यत् विष्यत् विष्यत् विष्यत् विष्यत् विष्यत् विष्यत् विष्यत् विष्यत् विष्य

देव्यानग्राक्ष्यां म्यान्यान्त्रान्त्रान्या निष्या ८८। । श्रे अञ्चत्वार्वे ५ प्रदे प्रवीवाश ५८ ज्ञाय प्र ५८ । । अञ्चत प्र र ज्ञूर येग्रायार्भेग । येयया उदादराया है खेराया । ह्यू रातु वदायया वरा हुरा हिना विक्रीं निवे निवि सार्थका । हिना हु विद्युद्ध निवे । विद्या यमितः वित्रः सूरः परमारादे से ज्ञारामकेषा । के ज्ञाते के राष्ट्र वर्धे विद्या । मूद्रशासे दिन के ता के ता की शास के ता निर्मा सक्त है क्रेन्सकेशमनेनम् विश्ननेश विन्यमान्यम्यम् मान्यम् भ्रे.नेश्रासक्ष्यसम्बद्धाः वर्षे नःली निर्ने खेनाश क्रुव शे कर पदे निर्मा केश केना विर्ने दे कुया न श्रश नरुशाननेत्रामारामेश। भित्रापुराननेत्रायराम्बुरुशाभिराह्यस्थेताय। । नदेव सन्देश्ये अन्देद सदे र नदे स्थेवा अन्देव । यदे द्वा यद्देवा अन्य ग्राव অম'ন্বম'রুম'রবা।।

# नगवन्त्रें निव हु नमुश्राम गुरुं वा

७७। |नगवनर्से नेतर्हानसूर्याम होन्त्रस्भूनयासेस्यार्स्त्रन्त्रम् स्टापीन्साम्यास्य स्ट्रा वदेरम्बयम्यम्बर्यद्रश्चित्रम्प्यात्रम् । स्वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् स्वर्षेत्रम् स्वर्षेत्रम् स्वर्षेत्रम् स्वरं स्वर यशिषा । रसदः मृ. शायदः दम्. क्ष्रू शः श्रुटः श्रदः श्रदेः क्ष्र्याशा । रश्चे यशः ध्रयः श्रुटःश्लेष्ट्रितःसर्केनाः श्रुवः द्वितः युनः श्रुवः तुः निष्णा । विद्या श्री हार्या श्रुवः श्री श्रुवः स्वाया हे भ्रेट सर हिर हे भूर रेवा या राव है या व या व या व या देव र या देवा या सूचा या सुर सेवा या व र हे या किया नःश्रमःनरुषः इस्रमः ग्रीः नितः स्वरमः निः । न्नःसः पे निसः सुदः सदेः सत्रः क्रेंनर्भाग्रीमा विमें नादि हैन निष्णिया मिर्मा मिर्मा विष्णि स्था सुर्भा ग्राम्यार्देन्यके साम्रेन् हेया । के नह म्याक्ष्या है नियनमा नियम महिन्देन से मिया द्यूर-वर-भित्र् वित्र-क्षिर-क्षेर-कष्ट्र-विश्वकीर-भित्र-क्षेत्र-क्षेत्र-क्षात्र-क्ष्य्र-क्ष्य्य-क्ष्य-क्ष्य-क्ष वःतुःश्चेःतुरःचवेःतुरुःदरःरुःगवरुशःविरुश्वःशु। ८८ःव्वतःत्त्रयुशःग्रीरुःश्चःगुरुःग्रीरुःगवगवःचर्श्वे (वुःचः८८ः) यावर्थाने सान्वाना चुःन्दान्वे सान्यानि सान्याना चुःके निवे भूनसासुः सूनसानने विवासाचे नावसासे न শ্লবম'অম'ক্টুব'5'ম'র্ট্বা।

## हेत्याशुस्य पश्चिमयार्थेय प्रम्य पात्रम्य प्रमुख्या

२७ । १६४८.२. यम् यात्राच्या १८८. यह त्यात्रा । विया यात्राच्या स्थित स्थित स्थित । विया यात्राच्या स्थित । विय क्रें रन। ने सेन कु गर्द निरम् चुदे र्से कुम र्येगम सूर्गेन चु या र्सेम से न सुर न वस स्थारी सुर न मा सुन व्हेन ग्रुमन्त्री सासुसासे समाउन गुन श्री समेनि शुर हिरा । नर् र हे र प्रा नडर्भाभी नवन वर्षे समासद्दाक्षा । नर्देश हसमास स्थान प्राचित गुर्रपदे। विर्वेशः भ्वायितः वहरामान्यावर्गायितः विवाशः शुमार्थिय। इंक्ट्रुंके हैं। न्यकिया य न्य येवे या से से से से से से से से सिया है से सिया ग्री।परायानितानु वियाया नियाम्यी सामावितासया विरायके राजानसूरा। रेव केव वनर नवे गान धेर वेंद क्वा । सु ने गार्दे र कवा श सु रे हो श रा देन । हि:क्ष्र-निक्ष्यरापाउँ याग्रीयादी । व्यान्ययाग्रीयानीया क्ष्म । व्यापी कुरि निया मार्थिया । दे निविद निया मी या सुरि विया मार्थि । यम् निष्या । त्राप्त क्षेत्रे । त्रिष्या प्राप्त व्याप्य स्थि । स्थित स्थित । नश्चम्युव्यत्रेत्रभ्भ । स्रवयः प्यश्चर्यः नदे से स्वरे स्वरे स्वरे स्वरे स्वरे स्वरे स्वरे स्वरे स्वरे स्वरं स नेश मु दि नविव प्रविवास परि मुगाया । मुन न न में हे प्रकट त भू निया यार्शिया । व्याप्तिम् याप्तिम् व्याप्तिम् विष्याप्तिम् विषयाप्तिम् विष्याप्तिम् विष्याप्तिम् विष्याप्तिम् विष्याप्तिम् विष्याप्तिम् विष्याप्तिम् विष्यापतिम् विषयापतिम् विष्यापतिम् विष्यापतिम् विषयापतिम् विषयापतिम् विषयापतिम् विषयापतिम् विष्यापतिम् विषयापतिम् विषयापतिम्य यदे कु ५ त्यः भु हिरायार्थे या । वयः र्वे प्यु कु ५ त्यः भु हिरायार्थे या । क्षर्यायेत् चित्रः क्ष्म्यरा कुर्याय भुष्य । वकुर्यं क्ष्यरा

यः भुष्विया नार्थेया । भ्रास्त्रम् म्यूना ए अई। भ्रेत रा.भटभाक्तिशाह्मभाषा भी वि.वार्श्वण । भी वारात्याक्ष्रभाह्मभाषा भी विश यार्श्या विदेवत्तर्वो विद्वस्य स्याया भुष्या अभूत्रया विश्व यार्थया रायाणानियो कुषानियानियान्य सुन्त्रम् वास्तान्य सुन्य सिन्य स यदा । श्रेस्रश्चरतिश्वराद्याः भेदायाश्वराञ्चेताराञ्चराञ्चराञ्चराञ्चरा भुगश्रदः श्रुवार्यायः विराक्षयः वदीः वार्शयः वर्षाः । रोस्रयः उदः खुर्यः दवाः ल्येट्राचाश्रुव्राञ्चेत्राच्याच्युक्त्रत्वेता । क्ष्रांश्रिक्तान्त्राच्याः । क्ष्रांश्रिक्ताः व्याः ण.सि.ल.हैं। ट्रे.ट्या.भें.ज.भक्ट्र्याय.स्रेट.सह.म्या.या. विक्ट्रा.ज.स. नर्भेश्वास्याभुदिति । भिँ द्वै दि द्वेश्वश्वापानी भि इति भेरायाभुद्वेश हा क्रेंट ग्राब्रुय गुव हु है ट्ट श्रूट न पी। हि यर्के ग इसम ग्रीम श्रुव ट्वट इसराग्री भी विश्व में स्थान हैं स्थान हैं से मिर्ट कवारा यनर्निन्न् वृत्राचर्नि वियम्यम् भुष्टि वृत्रा अनःयह्राधर्मा राष्ट्र धियें या । श्रे से देरे हे दे सुरमहे या । श्रे से दर्दायया वर्षाय वर्षाय नन्गागुरार्ने हेते भुर्वेन र्वेग विश्व विश्व मुख्य मुख्य न सक्षेत्र निवेश सर निवेत क्रित भ्रव भ्रेत । क्रित पावव निया पी श निक्र तर से प्रक्ष या पर । । रेव केव क्विव सकें वा सुवा वर्षा वर्षे च गुवा । सक्व दि से साव क्विव संदेश

शुन्वेन्यने हे क्षर सेना सम्बन्ध या सिंधिया विह्या हेन केर हैंग नर्यानाक्ष्म । क्रियाना इसर्या ग्रीया हिन् ग्री ही । सी प्रेया प्राप्ती स्वास्त्र नर्या । भ्रान्ति स्त्राप्ति स्त्रापति स्त्राप्ति स्त्रापति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप मदेःयमः इसमः नश्चनः मदेः देवः दः श्चेवः नद्याः यः स्वामः यः यः यो भेषः ग्रीशायविष्यात्रात्र्रात्र्रात्र्रात्र्रात्र्रात्र्रात्र्रात्र्यात्र्र्यात्र्रात्र्यात्र्र्यात्र्र्यात्र्र्यात्र्र्यात्र्र्यात्र् वयात्रयात्वुहानाक्ष्रम्यमा अर्देरान्धुयानु। क्ष्याने। क्षेयानुसान्। स्यान्याना वळवाबिटा । निर्देशानन्यसमा बुद्धारेगास्त्र सम्बद्धारा हो । सर्हेन् स्यायागुन्यत्यायाध्यापुन्यस्य स्याप्त्रम्याया । न्यो यापी स्र भ्रूवाविद्यार्थेवानावदेनमा विदेशासर्वेदान्ने ना ग्रुद्र कुन केदार्थेरा नर्शे । याविःश्वेयःग्रेयः ग्रुम्यः विदः येः हेवा नग्रय। । देः स्वः श्चेदः नविः हेः ब्रुशनक्रुवःयःवदी । सदशःक्रुशःविदःनुःन्ध्रेग्राशःनेःस्वानःधेश्रा । वर्तेः गुव इस द्वा बिद या श्रु दार देवा । श्रि दे गु र दूर सहया वि वे इ दूर थ व्या

नेव्यानह्यान्व्यान्वानावी हे सुर अट्या कुया वस्या उत्ती । द्वादा सुद

र् दे न्यावस्य । भ्रास्त्र हु त्युवा भ्रुस्य विग्रस्य । रे निवेद या त्या राष्ट्र राष्ट्र रहे या है। विदे र सर्वो व र वे र हिया यत्या र व र विदास स्वा श्रेश्रश्चित्रश्चेत्रप्ता । विव्यक्तिः विव्यक्षित्र विव्यक्षित्र विव्यक्षित्र विव्यक्षित्र । विव्यक्षित्र विविद्यक्षित्र विविद्यक्षित् विविद्यक्षित् विविद्यक्षित्र विविद्यक्षित् विविद्यक्षिति विविद्यक्षिते विविद्यक्षिति विविद्यक्षिति विविद्यक्षिति विविद्यक्षिति विविद्यक्षिति विविद्यक्षिति विविद्यक्षिति वर्चित्रः न हित्र ग्री शादी । वि वर्चित्रः न प्ये अ सर्वे न र पात्रः । । से हिना व स्वी मार वरी निवेश निवा विद्याद्व हैं नियम निवंश में स्थान है से सु नि से निया हेर-नर्गेरस्यस्य । गुर्व-ग्रीसप्यने प्य-ग्रीय-वर्षनस्य-नेरा । पदी-हेन-नु-ते नव्यायायर रेग्या । ध्रिंग्या न इ.व. नव्याया पदे यह या कु या दह । चह कुनःसेससः न्यदः वससः उन् निन्यः प्रतिन्यः सुः विर्येषः हैः सेन् दसः यपितः सम्यतः न्दः सङ्गारादेः स्रोस्या उत् ग्रीः प्रस्य सम्ययः स्रो ग्रावसः प्रदे शुः द्यायश्चर्यायदेश्यायायायविषापी प्रमानुः शुःद्यायशसी प्रद्यायमः नह्रम्यरम्वत्रायार्थ्या हे ज्या हु या प्रायति सुपार्यर सुपार्य ग्री हेत पदी इससाय साद र कुर्र से दिर से पार्ट प्राप्त में प्रिय से साम किया थी। नर-दु-दे-श्रेद-दु-श्रेश्रश्राह्म उत्राधी-देव-द्रमण-तु-श्रेद-प्राह्म प्रमान नव्यायासुः यार्थेत्य। नह्रवः धरः नव्यायाः वयः ग्राटः नद्याः दृदः से स्रयः उदः वस्र अन्तर्भ स्त्र में निर्मा निर्मा निर्मा स्त्र में स् 

नवरः अर्वेरः नवेः नगः भेषः भूमा । कुषः नः श्रुषः नडशः नेरः वर्ने रः ननेः ज्याया विवासिया । प्राचित्र विवासिया विवासिया विवासिया । विवासिया विवासिय विवासिया विवासिया विवासिया विवासिया विवासिया विवासिया विवासिय विवासिय विवासिय विवासिय विवास श्रभःरेगाःवहेत्रःक्ष्माभः इस्रभःवसेयः न्रमः बिटः। विवासर्वेटः इसः ग्रीसः नने नदे अर्केग नहे अन्या हि सूर वय रे हु सूर दें न न वय विदा नन्गान्दावर्षे वाल्यार्रे हित्रके त्या । नभूवायदे सम्मान्य न्या नव्यामार्भायार्भिया। हिःश्चेन्यो न्दर्भात्रः वहियाः नरः रा । श्रेयशः उतः गुतः श्रेः देतः श्रेः श्रेरा । नर्डे यः श्र्वः श्रिं र ते : नत्नाशः न्य अहें न् । बे हें न व्या के न्या के दे.यू.रा.हे है। इ.बू.जु.ब.स ब.यू.हे.हे.जु.ब.स ब.यू.सूं. ये ज्ञास यम् रेड्डि हो या पद्घ यम गाम शुरु यो के हैं भेषशा मुहै। ५५ ५.२.५ू ह्य.चा.स.४.४५.२.५ू चा.२। नह्.भू.मु.सुड्ड। नहूं.इ.स। सर्थ.स.स. णः राष्ट्राध्युक्षुँ यत्। यदाम्बुरायस्य वर्षान्य सर्वे दः र्मे प्रमूखः पः हे प्रवेदः र् । श्रु र्कें ग्राया त्रु ग्राय त्रिया राष्ट्र । विवाय प्रत्ये प्रदेश प्रदेश प्रत्ये प्रायय । इस्र श्रा | ने स ते प्वर्शे प्रदे ने तुन सहित्। । से प्ये इसु ने पु श इ सु ने हुहेर्रहृत्र्यार्ने इ.स.८०। हेर्रह्राणे हेर्से इ.से.सं.सं.दे यदः त्यायाहाये शुर्वा यम्बाम्यम् वर्षेना वर्षेना वर्षेन वर्षेन प्रति राष्ट्रम् वर्षेन स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्व यदःर्रेवःरु:यल्यायःवयःग्रहः। विर्ययेरःकेःर्दःर्वरःध्याःर्दः। विकर्णः

इसरायेग्रायम्भूयान्यार्येय। । विष्युः स्वानिष्ट्रायम् । विष्यु ব্যাপ্রা ক্র'বরি ক্রম'মর্ক্রবা শ্লুব'ম'য়ৢব'য়ব। । ক্রম'ই দ্বি'ম'য়ৢয়' नवे हित क्रुन्य की । नर्र प्रमान निवास में निवास निवास की । ह्या हु द्रमय यात्र अ हेत अळव न्या ने अ ने या विका हे द नदे व पदे रें अ यर्केनाः सुन्तः सेन्। । न्यः कें यः नन्नः हैनः नने नः परे है नः सुन्यः है या । हिनः ब्रॅटशःस्या नस्यापिट्टानि देशा हिया हिया प्राप्त यात्र शहेत सळ्व नग्र ने श निग । दगे पद्व धेव ५ दव छेव दसय प्रवस्ता । मुलाश्रश्रायदायह्दान्द्रेत्राचितः भित्रास्त्रः भित्रास्त्रः भ्रुति । न्नो र्कें ग्राम इस प्रमाय । ह्ना पु न्या प्रमाय विका क्रिया स्वाप्त विका र्वेग । क्रम्यान्मधुन्यम् श्रुन्यदे हित्तु स्ययान्म। । यत्यम्नि खुः थेः नग्र-विश्वान्य शुरु है। । द्यो खेग्य रायस्य राधिद प्रवित ख्युन राद्दा । कें ने दान के दान के दान के तान के ता

## वहिना हेत भवे श्वाहेत र्शेन्य राया राया तरा शुक्रिया

र्स्टर्स्टनो खुलाखुम्बर्गस्ट्रम् सुद्धार्यदे मञ्जलमञ्चरम् तृहः मञ्चेमा (सःखुमा मञ्चर हे । द्रस्य सर्के दः शैम्बरः) द्रस यायदेशामान्यत्यस्याया स्टाब्र्वे स्यायदे स्याय यश्रुं यश्रुं प्रश्रुं चुर निर्दे ने दें के दे दें न परश्रि प्राप्त के निर्दे कर ने दें दि हैं ष्रुक्षुं लु न यस गुर नदे सकें र म र र गहें र स थे ले स ग्रे र र न ले द ठव-५-५८मा भेट-इंगमाया सेट्रायर सर्वेव इसमा ग्रीमा मेट्रा शुट्टा र्वसाम्रीश्रम्भागम्यामस्यामस्या उत्वि विता वर्णामासेत्रमे निर्मा स्थान मुन्यानभ्रेन्यते तुर्यास शुन्दा ध्वाप्त स्युन्य स्थित स्थित हिं। यदावाश्यादा स गू रें अ वेत के अ नक्ष्म हेत के नमर श्रुरम वा केंद्र पिते प्राप्त प्राप्त के मदेगिवेर। । नुष्ठेनश्रायेगश्रारे व्यान् स्थार्कर नु नु न्या । वर श्रूर खर म केन्-न्-नर्गेन्-म-नविवा अन्-व्यून्य-व्याय-क्य-हे-भ्रव-ये-न्या । सर्कें हिर्याकु सेवा 'धेर'गा'यवव कुया सहें या । हा प्रः देवाया वा उत्रः यात्रवःश्वःक्ष्यायः ह्या । श्वःक्ष्यायः देवः केवःयाने रः यः दः । । यार्षः सुदेः वर्चे र नवे रहें नाया ग्रीया भेरा महामा । दे प्राया नि प्राया भी प्राया । दे प्राय । दे प्राया ।  यानुयाश्राञ्चारे सेवाकेवा द्वारा स्वार्थित सेवास्या । या विश्वार सेवास्य । या विश्वर सेवास्य सेवास्य । या विश्वर सेवास्य सेवास्य । या विश्वर सेवास्य सेवास्य सेवास्य । या विश्वर सेवास्य सेवास्य सेवास्य सेवास्य । या विश्वर सेवास्य न्दरावरासुरा । रदायी श्रुवार्या गाये हुँ वी वेंद्रा ने रासी या । हे दावदी वादा वी के ८ ५ ५ १ वर्षे अस्य विष्ठ विष्ठ १ वर्षे १ १ वर् र्शे से दे न ही न सम्मान महित्य है । यह दे सर्वे त्या महित्य है । नविवर् । दिरमायदे द्वया श्रीमायगुर्मामा । व्यार्थिमा क्रम्थःभिटःन्मयःनश्राम्बर्थःनरुशःहै। श्रिटःम्मिष्यःवस्त्रेवःयशःश्रुनःयः गाः तृः सः तेः श्राः शाः श्रीयाः तृरः तृरः तेः प्रेः । श्रीयाः तृरः श्रीयाः तृरः । श्रीयाः तृरः । श्रीयाः तृरः इस्म्यायम् अग्ना दिरे स्वाय क्षेत्र वहिंद्य वाद द्या हेत वहे त्य वाद राये। यश्चित्रव्युर्द्राहित्रम्ययाया । यहित्रयानत्त्रहेवे मुःयर्के प्रा सर्केन्याम् अर्केन्य प्राप्ता । स्थिति मुदे र्षे ग्राप्ता । निर्देशः नन्ययाधीन ग्रीय द्वाया । यर्केन ही व महिन सादि हैं स्थाय । इयायर्वेरावन्वारवायर्वेरावरुषाया । वन्त्रेन्सेन्सेन्स्निन्ना । न्ययः न्दः व्यापार्थः न्द्रः भ्रायः नः नवदः । विष्ट्रयः श्रुष्टिः क्रुः क्रेः गुर्दः विष्टिः । बे'८८:कुरु'य'र्सेग्रर्'पं। |यरु'ग्रे'८६रू'ग्रुन'न५ग'य'र्स्ह्रेय। |सु८' सर्भाः तुः र्शेवार्यः सहितः वेदः। । तुर्यः सेवः पक्केः दिनः वदः इस्ययः दिः। । 

हो न प्रतास के न स्वर्धित । यह या हे व प्रते विदार्थे विया के प्रतास । यह इससाम् सामितः के सामिता प्राप्त मानि स्त्रीया सामिता सामिता सामिता सामिता सामिता सामिता सामिता सामिता सामिता स धीन्यादिन्यागुन्यम्यान्येन । हेश्यम्नि एवाक्ष्रेनेवेर्याक्ष्यक्षेत्रम्याक्ष्यक्षेत्रम्याक्ष्यक्ष म्याहराया के रात्र्यरा वसराउट कुं यरा चुटा । दे कुं दे पविदाया नेपारा मश्रामश्रम् । कुःस्थायम् वाराधितः । । प्रोः श्रे रः केतः में श्रायदेः अन्याश्रम् । भ्रेगायके प्यम्भे होन् केम । निर्मायक्ष्य स्था केम सम् या। निर्मा के सम्माने विष्म की विष्म भूरः अर्यः रेवः अर्ये अर्दा । श्रुः अर्वेषः यः कुः तुरः दृरः। । श्रेः यः अर्वेषः न्यक्षित्रभुन्। विन्त्रभाग्यस्य क्ष्यस्य स्वर्त्ता । हेत्यदि वाया वी केन्-न्-न्रीयायान्यायी । भ्रुः सुन्वि नन्याय चुन्न् र्या समुक्ति नामा । हिन वर्दरगावराज्यभागाववायाभायके नरा । धवानरे भ्रेताय समार्थे रा श्रेषानरासहित्। वितासराकुःश्रेराश्चेतासदेशनत्वार्धात्रा हितादिश्वार र्जन्यस्य स्वरं स्वरं म्या के विक्री म्या स्वरं कें नेरव्या अर्वित्र अर्वे के अर्थ स्थान स्यान स्थान स वर्यान्ता । व्रे कुत्यार्से ग्राया वर्त्वात्रा मिर्देन प्राति । त्रासु करायन्य व्यः ध्रुवार्यः हवा रु त्येवार्या विदःवी वर्धे र वः सुवः सुयः स्वेवार्यः सर्मेद्रा । वर्चरार्से मराद्यायदिराने स्थायुरात्या । यावयार्वे ताते परास्ट्रिता मन्या भ्रि.म्.गुवायाह्या हु गुअया ग्रेन् हिना विवाद सक्वार् केंयाया र्श्वेन्यर रेनेन । श्वेन्यन्ना यो म्यान्य राज्य । व्यान्येन स्वर्थ । र्यर वियार्टा रिययर्टर स्यायाय रिटर स्रीयः यः यवटा विर्ध्य से हिं हुः छेः गुर्देन रेटा विद्रम् मुराय सेवास प्रायी विस् ग्री दिसा गुर्दा या विद्रा गुर्दा गुर्दा विद्रा गुर्दा वार्श्केषा ।श्वरःस्रशःहगः हुःर्मेग्रथःसहंदःहरः। । द्रश्रःसेवःवक्षेःदरःवदः इस्रयाद्या । पार्टेवाद्यायोग्यास्ययावे पार्ट्या । श्रेष्ययाद्याद्या यक्षवायान्व । शुन्नेनान्वायायेनायमायाँन। । यहेषान्नेवायने विनार्वे यम्बार्याच्या विर्वे स्थायात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रात्रेयात्रात्रेयात्रात्रेया श्रमःक्ष्माराःश्री । श्रीनःयादर्गनःग्रावःवयुनःर्वेन । यननःनः हित्यःनः भेर्गेश्यवी । धेर्यविद्वेत्रें रातुर्विष्या वस्र भेरा । सेस्र उदारेया क्रिंट्र सहि। विश्वस्य प्रत्युव प्रति विश्व विश् বহ:গ্রুই[| ||

## 

्रञ्जा । मर हिन ख्रम नामया श्रुवामा गाँवे सामें त्र त्या । विन वर्षे मा वर्द्र न्यावस्था भी निष्टा है या स्थित निष्टा है से स्थान स्थान स्था । यावरायदीरः स्नाद्रिवा हिदाया सामादः हैं हे या सुमा ही सुर्यसा वर्त् दिरे मुना । नुस्रायते कु ५८ ५ नुरे र से ५ १ वहे स गुरु र स्था । विर्वे ५ ५ से १ स्था वर्डिवाः भ्रीवाः श्रीवाशः श्रुटशः तुरुषः पदी । भ्रीतः वर्षः भ्राम् । भ्रीतः वर्षः । भ्रीतः वर्षः । भ्रीतः वर्षः । पर्युरा | दक्षेत्रायाप्तरावर्याधेतावकुः हे त्य्युवावक्क्ष्या दे त्रयायर्दे दावस्याप्तरास्याह्यसः द्युगाः अर्थाः विश्वायां सेवायाः निश्वायाः प्रदेश्येषा अर्थाः विश्वायाः प्रदेशः स्थितः । वर्तेश । श्रु भे दस क्षेत्रा १३ समा मा निष्ठ मा भी मा निष्ठ मा निष वुःमःषाणा नद्वः अवःदेवें रानिष्टा देहें से इःसा शुः हैं हो से साम र्चे से इ.स अ.चे र में या अस् सू है है। रा.लक्षे अस् या श्री रा.स. अञ्चा नहीं इसा अन्यायायायात्र अद्भुद्धा या निर्माणी से स्वाया वि निर्मा नर्रः है कुर्या विदेन विस्रार्धन स्वार्धन सामा विस्रान्त्र कर्या विस्रा क्षर्यात्रम् व्यायहेर्याय्यायत् । वाश्वराची विश्वराची वि क्रयामा मुद्रा श्री । विष्य महाराष्ट्र मा महाराष्ट्र मा महाराष्ट्र मा महाराष्ट्र मा महाराष्ट्र मा महाराष्ट्र म र्वे.त.५६। होड्डे.म.इ.स। श.५.६.म.इ.स। श.त्.क्रे.म.स। स.वे.र.प्रे. ५.२.५ू ह्य.वा.सं.व.४४.२.४ वं.वा.ये। यह.सं.मु.मु.सं.मु.सं.सं.सं. พ.พฤ.หื่อนี้.स५। वियाश.ग्री.के.क्र्याश.बि.यह.यटे.यरे.२२२.क्र.केश विट्ट. पिस्रराद्या साथा विश्वा विश्वा विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य निवेत्र अन्त्रे अर्था अवार्था । श्वार्थ ग्री न्या क्षेत्र १ स्वर्थ स्वार्थ स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वय स्वय स्वर्य स्वर्य स्वय स्वय स्वयं स्वर्य स्वय स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स् क्रिंनई अहु अञ्चलाया वृद्धायाण वह अहु हे हें या हे हि दें हे से इस श्रिं हिं से इ.स श्रुं से से स्वा अ.व्यामें से से से हैं हैं हो य णङ्की अस्याम् श्रुर्ड से 'हें हैं 'ले' 'णे' नु 'हैं। ज 'ज 'ज 'ज हैं । ह 'पा 'सू व 'अस त्रवान्त्र नहीं स्वासे लुचा.चम्चि.ट्रट.झैचाश.र्थश.विश.चाशूज.चशा अॅं.चाश्रट.विवाश.ग्री.ट्रश.कुचा.४शश.कचा.वशश.२ट.क्रेवा.ग्रुट.टे. च्रा द्वार्से त्यमानत्त्र हे त्येनमाञ्च त्याची त्रीमामान्त्र न्यमाञ्च त्याची त् रम्भी मार्यम्भार भी मार्थ मार् वर्गा विर्देन्। विस्रमः न्वरः स्मान्यः वास्यान्यः वी विर्वतः स्मान्यः विष्या コエ、型エーのカーコからコ語からいてだれ、到り、語と、



(প্রদ:ক্রুব:ম:নন্বন্মা)

# यहेगा हेत्र मदे खु त्याद विया यो या त्या स्वयास यहत हो स त्या स्वयास विया यो या त्या स्वयास विया यो या त्या स

| यद्दिना हेत्र पदे ख्रु दम्पद विना मी मा बुनाय महूत विया पत्रु र सँग्याय प्यास्त मात्र या मु नकुन्नुः सः धःन्यान् ग्रिंद्राया वित्राया वित्राय व क्रि.क्ट्र्यायान्ता । निरायान्तायम् स्वापयायम् स्वायाः स्वाया । स्वायाः वर्ने हिन्। । ग्रान्य न्रेग्राय न्या सुन प्रवेशिय प्रेम् । वर्षे मन्तर प्रया नगुना हे हेन पर्ने त्या । व्यार्थना कना राष्ट्रे पर्वाया केन प्राचित्रा विशा <u> २ तीया. याथिया. तय याशिक या १ दे १ त्रा मी १ त्र</u> वी हेत्र न्रायक्त्र राम्य हो न्रायव्यन यम् यायवेत् वया वर्षे क्या विवाय हो यात्र व्याप्त विवाय हो न धरःदशुरःर्रे ।

थुरःशुः दरः बुदुः नगुत्रः इसः नहं देः गशुरः इसमः यमः सँग्रमः शुः नर्गे दः पर्दे। ।।

## 

२० । त्युः न्दः में न्वः वस्यः स्कुः स्वसः त्यसः वस्यः स्वासः स्वः मात्रसः चे न्वो नयो नयः वसूनः न्हाः ।

नगरमाश्चरमा क्रेंट मिते प्टर एक मान्य हिते मान्य ही क्रेंट नु हैं प्य मार्ने हैं हैं मीशासळंदापार्षेद्रशासुन्तुरापायशाम्बदान्वन्त्रास्त्राह्माद्वर्भासर्मा सवटावना वयानिना स्वापित्र स्वाप्तायाय स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्व स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्याःग्रींटर् वस्य नेता यार्षे वर्षिया स्थान के दिर भ्रूष ग्रीय न मुन्ति । स्रुमा मी प्रमाय प्रिय प्रायम् प्रमाय विषय मिं र्नेते १९ अरु म्हार १५८ व्या १५ व्या १५ व्या १५ व्या १५ व्या १५५ व्या १५ गर्धेव न मुह्या ग्री सूनया ग्रीया थे त्वेया ग्री से रना हु दनर नदे द्व्या व नव्यायायदे श्रे नेर खैं। यमेव पाखुः श्राया गार्द्व मेया यक्त पर गुर श्चरः परः व्यायः गादेः हुँ व्ययः दिनः वेरः वर्षेय। नगरः गोः श्वः इययः श्वरः इत्या दे निवेद मिलेग्राय प्रस्य उद ग्रीय पदि प्य सिंद पर द्वर नभूर-५ गर्रेषा वेरागर्रेषान निम्नार्या दे इस्र राग्नेराणे नेराग्ने नर्राक्ष्यान्यदेत्य्यायार्चनायात्या क्षायात्रम् नार्षाक्षात्रभागात्र यायापानियो हुँ। वेयान्तरानभुमा भुषो नेयाग्री नर्न् केयाना थे नश्चेर्प्यश्चित्रप्रम्युम् क्रिंप्नहं म् हे अर्क्षेष्ठ्र स्थात्र व्यः उत्रः श्रीः यात्र श्रास्त्र व्याप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः श्रीः स्वाप्तः श्रीः नन्गार्थि । विवायदेव नवोग्यारी स्वाया स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वया । नर्डे अ'स्व'र्हे हे 'वहें व' त्या सुगा' वळे त्या नर्डे अ'स्व' वद् अ'द्राया' स्यादार्रहे स्यादमा में निवस्या वसायतमा यसायस्य विश्वास्त्र नि शुःगारः ननशः नहें राया नहतः धरः नत्वाशात्रशादिः यात्वाशायदेः श्रुः ने <u> शुःषदःवहेग्रासःपद्रावेदःगवेषःक्षःकेसःमः इदः वदःग्रदःसे वद्युदः विद्य</u> यार पर्देर पदे यात्र शर्श नरे स्वया हु नर्से र या पर्देर देव म्रस्य १ उ नश्यानिवर् र विद्यान सम् हिवर ही श्रानक्षन र हा ना श्री श्री है है है इंस्रू इंस्रू र्ने लया नु नर्से न पा वयया उन् लहे गया पा न न स्वा नस्य न सून रहे ग रिते गुः हेर रस्य वस रित्य कुर रम्य रस्य रस्य रहेत् गुः ह्वा व्येत्रःश्रेटःसँ प्टः विश्वः यहूँ दःश्वाश

क्रमान्न वर्षेत्र सं न्याने व्यवस्था । ध्रियास इससा वस्य वर्ष वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्

च्छ्ना स्थानिक्ष्य क्रिन्न्य क्रिन्य क्रिन्न्य क्रिन्य क्रिन्न्य क्रिन्य क्रिन्न्य क्रिन्य क

यान्त्र क्ष्या प्रति । श्रिमा हें राष्ट्री । श्रिमा हें राष्ट्री । श्रिमा हें राष्ट्री प्राप्त क्ष्या क्ष्य

#### ष्यः मृतः कें या ग्रुः कुं या या ययः यरः यर्गे दः या

२००१ । त्रुः सः न्दरः नृगेषि सर्वेषा पाशुसः वः सुषा वर्षवः विष्ठा विषेत्रः सम्वितः वेष्टः वा से स्वरः सुष्यः सु ग्राम्यानु नदे पुष्याने। हेन हेन हेम विष्यायाने निम्यान के निम्यान त्रकुषः अत्रथः मात्रअः तज्ञरः अरः क्षे तः दरः। मात्रअः देरः चतुम् अत्ययमात्रवः क्षेत्रीः अर्थेमाः सः क्षेत्राः सदेः दमामाः चः क्षेः नःर्सेग्रयायाः व रुषाव्याची के व निवादी हेर हेरान विवापार्ययाची राम्य विदापार्थे निवासी विवास या सृत्तुदेःभूनशःशुःननःमत्त्वा हेःसूरःचःनदेःस्वयते। सूनःग्राशनःन्द्रशःग्रावेःग्रहेशःचेःसूनशःचःन्त्रीशः वा ने प्यत्त्विम् त्र के अपादि अप्युत्त वा हेव हित्यने वात्व प्रदेव लु कु प्येव वा के अपादिवा पी दिव हेव हित यवे अनुवन्तु कु महिकाहेर हुँ न मवकाने वे के का हुँ न न न मावी मन मावा वन माहि राम हैं र माहें र अन्तर अकें न स इस्रमायेवामायराजन्यमा मुजायाये इस्रमायायायायित्। सत्तातु स्तरासकेत्रित्र देयाक्स्रमायन्यमा सर्केना'रूसस्य'या । हार कुन नर र र निर्मा है : भूनस खु : सके । निर्मा मीस श्चेत्रः श्रेषायः पश्चेयः प्राप्ते राषायोय। विशेषः प्राप्त श्चेतः यह या स्वर्धे सः यह या स्वर्धे या स्वर्धे स वेग्रास्त्रा व्यासेन्त्रा स्टाकेन् सून् केन् ग्री रात्राया हैं हे पहेन्या राहिन् व्या याडेया'स्या'याहेश'ग्रीश'मी'याय'८८'ई८'स'यहेद'स'स्या स्थाप्टर'यडश'संदे' भूरपित्राधरम्यूर्व देशम्य विष्युर्व क्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्र वै.स. विवैश्वयः विशेषीवै.स. विवैश्वेश क्रेंट. रा. धेट. री. वीरा क्रेंट. राष्ट्र. टट.

यश्राष्ण्यश्चार्त्वा न्यीयायिक्र क्षेत्र से ग्राविदे न्यी नश्चार्त्व न ग्रीशासक्तामा देवे क्षेट र र भारा से वे र ग्रीय विस्ति स्त्रा मुगा सुस मा नेते से हार प्राथम अभिति से हार प्राया श्री से हार हिए । स्राथम श्री हिए । नवे में न्यान्याम में नेवे निर्मा नेवे निर्मा निर्म वें रायक्तरा द्वेर र्षुभ्यय चुर विते विते नित्र या व्राप्त हैं । यश्चार्यात्रेर्याकेते स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्यात्र स्वार स्वार्यात्र स्वार्य स्वार्यात्र स्वार्य स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार स्वार्यात्र स्वार स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्य स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार्यात्र स्वार स्वार स्वार्यात्र स्वार स्वार स्वार स्वार्यात्र स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स निन्यायस्य न न्युयासु द्वायय गुरानि से दे निन्य यस्य न न क्र्रेंर'षे'षश गुर्निति हैं के दाने श शक्त मा क्रिं त्ना हु से प्रशासी हैं रगुःरशःशळंदःम। त्रानुदःतुःभैःषशः चुदःनवेः चुदःशेशशःदग्रारःभैः नियासक्यान्। बिरानिरार्ने हैं त्यस् बैरानदे मिरासराससासक्यान द्वसा शु-नै-व्यया गुर-निवे-द्वे-सु-सु-साम्य दे-निवा-वी-स्रेर-तु-सि-निवा-सी ष्युक्तसरारी हुँ र्स्ट्रेन र्से मासुसा स्ट्रेन त्र स्ट्रेन र निकास माना स्टर वी व्रवाय गवि कूँ व्यय दिंद वेस वर्षेय कुंद व्यक्ति प्रयास्य कुंद वार्षेया स्र सूर हे 'र्रेट रादे ह्या इस्र रहा है दिया नर गुरा थे मे ग्रास्य स्था देंद वेर रेश पानितर् पर्धे या या भुर्ने हे माश्र में हे श्रम्य में नगुनान्वराधिःनो नासुस्रायः देसाम्रीराष्ट्रस्यसः इस्यराष्ट्रद्रायः सुदान्वरातुः नमा द्वै जी माप देवा दी त्या थी क्षेत्र मुहमा ख्रुक्य न दुर हिन माम स

त्रिक्षी खू.श्री.खू.मु.श्रेक्षी खू.चु.सुटे.श्रेक्षी खू.सिटे.लेक्षी वृम्मक्ट्रम् नुप्नेम् स्वित्त्रक्षी खू.सिट्ने श्रेक्षी खू.स

म् अत्यास्त्राच्यात्र्यायाय्या न्येन्द्रहेन् स्वास्त्रास्त्

इससायानन्यात्रवात्रा । श्रियासाहे स्वरताना हिन्द्रस्यसाग्रीसा । हिन्दरे नर्ने निवेशन्याम्। शिस्याउदार्मेन गुर्यस्ट्रिं गुर्यस्ट्र निव्यानिकार्यान्त्राम् स्वर्त्यान्त्राम् स्वर्त्त्राम् स्वर्त्त्राम् स्वर्त्त्राम् स्वर्त्त्राम् स्वर्त्त्राम् बेन्द्रा विनयः नरीयः है स्ट्रेन् व्यन्तान् । नन्नानीयः ग्रायः नन्ययायती हिस्रेट्क्यानाय्याद्यान्यया हिस्रेट्स्ययाया नन्गायन्याया विषयाः हे सम्यानि हिन् ह्या हिन् हे स्वर् निम् नवेशन्याम्। शिस्राउन्देनगुन्यह्न'न्यार्थिय। शिर्मायम्न न्यास्त्रेन्त्रास्त्रेन्त्रात्रे अन्ति द्वात्रेष्ट्रास्त्रे स्वात्रे स्वात् बे हेंग हे बे द लेंद रादिया विद्या में अ मुंब राय विवय स्थान विद्या क्रेन्क्यान्यस्य प्रमान्यस्य । निःक्रेन्क्स्य वायान्य वायन्य । श्रुवायः हे अरद न हिन्द्रस्थ र जैस् । हि निने निम्दे निवेस दस ग्रम्। । सेसस उवर्देवरगुवरमह्दर्जनर्थया। । अर्थरमहामुन्तरम् स्वर्भरस् इं द्वं सूत्र रवायग्रममा महें महें प्रयामें महा । वर्षा हें महें प्रहें प्रयामें रान्द्रा विद्याचीयास्यास्यास्यस्य विस्थानास्त्री हिः स्रेद्राक्तास्य स्यान्द्र नक्या । दे खेद : इस्रयाया निवाय विवाय हे : सदय न हिद : इस्य ग्रीया हि'नरे'नर'वे'नवेय'न्यान्। यिस्य उदार्देव'ग्व'यह्द् गर्भेषा । भैं भर्तानृत्र्यान् भार्याने सूर्राम् इते अने हुं सूत्र् रूत् सूत्

वर्वम्याः मुः सर्वे द्रम्याः से द्रा । सर् से हे से दः से दः से दः प्रा । यद्याः यो यः गुरुप्रस्थान्वस्थान्यते। हिःस्रेन्क्षयानःस्थान्दान्यस्य। निःस्रेनः इसरायानन्यातन्यान्। वियाराहे सदयना हिन्दस्य गीर्याहे निने नर्दे निवेशन्याम्। शिस्राउदार्देव गुदासद्दान् गरिया । भैं सह न्यमासेन्त्रा । द्वीः कनः है स्क्रेन् व्यन्तान्त्रा । यन्यानी सः स्वास्त्राः नन्ययानायदी हिस्क्रेट्स्यानाय्ययान्यायया नन्गायन्याया विमायाहे सम्यानाहिन स्यया ग्रीया हि नने नम्हे नवेशन्याम्। शिस्राउन्देनगान्याम्दिन्त्यार्थि। सिंस्यम्प्रम् न्यान्याने स्वाप्ता के स्वाप्ता विकास के स्वाप्ता के त्या के त्या विकास के स्वाप्ता के त्या विकास के वयः वयः हे स्ट्रेन् प्रेन् पर्ना वन्या वी यः गुरुषः प्रयान व्ययः पर्ने । हे क्रेन्क्यानः श्रमान्दान्यस्य । निःक्रेन्क्रम्यस्यायानन्यापन्ययान्। विषयः हे अदयन हिन्द्रस्थ राष्ट्रिया । हे निने निम्दे निवेश द्या गुरा । श्रेस्य ठवर्देवरगुवरमह्दर्ग्यार्थया । भैं सम्हान्त्र्या हरान्यस्ते सूर्रिश है क्टुं कुं कुं दू रवाव व्यवस्था कुं सर्वे द्रमण से दावा दिया से हि से दे प्याप्त रा ५८। विद्यामीयास्यायन्वस्यायदी हिःस्रेद्रकुषायास्यादरः नक्या दि स्ट्रेट इस्र राया नित्र या वित्र या हित इस्र रा

ग्रीया हि'नरे'नर'वे'नवेय'वय'ग्रर्। यिसय'उव'र्देव'गुव'यह्र्'रु गर्रेया । भैं अमन न व्यान न अप्य में में मान न विष्य न निष्य निष्य में निष्य के। हिंहेर्नेन्स्तेरम्भायाके। हिंहेर्म्स्रस्यकेषार्गेयादिर गशुम् । गमर नदे न हिरमाय सुग पक्षा है। । इस सर सूर सह न नग क्रूॅब्रपार्हे हे सुगायळवावा | देव ळेव कुवार्य रच हु स्वा | हे हे सावव र्रे हे न्यवा से न कुया रें कि । से हिंवा वसासाय है हे पहें वा । परें न कवा सा यर्भयाधिवायानहेश। हिंहामश्रुरायाध्यापळायायी। दिवार्येराहेहे क्रियायायरमा क्रिया । प्रयासाय व्ययमा उत् क्रियाया यह तथा । प्रयास है भी हें ५ वर्ष नुम् विष्युम् विष्य गै भुनक्र्व भेव मदे भ्रेने दे भ्रें भन्ने निभाव ने भाग्य मन् में निभार्क भार्भे मिन मिन स्थाय वर्ष सर्वे न चर्यत्रमार्क्रमान्त्रेयान्त्रिमान्त्रमा क्रमार्श्वीरायायन्याम् वित्रमक्षेत्रमान्त्रम्तमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्र ग्रीभानक्षनभा वेवाभाशुः सेन्दासीन्वीभा वादभाने देशिक्षेत्रा ग्रीक्षिण क्षेत्रा है । नविद्र-तृःस्यानायेग्रास्त्री से मेश्यामयसम्भेषाग्राम् ह्ये ।यायनुयानायमे नविद्रानुसामसाग्राम् नुमा केंसा ૹ૾ૢૢૺૼઽૹૢઽૹૡ૽૽ૼૼૼૼૼૼઽઽઽૹૹઌ૱૱૱૱ઌ૽૽ૺૡૣઌ૽ૹ૽૾ૢ૽ૡૹૹૢૢૺૹઌૹ૽ૺૼ૾ૺૺૺૺ૾

हे'वाडेवा'च'देंन्'ग्रे'सु'गु'ठव'ग्रेश'वार्नेन्'सदे'न उन्'वस्थ 'उन्'इन्स'हे' गर्रेषःनरःशुरा कें. वे अमःइसुःसःषः असःरे सुःरःके दै नःषे हापापः प्त्रं ने प्त्रं ने विश्वास्त्र विश्वास्त्र महिन्द्र में क्षेत्र महिन्द्र म स्र-राषक्षेपानि इन्द्रियुत्व के प्री-रामान्यम् स्राप्तायम् स्रापतायम् स्राप्तायम् स्राप्तायम्यम् स्राप्तायम् स्रापतायम् स् न्ने सम्बर्भन्य यात्राम् मे मून्य कुरो राष्ट्र कुर्तु यूत्र वि सम्बर्भन्य यात्राम् मे मू माल्यायो मो दानि इस्तु त्रुत् । क्रि. त्रु त्रात्राम् इसू म्यायात्राम् मे सू रामाङ्के अपि इं द्वापूर्व के जी यह इसु यायायाया से में रामे से इसि इसि इं हुँ युत्र अँ पू यम इस्याय या या में मू म पहारा है द्वा युत्र वियय मर्क्ष भ्राप्त क्रें नर्डे अ'स्व'वन्य'ग्रे' श्रुव'स्'त्। व्रिं अ'नविव'श्रुन'यर'ग्रेन'यर' वयात्वा वि.यबुर्भेट्रिट्यर्वियाग्रीयायब्यायात्वा व्रियार्भेट्स्यूट्या इसरायास्त्रापळ्याया विरादा नहीं दारादेशाया वसराउदाया विदा ह्यागुन्ते गुन्म स्रेन्ग्रेया । स्रयान हुन्या भिया ह्या गुन्हा । सर्वेना हु 55.राम्मान्त्रें रामान्त्री विभानकूरी देवभागविष्यद्यायार्क्रमार्वद्योभाज्ञ हिं नुईविदी क्रेंट्सिक्ट्री क्रेंट्सिक्ट्रीय क्रेंट्सिक्ट्रिक्ट्

षरशःविरःकुःके नदे वरः ५ . धैं . दें ५ . ५ . वु नः यशः वु रः नदे . खें . हशः यशः गुन पदे गिर्दे स्था दूर अपनि विषय अपने अदि प्राप्त के दे । र्रेन्युन् अँ अर्क्षु व्यव वाश्वय क्षेत्र क्षे रेव केव सर या ध्रमा पक्षया थे। । दे प्रविव पार्ने प्राया स्वाय सहस्य वक्षयार्थे। ।दे निवेदाम्नेवासायहिवासायात्रस्य । द्यगायक्यावाँ । अर्केन्श्चेन्छीः गार्नेन्स्यायर्नेन्सवे प्यंत्राप्तनाम् न्याय मायदी हित्या मह्या अवे खु से मह्या समाय हैं मुसायह सा ही रामा विवे नन्गारी श्रु न्मा विन्यम् अक्ष्यास्य विन्यम् विन्यम् अक्ष्यास्य विन्यम् विन्यम् विन्यम् विन्यम् विन्यम् विन्यम् वर्दे केट्रायाम् अप्यदे सुवान्त्राम् वि निर्माम् वि स्तर्मा मान्या निर्मारम् ञ्चासुःसे साधित द्यार द्वितास त्याद्याद त्याद स्रस्य साधा त्याद विस्थाया नन्गारमान्येत् श्चिनाधेत् सर्केन् वित्रान्य स्वर्था स्वर्थी स्वर्था स्वर्थी स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स् र्येट्ट्र्ट्र्र्ट्र्यार्नेग्यासह्द्यम् हेल्र्ट्र्य्यस्य हेल्र् धीन् निवेत्न न्यान निवेत्व विकास निविद्या निविद् नन्गामी नग्रमायदे द्वेन्य न्द्रिन्य न्द्रिन्य । दे निव्नि मिने म्यायदे हिन्दे द्वेन्य ५८। क्रिंश ग्री ५ विट्र श्री क्रिंग अस्य अस्य ग्री वित्र स्यय ग्री राष्ट्र ग

नसस्याम् गुर्वा । ने निया वसस्य उत् के ने या सम्या । वियास सं से निया वर्द्या विश्वानित्र स्थान में माने विश्वानित्र स्थान में माने विश्वानित्र स्थान में नित्र स्थान वस्रमाहर् मी द्रियात् स्राम्या मुक्षार्वे नामरा मुक्षार्थे द्रिया स्राम्यान्य स्थान्त्र मान्या स्था द्रिया नर्भवाद्यान्यवम् श्रुवार्था हे प्येर्था दे नित्वा उवा नित्वा । श्रिवास इसराया हे स नक्वेन्द्रा । विद्वान्त्रस्य स्थायाया स्थलित स्थलित स्थलित स्याप्त स्थलित स्थलित स्थलित स्थलित स्थलित स्थलित स वशुर्व । वर्डे अष्ट्रव शुर्व अपि वर्षा वर्ष । वि श्री र वर्ग वर्षे वर्ष हर । वर्ष र्देश । नन्ना भेर भेर ने भेर हैं र दें हो भेरा । भुगाश्र र श्रामा हे र र न गात्र वै। जिंदानन्याके त्या जिंदा श्रीया। यह दे ज्या ही निर् ध्रेरःश्लें नः सर्वात्रमा स्थान । हे सासुः नहें नया हेरः न बुदः दया । विवेरः नडर्भागुन् मी:रनाम्बर्भाया । चित्र मीर्भानक्ष्मायर सह दायर देश। विसायदाम्स्यम्भ्यम् वित्राचान्त्राया क्षुः इसस्य राग्नेसः न्त्रोसः निवेदः नुः मविदः नः क्षेत्रः परंगुरा डेशनईन्डिन्सून्याशन्या शन्देन्ष्याप्रस्या हेन्गी सर्वर्रः से खें रायापदार्या पालेया पाहेवा श्री या त्रुवा शायह्वरायकरात्रा यह या। अञ्चारा से स्थाया वित्राया स भुवशादर्वे वशावि वन्याया वर्षे रायास्या है वने वर्षे वशावहें प्राये वर्षे वशावहें वर्षे वर शेसशः उदः वसशः उदः श्रीः देवः दुः हेवाशः यदेः श्रद्धशः श्रीः वीं वसदः विवासरः श्री देवे श्री रः दुः हेवः वदेवे रदाः ग्रम्भानाक्षां भ्रम्भाना व्याया श्रम्भाना स्थाया श्रम्भाना । শ্রম্পান । শ্রম্পান । শ্রম্পান । শ্রম্পান । শ্রম্পান । याहेशानहे प्रा । वित्रह्मश्यायायाय सर्वेत् श्वर्त्ता । प्राष्ट्रस्यायाव्यार्थे

नरत्युर् । नर्डे अः ध्रवः गुरुः रावे निष्यः वी । ने : ध्रीरः नगवः देवः अहं नः यर दिया । यदवा सेट से प्रसूर हैं हे 'धेया । सु वार्य हिव रच मव्यादी। पिर्वानन्या हे व्यापि जुन् ग्रीया। निःश्रापना में निरायक्षा । ने भ्रिम् र्श्विन अम् नवस्य स्थराया | हे सासु नहे नय हेम् न बुद द्या | वर्षेर्यः वरुषः गुरुः श्रीषः रवः वाद्रषः या । श्रीदः श्रीषः वर्ष्ववः यरः सहि । यरः द्रिया विश्वयम्बर्मश्रुश्वर्द्द्वित्मश्र्वानम्बर्मा क्षुत्र्ययः ग्रीयः न् ग्रीयः न वितः न् म्यूनः न निव पर शुरा हेम नहें न्या र निव श्वाया पिते हुं हें व से दे कें निव हे न ञ्चन्याया युदे द्वारा उव क्रीया हेव है टायदे पो लेयाया द्वारा के नाया गहेशागानगुगान्सासे वेंदान्दानी गात्रुग्यानकृत्या वेसायर शुरा শ্র্ ঐ বর্ মান্সমামা বিশ্বব্য মনু মামামামান্ত প্রেপ্ত বিশ্বর্থ वक्कानमानहत्रन्त्रः व्या के वित्तर्त्तः वित्तर्ति के वित्तर्ते वित्तर्ति वित्तर्ति वित्तर्ति वित्तर्ति वित्तर् सर्वेगः क्रेंत्रः पः त्रुः तः से १ । हेश्यव्या कें से एवर् से १ प्रेन् १ से १ प्रेन १ से १ प्रेन १ से १ प्रेन १ डेसप्यदेप्तरः ग्रीसप्तिसप्ति । देप्तसप्तरप्तस्य सेराडेप्तिष्या ग्रीसप्तिस्य हेप्य हेप्सिसप्तिस्य । द्वा विनर्भासार्वेनाममाहेत्राम्यानु नविना हे सर्वेनामा हेत्राम्यमाना कंमान्याम्याम्याम्यास्यास्या निमानामध्रमानवे क्रिंत पुरासे क्रिंत विमानी क्षेत्र मानि क्षेत्र मिनि के मिनि वॅरिन्दरनी हेत हैर मदि द्या के नाम दर्भ ने या माहिया नाम ना ना ना है ण्याकास्त्र स्त्र स्त्

# नगे वन्त्रन्त्रेव हु अ शे विक्र के सून छ वा

७७। | प्रयः हैं है वहैवाय हो द्यी वहाय विकास के स्वया निवास । क्षराग्री निवादित निवास का मिल्या मिल र्शेम् अप्यवस्य स्ट्रिस् अर्था सदि । अप्यापिक मार्च मार्च मार्च स्थान वास्य । यात्र अप्याप्त स्थान स्थान स्थान र्वे . १४.५.५ ह्ये वा श्रासदे : स्रुत् १५ : स्रुवा श्रास्त्र : स्वर्तः देव । त्या स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर श्चुनायार्थे यानश्चताहे नवना अनुवावस्थायस्था भूमानु रहु नहिसाहे माहिमास स्थानस्थानस्य नन्समा र्टाणे न्यामी नद्या मुद्दे विकास र में साम देश सह्या हुविकास सम्बद्ध स्था स्ट्रिट र दिर ८८.जश्राश्च.ययु.र्ग्रीजात्र्यूर्म्, श्री श्रीट.र्न्, ह्रेयु.यु.यु.यूर्म्, व्राप्त्रा मदेव्यान्त्रात्रें स्वार्थः स्वार्थः वाश्वर्थः वात्रात्र्यः वित्र्यः शुः हुँ प्यश्राहें हैं हैं वी श्रायक्षवाया हिनश्रावराश्रादे प्रमान्त्री विश्वासाय हो सासक्तामा द्वें रासायसारेत केताससासक्तामा त्राहासे प्रसामहा मेमामळ्यामा ब्राम्य प्राप्त प्राप्त प्राप्त क्षेत्र स्वर्थ प्राप्त स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर् वर्षाण्यराञ्जेरात्रियायानविद्या पाय्यराष्ट्रीताप्यरास्क्रता हुःयया न्युमाराङ्करासळ्दामा देखरामङ्गदेशसळ्दामा द्रायरास्यामे द्रश सक्तरमा द्वायमायित्रावे द्वारामक्तरमा मायमार्ट्वा सम्मायक्तरमा र्ने प्रयासङ्गर्भे या सक्तामा दुःप्रयास्यामी दुया सक्तामा दार्थे दे दे प्रे

यो प्रवि इस्र अर्दिन ने र प्रदेश पर्म प्रवस्था पर्म प्रवि स्था सु सु सु र प्रवस्था प्रवस्था र्हें हे पहेन्य में ने दुन्य दुन्य सुरा में दूर पाय वि दिर पाय से प्राप्त से से प्राप्त से से प्राप्त से प्राप यर गुराय दी दत्रा शुर्वाय में हे त्रहे ग्राय है द के दें भू अर्दे ग्राय है र द्याःवयः द्याः ध्याः श्रें प्रवे विषयः प्रदुः द्याः या विषयः व्या से द्युटः स्यः हः वनरनवे क्रेंटर्गु वात्र नत्या राष्ट्र नियम् वात्र विश्व यव्या निर्देश्य प्रायानित्राची क्षेत्र स्वरास्तर स्वरास्त्र स्वरास्तर स्वरास्तर स्वरास्त्र स्वरास्तर स्वरास्त्र स्वरास्त स्वरास्त्र स्वर स्वरास्त्र स्वरास्त्र स्वरास्त्र स्वर स्वरास्त्र स्वर स्वरास् गिनितः हे गिनितः नगरः में विश्व विश् ग्नेन्रसेर्स् वेस्यव्य प्रह्मायहैवाय। त्राप्तिन्यम् क्राय्ये यानेन्न्सरमा वेष्यव्या विवर्तेरावे विद्या ह्या हिन्नु व्यानेवा विद्या यानेन्'हूर'ह्य देशयद्या पद्म'वहेंद्र'या हिन्य'नर्न्यया भूर'द्याप्य क्र्रेंस्र्र्र्स्यायायविद्या क्रियायाचिद्राहे याचित्रक्ष्या वर्ष्याद्या यहायहेद मा न्युमान्यमिव हे मिलेन नगर में विषयक्षा विकर के वहें न मा मह ग्नितः हे ग्निन् द्रस्य देश विश्वविश्व विस्तित्व विश्वविष्ठ विष्ठ विश्वविष्ठ विष्ठ विश्वविष्ठ विष्ठ वि ग्नेन्'बूर'ह्य बेमप्रक्षा पर्ज्ञ'यहें त्या यन्न मुन्'रें प्रसम्भाउन् ग्रम् विभागत्रमा सके निर्देशम् निरंति । वि कि माम्मा क्या पर्चः प्रह्मेत्रः या स्याः स्राः स्वाः स्वाः विकायक्या प्रज्ञः प्रह्मेतः या न्याः स्वाः स्व यान्यरास् वियमवया वितराया विदेशमा वैरिश्यूराम् वेरामान्या मह

वहें द्वा धुरान वेगम्द्र वेगम्द्र निम्म नार्धे द्वा निम्म स्था निम स्था निम्म स्था निम स्था निम स्था निम स्था नव्यायाया अदे में दारा न दुर है या नारा न न विष्टि है न या या थी मी न दुर मदेग्विमान्या सुर्दे त्यमार्दे हे द्वै वी मासळ्यामार्ये स्मासुर्गुरायामाराया वस्रशः उत्वर्भः देत् चेरः त्यारः देवे वे व्ययः वर्षे वा वस्रशः उत् क्षेत्राः गहिरासु हैं। वेरायवर्ग सुगरापर हैं गोरासक्त पर गुरा र्से हें है हैं। वेशयवश गु.र.शुद्धा रट.गी. श्रुपाय पिटे हैं प्यय दिं हो र पहें या रट. नविव की मावस वस क्षेत्र मान्द्र नदे प्ये से साम क्षेत्र है से कि रह्यं वेशमव्या पिर्वः में रटाची श्रुपाश पिर्दे हैं यश रेंट् वेर पर्हेश द्वर गी'क्ष'क्रमभभ'क्षुव'इ८भ। विदःक्रमभ'ग्रीभ'सर्देव'मर'द्वर'नभूर'रु गर्रेण वेरागर्रेण ननन्त्रम् । नन्त्रभूत्रम् स्रा यार कु ख़्या अ श्रु गार्ड्या हु गार्द्व अ स स व्यास्य अ शु शु स स व अ स स स स स स से । रेग्रार्शी, यर्गार्श्यार्थे अर्थिय क्रियाय स्थारा क्रियाय स्थारा केटा विश्वश्चित्रात्रक्षेत्राश्चित्रश्चत्र विश्वश्चित्र विश्वश्च विश्य विश्वश्च विश्वश्च विश्वश्च विश्वश्च विश्वश्च विश्वश्च विश्वश्च ग्रें द्वात्व क्षें अपूर्व विषयव्य क्षें नहें महें क्षें अपूर्व विषयवे वरक्षेशवर्षक्ष्यं प्रदेश परिवासी प्रदेश से प्रवासी स्वासी विवासी स्वासी विवासी क्षित्रकूर्म रदःमी वियायापिते हुँ ययादि । वेर्म् र विर्मेर विर्मेर विदेश विरम् ग्री मुनार्था ने मुस्यराग्री मुनार्था वित्र राष्ट्र में मुनार्था नड्दे अद्यानु या नुदारे ये या या या या या नित्र मिन के नुया पदि प्येत ह्रवाष्ट्र हिन् ने स्क्री हिन्स्य विक्रम्य के म्या हिन्स्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम्य विक्रम् इयशःग्रेः व्यायापात्रयापीतः हे यापीतः त्यारार्यः देतः से देवः त्याया नगर में नतुन है नगर में शनार न वहीं व सन्मन ह से न स हैं श नश्चन गुः इस्र राग्ने श्चि में त्राप्त निम्ने विष्य से निम्ने स्वाप्त निम्ने स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा यश्रान्त्रव्याम्बर्भाक्षियाः भ्रीयाः भ्रीयाः भ्रीयाः भ्रीयाः स्थान्त्र । स्थितः स्थान्त्र । स्थितः स्थान्त्र स्थान्त्र । स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त सश्वापान्या वे स्टायान्या विवान पर्ते वार्या से सामित स्वापान मुँग्रायाम्ययाः उर्विः विरा श्रयाः मुः भेवार्गाः मुः विवार्गारः र्रे दे असे द्राया हिन् शुरायर प्रस्थाया के द्रिक्षे क्षे र्यो द्राप्त व द्रिष्ट स्था व सः नशुनः गुः इसमा ग्रीः सेसमा से समुनः पान्ता वे सूरः नः न्ता विवितः नुः वहेंत्रप्रार्शेषायास्य स्वर्धियाया मस्यया स्वर्धिया स्वर्या स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्या स्वर्या स्वर्धिया स्वर्धिया क्रियान्दरन्वरुषामास्यरम् मञ्जू बिदा वर्षिम् ग्रीम्याषाम् स्रथाग्रद्धरे वर्षुनमे नज्ञा स्रम् प्ये गो नज्ञामा वहूर संस्था में किया थे किया के किया में किया मे ग्री:शुःगुः ठव: ५:शुरः प्रथा गर्हेर: अदे: पड्५: व्रस्थ: ठ५: ५ द्रार्थ: प्रथः

अ देश होने भारावमा नि ने ने निमायदे नम् त्या निमाय के निम न्त भे दें त हैं म विशयवश हैं युत्र विशयवेयम्य मश्रम् के स्वित्र स्वर्थ के स्वित्र स्वर्थ के स्वित्र स्वर्थ के वर्षासर्केन् नर्केन् स्रम्यविवाचा ने व्हर्म योग्यासमञ्जून माने सह्या हा नर्के साध्य स्वर् सन्या नि न्नो पन्त स्थय श्राया अश्व विर विस्था मार्ड र निर क्षे त्या के या के नि न-११ मून ग्रे १३ अअ थे द या न हैं द य र हो द हो अ न ह्व न हु নত্ত'ব্দা गर्रेण वेशवर्देनद्वायम्बर्ययम्य वर्षेत्रवेत्यः इस्र रादेन् नु व्या ने रा राते प्रिंति स्थाप्त म्यून हेशन हैं निर्दि लु हा श्वरण राय हैं निर्दे नि है। य्हेर् दे हेव हर क्षेत्र हेवा हा। वेश र्येवाश ग्रीश नहव न विवाश ग्रीश यानग्र की शक्त शरम न हें हा व्यव्स र्वे अर्वे पहुना अर्वेन पर क्षे नदे धे ने अर्त र नक्ष्र हे हेन क्षे नर र क्रें न न बुर अर्थे वर र न न निवास पर चित्राय.ज्यात्राष्ट्र्यात्रायस्य वारायक्षीरःस्री

#### ह्राणया र श्वा र्श्या श्वा शके वर पहिंद खुया

ञ्जा । हम्मायमारम्यमार्थमार्थमार्थमार्थमार्थम् । इत्यार्वे मारमिर्वे स्कृते हम्युमार्थमार्थम् । इत्या स्व इसायह्रस्यामी,येसार्सैय,येसारपु,केंत्स्य। लटाय,कें.योब्टाका,योबेंट्यास्यामीवेंट्यास्यामीवेंप्यामीवेंप्यामीवें विश्वान्त्रम् स्ट्रान्त्रम् इ.क.र्टर.र्विर.र्ट्रम् इ.क्.च्यान्त्रम् व्यव्यक्षियान्त्रम् विश्वान्त्रम् विश्वान्त्रम् नबर्गे रिट्रानबर्गि अप्रमार्गरर्भे अपर्यम् ग्राह्मे ग्राह्मे माह्मिया वार्षे स्थान स या नर्डे अः खूदः यन् अः ने : न विदः या ने या अः यः न् यः नर्डे अः यः प्यनः न्याः यरः <u> इतायारायुः यह या क्षेत्रा स्वर्ध्या स्वर्ध्या स्वर्ध्या विष्ठ्या विष्ठ्या विष्ठ्या विष्ठ्या विष्ठ</u> यम् उत्राणी गार्च प्रमानि । वार्डवार्ने मह्मा कृषा स्राप्ता वार्डवार्ने महि से प्राप्ता वार्ड्डि स्वाप्ता वार्ड्डि स्वाप्ता वार्ड्डि स्वाप्ता वार्ड्डि स्वाप्ता वार्ड्डि स्वाप्ता वार्ड्डि स्वाप्ता वार्डि स्व शुवास्यामविषयाम्बर्यासेरार्थेम्यामराव्यामहिताम् नर्वे यास्त्राम् निर्मानिता यानेवाश्रासन्त्रान्वर्रमायाप्यस्त्वास्यस्त्रिवाश्रास्यः स्वर्भः क्रुश्रास्त्रे स्वर् वहेंस्र सम्सम्सम् न्या के त्ये क्ष स्र सम्बर्ध वा नम्स सम्म निष् यश्रामी भ्रीतासदे मुद्दाह्म सम्प्राच उत्तु नार्श्व । वर्षि विषय । वर्षि विषय । वर्षि । **धरः प्रविगः पुः पार्शे व्या** विश्वपार्हेन् व्यक्ते पात्तुरश्यारः पुः प्रत्नुश्या देव्यासे हिंगा वर्षेरः प्रवितः पुः वर्षेः अन्ति।ह्रमळ्याया भ्रेष्ट्रे सकेन्य्यायान्य निम्यक्ष्यायान्य स्ति। हःसर्केना परी । व्रःसःधे दसः वे स्वः दरा । द्रियम् न्यम् ग्रीसः के सः श्रीरः यः श्रीतः निवन्नः

वन्यान्नेंशके विन्यम् सुर्यासन्यानि । विन्यासन्यानि विन्यासन्यानि । ग्वित्।प्राम्ञुराद्ध्यात्री गुराग्रीःसर्वेदार्थः प्राम् वयानवे सर्वेदार्थे। प्रसारदार्वेशः क्रुया क्रुयः केदाह्म स्था न्यवार्चेरःक्वयार्थे। वेवार्डःख्रुयार्खेटा। क्वयार्थःश्लुख्या हेंहि वेवायायान्या डि.स.च्यार्थः न्यालेयार्थः स् श्रूरः सन्दर्धः स्थाने विष्यत्वा स्वासाय श्रूरः विस्तरम् विद्वा विस्तरः सुरित्ते स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स क्रियाया भिर्मेश्वराक्षावराक्षायम् यत्राचि स्वी । न्याक्षाक्षेत्र केत्र स्वि क्रियाया स्वयंत्राचा । वनुवार्वे नर्षे दे न् के अपन्य अहिन । सुन्य ना विन्य ने हेन न अहिन । यर्गेत् भुन्य न्युर गहेत् हेत् नु यहिन्। । न्या प्या क्या निवे हेत् नु यहूरी विस्त्र्रे वस्त्रे हेय तरी रेवा विश्व श्रेय तथा विश्व रेवा विष्ठ रेवा विश्व रेवा विश्व रेवा विश्व रेवा विश्व रेवा विश्व रेवा व मुयार्थे नगरार्थे भुषार्थे विषयम्य नहेरायदे नुष्वासार्वेषा उद्गा श्वायायकरादमः अप्तिते वित्रायदी । अप्यायी द्या के ख्राद्रा । विद्रायमः × क्रूशःश्चेरःब्रूरःक्षःलीयाःक्षःक्र्याया भियाःक्षःवरःक्षःवय् वदःक्षःवद्वः वदःक्षा । न्याःक्षः केन्द्रिकेंग्राम्स्रम्याया विनुवार्वे नर्षे दे न्त्रीमान्यस्न । सुन्द गणरानी हेव र अहँ या अर्थे व क्षुनश्य र स्टा गहेव हेव र अहँ या । र ग यशक्त्यानवे हेवर् अहिं । विरर्भे वर् में हेवर् दे राष्ट्र राष्ट्र अहे । यद्रःवर्षः वर्षः वर्षा । वर्षः द्वर्षः वर्षः यात्रशायशाचरा । कुषार्थि प्राप्तर्भि खुः कुषार्थे। । विवासिया सहसार्थि प्र

थ्वर्स्कियाञ्चा । नर्र् स्टिये क्वर्या वित्या वित्य ८८। विट.तर.× कूशःश्चेंट.बूट.कै.लेज.कै.कूचना श्रिभाकै वट.कै.प्यू. यद्रास्त्री । र्याः स्रे क्रियः स्वितः स्वायः स्वयः त्या । त्युवः वित्रः वर्षे दि र्यो यः परः यहँ न । धुःन्नाण्याने हेवःनुः यहँ न । यर्गेवः शुन्यः न्युनः वाहेवः हेवःनुः यहूरी ।र्गालका किलायहुः हेवर् अहूरी । वरार्रे वरार्रे हेवरहेर् या । र्विसः र्र्भेत् र में जात्र रायश्य वर्ष । मुला वे प्राप्त दिया वर्ष । विवाया वर्ष मदेःशुःधेःमें मार्चेत्रःविदा । व्यूदःवळे स्प्त्यः तुमः कुः नदेः खुग । व्युव्यः धेः न्याके सुन्ता । विन्यामः के या श्री ना से स्वाधिया सुक्रिया से श्री या सु बराक्षायमें नवे क्षा । न्याक्षाके के निर्माक्षाके के निर्माक्षाके के निर्माक्षाके के निर्माक्षाके के निर्माक्ष न् श्रेश्यम् सर्हित्। स्नुप्तराम्यरामे हेत्र नुः सर्हित्। सर्मेत्र सुन्यप्तराम्य गहेत्रहेत्रनुः अर्देन । न्याः वर्षः क्याः चरे हेत्रनुः अर्देन । वरः रेष्यरः रेष हेव'वर्र'न्या । रुष्र'सेव'वक्के'नवे'वर्'ल्या वर्मा । व्यष्र'न्व'स्या'मवे'वस्र यश्चर । श्रे विंशः श्रुवः श्रे वावशः यशः वर । क्रियः वे नगरः से श्रुक्यः वीं | राष्य सहस्यापित सुर्धियाम्यापित हिन्दित हिन्य | निम्मी सुन्धित हिन्दित हिन्य । म्। व्रिःसः भे न्यः के खुन्ना । विन्यमः ४ के सः श्रीनः वे मः खुर्भा खुर्मा विन्यमा श्रुभाक्षाब्दाक्षात्र्वी निवाक्षाक्षेत्रकेषायाः इसमाया विवयात्राः

कें बराया और जुरायर्रे वा संवे श्ववायो वे स्पर्ने प्राचित्र श्ववायो वे स्पर्ने प्राचित्र श्ववायो वे स्पर्मे स्वया वे स्पर्मे स्वया वे स्पर्मे स्वयायो स्वयायायो स्वयायो स्वयायो

सह्नाः हुः ने त्थ्याः विकास स्वतः ने स्वतः ने स्वतः स्वास्त्र स्वतः स्व

#### 

२० । वर्ते र नर्डे अप्यूच वर्ष भर्दे हे म्हरायर वर्दे अरायवे र्ह्हे वर्ष प्राप्त र हिंग्य स्ट्रीट नवे सुट साझ युःगविः वन्नाः इस्र सन्दः रे युदः याद्यापदः र्येन्य स्य द्वस्य वेतः सेयः वेतः स्य वन् सः सेन्यः यो वास्य वेतः चित्रकाश्चिकाग्री के वा में दिन्य स्वर्ते देनका विवास स्वास दिन स्वास के वा पदि हित्र ग्री हे का शु वा वद स्वास स्वर र्चेनःभ्रे। सःसम्मानभ्रेत्रामान्त्र्यायनार्वेदान्य्यायान्यः ना न्यामान्यात्याम्यान्यात्रमान्या याधीवायरायवातुःसराम्बुद्याग्रुद्याग्रुद्या देष्ट्यायाववात्रवात्रवात्रीत्रेत्यरायावत् क्रिंमायर्गे यहुमाळाळंदावावीमा याया अव्याद्यात्रात्विमा नुस्रायाद्वी न्वस्याद्वी क्ष्यानगादानायात्वात्वात्वात्वात्वीत्रः श्रीप्तरागुः न्यानकुत्राया हैं। <u>इं</u> देवात्रा र्बूरामाववावेगावराष्ट्रियाग्चे पॅराच्चरादेशसूरार्वरायाः स्त्री स्त्री सकेराळ्टावास्य स्वर्थाळेग्या वर्मा भीवा कें करा मुर्गे कें मारा हिना में से समा हिना मारा करा ही पर हिना से समा से से समा मही ना करा है ने नुर्हेष्ठि हैंदाराष्ट्रेदारु सुदारावेद्दारायश्र सुर्से वाश्य सुर्देशस्तर स्ट्रेट्रा रट्यो सेसम्हेट्रूं यसस्ट्रियाम्हेर्ट्याम्हेर् यशर्दिन नेरावर्षेश देवाविशानुश द्धरावन्याधिरशासु गुरायाया ररकिरहें हे इस्राधर वहेंस्राधर स्त्रुं सर्वा खूर केंत्र विषा विवास्या यद्विशःश्रुवःयाश्रुयःयः ध्रुयाःयाध्यशः श्रुः र्वेषायः र्हे : श्रुयायः गरः वहेवः ठेटः।

धुना नार्षेत्र प्रशः श्रु र्केनाशः हैं हे शः धुः नः गुरु प्रदे है वः नुः न्गुरः नहेत् पा न्नुः भुः रयः प्रवे वे रः द्वं ग्रथः उत्र देवः ये देवे वे क्रियः क्रियः क्रियः विक्रा ग्री'त्र'नवद्यार्थेष'न। देंद्'ग्री'द्रग्रीय'दिंद्र'ग्री'द्र्युर्थ'त्रंहेंदे'श्लीय'ग्रूद्र' वीश्वायत्ववाश्वायते श्रु विस्ति अवीव यस्त्रः श्रुवाशामः है। दे यश र्दिन् बेर पर्देश रहार विव श्री मावस्य वस्य निर्देशस्य सार्य प्रति प्रति । नेशप्तर्दा न्वरमेशप्तर्वस्यभूम् इक्ट्रिके न्वरमेशप्तर नभूम भेरनभूमित्रम्भरन्तु नकुन्यम् सुम् अर्थः भक्षः मुन् यक्षे इसे। ख्राक्रियो। मङ्की वैस्ट्री नम्ख्रुख्री क्रयानग्रवक्षेय यशः इसः नविदे न्युः करः यने नशः सम्राधा । न्ययः सूत्रः विदे निर्दे न्यरः वि यास्यापळेला । स्टाइसपदेहेंससासुरग्रासयायदे स्वासागरहे पाद्वाची न्त्राशुःहुँ धिवाःवी अवरः वृवायः वद्येटःवीयः नङ्ग्रीरः नः वयः वेदः वेरः वर्सेश रटमावरमी वर्गित्र भेग भेग भिग्न सेग सेग स्था ষমমাত্র-প্রীমা মামা-ক্রিমা-রামানতমা-ক্রি-প্রীর-প্রমমা-রমমাত্র-কুর্ वेरःग्रेः इसापरावस्यावसाराजी स्थापाय विसापराग्रुर वससाय

म्बर्भर्दिश व्यक्ष मङ्गाहराष्ट्राण व्याप्त स्वाह स्वाह प्राह्म स्वाह स्

र्ने इति गुरुगुर्ग र्रगारण्यार्थागुरुष्ण यम् १० है। इत्युर्ग र्रम् तःषाश्रीः मृतःषा श्रमः ने द्वैः नहा नहा क्विंतःषानहा नहा गातःषानहाः नह्य अत्यानह्य अद्यानह्य अद्यान्त्र अद्यान्त्र अद्यानह्य क्षेत्र व्यानह्य श्रान्ड प्यासुन्न ने स्यासने उत्सासने में इत्यापे से से स्वासन्य नइ ने इ प्राप्त श्रुज्ञ में वे में प्राप्त श्रुज्ञ मात मात सत्यत रात र त। ब्रॅ.५.४.स.ब्र.५.ब्र.५.मूनू डं रचने दुःम ५.म.५.म अ.म.अ.म ब्रूम ण'सू'र'ण नई'ने'रू'कृष्ण'सूत्रा क्वेड्'क्वेड्। चेड्'इड्| साद्रु'गी'ये'गी'यू' ल.बैटी डेडे.डेडी ग्रू.थे.ग्रू.थे ग्रै.जु.ग्रु.बे.ल.बैटी व्.२.व्.२.व्ह.जु.ग्रु. थे मो त्यू पा यून् इस पा इस पा नई मो ते मे त्यू पा यून ज्यून ज्यून नई क्रुक्त प्राकृत्व अफ़र्म अई मान्य नई अक्षुक्त प्राकृत्व अफ़िक्षेप्र नई। नहां अ.के.के.नहां ने.कें.नहुं.इ.र.जे.बैठी इ.र.बे.रा हे.र.हे.री ई.र. इ.२। ४२.५इ.५.५५.लॅ.५६.ल.५५१ ल.सं.५५५ ४.सक्र.सहे. नई है अम् न न थे अ न ह पा अ न न ने न न ने ज ज के अम् या अ थे। अनिनहा अन्तरायेनीयाराव अदिनिद्यायाद्वाया हितेनिति वै यापार्श्वृत्व वर्धे रहाराष्य्रापा वर्षा सुहार हार्या हार्या वर्षा सुहार त्मि १५५ म् १०० म १० म

प्रचरम्भूल्या हूर् क्रि.रक्ष्या कर्षा स्थाप्त स्थाप्त

चल्वार्यास्तरे हैं। चूर खू। सहाय तर खेंड विवास प्रार हैं। टे प्रस दूर वर्से स्रा रूट निवेद क्री मावस्य वस्य निर्मेस स्याप प्रति प् न्नरावी भुत्रत्रस्य शुक्र न्य । इक्ट्रुं नै के न्यरावी भुसान्य न्य से नर्भेर्पान्त्रान्त्र्वान्त्र्या औं सम्प्रम् न्या निर्देश्वर् मर्ह्य मुयानागुन् मुं अधिन नहेते ख्राययायया । यहा के दार्हेनया ग्री र्चरक्षेत्राम्नेरायाच्या विद्येष्याय्याम्यायविद्याः स्टिन्याः म्। । न्ययः वृत्रः वितितितः न्यरः विष्यः प्रवादिक्या । विष्ययः वर्षेत् अनुत्रः वर्षेत् <u> इ. इ. १ क्षात्र व्या श्री वायता यद्य विवाय वार १ वार व की रे ये या श्री हैं.</u> लेग्।ची अवर स्ग्राय पद्मेर वीय निर्मेर प्राय अपेर नेर पद्मेय। रर ग्वित में वित्र मिन् भेना भेन म्बर्भ उत् भुत्र । वित्र प्रत्र प्राप्त र्धेन्य नड्दे अ८४। कुरा नुर से सरा इसरा ग्रे भूगाशुर वृग्रारा ग्रे ने द क्रनरा ग्रुरम्युर्किः तुम्यत्त्र्म्यम् तुम्यः द्वे स्ति प्रियः प्रियः दिन् स्यामः प्रेया नडरूपार्दिन्नु (बु'त्ररूपातुरूपादे कु'न्न्दे पाठेगा मुगुर्पा हेत्। हुरू थुवाह्यराञ्चनराश्चा हेत्रामश्चराधुवाधूटरान्वीत्राम्यराङ्गावटात्तुःहेत्रामविः वन्वाः सेवारावासे विद्यास्त्रतः व्याने त्यामा त्रुम्यानकृष् त्यमानात्या तुया कुषा क्षाया थे । न्यायम्या क्रुया तुमायो स्थापदा वर्षे । क्षिया र्श्वेटः इस्रयाया विया वर्षेया क्रिया वर्ष्या भ्राम्यया नृत्य स्थित वर्षेत्रः भ्राम्यया न्येया यहेते । स्थित भ्राम्यया न्येया स्थित । नश्चनः वुः इसमान त्वः तुः नगुगावमा हमा वुमा चेता दे दि दि । इसा पर पर दिसमा यावीपायमा मुद्रानित्र्यायि कुर्या है हे क्षेत्रायि ही ने त्राम्दायिया ग्री नर भ्री तर वस्त्र स्वर स्वर स्वर निया स्वर निया के निया क वस्र अर उत् द्वार से दे के दिन प्राप्त के ती का का के कि कि ती है । विद्या की विद्या की कि कि कि कि कि कि कि कि नर्युरा व्यक्षकृत्वहं र्गे कुषा उ.स. उ.सा हे हे हे नड्डा नड्डा नड्डा नड्डा न्त्रा अर्थिने दुं यता हैं हे र्स्चिन यादने इयया ग्रेस्वा यादन स्थिताया वस्रशंख्यः भूके गाः स्थूष् वर्षां वर्षां वर्षां वर्षां भूषे गाः स्थूष् गाः स्थूष् वर्षां वर्षे वर्षा उट्-पृष्ट्वें गु-रु-युन्न देसमा मसमा उट्-पृष्ट्वें गु-रु-युन्न परिव मसमा उट्-न्दृहैं गु र श्रुद्ध मेन मस्य र उर न्दृहैं गु र श्रुद्ध मार मस्य र दिहैं गु र् युत्र वुरावस्य उर् पृष्टे गुर् युत्र अया नारम् रावस्य उर पृष्टे गु.२.अून् क्ष्मारवामाम्यस्य उदान्त्रेहैं गु.२.अून् झे यसारवामाम्यस्य उन्'नृहैं'गु'रु'श्रृन् अळंद्र'अ'रद्र'प'त्रअथ'उन्'नृहैं'गु'रु'श्रृन् नग्'शे' नियामात्रस्य उद्दान्त्रिः गु.रु.यूत्र्। सक्त सेति व्या सेति यार्दे व वस्य

उद्दाल् के गा र श्रुद्धा हे नर पके न माम अया उद्दाल के गा र श्रुद्धा द्या या लुय्यातकु.य.वश्रमा.वर्त्यवृह्वे.गी.ये.सैवी याचयःर्ट्यके.सेर.की.यार्य्ट्रा वस्र १८८ : भूद्वे गु.र अुत् क्यार्य दिए के सम्बद्ध सम् वर् वृहैं गु रु बूड़ा वर्र छे विवास सम्बस्य वर् वृहैं गु रु बूड़ा वाकीत हेदे से १९ वस्र १७८ मूई गु र भून निम्म १८८ में निष्के । स्ट्रेन वस्र १७८ न्वृङ्गै'गु'रु'श्रुन् वर्गार्डेर्'शे'सबुद्र'मदे'र्सुन्यश्वस्य उर्द्र'न्वृङ्गै'गु'रु' বহ্বা 5'ব'5'বা अ'र्थि'हे द्व पत्। অব'गर'सर'वर्हेना वश्चव'त्राक्स्स्र ग्री'रिवर' नुमाकु कुर बन्दे न बुर नु न कुमानमा है है नि र न करा संदे सु नु दे हैं दि कुन से दे हो र र्'हे'सदे'र्ग्रेय'वर्षिर'य'ग्रम्यायदेर'हूँ'येग'स्ग्राय'सेर'र्र्राय यशर्दिन् बेर श्रुः वृ रर्द्वे प्रदे प्रश्चा वृत्र प्रश्चा वृत्य वृत्र प्रश्चा वृत्र प्रश्चा वृत्य वृत्र प्रश्चा वृत्र प्रश्चा वृत्र प्रश्चा वृत्य वृत्र प्रश्चा वृत्य वृ ग्रीयानगुर्याययायान्यायदेवन्यार्वेत्रभेषाःभ्रेतात्रययार्वेत्रस्यातुरः मीर्यानेन्यानित्रान्त्रवाक्षियाक्षेत्राक्षेत्राचीर्यात्रात्रव्याचित्रव्याचित्र नर्गुर् डेयन्द्राया व सर्व हान हे ग्रें हु था ए खे ए खे हि हि नहू नायमान्त्रित्यम् नान्त्रीत्रम् नान्त्रीः समान्यायम् स्वाम्याने । निष्ठान्ते । स्वाम्यान्त्रम् स्वाम्यान्त्रम् व्यवसंसदे द्वं या प्रदान विका भ्राया थ्रव से या या ग्री मुरा प्रदेश है या साम है व मान्यस्थारुन्। सन्यस्थारुन्। सन्यस्थारुन्। मिन्त वस्रशं उत्। अत्रात्र विष्णु देस्रशं वस्रशं उत्। अत्रात्र विष् वस्रकार्य त्रात्रात्रात्रात्रेया ग्रीयावस्रकार्य त्रात्रात्रात्रात्रेया ग्रीया उट्राक्षाराचायो सुद्धा ह्यून्यस्थाउट्राक्षाराचायो सुद्धा स्थानाट्यारा वस्रकारुन्। अन्ता व्याप्ता व्याप्ता वस्रकारुन्। अन्ता वस्रकारुन्। यसम्बन्धाः वस्त्राच्याः वस्त्राचः वस्त्राचः वस्त्राच्याः वस्त्राच्याः वस्त्राच्याः वस्त्राच्याः वस्त्राचः व थे स्नुत् हे नरवळे न वस्र उर्ज अप व ले सुत् रुष्ठ रुष्ठ स्था प्रेति । थे युत्र गवर दरकु अर की गर्दे दर्श वस्त्र रहा अर विषय धे सुन्न नने न सन्दर्भ न त्रेन त्रेन त्र म सम्बन्ध समित्र समित्य समुत्रायते मुन्नाया महाया उत्। अपायते प्रमायते प्रमायते प्रमायते प्रमायते प्रमायते । नर हो द रावे पार्दे व रावो वा वा श्रास्त्र स्वर्ग स्वर्ग व रावे प्राप्त स्वर्ग स्वर्ग व रावे प्राप्त स्वर्ग व रावे प्राप्त स्वर्ग व रावे प्राप्त स्वर्ग स्वर्ग व रावे प्राप्त स्वर्ग स्वरंग स्वर्ग स्वरंग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वरंग स्वरंग स्वर्ग स्वरंग स्वरं सक्षर्नि, वैयात्रि, त्रि, त्रि, त्रि, त्र्री, र्रे, र्रे, वियात्रवाश्याक्ष्या गु'गुष'नश्रेगश'भैर'हूँ'सर्द्र'ग्रे'ध्याकु'द्र'ग्रुश्या व'सें'हे'नदुव'र्स'न'द्रि'नम् नडर्अं परि: न्यायः वृत्रं न्यायः क्रायः म्यायः नित्रं न्यान्यः। यात्रः मुर्यः

ग्री नगाय नित्र मान्दा के अप्री नगाय नित्र मान्दा नगो पर्त मान्दा ननेवासन्दा ने निविवामिनेवासासन्दा हैं है न्दा सैवार्से के न्दा सह ८८। यश्राभी देवाश्रास्त्ववाश्रास्यस्य उत्तरा वित्रस्तर प्यर नर्ड्र अथ्व त्र अर्ग वा में हे हे इस सर तहें स्र अर में ते खें के ना का ही की गश्रुरः ब्रुग्राशः ग्रीःग्रायरः नः त्रुः दः यो दः यदे न देवः यः दरः। के शः श्रुं रः श्रुरः यः क्रथ्या भी निर्देश प्रान्ता के शाहित क्राया प्रान्ता के दा मु प्रविश मर्वेद्राकेरावकेरवरा होद्रामवेदा श्री वर्ष्ट्रा वर्ष्ट्राम्य र्शेग्रयायायायायाया स्टास्ट र्शे रियोत्यात्र शर्शे रिया विया विराध्या है। विराधित विद्वार है। खेँ मेहू पण मेहू पण हैं। खेँ ख़्त्र पण मेहू पा ख़्त्र त मेह मेह स्ति पता महन वान्। मुवानी अपन्याम् मुकान्यवा वर्षा वर्षा मुकानी स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास्ति स्वास नश्चुन नुःशनिष्वं भूरायवानिना नुरुषे भ्रीर्रिम् देवसद्या सूनस्य रायवस्य स्राम्य स्राम स् वे नर्रायम कुषा विकारी के माम प्रमास के माम विकार के माम कि म क्षेत्रायाः इययाययाः कृषा । प्राप्तः संभित्रे स्वययाययाः कृषा । भ्रास्त्रे स नः इसरायमः मुया वियासितः ध्रेटः वे मुः सर्वेः यथा वि वे वे दि दस्यमः गुन्यमाम्य । कुने से त्यमाम्यान हो । कुन्ने श्रीन त्यमाम्यान शुरा हिंहे धिया दे देव के वास्या । शुर्म्यया निवास याम्या ।

याल्या रश्चित्रम् वाल्यान्याल्यान्य स्थान्य स

सूर्णरर्रित्री मुग्राया गिरे हुँ प्रयादि । चेराया चेराया नडुदे कुषान श्रमान्दानडमामदे नुष्ठ कुषाम श्रुष्ट श्रमा उत्ति । वेर-ग्री-इस्राधर-श्रुव-इत्सा नश्चन-ग्रुव-ग्रुव-ग्रुव-ग्रुव-व्याचेस म्या निःश्चीःसवायाः सळ्स्ययाः वस्याः उद्दितः वेदः त्याः व्यानाः स्विहे हितः ह्याः मश्री र्द्धवाश मित्रे श्रुट न के दार्चे र निवा निश्च न स्व स्व हू भूषाथ्व देवायाग्री तु वदे क्यया ध्वापाद द श्वेता पावस्य उदायया द्या रया वर् वस्य उर् रया नार्व वस्य उर् रया रया रेस्य वस्य उर्-रह्मारह्मा वर्षेत्रवस्य उर्-रह्मारह्मा श्रीन वस्य उर्-रह्मारह्मा श्री वस्रश्चर्रास्या वैस्वस्रश्चर्रास्या श्रीयान्तराम्यस्याउत् रक्षारक्षा क्षेत्रात्वराच्यत्राच्या क्षेत्राच्याच्याच्याच्या रक्षारक्षा अळ्व.स.रव.स.वसश.वर.रक्षारक्षा चग्र.स.च्या क्रम्बर्धश्वर्ष्य वर्ष्य क्रिया स्ट्रिय स्ट्र

## न्गरः र्रेग्रायात्रस्ययायः रे वियासुर वियान्यस्य गुर्ख्या

हे स्वराक्तां त्रिक्त स्वराक्त स्वर्ध मास्य स्वर्ध मास्य स्वर्ध मास्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स

नश्रयः द्वार्श्वे र हुन श्रें ग्रथः वि वशः नगरः नने कु के वः रें शः वर्ळे नरः शुर्रित्वा कें रेट्स केंद्र थ्रा निर्मात केंद्र मिन् नन्गान्ता । विन्यस्यस्य विषयः इस्रमाया विमान के द्वा विस्म के हान हैं जो के ले कि ले हो ने हैं। क्षाः श्रद्भा विदालेट अर्थे राष्ट्रित्यश्रुद्धा विदालेट विदाले ब्रेय नदे खु सुदे कें न्या इसराया । नार्ड र सास्त्र मुश्य दि प्रत्या से नवेश वि'सञ्चार्'र्गे'कृषा ए'सर्'एस हेष्ट्रि नक्ष्म नक्ष्म राज्य वा अशु. पे. द्वै. तथ इंग्रायम् इंग्रायक्ष्या व्याप्त वेट. वेट. श्रेट. तथे. वे. यो. तथेट. क्रियायाया । न्या हो न त्ये ये या ह्यया करा यही यह त्या या । हि न इसया गुर ग्री विश्व रहेत हैन हैन हैन दूर । हिन नह विश्व रहे समाने न विश्व रहे डेग | व स स ह न इं में इं पा इ स इ सा ह हि है है। न इ न इ न इ न द न त अर्थि हैं सत् इन्या सम्मार्थिय क्षेत्रा महाराष्ट्रीय क्षेत्रा क्षेत्र क्ष नशा मिवर यः मोर्दे र परे वर मोर्दे र मोर्दे र र से मशा निसंस र से र हुन:सासुर्याले गुरु:है। यिव परि से सर्या प्रमान स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत हैं प्रत इंगमाम्य हैया के मान हैया के मान हैया है सिंद मान सम्मान हैया मान हैया मान

য়ৢ৽ঀয়ৢয়৽য়ৢৢঢ়৽ৼৢয়৽ড়ৢয়৸ড়য়ৼয়৽য়৽ড়৽ড়য়৸য়য়ৣঢ়৽য়য়৽য়ৢঢ়৽য়য়৽য়য়৸৸ वर्चरायाकात्राच्यास्य स्थानायायायायायाया । प्राप्तेयाकात्राच्या न्याशुर्रिंग वि'स्र कुष्ट्रनई'र्गे कुंणा रु'खरु'खा हिष्टे हिष्ट्रा नङ्कानङ्का रु' वर्ज्य अञ्चरित्र व्यवस्था स्वायस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वयस्य स्वय ग्लूर विर सेंग्र स्वार सिंग्नु दे खें जुर नह्न गर्धे दे र्हेंग्र हे स्वेर सकेशम् यर्भेयरित्वर्षेस्रश्चेत्रम् द्रस्याम् द्रस्य वितर्भेवारा स्र हेशनदे र्स्टिन्स ग्रीस में सम्मन्नस्य उत् स्य स्था ग्रीस द्वा स्य पर्दे द द्वा । धीन् निवेत्न नु तिहे निवेत् त्या पान्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत यावर्यापराया विराप्ता । शिवरार्वे राह्या है खेरायळे याताया। शिवा हे या व्ययमीन सेंगा र्ये वाया हेया प्रदेश सेंग्या । वर्त् न सेंग्रे स्वरादिया श्-र्याःश्रम् विष्यस्त्रहानई र्गे हुः आ इ.स.इ.सा हि हि नेहू नह ५५५५व। अर्धिके दुर्भना म् ग्रायम् भेयाक्षेत्रा में रामे द्वा के ग्रायम् भेयाक्षेत्रा में रामे द्वा के ग्रायम् गणर मेश धुमा भरे के र पहें व माने । कु सुर हैं व ने र हे न उर के हिंग र्शेग्रा विसेय विद्युराय गर्हे द्यारे प्रयोग्य रहें ग्रास्य मा विश वर्त्रअःश्रुद्रअःस्रअःवर्द्रद्राचार्य्द्रद्राचुराठेग विःस्रकुष्ट्रवर्द्द्राचे कुःष् रुखा निष्ट्र निष्ट्रा नङ्कानङ्का निष्ठ निष्ठा अर्थिने हुँ यता स्वायाय सम्सेवा क्षेत्र निष्ठा ध्ययः सुर्वा अरदि र मान्या भी श्वर अर भू सुर माने नि नि माने में दि दिन र य

विर्मरक्षे नडरानावरान्ने विष्णुयार्थे दरान्यस्य उत्ती प्रस्य ळ्याःयर्वेदःश्चेनःवर्देयाःश्चेनःश्चेनश्चेन्। देशःनश्चेन्।रवेत्वनःरेवाशःवर्देदः नवीवारानग्रासे निराम सेवारा सेवारा नम्सेवारा न रादे स्वित्राया मारा अविदेश वर्षा वरा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष गर्नेद्राचस्रकारुन् भिह्ने गु.र् युद्धा देसका वस्रकारुन् भिह्ने गु.र् युद्धा यर्तिन मसस्य उत् निहैं गु र सुद्व मेन मसस्य उत् निहैं गु र सुद्व मन वस्त्रास्त्र निष्ट्रे गु.र त्रुत् वुर वस्त्रास्त्र निष्ट्रे गु.र त्रुत् अत्यान दत रा. वश्वरा. १८ १ वर्षे . गी. में से किया है या स्वराय वश्वरा १८ १ वर्षे . गी. में से निया. श्र. भेरा ना मसरा उदा भट्टें गा. दे से हैं। ये स्वरं ने मसरा उदा भट्टें गा. र्भुत्र रुषायाधितायरादके पात्रस्य विहे गु.र्भुत्र पात्रस्य रूप भूराग्री गर्वे दारा वस्र राउदा अहै। गुर्रा सुद्वा मुलारे दार के सामुदाग्री वहिग्रयायायस्य उद् अहैं गु रु युत्र वर्ष विष्ठ विग्रयायायस्य उद अहैं गु र श्रुत्र मिने द हे दे रे छ । इस सार ह निहें गु र श्रुत्र निवेष स्टर व्याप्त्रेव वस्य उर्ज्य विद्वे गा र युद्ध वर्ष वर्ष विद्वे या य वसराउन् १ वहें गु नु र्षु व वेशळ्र महास्यास्य मन्द्र मी सम्मा

वा सः जुते हुँ ते कुत से ते से ८ र ५ के राया ग्रात्य स्ते हुँ विगास्ग्राय पद्मेर न्दान्यक्रारात्रकार्द्रन् चेर् वर्धेकाराका नगुकाराकाकार्या नगुकाराकार्यात्रम् वर्षा गर्नेद्रश्वाश्चितःश्वायावययाउदःदिन् वेदःग्वीयाग्वतयाःविदःदेदःपयः निष्टानिष्ट्रा नङ्गनङ्ग न्या अर्थाने द्वायता म्बर्या महर्या महर्य हेरमहिनाःस्वायान्द्री ध्रायाद्वीनायादिन्रामात्यात्रीःसुरासाञ्चात्रामाविःनन्नाःसः न्सें त्रायनम् अप्तें स्थे प्रकारमात्र अपने में त्र खुर्या थ्रें स्था मस्य अपने र्री । <u> दर रेस्र यार्रे द नवीवास निया से लेस या सेवास क्षेवा या दर क्षेत्र या वर</u> गर्डिन् से समुद्रासदे मुँग्राम्यस्य उत्। अन्य स्याप्त व्यो सुद्र्य द्राम्यस्य उत्। षायात्रायो सुद्धा गर्देत् वसस्य उद्धारात्रायो सुद्धा देसस्य वसस्य उद्धार मन्याये सुद्वा वर्षित वस्रका उदाक्षा मन्याये प्रोत्ता हो ना वस्रका उदाक्षा मन्य थे·युन्न ग्रुनः व्ययमाउनः अप्यानः यो युन्न ग्रुनः वयमाउनः अप्यानः यो युन्न भूवानाद्यापात्रस्याउदाकारादाको सुर्वाद्यापात्रस्य स्थापादा णे सुन् हे त्यसद्भागमस्य उत्। सामान पो सुन् नगा से नियापा मस्य उद्राक्षायादाधोः युद्धा हे नम्दळे ना त्रस्या उद्राक्षायादाधोः युद्धा द्र्यासा धेव'मर'वक्के'न'वस्रक्ष'उन्'अ'म्व पो'सूनू सक्वं से व्या'सेवे'यार्नेव' वस्रश्राउन्। यावरान्नः कुः भूनः क्री वार्वेन्। यावस्य वार्वेन्येन्। यावस्य वार्वेन्येन्येन्। यावस्य वार्वेन्येन्येन्येन्येन्येन्येन्येन्येन्ये यात्राणे सूत्र् कुयार्थे प्रदार्कें सामुत्र की त्रहेग्रासाय प्रस्रास्त्र त्रापे युत्रा नर्राची वन्यायाम्यस्य उर्धायाम्य प्रमूत्रा ग्वेत हेते से न वस्र अन्तर्भात्र स्था स्थात्र विष्य विषय । विषय धेःश्रुत्व नरःकत्ःभेःसञ्ज्ञतःमदेःश्रिनामःत्रसमःउत्।अःमःतःधेःश्रुत्व वेषः यव ग्राम्यस्य वर्ष वर्ष म्या वर्षे हैं न द्वा वर्षे हैं न देश है न देश हैं न दे नडर्अःमदेःन्मयःध्वात्वःसन्यःमः इययःश्चेःनगवःननेवःमःनः। यदयः क्रुअःग्रीःनगवःनदेवःसःददः। क्रिअःग्रीःनगवःनदेवःसःददः। दगोःवर्व स्त्रीः नगवनित्रान्ता नर्डेस्थ्वावन्याई हे इस्रायर वहेंस्रायि थु क्रियायाः इस्रयाः श्रीः भ्राः याश्रदः श्रयायाः यायदः यः भ्राः द्वाः यो दः यदे यदे व रायदः । ननेवायाकेवारेवे नेवानीयान स्वयं यात्रायानहेवावया ध्या स्वयं या ग्रव्या भी वर्ष में स्वर्थ मिर्देष स्वर्थ मिर्देष स्वर्थ मिर्ट स्वर्य स्वर्थ मिर्ट स्वर्य स्वर्य स्वर्थ मिर्ट स्वर्य उन्देख्निन्देश्चन्देशक्ष्यभाष्य स्ट्रिंग्स्रियेष शुःर्शरःविग क्रॅ.शुझुंवे.शुझुंहूं। क्रॅ.ग्रेड्ट्वनग्रेड्ट्वनहुं। क्रॅ.ग्रेड्ट्रन्यणार्ग्ड्ट राणाद्वै। औँ अन्त पार्ने इन्या स्व नि ह ने हैं यत्। वेश यद याश्व समाय नि व यशःक्रिया व्रिंशः वे रक्षेश्रायाधिव यशःक्रिया । द्वी यद्व सुर्वे वाशः इस्र

यशक्त्या । प्रतर्भे भ्रु भ्रेत्र इस्र रायशक्त्या । भ्रु भ्रेत्र ह्व पा इस्र रायश मिया विषायितः ही द्वे मि अर्क्षः यथा वि वे स्वेदः स्वयं गुराया मिया कु'वे'से'यस'कुष'न'से| क्विंद्वे सेव'यस'कुष'नर'कुर्| हिंहे'धेस'वे' रेव केव स्वा । श्वाह्मस्र स्य नेव स्य स्य म्या । स्य प्य स्य स्य वावसायाया । सरसाम् सार्टा है से सामारायदेवा । वरेवायम्या सुरा नह्न यायग्याया । नने वाया निर्मे वाया निर् वर्रे क्रियं निर्देश में मुद्रानि हिंग्या महाराज्य मुख्य निर्मे क्रियं निर्मे स्थित में स्थानि स्थानि स्थानि स ठेग इ'णइ'ण भेड्डे भेड्डे भूत्र देहेगचश्रुर नवे भूचमायदी द्रिया मार्ग प्राप्त पर्वे क्रा क्षेट्राची खेर्स्याया वस्यया उट्राक्षेट्राच उट्टा खुला विस्था वस्यया उट्टाला विसामसार्स्ने न वस्ता सार्धिय वालिया प्रसामिन न स्ता वस्ता वस्ता वस्ता वस्ता वस्ता वस्ता वस्ता वस्ता वस्ता वस् उट्टें हे इस्राद्ध्यमा शु शुरूरा प्रदे सु त्या मार्ये हे ने स्टिश्य स्था धुवा [मस्यार इस्यार के ही दिया हु है है दे या मिले दे मुरा हु रे से पे दे या पित्र सु नर्भूर्यन्तरेनश्रुर्यः केत्र्यर्य्यम् र्राष्ट्र्याम्ययः नदेः श्रुवामः गदिः हुँ यशर्दिन बेर तर्सेश ध्रया स्रिया स्रिय वस्रश्राउन्दे हे ह्या सन्तर्यो न्यानित्र वितानित्र हेवा क्षेत्र वययाउर ग्री गर्दे र पया थे खुंगया पदे न युर पा के द में र निद्व ग्रीया नक्षन्यसम्बुम् न्यस्ट्रह्मा कुष्ण कुष्णकुष्ण नहुः

नड्डा ५.४.२.४। लड्डा.५.६ूँ.स८। र्म्यायायवामश्यायम् नर्मेत्रायान्त्रम् तीया मुँग्रायायदेराम्याय्याये श्रुरायाय्यायावे प्रमान्त्रात्येत् प्रमान्याये स য়ৄ৾৽ঀঽয়৽ঀৢঀয়৽ৢঀঀৄ৾ঀ৻ৠয়৽য়ৄ৾ৼয়৽য়য়য়৽ঽৢঀ৽য়ৢ৽ঀয়৻য়ৢঀৢ৽য়য়৽য়ঀ৽ वर्षिन भीन नर्से वा भीन से वा सार्पा ने साम क्री न परि व न मे साम क्री न परि व न में साम क्री न में सा नवीवार्यान्याः से वियानाः सेवार्याः सेवार्यान्दः सेवार्यान्यः वार्वेदः से सम्बद्धः रादे हिंग्राश्वर्यश्वर त्यश्वर म्या वर व्यथ्य वर म्या मार्ट्र वश्रश्राद्यार्यो दुश्रश्रावश्रश्राद्यार्यो यूर्यावश्रश्राद्यार्यो रधी ग्रेय.वश्रश्चर.रधी.रधी विट.वश्रश्चर.रधी.रधी वैर.वश्रश्च. रग्नारम्। नग्रासीः नियापाष्ट्रस्य वर्षाः नग्ना हे नर वर्के नाष्ट्रस्य वर्षाः न रक्षारक्षा रुषायाधेवाचरावके नामस्याप्तराप्ता नामवादार कु भूर-ग्री-पार्वेर-साम्रम्भारम्। ग्रीयार्थ-र्न्ट्रम्भारम्। ग्रीयार्थ-र्न्ट्रम्भारम्। रा.वश्रश्चर-प्रधारमी पर्टे.कु.ख्याश्वासावश्वरात्रटी.प्रधारमी यानुष् हेते.स्.थ.वश्रश्वर्यात्री यग्रीयश्चर्टात्र्यातर्रेयःवश्वर्थःवर्याः रहा। वरावार्डेट् से समुद्रापि मुँवाश मस्य उट् एस रहा रहा। वेश हर इयायर पर्हे यथायते वितास्य स्था । श्रिया स्थिय स्थिय प्राप्त । इयथा प्राप्त । मेश्रानश्चर्या वेश्या । प्रदेश्या श्वराण्या यार्चे प्राप्त । यह । प्राप्त वेश्या । प्रदेश्या । यह ।

व्द्रम्यार्थवार्श्वरक्ष्यादी वहिया हेत्रम्ये विद्रावे विद्रावे यो या या प्रमुद्धाया मुर्अ-विराक्षेत्रायसेवान्द्रा विदे विवासायस्य उद्याव विदा व्यत्देर्प्तःगुन्द्रमुनःनेवा । भुःक्रवाद्राचे हेर्प्त्वादः वे । वस्त्रवःवः <u> ५५:यदेखुः इस्र स्ट्रा । कुलार्से श्रुवान्त्र गावित्र द्वा । सेस्र स्ट्रा</u> र्सेरश्रामान्वत्रात्वार्या । क्रेंस्ट्रिंद्रिंद्र्युम्स्रिंद्र्युम्स्रिंद्र्युम् नदे न वेन न के वा विश्वास्त्र कर के न के विष्य विषय के निष्य के निष् श्रुयःक्षेत्राश्वापान्ता । कुषार्यः क्षेत्राचित्रः चेत्रः चुत्रः चुत्रः । विद्याः हेत्रः नयाः ग्राम्य प्रमान्त्रीय । प्रमाम् स्वीया अः स्वास्य । स्वीया अस्वरः यासी वर्त्युर विरा विर्देत प्रमु प्येत प्रवित वर्षे प्राप्त या । प्राया वर्षे प्रमु विरा भ्रीत् शुरु रहेग विग्रया शुरु रद्द्र राज्य मुरु र विद्रार्थ । वि र वर्षे द्रा ह्याय्याःविद्या । यदेः भ्रेतः द्यायः सुः स्टार्यः द्याद्याः । प्रार्थः द्यायः मश्रावर्क्क शुरुरिया । अद्याबदार्येदशार्श्वे दार्यम्या मुक्ता वर्ष्वे दार्यया । कें दिर वर् से र निर क्रेर में र संभी र संभी । हमा ह पर्कें निर र में सक्त प्रनर गुरुरेग । नरे भी र तर्वशन् पर्देश अर मदे पुष्य हिर्य परिया । पर्वार खेरे न इन् ग्री अ विना त्ये के अ क्षेत्र प्रभा । युत्र के ना अ यु ना पर तिना प्रते हैं

#### सर्वेष'नश्रद्य

ভঙা।মর্বশ্বমদ্রী য় নই অর্থিন্য শুইন্ নি দুন্ দি দুন্ দুন্ দ্বা য় স্বান্ত্র स. विचै. भर वेशे. ये. वे. स. विचै ४ दे। हिंदा राष्ट्रेट र विची हिंदा प्रेट र प्रेय खॅं प्यर्थानेत्र से के ते क्रेंन प्यम्याने न क्रुं के निवे तर नु। उक्त प्याना नु नु रु.गा.व.श्र्वाश्वराश्रभ्रेवाराश्रेवार्येवार्येट्र.ग्री.इश.स्यश्चर्यश्चित्रश्चर्य बेद्रायदे नदे न हिद्राय उद्यान केद्री प्रमाण्य वर्षे हिंद्री व्यव नश्य नहेंद्री केद्री व्यव नश्य नहेंद्री केद्री क्रॅंशः इस्रशः स्टानिवः गुवः ज्ञायः पटा । हो यस निव दः दे दिराधः ग्रामः । नगरन्दरनगरन् ज्ञानगर्ध्ययः श्रेषाय। । स्टर्निवर्गन्यदे न् ज्ञेर्यः शुः नगर। । श्रे नार्डर वें शंकीर क्रिंत प्रानगर। । वस्र शंकर सामु शंकर स शुरुरेग । शुर्ग्यश्रदः श्रुयाश्राद्दाः त्यायः वश्चीशः वश्वदः। । द्रशःश्चीवः विवरं मेन नर्डे मामेन न्दा । न न्द्रमेन खुम मेन नम मेन नम्दा । सहे मेन वनःगर्नेनःसर्वेयःनेरःसँगय। । धुःसे व्यट्सःयःग्रेनःसँगःय। । सःसुसः नगरमी अर्केन प्रमानगर। । नगरमी मामे नगरमार पर सेन। । भी ग्रड्स्यादे व्यवस्था अस्य । स्थाय व्यवस्था स्राश्चित्रभाष्ट्रम् । विस्रमान्यस्य विश्वाप्तर्पत्रम् । वि नश्रमः श्रुवः श्रीशः वर्ग्यानः सर्वः सर्वे ।

डेशमायने महाकेत्र क्वें मन्दरकेंश ग्री कुया सक्व ग्रीश श्रुमानिया

### শ্রীন'নমদ্মা

## सर्देन'गर्शेवा

🕴 अर्देर्यार्थयही भ्रुवा वर्षा प्रवास्त्राम्य प्रवास्त्र वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर अर्केन् प्रतिः स्विम् प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । अर्के पा प्राम्य । इसराग्रीयासर्गेत्रसुनयान्त्राताहेत्याहेत्। ।शुत्रसाह्ययाग्रीयायया निवेदे विश्वेद विश्वास्त्र मित्रि । विवेदिनिवास्य विश्वेद्य में विश्वेद्य में विश्वेद्य विश्वेद यहूरी विश्वरास् अस्ता श्रीयाविष्य वार्षेत् विषय सहित्। विषय स्याप्त नकु: होत्र परिंद्र नक्षुर सुर्द्र द्वार रेवाया विह्या हेत्। विस्थया हो सह वस्र र र मि । के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के रे देर नग के अ द्वार न निय न ने देर के निय के मान नक्ष्रागुन हु-न्य । नक्ष्र वहिन इस्य ग्री क्षु के विश्वेव व्यय क्रुया। निन्ना उगा भ्रे : नगु : बस्य र : उन् : विन : भ्रेन । सुव : क्षें ग्राय : नय व : विन : नग्रः वैशः वैग।

डेशमायदी दी इंस इ द्वी ग्रास्टी।

# नगर गुरुर सर्रेर नशुरु।

ययः भूशः क्रीं वाश्वः योष्ट्रा विश्वः श्री विश्वः श्री विश्वः वि

<u> न्सॅर्य,श्रुट,त्यवीयाजी,धेशश्राम्वेश,श्रीमेश,चेशी</u>

न्ययः म्रायः वित्रायः वित्रायः

मश्रमःक्री। दिस्रान्यक्रिन्नरःक्र्राम्यक्रिन्यः स्रीत्रम्यक्रित्यः स्रीत्रम्यक्रित्यः स्रीत्रम्यक्रित्यः स्रीत्यः स्रित्यः स्रित

ने स्वरुष्ट स्वरुष्ट

याने भागा स्त्राच्या स्त्राच स्त्राच्या स्त्राच स्त्

गहिरामार्थानश्चरानादी। गरानु ग्रामदे सामाविदे न्तु सामराहित वर्यात्वा सर्व.रे.क्रेयायाग्री.विस्तरवर्यातीताग्री.यात्रयास्यात्र्यात्वर्यात्वर्यात्वर्यात्वर्यात्वर्यात्वर्या यदे खु पादे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्र राष्ट् र्देर:देय:इससान्वस्य हो। यहेवारा होत् ही नत्वा नक्केत्यर्मर नसूसा यय। यटावा नर्गेव सर्केना नशुयाया शुन्या शुन्य स्वी । वर्ने या यव स्वीर यद्याक्त्र्यान्त्र्या । यदाम्युया रदान्त्रेदान्नेत्राचीयाद्वास्ट्रेहे वहेग्रथा हो दावा या हेगा स्वापा यहिषा हो या या या प्राप्त हो दा या विषय । धुअन्दर्भक्षान्यते सुर्भन्विद्यान्यर्गुम् हेयानसुर्भाषा यत्वाग्रीक्र यक्री में यक्री वर्षेर्या स्वयं वहेवाया मेर् रामेर मेर विवास मेर वया रनमी व्याय गिरे हैं मी दिन ने र मी या वि से निर में जा वि न्नरःनवे अःनन्ना विरः श्रुरिः सुः वः श्रीन्य सः इस्य सः स्र स्ति विस्ति स्ति नडशराः भूदः डेगाः गैशः श्रुवः इत्शः हे स्वतुवः दुः विविदः धरः शुरः धरः युन्न विरायवाग्राय्ययायन्त्र चीरायार्दे स्थायर्थे स्थाय्य स्थाये स्थाय हास्यावात्र्यास्यास्यास्यास्य विष्या विष्यास्य द्वार्षः व्या विष्यास्य द्वार्षः व्या विष्यास्य द्वार्षः व्या विष्यास्य द्वार्थः व्या विष्यास्य द्वार्थः व्या विष्यास्य द्वार्थः व्या विषयः विष्य विषयः मर्केन्द्रा अँ अक्ट्रैं निवासासस्य स्टासकेन्द्रियायाद्रीया नीसेयाद्रा नडमा गरन्गायरेराग्वमाञ्चारमात्रा ।गर्वेराञ्चेराधेरापायमार्वे प्तर्विषान्त्रम्यक्षात्राक्ष्यक्षात्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्ष्यम् । विष्याचित्रम्यक्ष्यम् । विष्याचित्रम्यक्षयम् । विष्याच्याः विष्याः विषयः विषय

यशिषातात्राश्चित्त्वातायशिषा कृष्टि नस्योश्वर्शःश्चित्त्वा हरा स्ग्रामानेरारे वहेत्र क्रिमासुराय। स्योत् क्रिमासुरायवे। विरासे वास् नगेग्राश्वराया वेगानहनत्रश्राश्वर्ष्णया द्वेष्ट्रीन्द्रा नश्चेन्द्रश्यकेन्या में शे विनेन्यनश्चेन्ययानमें ख्या नमें रायेन्य हेशःश्वाशःग्रेःश्चेतःप्वानश्वायद्य । १८८ वित्री वित्रःहेवावश्वा हेटः व्यामाश्रम करातुःगाश्रमाद्रान्यस्यान्यते निमानाद्रिराद्रा गुःगुत्य धुर्याग्राम् इयया भू में व्यव्याया यहे गया हो न् ग्री र कुयाया ग्रव्या नवित्रम्य महर्म्य देश्चे अपन्यत्य युत्तु स्या श्रूत्रम्य श्रूत्रम्य श्रूत्रम्य स्रूत्या रेव सें केवे क्रूं न ग्री वर नु क्रिं यथ गर्ने र स न नु न हेवे कु सर्कें र ग्रुर क्ष अंश्रुक्ष व्यव व्यवस्थ विवक्ष के विवक्ष विवक्य विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष विवक्ष वर्डेशम्भागव्याविश्वादित्राक्षेष्वि वर्डेम्प्राचान्या धिनावान्यम्बार्थायदे जुना

क्रिंस'रा'य'नर'मार्डेन्'रावे'मार्नेद'नमोग्रास्यस्य उन्'सन्द्रन्'नगुग्'रार्र शुर्ग गर्हेर्स्य सेवायायया सुर्ग्यूर्मर न न्द्रा सिर्म ने खूर न सक्ष्य न म्बिन्नान्ते प्राप्ते श्रुञ्चरे श्रुञ्चर्तु। ब्रॅं र्विङ्गर वीङ्गर रहें। ब्रॅं र्विङ्गराप वीङ्गराप रहें। ब्रॅं ख्रुर णर्नेडझगाः भूत्ने 5 म्हर्म् हुँ यत्। डेमण्यम् ग्राम् श्रीमा श्रीमा खेन समा सुरा त ब्रॅ.इ.चर्चेट.कु.ध.ख.ल.ट्य.श्रट्य.चेय.वेट.श्रुव्य.४८८.ट्र.ट्राट.च्र. सिवतःवर्त्ते क्षेत्रःश्रुटःश्रुटःसःश्रुः न्दा विनःसरःनुः प्यटःन्ययः हैः देहेवाशः ने न के त से वे खु के वा या वित्र न न न कया सवे मने त सवे स शु वा महेता वया गवयाये राष्ट्रें यही नहना या प्राच्या या नहना या प्राच्या स्था मालानम्पु वार्केन्यवे वार्ने वानवोग्यायायायाया वार्तेम्यायने या क्षेत्रा यम् श्रीराया म्हार्म रेशियावयास्य स्थार्थे स्थारीया सुझू वे निर्देश हैं। तुःनर्हेन् डेन्पार्हेन्स्य सँवासपार्धेद स्नून्यदावाडेवा ग्रुस हे छेन्यसम्स वस्य स्वस्य वस्य स्वर्णाना वार्याता स्वर्णाना स्वर् तर्वाम श्रुरमः ग्रम् क्रीमः त्रवम् दिवः स्वः स्वः त्राः त्रवाः त्रवाः स्वः स्वः स्वः त्रवाः स्वायः त्रव्यः स्व निव्यान्त्राचीत्र मुक्ति स्वान्य स्थान्त्र स्वान्त्र स्वान्त्र स्वान्य ৰিঅ.ব.মীড়্যা

गहेशमंत्रीयानन्नात्रस्यान्यम्यात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्रात्रीयात्र

विष्यः नः ने स्वरः के रः नक्ष्रस्थाः व्यव्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः व

यश्रमः महिंदि दे दि स्यान्त स्वान्त स्वान स्वान स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान

नगरन्तर्ग्रान्ता नेवे अरुवर्र्स्य अवर्त्तर्दे नवर्न्तर्भवे कुष् हेरः श्रुॅं र ग्रे अर्के र पायनुषा धुषा मी गायमान मा नहा मा प्राप्त मा मार क्रें पर्ये या विर्मे वा रायर पर्वा था स्र निव निव निव निक्री र सर्वे र निस्य न्दर्भेद्रप्रभेत्र्वादर्द्रप्रमेशयद्यायः भेत्रभः मुख्ययायावयः निवः नमा अर्केन्यार्न्स्यमः द्वेश्वेष्यायम्य युव्यः सम्बुर्य क्रेंट्रपिटेर्ट्रप्य क्वै प्यश्चा मेत्र में के वे क्वें न प्यम्य नि म् के न म्यय ग्री न न न मर्थे न यिहें र इस्रम् अँ प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप ल्टिशक्षुः शुरुरायाया दें दें प्ये भेयाया इसाया सर्वे दार रास्टि सूर वर्ने न प्रति वित्रा श्री न स्व श्रुवा स्व प्रवास स्व प्रति स्व स्व प्रवास स् व्येष्ट्रा विश्वस्था ने व्यवस्था विश्वस्था विश्यस्य विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश ८८.जम्म.४८८.ची.भरेथ.रेभेर.क्ष.म्सर.क्रिटम.मक्स.नर.हिट.ये.ज.म्म. नश्चानक्ष्यान्य विष्णा क्षेत्र विषणा क्षेत्र विष्णा श्चन श्चयासह्या प्रतियान। वयायाहेया श्वयायाहेश ग्रीश यापशापीन निव्यक्ति में निर्मा निव्यक्ति निविष्यक्ति निविष नगानामा श्रुवासमेदियानेत्रागानत्त्रन्तास्त्र विता न्रान्तिस्या 

या देवे श्रु केर अवव प्यम श्रृंव के इत्याप्यम प्रमान क्षी मार्चेव यर वहें वा से न्यर से न्युर या वाष्य यर यह से र से क्षेर वार हें र कुरुः धूरः गु। क्षेर्यरः दुरः क्षेरः द्यारः से यार्यरः के वर्षः कुः धूरः गु। सह्याः हेरः रेग्राश्वरः र्वेदः र्वेदः र्वेदः हे। वस्र राउदः ग्राटः र्वेदः सेदः सेदः स्वयः सह्याः तृः विद्यान्य विव्याया हेवा स्वयाया हे सः ग्री सः स्वया सः गरः रेवः से रेवे से इसराग्री क्षे निरास्ति। सम्वित्यमास्त्रः स्वाराग्यमानुः वैत्राप्तामानुः गुरा डेमानश्चेता रटानी त्रुवामागादे हुँ नी दिंद ने र ग्रीमा सु सर्वे के दारें वशः मुः कुषः वर्षे रः प्रः वर्षः राः श्रुवः प्रस्थ। यारे रशः गाः वे रः पुः वनरः नवे देन हे मा श्रिका सुव मा सामुका से वा सहन हे मा । न सूव वा रनःन्यावः सञ्च द्वेनराः नरासः से विना व्याः क्रियः विनः न्रान्य राज्यसः वर्रेर्यानेग्रा । अँ तु ग रू हूं अ है य है अ सू रे सू र नह अ अ थ हं इंद्रुं ने ने ने विश्वास्य में निष्य स्थान के महिला के मह ५.ल.चुडे.इ.ल.के.वंश्वत्रात्रेष्ट्र.वंश्वराच्चेश्वस्य वार्ट्रस्यात्रेष्ट्र.वंश्वराच्चेश्वस्य वार्ट्रस्यात्रेर्यः वनर नवे केंद्र ने र मुक्ष । वा केंद्र मुक्ष र वा साम के वा सह द के दा । नश्रुवायास्वाद्वायास्य श्रुष्ट्रिवसावस्य स्थाति । सुःक्रिया वित्रास्त्रिसः द्वारा वर्षः यान्नान्न्रेन्ति विभागमान्रेन्। नेवमानान्यन्यानान्यन्यिन्तिः स्नामान्यन्यन्यन्यम् विभागमान्यन्यन्ति।

मृद्धेश्वानमुत्रायदे स्ट्रेत्तु म्यायशायदे सम्रोतायविषा स्ट्रेशेत्र स्रोत्त्र स्राया मित्रामा स्ट्रित्त मानेत्र विया क्रिय्या सुर्विया स्वर्वा क्रिर स्वर्वा या या स्वर्वा या स्वर्व या स्वर्वा या स्वर्व या स्वर्वा या स्वर्व या स्वर्वा ने ने स्व सर् ने ने से सु सु सु दू वे विषायव ग्राह्म से मु मू मू मू मू मू मा पा सा पा हि दी स् रे रे विश्व विष्य विश्व विश्य विश्व विष मदी । अश्वतःमदे न्याङ्गायदे निवेशाया । निन्ना उना निर्मेत र्श्वेन परिंतः नडर्भाग्री विभागवस्य नन्गान्दाक्षेत्रानन्गायिक्रान्यस्थाग्री विनामित्र नरः करः गुरु वि वि । वि रमयः नर्भे र रस्य र नरः नरः नरः । अहरः निरा विराधियाया है न इर क्रियाय दरा विवित्त सुर्न नर र वर्षाया । वर्देन देन भीन निवेद वर्षान सम् अहिन । विन सम् विवेद सम् धेरा विश्वश्वायाभ्रवश्वरहा यामि हे स्वापिता विदाया हैन त्या उत्तर्भव हैन डे'प्पर'भे' मु'वेदा । द्वो न्यसुद्र' शुंश र्ह्वे वार्यायर मु। । यह मी से सरादे लूरमाश्वीतरीका विद्वीत्री भरमाभिषात्रम्थात्री भिष्मामाभरमान्त्रमाभर मे निया । भ्रिष्ट संस्थान क्रिप्त संस्थान स्थान 

#### ग्नेग्रथःग्रब्धः गुर्दे।

नविन्मः में से विन्द्रन्त्रभेट्न स्थानमें ख्यादी सन्दर्भे श्री स्था नगरमुरःश्रेष्यशन्रःविरःनगरःभैरःश्लेष्ठः स्रेतःस्रे स्रेति स्रोति <u> २८.यालूच.पूर्या.थे.विश्वश्वश्वाहरूमी.ली.यायबीर.क्षे.पर.क्षेटी.कायि.ब्रियोश.</u> सर्तिन् के तर्गा हुन के कि का निष्य में ति स्ति हैं दि का निष्य में ति स्ति हैं दि सि हैं ८८.जशः द्वै.जशः वि.मू.चग्रेयशास्त्र में दिनः मूचे विज्ञा व गिहेशःग्रीशःगाशेरःग्रीःहेशःशळदःसदेःहेगाःठेःनश्रूशशःनिराहिःर्विदेः मुन्रकः ख्वाराष्ठ्र वार्षेत्र व मुन्यो स्वर्य ग्रीरा वार्षेत्र रा नन्या नयोगाश र्कें याश बेद श्रीश यार्देद प्रदेश नन्या हेन् रहत त् श्रूर प्रदेश श्चे निर्देश अम्बिर्यराष्ट्रः श्वायागिरे हैं मी दिन् वेर मी अपो नेया शुन ५८ मा हर्द्ध भे के महिमा स्रोप से मान से मान से साम सा दे दशमें भे देश दें पदी देश में चित्र में मुग्य शुप्त पद्म स्याप भी प्राय ग्रे क्रान्य अर्थे र रे अरविद पर्हे र विअवित विज्ञ न क्षे ज्ञर अरवे अरे वयावि प्रवेश्येयया ग्रीया मित्रा स्वित्तर प्रवासित्त स्वासित्त स्वासित स्वासित्त स्वासित स इट.इट.ट्रेर श्रर.लट.वि.ध्रे.वडीवे.क्य.ह्याश.श्र.यक्षश.हे.श.ट्रश्याश. ग्री-दर्ग अन्तर्मिया अन्ति है। वर्षे राष्ट्र राष्ट्र अन्ति वर्ष क्षित्र वर्ष स्त्र अन्ति । र्हे. नेट.रेश.त. में. शु.सेटा.श.श्चाया विचा दे. लूट.या.सेश.ताचयता. हे दे न वर में कुरु न न न न हे उस द्वें र पदे र पा हिन पर महिन

लट्ट्याट्ट व्यास्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

यः यन्त्रें अर्थेन्य अर्येन्य अर्थेन्य अर्थेन्य अर्थेन्य अर्येन्य अर्येन्य अर्येन्य अर्येन्य अर्थेन्य हिया दे प्येय के या दे र पर्दे र रहें द र देव पा विद प्रमुन्न । नाय हे रहें पर्दे दे कुलारीं ग्रवसायाणी । कार्ग्वे साधी कावा नर्जे साव दी । या सामुन्दर्गः र्शे सूत्र कुर स्व | सद्य स्व स्टर्ग सूरे में सहय प्र ने रायके । विय हे सूत्र प्र नर्मेश्वर्म्पतकेवित्। । यद्वर्म्पत्व्यव्यव्यव्यव्यक्तिम्। सह्यासरास्ट्रित्केदाहाद्वारा । वायरावके विटार्स्ट्रेवसास्ट्राह्मस्य सरादगुरा । गाया हे । प्रसाय देवे वरा ५ : भी रा निवा सावरा सुर से व वयःवर्गावेद्रिः यःवर्त्वुद्रा । द्विःवर्गात्वद्वेषार्थायः सुवः सः द्वा । अः न्रीम् अः अः नर्मे अः वः वर्ने नः ने वा व्यव्यवः व्या व्याव्यः व्या व्याव्यः व्यावः व्याव्यः व्यायः व्याव्यः व्यः नर्मेश्रायान्या नर्मेश्रायदे अदे बुवा हु अप्नश्रयात्र हेश्रायाने प्रवासक्षेत्र यथा रट:र्टावाब्व:खेवाश्राखेँ र्यं रायाचीश्वव:प्रव:रे हेर्यावायः केर्दे।

परियास्यास्य स्वायात्ते हिरारे विष्ठ म्यानाम्य स्वायात्त्रे स्वायात्र स्वायात्त्रे स्वायात्त्रे

यहिश्यस्य वित्ति ।

यहिश्

मशुस्रायान्त्रसेट्र भ्रीत्रायान्त्रसेट्र भ्रीत्रसेट्र भ्रीत्रसेट्र भ्रीत्रस्य भ्रीत्रस्

च्याः भीश्राः स्वाश्याः स्वाहित्त्रः स्वाहेत्रः स्वाहेत् । स्वाहे

श्रुराया येवाराज्यात्र्वात्रीरार्वेरायाःश्रुर्यदेत्र । श्रुरार्याप्या यर हो द हिंदे तहा या । इस दगर दो सकें र खेर तर हो र तर हो या या कें वा या ग्री । गर्भर-र-प्रमुर-सेव-स्वादे-वर्गदे-वर्गदेन । दे-क्षु-व-प्यर-क्षेत्रभः न-१८% अपी । श्रूट-न-५ अप अप्ट्रेंट अपने के वी मी निवरा । श्रु निर्देश स्वायम् स्वयम् स्वयम् वरीवन्यायवे मालुर्याय कु माने र न्या । इस न्या हिन् क्रम्य ग्री विदेश नया ग्रेम्या विग्राम्य निर्माय क्षेत्र सक्ष्य निर्मे क्षेत्र क्षे क्षेत्र स्मित्र विश्व क्षेत्र स्मित्र विश्व क्षेत्र क्षे यानशाधीन्। नह्रवारा क्रिन् से साचेन्। । ने छि सान्धना वाश्वारा वाश्वारा वे वाशा नन्द्रत्रि विवासःस्वासःवाहेरःवमुःस्वाःवदेःवदःसर्द्र्या विमुः यशःमेटःट्यःश्रुया । देःभूदःभूगःवश्रयःद्याःपदेःश्चेतःद्रयःयशा । वनवः



# यान्याया से मान्या विषया में स्वाप्त में स

इंद्र-वोच्चन्नभासीवो.धे.च्चेन्ना-तद्देनाकी-चन्नेय-वर्च्या-तत्त्वयम् स्वीम्य-स्व-की-कुवा भिद्दे॥
स्व-स्व-क्ष्य-संक्षेत्र-संक्षेत्र-संक्ष्य-संक्य-संक्ष्य-संक्ष्य-संक्ष्य-संक्

## क्रें तसे दे ने ना ना न न रहे ला

७७। । अ. भे. में ध. य. यकूचा जा चीया य थेटे. येथा । कें. यही प्रह्मेच. मी मिन्य रहे वा ही । दे प्यर मिर र हु हु निये मिले से । हिं मिश से दे र में र्शे मिश नहेव वया । भरत्व न देय पर ग्रुय पर ग्रुय पर हो । विद्या तुर विना नि ही । क्ष्र-गिन्न । न्त्रुश्यन्थः भूनः नुनः क्ष्रं स्थः क्ष्रेनः नु। । कः केतः ने से श्रास्त्रवः द्या भिर्मे हो न प्रहें र हो । प्रवेद प्रवेद या है या । व्यवार्य या प्रवेद र प्रवेद र या विद्यार विद्य ह्यायान्त्रात्रे त्याद्रम्या व्याप्ति । त्याप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति । त्याप्ति स्वाप्ति । त्याप्ति । त्याप्ति । न्तरः तुनः क्रम्याः यापयः प्रमाणित्। विष्टः वी क्राक्रेतः क्रमः ने प्येया। नर्वे अः स्ट्रेट विवानक्कित् इट रेवें र वात्वा । ते त्वा क्ष्यशत्र व्याचिवा । वसर्मिते हे अ सेर से जिर हितर । विवान कि र से अ निव निव निव निव निव । रेर.क.क्टरन्तु नड्रेरे। विद्युर न नर्शेस्र स्था सुस्र नक्तु दर्। द्विता द्र क्राचियावियाव्याच्या विवाधारायदे हिन्द्रस्याद्या विन्यायद यिष्ठेश्रास्त्राचन्त्राच्या । स्रीयाधिराद्या न्या । स्वास्त्राच्या वर्नन्यासी प्रमित्रा । नेरामन्या स्मान्या में विष्ठी निम्द्रित्र अपन्या स्मान्या समान्या समान श्चरःश्चरासह्य । सबदःसम्भान्त्रान्त्राम्यास्यान्त्रान्त्राम्याः कक्रिन्य हा निः परामित्रावया अमीत श्रीता निकक्रित रेप्तर हो। याला । क्षः क्ष्टः यक्किटः द्वा । विश्वः क्षेत्रः याक्ष्यः विष्यः क्षेत्रः याक्ष्यः । विश्वः क्षेत्रः याक्ष्यः विष्यः विषयः व

स्वितान्तर्रं निवस्त्रात्त्री। कि.क्रिंत्व्रिक्षः स्वान्त्रित्रः स्वेत्रः स्वित्रः निवस्त्रिक्षः स्वित्रः स्वत्रः स्वित्रः स्वत्रः स्वित्रः स्वत्रः स्वित्रः स्वितः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वित्रः स्वितः स्वित्रः स्वितः स्वित्रः स्वितः स्वित्रः स्वितः स्वित्रः स्वितः स्वतः स्वत्यः स्वतः

ळ कुर द्र तु अ वद द्र हर भा विया देर यह न त्य या वद गु व हे भा वि दे हैं द न्तरः त्राक्षरश्चिषाः हु। विश्वायः क्षेत्रः द्वापि । यदः श्चीः विषाः इसरास्र निवानिया । ११८ व्या करा से या से दिया है में स्था है से स्था । विष्ठे वा है स धरः कः कुरः नृत्रा । श्रेषः निवे विवा नकुनः भरः त्वा वान्वा । श्रुः ग्रुटः नुः वे यान्यः भे 'न्वें या । ने 'वया नर्में 'तुरः य'न्भे वाया स्वी । सर्वे 'वें 'वस्व सुव सुवाया केत्रच्या । भ्रें त्र या ग्रुट र र के ता या था । ग्रुट त्र या के ता च्या र ट र दे। । क कुर हो र ख रें र र र थे। । यक व तिर य तु र र र र या व र य । व व र र कः कुरा धेराधारा । भराव्यार्गा विद्वार्गा विद्वार्भा । विद्वार्भा । विद्वार्भा । यदे ग्विट् स्राट त्या । वहवास नेट द्युट वस ग्रु सु वस । । द्युट स उद गुनःसदेःहें हे भेश निव्दायायदासदे सेससा गुरा निव्है।

### ग्यायायायायायाच्या

२००१ । नापर न्र-र्सेन्य अप्पेन्टि त्वना नापर्य प्रस्य न्त्र स्थे नान्द्र स्थ्रुत से ते स्था यही स्थ्रूर स्थ्रू भूष्या । नापर न्र-र्सेन्य अप्योगिष्य स्था निष्य स्था निष्य स्था निष्य स्था निष्य स्था स्थ्री स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्री स्थ्रूर स्थ्यूर स्थ्रूर स्थ्यूर स्थ्रूर स्थ्यूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्यूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्यूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्रूर स्थ्यूर स्

म्ह्रिने ग्री सुव र्क्वेग्रायम् वेशयहित्य प्रयेग्वर्शसकेंग्यने मा विदेत अग्रीत र्श्वेत प्रिंत रेखेंदे र व्यवित या र र र विवास र नश्चरान्यां विष्टिराय्त्रेरायां विष्टिरायां विष्टिराया यलट.रेशक.पर्चूर.सेथ.ययश्चात्रास्त्रश.स्रुक्त विग्रयास.मुस.क्रूयास.ग्री. ननरः क्रॅन पर्वेदि कुषः श्रेन श्रुप्त तुन्यो। । श्रुप्पणर नमयः पर्वे र श्रुनः मङ्गानुदान्याम् वाष्याविषान्ययाने द्या । कुषायळ्वाविमार्ये न्या नियाह्मायानमुन्ती । धुमायान्निम्यादर्भिम्युम्यायायायायायायायाय्या इसप्टोन् वस्यार्ग्य रास्य स्थान्याः नेसप्ते। । प्रेसिस्य वित्रान्य वस्य न्वो लेग्रायन्तुर विरक्षे ।हेन वर्षेया सुन की शायुन परे ह्रायकुन की । युःगणरः द्रमणः वर्ते रःश्रुवः ग्रामायायः स्युकाः श्रुव्या । क्रें से रःवदः से दः वर्दे दः मदे देव गुव गुव । क्षेत्र भारत स्वर पर्वे र न सुव सुक्ष स्वर ।

ज्ञान्तर्म विद्यान्तर्भेन्यत्र स्था ॥

ज्ञान्तर्म विद्यान्तर्भेन्यत्र स्था । विद्यान्त्र स्थान्तर्भेन्य स्थान्य स्थान्तर्भेन्य स्थान्तर्भेन्य स्थान्तर्भेन्य स्थान्तर्भेन्य स्थान्तर्भेन्य स्थान्तर्भेन्य स्थान्तर्भेन्य स्थान्त्र स्थान्त्

# वर्'रा'देश'वया'ता'कुं तयीया चिःक्षेता अर्रेर पर्नेशा

अश विह्नमा हेन विदेन परिया हैं में के नियम सेना विश्व सेन वक्रेन्यसासुरावहँसरासहंद्या । सर्वेद्रसेन्स्वानस्यासुरायहरात्रस्यरा ग्रे भुन्य। । यह यः क्र्यः कें द्यमा से दः त्यः सुमा वळवा वी । महस्य देह दी औं वःर्शे इगाः सः हे । अग्यः दे से हा अण्युह्नु व शुः वे वे वे ह हे हें दू हूं । पा ह वू गानुःपा षदःने अध्या नुकूषा नुकूष के सुहे सुहे। अनु सुहे षा सरे भ्रे.य.स.की लामान्त्राम्य के कि स्थानित के स रे. भुङ्काङ्गराते। यायावायायाते याते भुङ्का यद्वायायाया से सू रे सूत्र ग्राम्य हित्र के के अपन्ति हैं सहे पे सूत्र राय स्वाप्ति हैं त पिते ह्या पित्र मित्र नियान्यनाप्ययाक्षे प्यास्त्रियाय। । इसायम् कुयास्ये विनयाया सुना युन्न औं विर्मरनाययार्श्वयानू रेया । तृहुरे प्येयावहिन्यायान् मुन् र्श्वन्यायात्र्यम् । त्रित्रम् व्याप्तत्र्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् । विष्यम् । विष्यम् । विष्यम् । विष्यम् व

रदेः क्षें वया के प्रमुमा इ ख्यादी। क्षेत्र पाने क्षेत्र या ग्रीया या या स्वाप्त या पाना प्रमुण हिरत्ह्यायत् । श्वेद्यत्रेष्ट्रय्या श्वेद्यत्रा श्वेद्यत्रा श्वेद्यत्रा । श्वेद्यत्रा यट-द्याःवयवार्या । शे.ली.शेट-वो.क्ट्रंयः विस्रशः क्रेंचर्यः हेवारावया । श्वेट हो ठवःग्रीःग्रॅन्।होरःवह्याःभव। व्हिंयःविस्रशःभ्रेत्रशःग्रीःश्चादीःग्रयाशःभरः ग्रीम दियाविस्रास्त्रम् सित्रके प्याप्तियात्रम् विव विक्रास्तरे क्रिंत्र ग्रीस सदस मुस प्याप्त । सि प्ये से दाने पर्वे दियं से दान हैंग्यायात्रया । श्वेदाहे उठा द्ये द्येदा हिनायह्या यात्री । वर्षेद्र प्रदेश श्वेत्रया द्ये श्चित्रे व्याप्य प्रम् शुम् । पर्वे द्राया सम् सिवा विकास स्वित्त विकास सम् नर्हेन्द्रम्यार्थेन्यःग्रीयःयद्याः मुयःधर्मायः । व्रीःधेःयेरःगेः नर्हेन त्र मुन्य हैं नय हैं नय न्या । श्वेट हे उन मी में ट हि र वह माराना । नर्हेन्द्रव्युअःर्केन्यःग्रेःसुन्देःग्राम्यायःसरःग्रुर्। ।नर्हेन्द्रव्युयःसवरःधेनः कें प्यट तसेय नर र्नेन | नर्यस निह्न र्सेन्य में रायर रा मुरापट द्वा म्र्यूराष्ट्रियायाया । नयस्याम्बर्भूयस्य भ्रीः भ्रावीयायायर ग्रीया नश्यामिष्यं स्वराद्धियाक्षेत्राचरात्रेया । नेशार्याक्षेत्रशामिश

यक्तान्त्रभू॥।

यक्तान्त्रभूष्ण।

यक्तान्त्रभूष

### र्हे में हित हेत त्रोय पळे नहीं

महेशयर्द्शमिवेदी सर्वर्धी त्रायान्य है नद्वर्भे त्राया सर्यः नर्भूरः नरः न्याययः नहन। यदयः क्रुयः क्रियः क्रियायः यः दृरः। येययः उतः दर्यकानकूर्यातास्त्र्यामान्त्रम् स्वाराह्म्या स्वाराह्म्या स्वाराम्यात्रात्रम् स्वाराप्त्रम् स्वाराष्ट्रम् वार्ष्येद्वान्त्रमानी नेव्याविक्षान्त्रमा नेव्याविक्षान्त्रमान्त्र विकालक्ष्यान्त्रम्त्रम्त्रमान्त्र या वर्से। सरसम्बर्धाः निमायः वर्षे वर्षः निमायः वर्षे वर्षः मित्रः वर्षे वर्षः मित्रः वर्षे वर्षः वर्षः वर्षः नवी वर्त वर्षी नगव नदेव साम्मा वायम स्वाय मा देवा स्वाय मा वा बुर रास्वारा स्रेट से प्राप्त का का का स्वारा के स्वारा के प्राप्त का स्वारा के स्व क्रॅंश हेन ने नवेव हेन न र क्रें या उव क्रुं क्रें व हेव पर्रेया न क्रुं ना येन परि ननेव'रा'न्टा ननेव'रा'केव'रिते चेव'क्वया'ग्रेथ'कु'र्श्वे र'र्श्वे व'रादे'

नन्गार्से के ने करे के र्श्वेमा त्यामार्वेन प्रमाने न प्रमाने प्रमाने के निवासी रुमाओ रुमाओ के थे। कुमाओ म्वाओ गर्विवाओ रमाओ मुनाओ वें कुल रेदि गोग हु न हें व रेदि गोगा वग न अग अदे गोग न अरें न अर्कें व कदे गोग गोग देग्य शुय नकु दुग द्वा गर्देव देग्य श्रेंट ध्या नर्दे नकुन्। क्रेन्ट्न है हि के गार्स्ट्रा धे वर्षे गार्स्य नकु द्वा द्वा वर्षे वर्ष निन्नमुः इनि है सुरासक्त सन्दर्भ कुषीनगदग्रिं ना सुषी सहे वर्षे वर्य या वाबदःवाबेरःसदयः ब्रवाःया बेदःसरः श्रेःयः मुःच। ववः ब्रदा वेवः ब्रदा नुसासाधित प्रमादके ना बससा उदासमासे निवित नु कुसा से दाकिया। सा र्मेन्द्र निवित्र नुः कुरु निवा केवा वहवा सन्वित्र नुः कुरु हिन्दे केवा कवा के नः ८८१३अ८१ न वस्था १८८१ से न स्था स्था स्था स्था स्था । धरायुर् देवा वि वरायुर देवा रव हु वि वरायुर देवा हे अयह रायहिया अर्थर वर-तुः सर-से शर्हे वाः वहवाः सः वहशः धें दः वद्वाः यः वदेः स्वः यः ग्री शर्वे रः वदेः दरः तुः हे रः या सहवाः तुः वयः संविद्यत्र ने नित्र में प्रमेष्ट्र कि । विष्य अद्भुष्ट्र निया है निर्देश में निर्देश कि । नवे सुन वर्ने महिंदा । शे वर्ने वे खुर दमा धीन मशुर सी। । वन महिंव स खुर्याले सुरु हेन । क्षे व्यय निवाद निवेश्तुन महिरादे। । निवाद र्सेन न्या उर्वाक्क अर्क्ष प्रमा विदेष्ट्र स्वार्थ प्याप्त कर्ता है। विशेष है प्रमास्य प्रमास्य

कुराश विश्वहर्त्ताकवाक्ष्यक्ष्य अस्त्र विश्व वि

# दक्षे।पासदेःश्रेस्रश्राह्म प्रत्यासद्ग्रह्म व्यास्त्र व

ग्रम्भाष्यभार्भेषायह्रम्भाषान्म। ।ग्रिभायेन्यम्भान्मान्यस्य व्या विके विवे तर्वे त्यासव रवि ग्रम्स स्वाप्त विवे रविष्य दि स्वर् साध्य तर्य रविष्य हैं है वहेग्रभः हो दःश्रॅग्रभः ग्रेः इत्यः वर्हे रः यः ह्यस्य प्रदान श्रेदः हे व्यवदः विगागी शःग्रव्यः स्थूयः यः यार्वियः यः इस्रमाग्रीमा वक्के नियंत्रवे सेस्रमारुव वायव प्रवे के नाग् मुक्ताया निर्देश निर्देश निर्देश प्रवासित हैं। निरामें दी मुःसन्सन्मन्सर्भाग्रीःमासुरायमा से के द्वेयाग्रीमन्मो नायायनन्मा विनापीत्राग्राम्यके । मदेःमात्रमान्सः शुःदर्नेन्रळग्रयन्नित्विः विवायाधीःन्नो नदेः ह्वें स्तृग्रयः न्यानित्रः न्यान्याने स्तर्वात्रः स्त्री स्त्रान्य देरःश्चे 'दवो 'च'व्यवदःविवा'व्यःश्चें द'यःविवा'धेद'ष्पदः विक्षे 'वरः दवो 'श्चेश्चशः वज्ञदः विं 'श्चेंद्वः 'दविव' के 'व्येंश्चः वःस्रीःसरःवदेःदर्वेरःस्री देःपरःदक्के।पःसदेःसेससःदेःस्र्वसःकेःवदेःदवरःवीस। दर्वेःवःविसःवारःदुःस्रीःवदेः यशस्या विवा तुरा मासम् उत् न् नुरा के त्रा सामा निवा माने विवा माने विवा माने विवा माने विवा माने विवा माने वि त्रुअप्यप्ते प्रवाण्यम् त्रुवा क्रिवा क्रिवा प्रमाणका विषय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वयः स्वाय स्वयः स्व यन्ता व्यापाकुन्र्वेशयम्भ्येष्यकुम्भ्येष्याश्चर्या नेश्वयवक्षेष्यम्बिन्द्र्यम्भयः इम्'र्से'सर्द्रम्'नु से प्रमुद्रान्यम् इदायार्सेम्थादम् से स्थान वहार्से स्थ्री प्रदेश्वन था होदायादी प्रकेश संस्था ठवःवःसवःसवेःमनशःग्रीःश्वेदःरोःधेवःव। मनशःदेःग्रिंग्रेंग्रेंग्रःस्टिःग्रेशःश्चवःदर्गेशःवदः। देःक्ष्रःशेःवुशः यदे वार बना सवारा वार्नो नदे न लेश महित र र में वारा न बर में श्राम्य स्वार स्वार स्वार स्वार न स्वार स्वार स् वै। पक्के मित्रे सेस्र उत्र मिं स्ट भीत हु माडे सम्बद्धे हैं सहस्र माहेत है नु से मास हिए। वे प्रमुस मित्र मुम र्श्रेम्थःक्रम्थःस्ट्रम्सिः सुर्वे पुष्यसेम्पष्यः ५ स्रोधःसर्वे द्याद्यः १ वि नवे हे श्रास्ति से हो ५ हो ५ सी महस्य अःर्क्षेत्रायाः सः त्ययः नुः सेः श्रुताः के दः गुः कें रहनः सें श्रुः श्रून्ययः सें यायः सें यायः स्वाद्यः नुः यावयः यदे वनमा हो न पाना के बिना र्श्वेन प्यमान्त में नवे नवे हिंगमा पानी हो न ही ह्यू महममाना माना हो हा नमा क्रुं नर नभर नभा निर्वेता नायमार देवा हु सद्वा भ्रुं नुना नायमार श्रेवा नव सेनामा ग्रीमाना ग्रीन न र्वि:र्रायारायान्त्रायवे:ब्रु:यान्दायी:न्यानी:क्रुपनक्ष्यान्द्रम्यायोन्द्रम्यायोन्द्री:बेरावर्गेन्र्यायायायाया सर्क्रियाची हेत्रसर्केट्र सन्दर्भ सन्ध्रेया स्टर्भ सन्ध्रमा स्टर्छेट्र विः यावा श्रःहेट्र स्वर्ग सर्हेट्र स्वर् ॻॖऀॱग़ॖढ़ॱऄॣॕॖॕॕ॔॔॔ॸॱॸढ़ॱय़ॱॸॺख़ॱढ़॓ॱढ़ॺॱॿॺऻॱढ़ळॆॱॺॎॱॺढ़ॆॱऄॺॺॱॎढ़ढ़ॱढ़॓ॱख़ॱॻॖॖॺॺॱॺॢऀॸॱॾॆॱॶॖॺऻॺॱॸ॒ॺऻॱॺॕॱॸॹॗॆॸॱॸॆॱक़ॗॱॺॱ <u>नर्ग</u>ोद्गःसकेंगानी र्पोद्गःत्रद्गः सम्याक्ताना सक्तान्तः मात्रुद्यास्य स्वायाः स्वायाः स्वयः स ग्री-५५-४-४-६८ सेवि-भ्री-त्र्य-भू-ग्राय-अर्धेद-स्या-भ्रा-त्र्य-क्ष्य-य-५८-४-त्य-त्र्य-त्र्य-वर्धे-५४-१ व्रुटि ।

हिंद्र-स्टर्शस्त्रस्य स्वर्णा विद्र-क्रुव-वर-दु-वर्वा वे स्नुवस्त्रस्य स्वर्णा विद्र-स्टर्ग स्वर्णा विद्र-स्टर्ग स्वर्णा विद्र-स्टर्ग स्वर्णा विद्र-स्टर्ग स्वर्णा विद्र-स्टर्ग स्वर्णा विद्र-स्वर्णा स्वर्णा स्वर्णा

न्त्रा डिमायम्यास्य प्रमास्य प्रम् प्रमास्य प्रम मी। इनमूर्वास्थापिरसर्गेवास्केषा । निर्वयं स्थापयार्थे। क्रॅंशःश्लॅटःश्रुटःक्रॅंग्रयःनडया । श्रुग्रयःहेदेः द्वटःग्रीयः वदेरःग्रनेग्रयः नहर्मिन्न विष्याचे विषय विषय में निषय में निषय में निषय में निष्य में निषय में निष्य म मक्रम्मव्वामम्मम्मम्भम्भाया व्यन्धिन्देन्द्र्या है से न्युन्त्रा न्युन्य न्युन्ति । हेव व । र्यायश्यायियायाया से प्राया व । यन्यायीयाया स्थारी द्या. बस्थ १८८ त्या । शिका. दरारया. लुटा. दराय का सेया. य ग्रीपूर्व । य बरायें र्श्वेन्द्रम्भ्या स्वाप्त्रम्भ्या । मुल्याना म्राया । स्वाप्ता निष्या निष्या निष्या । स्वाप्ता निष्या निष्या निष्या । स्वाप्ता निष्या निष्या निष्या । स्वाप्ता निष्या निष्या । स्वाप्ता निष्या निष्या । स्वाप्ता निष्या । स्वाप्ता निष्या । स्वाप्ता निष्या । स्वाप्ता । शुअन्। विरावी ह्या श्रेत्या श्रेत्र स्वान तृत्य थे । क्रिया न गुवाय रा हुः ध्रमा पळ्या विष्यामिष्ठमा स्ट्रेट स्या स्ट्रेट स्या स्ट्रेट स्या स्ट्रिया स्या । यदयः क्रुयः ख्रयः ग्री: द्रुयः दः चतुवायः यः द्वा । देः क्ष्रः क्रियः ग्री: द्रुद्रियः इस्रयासास्य स्था । वस्रयाद्य कृषायाद्यायीयायादायरास्य या । दे द्या गुव ग्रीय। क्रियान गुव ग्री प्रवि प्रवासन महित है । विने प्रवासने ग्रीय यः वस्य र उद्दान्यायी यः नर्देद्रि । से रेहें या दसः या से दार प्राप्त । श्रेयःश्रुदः इस्रशः ५८: व्युवाः यानुवाशः सर्केवाः ५८। । सरः स्रे सर्केवाः ५८:

नर्गःश्रेश्वर्यस्थिय। क्रियानरे र्गायाने सकेर्पमरनश्ची। विस्वन्य न्यायाम्बर्यान्दर्दे सर्केषान्दर्। विःसदे स्रम्यामे स्वासक्रयान्दर्। नर्गेर्प्याह्यर्प्यस्याश्रासदेश्यक्ष्यागात्रःश्रीश्रा । क्रियानारेप्यायात्रेः सर्हिन्यर्वी । सर्हिन्यवारः इससाञ्चारेनु के वा । दे द्वाक्यायः वस्रकारुन्याध्यन्त्रेका विवन्ते हुन्यन्न्यते हुन्यन्ता वीका मुयानागुरायासुमापळ्यासळें नामरामसी। । वर्ने नाळग्राले स्ट्रामित अग्रान्यर ग्रेश विश्वान्य व्यान्य ने विषय । नन्गानीयानश्रीयाराचे सकेयाम। ।ने न्नाम्ययया उन् नन्नामीयार्थे शूर.यनवार्या ब्रियाय.यब्रेटु.किल.य.गीय.टेट.सटस.किस.स्रामी रिट. कुषा इस्र भारतः क्षेत्र प्रता क्षेत्र प्रता विक्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्रस्था प्रता विक्षेत्र प्रस्था प्रसा विक्षेत्र प्रस विक्षेत्र प्रस विक्षेत्र प्रस विक्षेत्र प्रस विक्षेत्र प्रस विक्षेत्र प्रस विक्षेत् यायदा | दे द्वागुव श्री हे या शु नद्वा थी सदा | वाद ह्य या श्री वाया यहते वह्रेना हेन ह्रेन्या इसस्य । विटा कुन देसा सर सरस हुस सा कवास नक्रेश। अर्वेदिःरीः निपानन्याः वीशः वस्र शंक्तः व्या विविदः वे स्वादः सेनः रान्त्र्रीरावरावश्चा । ह्याद्वायद्वार्थ्वेदावादाविदादे द्वाया । वर्षे वा गुवायायवावीरावदे विद्या । वङ्गयायावीरावी ह्याक्षेत्रववायायर यदा विद्यानीश्वात्रवार्श्वास्याञ्चे राग्वेष्यावरावन्त्री। विवादक्यावाद्दाः सर्केन्डिट्रन्नवार्यासन्दा हिरासुखेर्स्ट्रन्सुखिद्यार्वेद्यान्येषानधी ।

नवो न दुर बन् नन्या यो अ दे न अया अ न्या । विस्र अ उन् न न यो अ नु र क्र्यः ध्रेरः नर्षे दि । बिराणवायन्त्वायन्त्वया भ्रूरः नठराः सूत्रः राजदराः क्रुराः गुव भी 'द्रिया । वर्म द्रिय वि स्ट्रिट द्र स्ट्रिय स्ट्रिट द्र स्ट्रिय स्ट्रिट द्र स्ट्रिय वि स्ट्रिय र्क्षेपार्था गुर्वा भुराते । वित्र उत् त्रुः स्वर्था या वित्र उत् त्रुः स्वर्था या वित्र वित्र वित्र स्वर्था या वित्र स्वर्य स्वर्था या वित्र स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्था या वित्र स्वर्था या वित्र स्वर्था या वित्र स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्था या वित्र स्वर्य स्व वरेनमा । १३मः वर्गा सर्गे दः से ५ 'दसे ग्रमः खुवः से समः उदः वदे। । वदेः श्रेः नर-देवि:वहेवाराव्यरान्धुन-हुःवार्रावा । द्रश्चेवाराओद् नहें नवे वाहेरः केव्रश्चुव्रस्याम्बिम्या ।देरमेद्रसिव्यदेर्द्यद्रस्य वहर्षे वहस्य प्रदेर्द्वह्या नर्न्नर्मः अः शुर्वा वर्षे अर्था अहं न् ग्वायन विद्या निष्या उत् अविशः यदे वार्ड्या क्रिन् रहें दावाया । क्लिं वाबद वावाया यदे वावया या वार्यया वार्यया वार्यया वार्यया वार्यया वार्यया वर्तन्य। विषाचनाः सर्वे विष्ठे निष्ठे नर-देवि:वहेनाअ:वशनभुन-हुनार्शव। | द्रवयःथ्व-वर्ग्य-वर्षिर-वे र्बेस्सन्दर्ग हिंहे वहेन्य राष्ट्रेन्य राष्ट्रेन्य राष्ट्रेन्य राष्ट्रेन्य राष्ट्रेन्य वें के दें से वाया । धि न्या भुक्षें वाया इस्ययाया वारे व्याया निया वनासर्गेत्रसेट्रिन्सेनाराणुयार्सेसराउत्पदी। प्रदेशीपरादेविपरा यश्चर्मुन हुन्न श्रिव या ब्रुव या ब्रुव या क्षा की या की या की विष्ट या विष्ट या की या विष्ट मु: बेन न्या कें अ: मेन में के। विमेन माम कें 

सर्वे व से द देश व से प्राया से समार हत विदेश वि यश्चर्मुनः तुःवार्शेषा । वहसः न्वन्यः सुवाः वः हें हे सुवः रशः वावेवाया । राणे स्वेदारी स्वेताय इसाय सेवा विसासिति स्वेदारी गुस्साय गुत्र हु नवरा । हे नदे श्रश्रके नकु द्या प्रश्रिय न नदे नश्रा । हिस वर्षा सर्वे द मेर्'न्भेग्रास्थ्यासेस्रर्'उद्दादि। विने द्वी नर्ने विविध्यासायस्य हुमार्श्रेषा । यानवायार्श्वे नामविश्यायक्षायक्षायक्षायाः न्यायाः वा । याने वा न्यायाः वसुवासनवारीय मुर्मित्र रहत्। भूतामार्मे वासाधियानु निवेत भूता। यावरायाशुर्यास्यायदार्वेदिः स्वीयायायाय्यास्यायादिनस्य । १३सामयासर्वेदः प्तुःगर्रोत्य। श्चिरः अहं ५ अर्गे दःरें ५ या उदः र्हे या ग्वी मुन्या थ्वेदा थुं रें। मुयः केत्र इसः र्वस्य । गुरः सर्वेत्र वयः नवे गुः रेवा सक्त उत्र रेवासा न्द्रीम्बर्ण्यासेस्वराद्या । वर्षे द्वीः नरः देवे वहिम्बरायसानसूनः हुः गर्सेया ।नक्षुःसेन्कुन्यःग्रेन्स्यःग्रिन्क्स्यःग्रेस्। । श्रुग्यःहे न्त्रेदः क्रवश्यम् प्रमुट्ट केर वर्भेट वया विषयम्व सर्वे व सेट देशवाया ध्रयः रोसराउदायदी । सर्गेदासुनराद्युरागहेदासह्दायदेर्त्रायाननरा । 

यम्बर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्

नेत्रभन्नन्त्रस्यद्वस्य नर्डस्थ्यत् । विद्यास्य प्रमानिय स्वर्णा विद्यास्य प्रमानिय स्वर्णा विद्यास्य स्वर्णा स

क्र अभित्र र्रे के प्रमात्र निर्मा क्र अभिकार मार्च निर्मा मुन्वर्याम् मुन्द्र्याम् । नर्द्र्याम् । नर्द्र्याम् । नर्द्र्याम् यानेवार्यायाद्यायाद्यायाद्यात्रायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्यायाच्या नवर दे से द रेव के व सूर न हुय वुग्र म्यून प्राय स्माप्त सम्माप्त समाप्त सम्माप्त समाप्त शरशः भ्राम्या भ्राम्या । वर्षे साध्या । वर्षे साध्या । वर्षे साध्या वर्षाने नविव निवास मान्या नहें साम । यह निवास महि यरयामुयार्क्यायमुग्रायामुः सर्वेदे र नुन्याया सुगा पर्वेद्या । नर्वेद्या <u> अ८अ.भे अ.कू.अकू.अकू.व.मु.भू.श.भर.रूज.त.सर्थ.यर.</u> सित्र रादे कुषारे त्या स्वाप्तक्षा । पर्डे साध्य प्रदेश ने प्रिव पार्श्व । रात्र्यात्रईस्रायाधरात्वायरा<u>क</u>्ष्वासायदेशस्याक्षस्यात्वासायाः स्याप्तक्षात्र्। । नर्डे अप्युक्त प्रम्याने नविक नामे नामा प्रम्या नर्डे अप्याप्य । । नर्डे साध्यायन् साने प्रविदाना ने ना सामा प्रवास के सामा प्यापना प्रमा

क्रियायायदे सरमा मुया मुयाया मु सर्वेदे रे वेद्याया प्राप्त सम्मा वक्षयावी । वर्षे अध्याद्यम् अपि विषयाने वार्यान्य वार्ये अप्याद्या वर्षे अप्याद्या । धरार्ह्रेग्रायदेश्यद्याक्त्र्याद्याय हेग्रायाचे प्रायाचित्रे प्रायाचित्र सुद्यो हो सासेद्र हो स्वरूप द्राप्त स्वरूप स गश्यायत्व सँग्यायार्य म्भूययाद्र प्रमुद्राव्य स्थायार्ट् र विता ने प्राचीत्र प्राचीत्र स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त र्भगम्यानुष्यम् अरुपाया सुमायक्ष्याचे । दे प्रविवामिनेयार्था भेवार्था भेवार्था सेवा केवा द्रिन्दर्से या स्वाप्तक्या विष्ठा विषय विषय विषय स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्यायक्षयम् । दे निवेदमानेया सम्मद्भिय से त्यास्य प्राप्ति। दे नविवामिनेग्रासान्यान् ग्रीसाया स्वाप्तस्या वेष्ठा । ने नविवामिनासाया रेव केव से त्या द्वा प्रकृषा वि । दे प्रविव पा ने प्रथा पर रेव केव ह्व दिंद त्या मिनेम्बर्भः संद्वेष्यः सेन्द्रायः सुमाय्क्यः विष्यं । निः चिन्ने विषयः मिन्द्रायः श्चेत्रायास्याप्तस्याया । दे निष्ठित्यानेवार्यास्य स्यायास्य स्यायास्य दे निवेद मिलेया सम्मन्त्र सम्मन्ति सम्मन्त्र सम्मन्त्र सम्मन्त्र सम्मन्त्र सम्मन्त्र स यानेवार्यास्कुःश्चायास्क्रवात्र्वा । दे निविद्यानेवार्यास्कुःश्चेते श्चाया स्यातक्ष्याक्ष्यां दि निविष्यानेवाश्वास्य निवाश्वास्य विष्यातक्ष्याक्ष्यां दि नविव निवास र इंद्र न्याय या श्रुवा प्रक्रिय विवास या यां वे यहें न सम्माया समाय समाय विवादक या वे विवाद सम्माय स यास्यापळ्यायाँ । दे निविवागिनेग्रासास्याद्यान्तर्यायास्या वळवार्या । ने निविदानिवासाम से नासे ने से नासे नाम क्या है। नविव मिनेग्रायायो में मान्ययाया समायक्या में । ने नविव मिनेग्रया क्रम्भामवे क्रिन् ने सम्मामस्रियानमा सर्मिन सम्मानि सामा सुमा पर्काया वीं दि नविवानिवायायाय इति विदानिया सम्भागम् स्थानियायाय सिंद्रिस्यायास्याप्रमाप्रस्थाप्री । दिःचित्रदान्वेनास्यास्य स्मार्थस्य स्मार्यस्य स्मार्यस्य स्मार्थस्य स्मार्थस्य स्मार्थस्य स्मार्थस्य स्मार्थस्य स्मार्थस्य स्मार्यस्य स्मार् वक्षयार्थे। । ने विविध्याने विवश्य प्राप्त द्वार्थ विवश्य नविव निवास रासक्त न्याय विव मुर्जे र साम्याय सामा प्रतिव प्रकार हो। ने निवित मिलेग्रास न्वर सेंदि हिंगा मी कुल सक्द की कुल सें लासुग वळ्याव्या । ने नि विवासी ने नि सामिता से नि स्वासी मित्र से नि स्वासी से सि से स नःयः ध्रमा प्रक्रिया में प्रविव मिलेग्रास्य इसाम्य मित्रिया लेग्रसः यदेः न्ययाया सुमा पळायाची । ने प्राविव पा ने प्राया गुव व्या सूरा न पर्मे न सदिः द्रमयः यः स्वाप्तक्षयः वेष्ट्रा वित्र वित्र वित्र वित्र स्वाप्ते वित्र स्वाप्ते वित्र स्वाप्ते वित्र स्व धरमिर्वेद्यायायायायायाया । देनविद्यानेवार्यायायायायाया

यद्यास्य क्षेत्र स्वर्धः यद्या क्षेत्र स्वर्धः क्षेत्र स्वर्धः क्षेत्र स्वर्धः व्यास्य क्षेत्र स्वर्धः व्यास्य व्यास्य क्षेत्र स्वर्धः यद्या क्षेत्र स्वर्धः व्यास्य स्वर्धः व्यास्य स्वर्धः व्यास्य स्वर्धः व्यास्य स्वर्धः

महारम्भान्त स्वाद्याह्म रहत् श्री स्वाद्याह्म रहत् श्री स्वाद्याह्म स्वाद्याह्म स्वाद्याह्म स्वाद्याह्म स्वाद्याह्म स्वाद्याह्म स्वाद्याह्म स्वाद्याह्म स्वाद्याहम स

नेवशन्वर्भेन्द्रिन्वदेवातुन्यवाद्वार्द्रन्देवे सेन्वत्यात्र्वार्द्रम् र्वे। क्रें सन्दर्भे इत्राहि द्वं त्यात्र सूनार मार्बे रो खूनाहु पाखूनहु पा ष्याणुड्वाराष्याणुड्वारा राष्ट्राराराङ्कारा व्याकावाका वो के वे वो वा वा वा वा रामान्यान्यान्यान्यान्यायाया निष्टानिष्ट्रा यान्यस्यान्य राज्यस्यायाया र्बे अम् अर्दे श्री इना स्ति। अम्म र्व में में में साया ह या ह या वे न क्री क्षुत्र क्षुता क्रेंत्य अर्थेत्य निया निया निष्यु सम्हो इप्यान्य मिन्दु हुँ हैं। शुं हैं निहाइ ने अइ आयाने। अहि कि हा सार्वा मी है। या यह सारी रासङ्गर्यासार्वानी है। साद्वासुर्यो साद्वासाना इति आर्से सुरी सार्वे सुर ग्रहे.ल.लें.धे.ला लें.यप्टंड.ल.लें.यप्टंड.ला डे.र.डे.रा श्रु.डे.र.श्रु.डे.रा अड्डे प्य ने न्वृङ्ग ने कु नि न कु है। य दू सु नू ने वें मी ने ह प्य ह प्य अड्डे श्रेड्वा नुड्वेनुड्वा में इन्देनें इन्दा शमें इन्देन्श में इन्दा में इन्देनें के

शं.लें.इंदे.शं.लें.इंदे। ने.लें.इंदे.ने.लें.इंदे। ५.४.५५१ यायायमध्ये र्मिन्त्र्यान्त्र्यायान्त्रहें राम्यायानिही यासामानुसामानि वेत्र्यम् म्यी सम्मी स्रेपिन्न में स्रिप्त में स्रिप्त स्र स्रिप्त स्रिप्त स्रिप्त स्रिप्त स्रिप्त स्रिप गान् के हा हो कित्य राम्य के हुन्य में सुन्म है। सम्हाम गान् खुट्टे कि में व्यःगो हे युद्ध यह ह यु या ह यु छ । अ अ हि य अ हि हे हे युद्ध अ स्पृह हे यूत्र राष्ट्रप्ते यूत्र राष्ट्रपे वेंगी हे यूत्र राष्ट्र असर्वेंगी हे यूत्र र् हु-न्हे-युन्न व्यायान्हे-युन्न व्यायानुने युन्न अंन्यान्हे युत्र ये इ. म. हे युत्र इ. हे युत्र इ. हे युत्र के में से हे युत्र के में से हे युत्र हे से हे युत्र इं प्यास है सुत्र अमा हा सुत्या है । सा से द्वार सा स से द्वार सा र्शे। क्रें व सर्वे पार्चे गार्चे। यम ५ म् मार्चे पार्चे प वृ.ए.चार्चे.४.वं.र.स.स.सॅ.तिक्य.प्.वं.वं.ता.स.स.सं.त्। अस.८.वं.चा.८. यायहा अहि १२ ने याये ने निह्ने हैं हैं हैं हैं हैं। अने ये हैं यूर्व के स्वर् ८८.८४.क्ष्मा.पाद्रट.स्रम.चर्ष्ट्रम.चर्ष्ट्रट्री ।सक्समम.स्रेट्र.स्याम.र्मुच.स्रीय.गीय.घटःयाशेटमा।

व्याचित्रके विद्यान के विद्यान क

प्तिःश्र्राः त्राच्याः वर्षः श्री । व्यायाः प्रयायाः वर्षः श्रीः वर्षः वरः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर

ब्राक्षण्या । क्रु. क्ष्यण्या व्रह्मण्या व्रह्मण्या । क्रु. क्ष्यण्या । क्ष्यण्या ।

ग्यायद्यत्रे देद्यम् व्यावहरम् व्यास्त्रे त्या है या दें। यह व्याप्त व्यापत व्या मङ्गान्त्रे। इ.ल.च.प्रे। क्ष.व.ज्रे। श्च.म.प्रे.चे। वर्षः र्ने के अङ्ग्राज्य में मूर्य अप्ये में है। अक्ष मृत्य मृत्य के हि है। में क्ष्य पर्ने क् हार्यानिक्ति विष्यानिक्ति विषयानिक्ति विषयानिक विषयानिक्ति विषयानिक व स्त्री यहैं स्त्रियहै। सम्प्रमादिलहैं है हे हैं है से यह स्वाल ला इष्ट्रि. हे. युद्धा यम हामा हा हा दे । युद्धा या अप हा हि हा सुर ने हा त्र्यात्राक्षाक्षेष्टे हे हे तु तु तु व्यव्या वार्याय्यात्रा के असाम निष्य हे । P-इ-ए-ख-इ-हे-युद्धा यम-ए-व्यापाद्यक्र इ-ए-वे-व्याके-हे-हे-हे-हे-इ-उ-वशुम् । में वस्यस्र हें नित्रमुष्यस्र वित्त नित्र विवाश्यम् । ने निवास में में में मार्थ में गुर्व में वा

न्द्रुषाने तथा १५ व्या १५ व्या वि व्या वि व्या वि व्या वि वि व्या ण अयायायायहा अपात्र्यायायात्री यायाद्यायात्री अ है। भिद्धः हुः श्री अमान म्वानिक श्रीमान श्रीमान स्वीमान अर्थी अर्थी निष्मी अर्थी सुर्नु सक्रुमाने अपूर्ण मास्या स्थान स नै कें कुषाने कें कुषा गगान सुन्नु न ने कु कि कि ने में स्थान में नुड्वी यान्यान्द्वीयार्द्वेनिने। यमनाम्यानाष्ट्रायानार्यानीने। वित्यानार्था हुन्यन्ते सुन्नही सक्ष्वान्य मान्याने न्याने सुन्ति स्वानिष्ट स्वा नःईःनःणःअःक्रिष्ट्रःवःअःक्रेष्ट्रेःने। सःतेःस्रःतेःसन्नःसन्। नहःगाःणःसःनःनः वःयःरेः भुद्गे। यदःगाम्राष्ट्रायः राष्ट्राये भुद्गे। यः हे वे यह प्या यायाष्ट्रायुद्धेः नुड्वी सम्द्रम्याद्रस्यायाषाषाङ्गिष्ट्राम्याषाङ्गिष्ट्राम्या वै। ने सुने ने सुने अनु ने सुने साने साने सन् सन् सन् साने सुन बह्य बुक्नों ते यारे अड्डी वेश्वत युड्डी के के हे हैं ए आहे आ के हैं आ के इं.ला श्र.र.श्र.रा श्र.र.श्र.रा श्र.र.ला श्रम् यहे लाहे हैं याला णगहै। ने हं जा नहें। नहें हैं जें नहें हैं से। नहें रें हे से। नहें नहें है। नहैं इन्न न ही सासानि दें में। समासानु नु दु दु मा प्याम में नु दें हैं न न बे यन् न्या निष्य ने निष्ठी अन्त निष्ठी या प्रति विष्ठी या प्र

नक्षर् क्वीर्याश्वरमा ।

स्वार्या । वर्ष्ट क्वीर्याश्वरमा ।

स्वार्या । वर्ष्ट क्वीर्याश्वरमा । विराक्षिण क्वार्य क्वार्य क्वार्य क्वार्य विराय क्वार्य क्वार क्वार्य क्वार क्वार्य क्वार्य क्वार्य क्वार्य क्वार क्वार्य क्वार क्वार्य क्वार क्वार क्वार्य क्वार्य क

या अँगानिभाने भागाने र्मानिहरम्भम्य विश्व स्थाने स

श्रास्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

बर्याक्रेत्यंत्यद्वित्वहर्याययद्व्यंद्वित्विहर्याययद्व्यंद्वित्वे विद्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्व्यंत्विहर्याययद्वित्वं विद्यंत्वे विद्यं

 प्रश्चित्रहे। अस्री प्रश्चित्र व्यक्ष म्या विश्व विष्ठ विषठ विष्ठ विष्ठ

भरमक्षमञ्चरम्बरम्ब क्षेत्र त्या इत्या अक्षेत्र है। गु.उ.ने हुड। या इत्यक्षमञ्चरम्ब क्षेत्र त्या अक्षेत्र है। भड़े। व्या उत्यक्षित्र व्या अक्षेत्र है। व्या उत्यक्षित्र है। व्या उत्यक्षित्र व्या अक्षेत्र है। व्या उत्यक्षित्र व्या अक्षेत्र है। व्या उत्यक्षित्र व्या अक्षेत्र है। व्या उत्यक्षित्र है। वि विवा विवा विवादित्र है। विवादि

वक्षत्राम्यस्वी विभाग्रम्यत्वी विभाग्यत्वी विभा

देन्वविद्यालेग्रयम्ध्रीतिः भ्रेट्रा व्यव्यावित्यान्त्र व्यव्यावित्य वित्यव्यावित्य वित्यवित्य वित्

देनदेवनम्भेनभग्वदेशनम्भेन्। क्रियनदेश्वभागुः त्युः त्याः त्यः त्याः त्य

 श्च त्र स्थान विषय स्व स्थान विषय स्थान स

स्रा केक्ट्री क्षि. भाष्ट्र मध्यम्ब्रा क्ष्र भाष्ट्र मध्यम्बर्ध क्ष्र मिन्न मुद्दा क्ष्र भाष्ट्र मध्यम्बर्ध क्ष्र भाष्ट्र मध्यम्बर्ध क्ष्र भाष्ट्र मध्यम्बर्ध क्ष्र भाष्ट्र भाष्ट्

स्ति विश्वास्त्र स्ति । क्रि. क्रि.

यार भी खेला शिषा दे के प्री त्या प्रीय क्षेत्र क्षेत्

खू. श्र. २ श्र. २ हे. २ हे. १ हे. १ हे. १ हे. १ वर्ष १ वर्व १ वर्ष १ वर

हेन प्रचेष श्रेट्य ह्म अप ग्राट नहें न सम प्रमान के स्वर में न स्वर प्रमान के स्वर में स्वर

न्युग्रस्य व्याप्त व्यापत व्यापत

है। अहि है। अप्यास्टि है। अहि हि आहि हि आहे हि आहे नि है के है नि है से हि आहे नि है के है नि है से हि से हि से हि से हि से है नि है से हि से है है से हि से हैं है। है से से हि से हि से हि से हि से हैं से हैं से हैं से है

ग्यायर वर्ष असे प्रश्नेत्र हे दे ख्याया औं अपूर्त्य औं अपूर्त हैं ने गार्त्य हैं ने छैं. ष्रुक्ष्रकः नह निःहुँ। के ष्रुक्षे तः है गा के हुँ। के ष्रुक्ष्रक हु के गा श्रुहुँ। के ष्युश्युः रे तो गा प्युश्हुं। के प्युश्चाङ्कं हो गा दृ हैं। के प्युश्चे दि र र है। के ष्रुद्धे १२ र हे से हैं। के ष्रुद्धा गर हे से हैं। के ष्रुद्धा ष्रुङ्गु पानइ दङ्गु । के ष्रुअन् नह रहे रहे। के ष्रु क्षा के नह ने रहे। के ष्रु क्ष यानइ नें क्षु वि व्यक्ती है। वे व्यक्ती है। वे व्यक्ती है। वे व्यक्ति है। षे द्वा षे प्रविभागा इषे द्वा षे प्रविभागो नाम षे द्वा षे प्रविभाव दे दे लें 'ख़ुकी' स्कृ मीन हैं हैं। लें 'ख़ुक्षा स हे 'स' र हे 'ने भ्रे 'ने 'ते 'लें 'हूं। लें 'ख़ुक्षा' यह इ ५ र १ दें। के लिक्त यह गिर हैं हैं। के लिक्ष हैं हैं। के ष्रुश्नन सुङ्ग्रानि हैं हैं। के ष्रुश्ने सुङ्ग्रानि हैं हैं। के ष्रुश्मर र पर हैं हैं। के ष्युक्तभी क्राह्म हुँ हुँ। क्राह्म क्र स्रिक्षिके नि.य.महे.यूँ यूँ। स्रिक्षिय में महिन्य में महिन्य महिन इसमार्ग्या

त्यर्यः यर् यर् यर् यर् यर् यर् वर्ष क्ष्मण्यो क्ष्र म्यार मान्य मान्य

पिः हैं या गा स्या इं ते है। सर् से भी पि हैं सूर्य से सूर्य हैं। सूर्य हैं सूर्य में सूर्य हैं सूर्य में सूर्य हुँ तर्भेर्भेर्भ्युय्यं भेरिक्स्रिक्षेष्ठ वर्ष्यु वर्षेष्ठ वर्ष्यु वर्षेष्ठ वर्ष्यं वर्ष्यं र्भः यहुर्त्व यदुर्भः यक्के प्रति में इस्हे प्रहूर्णा द्वा भी यदुर्भः दी भी है रु.गाने अधु। वास है। है। स ह श्रं की ने स ह श्रं मु न ह से । व त स ह श्रं वृत्ते। दुःभेः ५ हे दः से दुः यः सुनिः भैं ना यः भें दूं ने। नद्वः शुः रे रे नद्वः सः व भे.मे.पे इ.मे.पे दे.दी प्राचा श्र.२.श्र.२। ब्र.२.श.२। ब्र.२. हे अदूर्भे में द्वी यह हि ए से ह्वी हैं इं हैं इब मैं मैं। हे हो ह ह है से मंग ५ अन्ते मे दृष्ट्व दे हैं। हैं के या ने दृष्ट्व प्रें में मुन्ते प्राप्त के प त्रु मा फ रा में भू मे हैं हैं सत हैं फ रहें में पाड़ मा हं हु से एक है के ग्राह्य हु नुः सॅ फ्रं के प्यें मी नु के दें। द्वा ने के सक्यें गू के प्रक्ष के स्ट स्ट प्या गरे है है हैं चत्। इ ५ इ अ दे अइ दे मे यम अ है के जी ज़ है चता है हैं हुँ यत्। तु मी दे हूं त्य भी न न न सुन् हु हु हु हु यत्। धुम हु क्षेर्यकी खेँ निर्देश्चित्रं के के लिए के कि निर्देश के कि निर्द कि निर्देश के कि निर्देश के कि निर्देश कि निर्देश कि निर्देश कि थे नई सह दें थे दें दें पत शुद्र विस्वस्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स 

 स्वी दी दी ती के अप्तानि हा अप्तानि हो दी ती के स्वी के स्वी

खॅ.पॉ.पॉशि.धे.धे.सं. ख्र.खं.पॉशि.धे.धे.धे.सं.सं. त्या ख्र.पं.पॉशि.धे.धे.सं.सं.

ळॅ.ल.स.२ हैं. दें. दें. तथा ळू.ल.स.२ हैं. तथा क्य.त.ल.कु.स्व क्य.ल.स.२ हैं. तथा ळू.ल.स.२ हैं. तथा ळू.

गासिने नहां सूर् दे ने दे दुं पता अँ त्याषू उषापर हो ने दे वे गुः सूर हे ने हे पुन्दे हुं म्वत् ॲ व ॲ अम्बू हु हु खू य हे अहू नहें हुं म्व कें विस्ति निस्ति के निस्त ब्रॅं चुःसि हे 'र्ले १२ हे 'ग्रॅं 'ड्रे 'गा' ऋ' ये 'त 'र्ड्ड 'द्र्व 'द्रा 'र्बे 'त्र स्रू रू 'ते 'स्र्य रू 'रे बे न दूरम दूर भे के कि महा के निक्र में कि महिला के निक्र में महिला के निक्र महिला के निक्र महिला के निक्र महिला महिला के निक्र महिला महिल हुँ यत । अँ त र्वे नई सू क् के अकृषे मी के गू से न् के नि में के हुँ यत । देश म्प्राची म्हान्च द्वा विषे निर्देश स्व द्वा दिया निर्देश स्व प्राचित स्व व दिया स्व व दि यत्। क्रॅ.नभूवायाकेवारेवियो न्दायह्यायवे केंद्र कुं हुं यत्। क्रॅ.रवायवे र्देन्'यम्'भे'मन्न्'य्य द्वार्द्वार्द्वार्द्वार्द्वार्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्य वहिवाशायवे विवार्षु द्वायता अ स्ट्रिट स्वा स्वाप्तिया वे विवर्ग विवे के निर्मा स्वाप्तिया विवार र्दुःहुँ यत्। अँ न्या श्रुःवियाशायाने नशास्त्र स्ट्रान्त हुँ यही व रद्दे हुँ यत्। अँ नवीवारासवर्सित्यावर्र् रिक्षुं यत्। क्षे नर्डेसाध्वावर्षासार्देहे यगःश्रॅं त्यः सुमा तक्यः दुः दुः यत्। स्रॅं तयम् रायः सेमा स्रोतः द्वाः स्र्मा विस्थान श्रिस में स्थान उन्दें हे के व रें अ प्रहें अअ फ़ैं फ़ैं पता और हे हे वे यानव न व वा अ यावव ক্রীশামী প্রবাদ্বদান্ত্রীদাপ্তর ক্রিপেন। क्षें मातुवाक्षाक्षें क्षिक्षेत्रे मा बुग्या

श्री अंक्ट्र अंक्ष्म म्या अंक्ष्म स्था अंक्म स्था अंक्ष्म स्था अंक्ष्म स्था अंक्ष्म स्था अंक्ष्म स्था अंक्ष्

ण्य-क्री-क्ष-प्र-प्रमान-पूर्ण-प्र-प्र-प्य-पूर्य-क्रि-क्ष-प्र-

च्या शक्ष्मा अपे हूं. मूं हुं भा किया | अक्ष्यं क्षा हूं भा तथा तथा तथा हुं की या क्षा अपा | विभावाशीय | विषया विषय विषया वि

षरः त्रु: सेन् : तुरः क्रुनः यसः श्रीरः से 'र्थेषाः पः नृहा । यसः श्रीनः तुरः नः नृहा । वहुरः यह । विनः परः हु शेरःब्रु'न्दा क्रुंब'वळवान्दा टाक्कुवान्दा ब्रवान्वानी'व्यशःब्रुं राद्यायानुशासदेःह्याञ्चेदाळेराख्रेंदाना ₹য়য়ॱॻॖॸॱऻॱऄॕ॒ढ़ॱॷढ़ॱक़ॗढ़॓ॱয়ळ॔ढ़ॱॺॕॴॸॱॸॖढ़ॱय़ॴॱॷॖॺऻॱॸॺ॒ख़ॱख़ॴॹॸॱॸ॓ॱॸॸ॓ॱॸॱॶढ़ॱॶॖॖॖॖॖॖॺॱऄॕॺऻॴॱॸॱढ़ॸॗॗॸॱॸॱ दिन्। दर्वार्थेन्द्रिक्षेत्राचेत्र्यमाग्रदासळेत्द्रत्याचेसाचीसाने त्यमान्नर्यस्य विष्टुर्यान के त्ये रावस्य स् दळवानाक्ष्रभाग्नीभाग्नामञ्चर स्रुवास्त्रवे सळवासम्। नाहें नावाक्ष्य स्त्रुवास्त्र स्त्रुमानार्थे वास्य विषय स् षशयाम्बुद्रशःभेदा वदेःवःठवःतुःक्षुःवःषःषदःदेन्द्रवम्बेदःग्रेःअळ्वःवर्हेन्छेदःश्चेवःषश्चवन्यःषशः ग्रम्। श्चरम्बर्वः सळ्द्रावर्हेन् छेन् र्वेस्पर्वासुन्या स्वर्ते नने वन् वन्यानेवास्यावनु वर्षे सळ्द्रावर्हेन् सन्म र्वे अ'यदे'यद'र्पेद'नशय'ग्रेअ'से 'हिन'य'श्चेद'सर्दे 'नकुद'नकु'य'यश'म्बुद'न'द्दा | अदश'कुश'से 'दिन्नुग्रा' मदे सक्त मुं मत्यें में दे दे दि निम्मों न मुं सर्वे प्रकाम सुम्य मान्न मान्य यरयामुयार्थे ख्वे यळ्त् नार्हे न पान् प्रेयाययान्य वास्य स्वित्ते क्षेता क्षेत्र के ने त्रायायन्त्र पान्य स्वर चनवार्याची वर्षेत्राच इस्य रशु वर्षुदाच स्त्राद्य स्त्राह्म स्य राष्ट्र द्या वे स्तर पुरिवार स्वर सामित्र स्त्र यार्ड्यार्हेरःह्रयःक्क्याया यार्ड्यार्हेरःदे सेट्रग्रेःयात्त्रद्या यर्ड्स्ट्वेरिन्ध्र्येयायः चेत्रःक्वयः उत्रग्रेःयात्रदरेः इस्रमा इतर पर्हे दारा दर्ग से दार मार्से मारे स्मार दें प्रमान दें से सुरमा मार् हैया कु पार पर उरा यर.पश्चरायाह्नीयात्रे.ये रात्तवरात्वे.यदु.खेरातायाह्नेर.य.८८। विराधरायेरायश्चायवर्षा वक्षर्ययदे *॔*ढ़८ॱॸॖॱॸॹॖज़ॱख़ॱॸऀज़ॱॺ॒ज़ॴॶढ़ॱॼॆॴॸॖ॓ॱऒज़ॕॱख़ॱॸॸज़ऒॹॱढ़ॱख़ॹढ़ऄॎढ़ॱऄ॔ॱढ़ॹॗढ़ॱॸॱॸऀॴॴॸॿॎ॓ढ़ॱज़ॶढ़ॴॸॖ॓। यशःश्चेतः इसम्पर्से हिन्दिः वा बुद्यायय। वादावेवाः श्वेदाहेयार्वेदः हे। देः द्वायः दृद्या वाद्वा से दृद्या से लेव.त.क्षम्यम् मिट.पेट.क्षे टे.पकु.चतु.कु.व.प्रम् वर्षे टे.वे टे.वेशम्यन्ये सूर्ये त्यूं चरःशु.पर्वी.वर्षे वितर्

त्रअःत्रअःयशःवन्रअःत्। नीःवर्षेशःपवेःश्चेरःत्रशःश्चेंशःहे। नेवेःस्चेरःत्रुश्रशःपःन्दःश्चेरःहेशःयत्।तमुव्य। श्हेरः त्या विवया वर्त्युयान्हें न्या ने सेयया उत्तर्मुखयानरः भ्रुयान्य प्यानः नेवे सेन्या वर्षान्य वर्णु समें। । यवया हेवायमा कुर्याराधरार् रायाय मुमायहूरा गुमारे। रुमाययमा की यदे खुमाया गहेरार् । विमागुमायमा <u>देवे दिंगा तुःनश्चेमा प्रवया प्रकर्पयंवे दर्पः रुपः स्वाः श्लेपायाया देमा स्वायायारा श्रेया राज्या या देश</u> <u> द्यःश्रॅट:५:श्रुश्चात्रः विषाः वर्त्वाः वर्त्वः श्रेशः वर्त्वः वर्त्तः वर्तेः वर्त्तः वर्त्वः वर्त्तः वर्त्त</u>ः वर्तिः वर्त्तः वर्तिः वरिः वर्तिः वर्तिः वर्तिः व विषुरानवमा यहारहानी र्श्वेतायमानी द्वारानी मानी पर्या हो । विमादहा हता स्वार्थेता स्वार् ख़ेरे: प्रवर में जाबद प्यतः अर्दे स्व द्वा पाउँ अ श्री शा यहा। वर्षे प्रवस्थ कुर वरे से समा उद द्वा समा प्रवास कुर् मध्यक्ष उर् त्यम् नरे सुना तु क्या पर में वा नर त्युर न परे धिव है। वि से मुन्न न कि कि से मुने विका श्र्यायाः इत्यदः देवाः स्वायाः वदेः वाश्वदयः श्र्वा । इत्यः कुषः क्रीः वाश्वदयः ययः ग्रहः। येययः उतः स्वारः वोदः यादः ॱॸॺऻॱढ़क़ॖॱॺढ़ॱॸॖॺॱॿॖॺॱॺॱॸ॓ॱॸॺऻॱॺॊॱॸॕ॔ढ़ॱॸॖॱॺऻॾॸॺॱढ़ॸ॓ॱक़ॗॸॱॺऻॸख़ॱख़ढ़ॱक़ॖॱॶॱॾॱॺऻढ़॓ॺऻॱॿॾॕ॔ॸॱॸऻॗॱॱॱॸ॓ॱॸॺऻॱॺॊॱ नुभःर्वोदःक्र्यशःग्रेःस्ट्रेटःनुभिद्रःस। देःद्याःशेस्रशःठदःद्युत्यःचत्य। नुदःदर्वेदिःस्रुःवाद्यशःसय। प्यिदाहेदः वहिनाहेदादया धेर्नन्यायाया नावदारदार्येटाइययासुर्या सुरायर सुरायट सुरायेटा हेर्नन्या सुट्या विद्यापित য়য়ৢয়ৼয়৽ঀয়৾৽ঀ৾৽ঀঀ৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽ঀয়ৣয়ৼ৾৽ঀয়৽ঀৼঀ৾য়য়য়ৼয়৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়য়ৢ৽য়ৼয়ৣ৽য়ৼয়ৣ৽য়৽য়ৢ৽য়ঢ়য়ৣ৽ वया युन्ना वेयायाचे यायायवादे भुग्हामाठेया यञ्जया हिन्द्याय हेन्। स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप र्भे । विरुप्तर्भ में द्वावनार्था के नाविनार्थे त्यराम्या विषय्त्र कि १० में सावे कि स्वाप्त के स्वरूपित वापाय शेसशः उतः न्ह्यायः नरः वर्षियः नः भी नः नृतः। नवो र्सेटः वादः यः यः नस्त्रनः सदे र्स्ट्रेसः सः नृतः। ह्या ह्येसशः है स्रासः रयान प्राप्त अपित में प्राप्त में तार्में तार्में ताया गुरा धर सा ग्रुरा धर भी नार्ने के में तार्में तार्म स्थाया विका नर्वानञ्जर्भानहें न्युराव्या र्राहिन्न्या रेन्य्येनाययया वळन्याने राग्ने यानहें रावराग्वेरी निराद्या

लायक्षेत्रयः श्रीत्। स्वत्त्रियः स्वत्त्वाताः स्वायाः भ्रीयायाः भ्रीयायाः स्वत्त्वात्त्र स्वतः स्वतः

त<sup>्</sup>र्चेशत्रराधेन्यिकेशर्येषा विशयाशुन्या सन्याक्क्षराग्रीःचगवःक्रयःसन्यस्य उन्तुः चक्क्षुः नसेन्यस्य यत प्रित पर्ने भ्रातु प्रतुदान राम् शुद्र साम् स्थारे साम राम् दि स्था वर्षे स्थानु प्रीत के साम्री दि साम सम '९अअ'शु'त्वट्यात्र'यत्र'र्यत्र'त्वतुर'नायीत्र'म्यो। दिने'दर्दादमुर'रत्यात्री'तमुर'ननेत्र'त्रस्यात्री'ननेत'सूत्र'ने'केंसा ৼ৻ড়৾য়৻ড়৻ৠৢ৾য়৻য়৻য়৻য়ৼৼ৻ঀ৾য়৻য়য়৻ড়৾৻য়য়৻ড়৾য়৸৻ঢ়৾য়ৢ৾ৼ৻য়ৢয়৻য়য়ৼয়য়৻ড়৾য়৻ৼৼ৻ৼঢ়৾য়৻য়ৢয়৻য়য়ৢৼ৻য়৾য়৾৻ भ्रीष्ट्रियासदी दिवायाचे कें अभेदासायी । अपियासायाचे दिस्या गुनाकी । यदान सुवारी दिया निया र्श्वे र नदे नर्रे य जुन है। हिंग हिर न् र्रें न पदे हेंग गे न। नि य र्श्वे र नदे नर्रे य जुन रेटा। वियागश्रम। दे ता द्यो र्र्क्षेट्र द्या या साम सम्बन्ध सम्बन्ध । स्रोया यह द्या यह सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध । स्रोया सम्बन्ध समित्र समित्य समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित्र समित नगाय । व्राट्य न्याया मुक्य विकामा स्वार्थ निकामा स्वार्थ निकामा स्वार्थ निकामा स्वार्थ निकास स्वार्थ निकास स <u> नर्ग्चेन नर्गे अपने अनुमान के अप्येन ग्राम् के माने दे ह्ये न्याया वाया वाया प्रमान माने प्रमान के प्रमान क</u> डवा<sup>-</sup>१४,युदे-वेश-रव-छ्ट-८्श-र्व्डिन्-घश-रवा-घर-वेन्-पर्देन्-घ-दे-रव-घव-श्रेवा-हु-पर्ह्-पर-द्र-घर्छ्-शः वालयः चुद्रेः वात्र अः भ्वेतः कुः भ्रेवाः शुर्रः यादरेः नवाः खुरः रून् । आर्तिः तः या नहेतः यरः चुन् । नवीं अःयः भ्वे अःयरः श्रेभःभेगा कुः यळवाने हेन् श्रेन् श्रेन् श्लेन् श्लेन् श्लेन् श्लेन् से हुं इंदिन् श्लेम् स्वर्ग स्वर्ग सुन्यविवास भेग्यः यनेदे र्पेत न्त्र न हेन्य मेर्डिन न्द्र न्या धेन केश श्रमा नार्य या न वह तय न वेस स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ मास्र नदे के अन्मस्यसाया से सामे अस्ति सामके सामे हे दे दे सुन् नु न् नि ने नि नि नि नि नि सम्मान्त्र माने सम्मान्त्र *गु*त्र-हुःर्श्वे नःयःर्थे न्यान्यःश्वः यादयःयदेःश्चनःनुदेश्वे यःयःत्रय। गुतःन्यवःर्वे। यदयःश्च्ययःश्चः <u> अर्ञाक्तु अःग्रीः श्रें दृः धुवाद्वे धोदाक्रे अः सर्राद्वां । गृत्वः द्वादार्वे हिंदः दृदः छेदः धोदाक्रे अः सामादः धेवः सादे द्वेः ।</u> यरयः क्रियः ग्रेः यद्यः भेतरः प्रत्येत् । वियः पश्चित्य। यरयः क्रियः ग्रेः यळ्तः प्रदः पाञ्चरयः यूप्यायः वयः स वे से राया बराररामी मिर्विदायाया से मियायदे पुरायमें क्याया ग्री क्याया पुरायस पुरायस राया विकासिया विकास



क्षे:ह्या:रुक्य:ग्री:श्रेव:वें:यहेयाक:रुट:यीका | वःयदे:रेक्य:श्रु:श्रेव:प्रवे:श्रेव्यव:व्या |श्रेट:यहे:यूव: मभासदामानग्रीन् पर्नेन्त्र। भिषानभागश्चिमभामदे मनभास्य परि स्मिनभासी । ग्रीसास्रे पदे दे स्मिन्य ना लयाय। विनयाग्रीयानुनान्यार्थ्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याये । वियादियान्यास्यान्याक्ष्यार्थियार्थस्य यशमावतम्भे शस्तरम्पर्तुमामासर्भेसम्। दिनसम्पर्नेष्यनुसेदमदेपदेपसम्बेदन्। स्त्रिममदेर्भेतनुस्त यदर्गित्यकेंग्राचा । श्चि:यदे:वयाश्ची:श्चेवायादकेंवायादरा । वित्रायमारेशायदे केंशावादयम् यम्भेवा । वर्देरवन्द्रन्ते नमःसम्बद्धेर्भेर्भेर्द्धेर् <u> न्यायायवर्त्तवः स्वतः स्वया । यन्याकेनः याद्याः स्वयः स</u> मः इस्रयाष्ट्रं वे त्वे निया सर में दे तर्वे निर्मा के सम्मानिया विष्या ग्राम तक्षे निर्दे से स्राम विष्या स्र व। व्वेत्रहेत्स्यरः नुः वहुना यः ययः यदः यदे वययः नाव्त्यसं नुः स्वेत्यः सहित्यः सरः सः स्वेतः स्वयः सुत्रः स्व न्यवः चय्यात्रः विष्णाः प्राप्तः स्त्रः विष्णाः स्वरः विष्णाः स्वरः विष्णाः स्वरः स्वरः विष्णः स्वरः स्वरः स्व য়ৄॱऄॱइয়ॱनईॱॻॖऀॴऄॱॸॕॖ॔ॻऻॱॺॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॗऄॱॸढ़ऀॱॸৡऀॱॻऻढ़ॴॶॱॷॗॸॱॸढ़ऀॱऄॱॻ॓ॱॸॱढ़॓ॱॸ॓ॹॖॱख़ॱॻ॓ॾॗॱॶॱॴढ़ॱख़ॱढ़ॴॸॻऀॖॴ নৰ্ব্যা

## म् सम्बेन मार्थन श्रुन श्रुन श्रुन स्वावत श्रुम विद्वा स्वावत स्

व्यक्तःश्री

विदेश्यक्तः स्वाक्तः स्वाविद्यः स

प्रचरम् श्री स्त्राच्या स्त्राच स्त्राच स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच स्त्रच स्त्राच स्त्रच स्त्र

की चैंट चीलची टेनजारचंचर की प्रणाही शुंख्रा चीजालेट श्रा्यूचीशाश्च्यं तृत्यु के चेंचा स्वास्त्र की स्वास्त्र

महिरायायाञ्चरावनरान्द्रान्ता वर्षायाञ्चित्रात्वाहिरावाहिरावर्षा न्तर्यादी श्रुवरारोसराञ्चर त्व्री.चर्या ६.स्वृष्ठी.श्चर्या. स्वरमा श्वर्या. पर्वेत्रा. व्या. संत्रा. स्वर्या. संत्रा. संत्र. संत्र. संत्र. संत्र. संत्र. संत्र. स नक्षन। नुस्रमा अर्थि। प्रस्त्रमा अर्थे। सुन्तुः स्पन्तुः स्पन्तुः स्पन्तुः सुन्तुः स्पन्तुः सुन्तुः सुन्तुः स् नुस्रामासी नुस्रेमार्था स्ट्रिन्य प्रिन्ट्रा । वै प्यया तुन् प्रिने नुस्रामा वै । श्रिने नुस्रा यदे इसम्याया विरानु खुः भी वावया अस्तरा वि नि न न स्वा है सदे ह्मेटा ड्रिश्येवाद्यरसेवे वर्षे वर्षे वर्षे । इस्मेर्कवार्षेवारा भुसि न्यम् । न्यमः वृदः नगमः नवे वयः गशुरा श्रेटः। । हः सर्वे वृदः वृमः हुनः वकें । ध्रमा र्वमा है में मि है में । भ्रिमाश सह न सर् र सुर सुर सुर स्वाश वहेंत्। । वार प्रवादे १३ अर्थ हें वार्थ पुर हिंद शी। । कर्थ उद विरुध र सुर गणमानिः नभुमा । गार्षे द्रानिः नमुद्रानमान् । नमुद्रानिः नमुद्रानिः । निः द्रानिः । निः द्रानिः । निः द्रानिः 

रटाची मुग्रामादे अर्चेद्रायया दिन वर्षे अपा मुह्याया विवार्भेटा । नुस्रायदे खुः धे मुनार्था गार में न । मुनार्था मुन्दि न सुवार है ने दे शुल्या । नर्द्रक्षाकुवाननातुयाकुर्दा । वर्द्रयाने नुयानानादार युक्की धैं र्ने युक्के देने युक्के युक्के वैं रेने युक्के युक्के विं युक्के युक ष्रे.तू.चू.चू.चू.चूड्डी कु.चूड्डी क्ष.क्ष.यूट्टी ब्र्यम्य अवस्त्री लुवानम्भराज्ञेबाक्रिराक्षत्राक्षरा वर्ष्ट्रिराक्षात्रवेताचरात्र्र्ट्रिया ग्रिबाग्रीकाम्भरा वर्ष्ट्रियाचर्षा न्येग्रास्यायायने हेन्यो वन्यानेव नर्कन्यस्य उन् वे नर्ये वे

ग्रीभानक्ष्मनः तुर्गर्भवा अर्केमान्द्रम् स्रुद्रास्त्रीन्द्रिभाग्वनः सासुर्याः प्राम्या विभावर्दिनर्देवाला अ अ प्राप्त के का की क्षायक निष्य निष् ञ्च दें ५ ५ १ तु अ कु ५ ८ रें माठे मा ५ मु र मर न मम दे द म मानव सु मार प्येत ही ग्राच्यायायक्रम् आर्थीः न्याययम्य। युः चुः स्याः श्रुम्य। या चुयायायक्रम् से प्रे या या स्रितः मित्र प्रा कि लेगा त्र अ कुर गा विष्य प्रा कि स्था सुक्षे गा त्र अ कुर यु धि मर्दित विश्वभूनश्वनश्चरण मर्दित होत से नकुत परितर निरम् श्रॅंशेंदे:इस्रामाउदानुःशुर्म। स्टावेन् खूराम्यायाः श्रुम्यायाः नया। देन् वेरः वर्डे रामरामार्वे दारी । विवाया से न मुना से मार्च मारामा । सक्र्या.याश्रमा विट.सर.६.सक्र्या.र्स्यःसप्ट.क्षं.क्ष्यं यात्रादरा विरायः व् यविदादम् क्रिं स्थित्यदे क्रिं वाया । यूवाया निवाया निवाया । विवाया निवाया । हेत्र यहुर मी । नरेत्र सदे सह स्थित रही मात्र प्याय स्थित स्था वस्य क्रेन नगर मी श्रामार्ने न हो न प्रमा । नुमा मा ने स्व स्व स्व से स्व से स्व यदिव या विश्वस्था याद्या परिव परिव परिव परिव विश्वस्था विश्वस्था भ्रवमास्यवमास्यवमास्या वर्देरमास्या वर्ते वर्ते वर्देरमास्या वर्देरमास्या वर्देरमास्या वर्देरमास्या वर्देरमास्य वर्देरमास् गव्याग्यार रुपा । तिया देया यह । अभाक्ष । यह क्षुं ने में हे हो र से द रे

यांदेया'शुर् । डिसप्यदानासुस्यन्त्र्र्त्र्यास्य श्रीस्य न्युवा नस्रीस्य नुस्य स्थित नह्र्द्रासे न्यू सून्यस्य म्ममानमानमानम् मूर्या मूर्रापि रहारायमान स्मानमानमानमानमानमान कुःकेःनदेःव्रः रुःकें अक्षुं लुःनःयशः हुरःनदेः गर्हेरः सःनर्रः हेदेः कुः सर्वे केत्र में निर्म सुन्न निर्मे रक इसस र र र र मी से र खेवा निर्मे विगायेश नकुत्र राष्ट्रिश शुः कुर राष्य्र सुर विश्व शुः शके द रवश्यः ठन्रक्रिःवेर्त्रप्रेरे प्रवेर्धेन् प्रवेश्येन् प्रवेश्येन प्रवेश्य प्रवेश्य विष् व्यट्यार्श्वेरा वर्षा लेया परि क्षेत्रया प्राप्त या स्वाप्त सिंद्र श्री पर इण्णेमः वेदः वीमः वद्भवः वेदः वदेदः व्यवेदः व्यवेदः विष्ट्रं व्यव्यक्षः विष्ट्रं विष यश्रायद्यया में त्राद्या राष्ट्रायश्रायश्राय । द्रियाशास्त्रया यदि । या वर्षि द इट.एक्.च्रेट.राष्ट्री विचयः सु.र्जे.चक्चेट.एच्चेट.सू.व्रिट.स्ययाः विचयाः न्दःहेदःवहेवःस्रमाक्त्र्यः च्चेत्रःवज्ञन्यः पदी । यार्हेरः सःवन्द्रः हेदेः कुः सर्वेः केव में निर्म भिर्म मुख्य सुर विस्था की सके न कर निर्म मुन् । वर्ने न प्येव ब्रिट्यःश्चित्रित्रया । वहित्या । वहित्येत्रयायावयः यहित्यीः सर नवितःवरी विनुषःवे नविश्वः या अर्थे द्रान्दः रेगा सः द्रा विश्वयः द्रानः क्रिम् के स्वायक्षा विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्याया विद्यान्त्र विद्याया विद्यान्त्र विद्यान्त्र विद्यान्त्र

न्त्रिक्तेन्त्र्त्व न्यम् अहत् न्या बिया वियाम् न्या वियाम् वियाम वियाम

गहिरायायरायार्भ्यक्ष्मित्राची नश्चनानुर्वेश रहानी सतुत्र तु सु मात्रुवारायात्र स्विन्यायरायत्वा मटाराम्यायायायात्रः श्रीत्रायाह्मयायाञ्चयायात्रमार्थिते हो त्ययायनम्यायात्रे श्रीत्रीत्रायान्यीयायायश्चीया हो हटामा नक्षं भ्रिंग्रासम्बद्धान्य सम्बद्धान मुन्न स्वत्य सम्बद्धान यदे से समा उत्वासमा उत् भी देता दुः मुद्रा से दुः सा प्या प्या दिया सा यवे अरम मुमा भी में विषद में तुर्ध के में नाम मुन् देवे के द द है द पर नगवनवेन्यावर्द्धराष्ट्री स्थारहेव सेव से के वि के न्यू के प्यू वनाया में वर्षेया विदास मुवर में वर्षेया मुवर्षा भूवर्षा सुवर्षा विद्यापाद <u> २वा:सर:क्र्रेवाश:सदे:श्रद्धाः क्रुश:ब्रवश:स्विश:य:ब्रुवाश:हे:क्रे:व:दे:हेट:</u> ग्रीसम्पर्स् म्हार्या भ्रीताया प्रत्याच्या स्थान स यायमा वर्ने र हित क्रुनमा ही माहे र केत में प्रथण हासकें मारें या या मार धेव विद्या दरे त्य दर्भे दिश्चेव त्य राष्ट्रें त्य या गृहेश राप्य या गुरुश य ग्रम्याया निवास मान्द्र प्रमा श्रम प्रमा मुना मुना साम्या मुक्ते या न। नर्वायानश्रुदानाक्षेत्रेन्वाळवानर्वातु अळे याया द्वाया विष्ये वाया नर्डेयानाया न्येग्रयायने निवेतानु सम्मिन् ग्रम्यायन यहे प्याना स्थे

क्तुन देवा पायहेव पाये विदायस्य दिसा धेव स्रुसाय दरा वि वि वि प्राय कुयानावस्याउन्। ग्री समु स्नियानि विना तु नसूयानि क्रिया है। समीतः यपियः पर्गे निया वर् मि अक्षते पर्मे र मि या में र हे अर्दे र श्रुया र । नव्यायार्थित् स्रुवायि वे वे वा निष्या निष्य ब्रे विट प्रवेचकाया बुगामा वेर प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त विट प्राप्त विद न्रह्मित्री भेष्या क्षेत्रक्ष्या क्षेत्रक्ष्या क्षेत्रक्ष्या क्षेत्रक्ष्य क्षेत्रक्षेत्रक्ष्य क्षेत्रक्षेत् देन्'याञ्चन्रार्श्यार्थ्यया देन्'ग्रीशहिं कुयाह्र सर्केनार्स्यायाहिं र्वे न दुवे वित्र श्री भान भ्री राजा आर्दिन श्रुआ नुः श्रुव न्द्र भाव भान सुदा भी रा यद्र-श्रुव हो होद्र-र्रा वद्र-पार्देव क्या के क्या द्रा श्रय उद्र सेया वदे वहीत्रायमातु नायीत्रायमा ने प्राप्ति स्वासमानि स्टापी मुनामानी हुँ प्यश्रादेन् ने र पर्देश प्रश्रा नर्देश प्रमुन प्रमुन प्रमुन प्रमुल हैं । स्मि देवेश में हे नमु नवे सुन कु नद नवस हे सुव इत्या देव तु न सेवा वेद नद्दा नवस नद नवस मा हु ५५.स.२८.ध.५४.क्ष्म.मेश । व्हरम्मेश्वराष्ट्रस्ट्वेस्ट्वेस्यार्द्धा । १५८. मु:सुंग्राया मु:सुंद्रिया वि:सें के दःसे इस सर मुया । भू सर्वा नगरसंख्रीरवग्रह्म । ध्रमानस्ट ह्मार्स्हिमार्स्स । विन्याद्वेतः स्यान्त्र्यान्त्र्ये । र्रे. वेयाय्यान्ये स्थित्य्ये । वित्राच्याय्यान्यः स्थित्यः वित्राच्याः वित्राच्याः स्थितः स्यतः स्थितः स्यतः स्थितः स्थितः

द्वै। क्वें प्यास्त्रिम्यास्त्रे स्वाप्तास्त्रे स्

इस्रमास्यास्य स्वर्त्ते निक्ष्य निव्यास्य स्वर्त्ता । विष्याः स्वर्त्ताः स्वर्त्ताः स्वर्त्ताः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्त्ताः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्ताः । विष्याः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्ताः । विष्याः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्त्ताः । विष्याः स्वर्ताः । विष्यः स्वर्ताः । विष्याः स्वर्ताः । विष्याः स्वर्ताः । विष्याः स्वर्ताः । विष्यः स्वर्ताः । विष्यः स्वर्ताः । विष्यः स्वर्ताः । विष्यः स्वर्यः । विष्यः स्वर्तः । विष्यः स्वर्यः । विष्यः स्वर्यः । विष्

महेश्राचनगुनाम विं ते स्थ्या ग्री शान्य त्वा स्था नि स्था नि

यःश्रीम्यायदेःश्रीम् कम्यायःशः इस्यायमः द्वे त्ययान कुन्ने प्रित् होन् शे या त्राया प्रमा विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषय रादे द्वाराम् पर्वेद ने सुन् ग्वा व्याया वित्र म्हा वित्र महा वित् विटार्चे अर्देगा नवट न नेया में टाम्पय द्या साक्षेत्र स्युर स्वे र्से अस यहूरी दुशनहूर जा श्रुंच रहें ये अ.चेंशन ह्या अ.धे हैं। चेंशन नवर में के निव सकें व विदाय से समा उदा गुदारें दा वेदा वि दे तुस मदि रटायविवाया विटावे विं वेदि खुः धेयायाटा अन्याय्व सुरायायाया युन्न वेयाह्वयावर्षण में देन ग्री स्वाप्त में वायाय में प्राप्त मे यश्रासे विराणे ने शामे दें नित्त होते होते होते होते होते साम निराम हो। स्टर्ट्रिके स्राविष्ठा वर्षा वर्षा वर्षिया स्रीया है विष्ठा सुटर् वर्षे वर्षा स्रीया नरः कर् से समुद्रासदे मुँग्राम्यस्य उर् मुद्रादे दि द्राप्यदे से साम यदा भिष्यक्षेत्रं ये.लु.खेश्वाययेश्वाया वि.र्ह्यादे व्यायक्षिश्वाय वर्गित्रभेगाभ्रिनावेगुर्छेग । छे कें अंग्रायन्त्र देवस्य मानवेव प्रश्चिम इसस वा हर्गी स्वाप्त कें प्राया प्रति पार्य र शिन्य साम प्रति किन्य साम स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वापत

नेशरीं दें में राष्ट्र राषे कुरायार यायशाह्य यायी यायश राष्ट्र या प्राप्त राष्ट्र या प्त राष्ट्र या प्राप्त राष्ट्र या प्राप्त राष्ट्र राष्ट्र या प्राप्त राष्ट्र या प्राप्त राष्ट्र राष देवे क्वें द्रश्चर्यश्चराया श्वासीया दे त्यश हुर ववे दर्गादेव के वाश ब्रान्तिरः द्याः प्रदेशेष्ट्रस्य स्थित्। इस्प्ता व्रस्यायासे सः व्रसः देशे द्या । सक्रमक्षेत्राचेत्राकुःधेत्रामान्। स्रियाध्य नुराधेत्रानगुरामा । । र्यम्या देन् ग्री स्वाप्त वें म्याय सदे महत्त्र मित्र म्याये स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्व हैंगा धे भेश ग्री दें में स्वार प्रदेश कुर मार न यश हिरा न ग्री रास्या वरें र ळग्र-१८-१८-भ्रान्यम्यम्य-१८-भ्रम्भ्रम् १-५४-३८-१८-४८-१ मिर्देव-र्रोग्राश्चर-विर-र्गा-पदि-र्रोग्रा-साम्हित् हेर्यन्ता गुर्यापासङ्खाः र यदिवरा अर्रेरहेंगाणे वेशकुणेशयारा अवाध्वरतुणे खुश्यत्युश मर्था विर्देत्रक्षम् भने विराधिका विद्याने विश्व में निर्वा में निर्व में निर्वा में निर्व में निर्वा में निर्व में निर्वा में निर्वा में निर्वा में निर्व में निर में निर्व में निर्व में निर्व में निर्व में निर्व में निर्व में डेग । अं र्हे र्सेग्या देन ग्री सुमान र्ह्मिया स्टि अहु दे त्यदे तुस्र स्टि र क्षेर्प्यश्चानुन्धे भेश्चीर्ट्नेर्च्यकुर्पिते कुश्नार्गान्यश्वरा नश्चेश्यम् अगर्नेग्रन्दिवे क्षेत्रम्भानस्य स्थानस्य विष्या वुरःचवेःवदःवार्देवःश्रवाशःवुरःविदःदवाःचवेःश्रेशःयःसर्हेद्। ३०५८। तुरः रा.क्षेड्र.वें.यद्यंतरा वि.चीयाला.ज्रेश.क्षेत्रायारा सियात्रेय.ये.ला.खेश. नगुरुप्यरा । ध्रमार्देमार्देप्यरानर्वेरायाधेरा । वद्यार्देव्येष्याञ्चेतावेः

शुर्रित । अं रें अँग्या देन् शे स्वाय देन से स्वाय प्रति ने दूरित स्वय प्रति । हेन्यश्रक्षान्त्रीद्राधे नेश्रामे देन्द्रम्मूर्ये कुराम्दायाया विश नश्चित्रास्य। गिर्ते सुगान्दाने दे स्री त्रान्य मात्रा स्वीता स्वीता हे त्यसः वुर नवे न न निंद से न स वुर विर न न न न से से स स स है न देश न न न न मः अविद्याः द्वे स्थेद्वद्या विक्राद्वेद्याः भेषाः कुष्येयाः वाद्या विश्वयः भूषाः भूषाः भूषः नुःधीःसुरुष्यान्युरुष्या । याते सुयाने त्यरुष्य वर्षे राष्ये या । वन्याने व श्रेगःश्चेनःविःशुरः ठेग। । अः र्ने : अग्या नुसः भरेतः केतः गवियः प्यशापटः। । सः र्रवाष्ट्रित्रः वृत्राकुः धेराना । भ्रवाध्य त्रुत्रः विष्यान गुरुष्य । कुर् नवाः कवाराः हेत् छेट्रायदे। विद्याने विर्ध्वा श्वेन विर्ध्य रहेवा । शेरे देवा र्थर प्रविद पर्हेत्। कुः वेषाशः वादेषाः सम्वेद प्रमः सुत्। वादेषाः वीशावः प्रश्वा वाद्या । सुश्वासः वाद्या वाद्या । ग्रेश्वॅद्दानुः वेद्राचवस्य विश्वस्य । शुक्षाद्रया । शुक्य बैंशपासहिता देशपत्रापासिता

वडरायदे सा जुदे सर्दे दराईवार है। यादरा दे दाय दे दिया राजी है रेग्राम्याः भेर्ष्यायाः इस्ययान्ता । स्यान्यः नित्या वतः नेत्ये प्रेत्रः नित्या निरायम्बर्भासदेख्नाम् रायदे । याद्याः द्वाराष्ट्रस्य अवा । अब्दानदेर्न्याक्ष्र्याध्रेर्द्युर्यानेय । विक्तास्य प्राम्य विक्रा निम । नश्यः श्रू र प्रतः प्रते प्रमा स्थायः श्री र श्रु प्रशः निम । प्रे सु प्राप्ति । भे पर्वेन ना नि न्या ग्रामित के पर्वे भे पर्वे भारती नि न्या भी पर्वे भी प्रावे र्रे त्रावर परिस्थायवा । हा अर्के गारे या परि नगय हुर वशा । हिंद गर्गाः इतः वस्याः उर्धिरः धुर्यः नेग । सर्वेदः नदेः र्गाः इस्याः धुरः हिर्याक्षेय दियासदारियास्ययाहीर हिर्याक्षेय विस्तर्या र्यास्यया मुर्सिर्यानुया । यथया श्रेरिर्द्यास्त्र र्या द्वास्यया मुर्द्या निया । यहे २८.वर्च ४.२८.ब्र्ज.श्रुच.२८.। विषेष.२८.चेलव.स.क्रुंच.भुष.२८.। भिरंश. यः भुः भ्रेरः मान्त्रः माने रः प्रामाने रः प्रभाषा स्रामाने स्याप्त । स्रामाने सः भ्रामाने इन वस्र रहिन सुन्य निया विष्य निया निया विषय विषय विषय विषय । त्र त्रा अपन्यासुन् से नक्त से नक्त स्थान हैं। वर्गरासम्बासिरे के सिंगरान्। | न्यर या स्वास्थाने वा साम इसराद्रा विःसारीयादसरारीया वतः स्री किंविरावरीया पदिः त्या यहिर

नदी । गर्गा हुन वस्र रहिर हिर सुर सं ने ग । सर्वेट नदे र्गा हस्य सर्हिर हिर्याक्षेय दियात्रदेर्याक्ष्यका हिर्द्धर्याक्षेय विस्तर्यात्याक्ष्य मुरासुरमानीय । नमसार्स्ने राद्यापदे प्रवास्यमा सुरासुरमानीय । दि व्यन्त्रमायने से पर्वेवावा । में व्यन्य चन्यने से पर्वेषावा । में व्यन्य से पर्वे भे गहिरम् । रिव्यम्पर्मिस्याम्यम् व । हिस्स्रेचि स्थापि नगद्य वया विनः इसयः श्रेनः श्रेनः वर्षेनः परः होना निः वयः वगवः वयः सः वनवः नम् । गर्गाः इतः वस्र अरु दिन्यः भेग । सर्वेदः निरं न्याः इस्यः हीर सुरुष भीवा । रेवा परे रेवा इसका हीर सुरुष भीवा । वि क्रूरका रेवा इययाधिराधुरयानेवा | नययार्श्वेराद्यापदेर्त्वा इययाधिराधुरयानेवा | यहें न्द्रायन्य अन्दर्भेया सेवान्द्रा । वाष्ठ्र न्द्रायाय सार्थेया स्ने सान्द्रा । भूरश्रायाः भुः र्वेरायाव्याया वेराप्ता । क्रुः यावेरायभ्यायप्तार रेरश्रायाप्ता गर्गाः इतः वस्याः उर्धिरः धुर्याः भेग । तृः गः भेगः भेगः तृगः विया विया । वृःगः सुनः सुन। यः नन्गः सुः नन्धः नक्षः नक्षः न्यः विद्वः गाः सुन् । 35

हिर्याः भेग | रेगाः पदेः रुगाः इययः हिर्यः धुर्याः भेग । विः क्रूर्यः रुगाः इययः म्बेरम्बर्यानीय विश्वसम्बेर्ट्यान्यस्थित् मुक्तरानीय दि व्यन्त्रमायने से पर्वेवावा । में व्यन्यन्यने से पर्वेषावा । में व्यन्ये पर्वे भे गहिरम् । रिव्यवन्यर्भरम् अस्वन्य । हासके गरियासे नगय गुर वया । विनः इसयः श्रेषाः श्रेनः वर्षेनः परः वेन। । ने वयः वर्णवः वयः यः वनवः नम् । गर्गा द्वा वस्य उर् द्वेर द्वर या । सर्वेर नदे र्गा द्वर या ब्रिम्सुम्स्रिक्तं विवादित्तु न्वाइस्स्य ब्रिम्स्य विवादित्य निवास्य स्थान्त्र इस्रास्त्रित्रास्त्रित्राः निवा । नर्यसः र्श्वेत्रः द्वार्त्तरः द्वार्त्तरः स्वार्त्तरः स्वार्ति । यहें दिर वर्ष या स्था सेवा दिर । विष्ठ दिर विषय से केवा से या सेवा से या सेवा से श्चरश्रायाः भुः श्वरायावेत्रः यावेत्रः यावेत्यः यावेत्रः वृःगः सुनः सुन। यः नन्गः सुः नन्धः नक्षः नक्षः न्यः विद्वः गाः सुन् । 35

द्युर्या भेग । नयमार्श्वे र रव रावे र्गा इसमार्थे र द्युर्या भेग । रे तुन नुगायने से यही वा । में तुन हान यने से यहीं या वा । में तुन से यहे से । गर्हेरःवा ।रें.व्यावरायरेरायायवावा ।हायळेंगारेयायवेर्याया हुर वया । विन्नुस्ययः श्रेवाः श्रेनः वार्वेनः धनः वेन। । ने नयः नगवः ययः सः वनवः नर। । गर्गा द्वा द्वा वस्य उर् हिर हुर य नेग । सर्वेट निरे र्गा द्वस्य । हीर-हिर्यानीय । रेगा-सदे-र्या इस्यानीर हिर्यानीय । यि इस्यार्याः इस्रास्त्रित्रास्त्रित्राः निवा । नर्यसः र्श्वेत्रः प्रतः द्वा । वस्रास्त्रः स्वा । यहें न्द्रव्ययन्द्रया सेवान्द्र। विष्ठ्रन्द्रवायम् या सेवा सेया सेवान भूरश्रामानु भूत्रामानु न माने स्पानि माने स्पानि स्थापान स्थाप यार्याः इतः वस्याः उर्धेरः धुर्याः नेया । तृःयाः नेयाः नेयाः तृयाः विव्याविव्या वृःगः सुनः सुन। यः नन्गः सुः नन्धः नक्षः नक्षः न्यः विद्वः गाः सुन् । শুসু

न्त्री अक्ष्रश्चर्वित्वान्त्र्यः श्रीत्रान्त्र्यः श्रीत्वान्त्र्यः श्रीत्वान्त्रः श्रीत्वान्त्यः श्रीत्वान्त्रः श्रीत्वान्त्रः श्रीत्वान्त्रः श्रीत्वान्त्रः श्रीत्वान्त्रः श्रीत्वान्तः श्रीत्वान्तः श्रीत्वान्त्यः श्रीत्वान्

द्युरुष्ठाः भेवा । नश्रमः श्रुरिः द्वार्याः द्वार्याः सुरुष्ठाः भेवा । दिः तुनः नुगायने से यही वा । में तुन हान यने से यहीं या वा । में तुन से यहे से । गर्हेरःवा ।रें.व्यावरायरेरायायवावा ।हायळेंगारेयायवेर्याया हुर वया । वित्रम्ययः श्रेवाः श्रेतः वार्षेतः यत्तः वित् । तेः वयः वनायः ययः यत्तः नम् । र्वा इस्र वस्र अर उर् छेर सुर अर विवा । सर्वेट रवि र्वा इस्र अर छेर ह्यूर्या भेवा । नेवा परे द्वा इस्य शेष्ट्र श्वर्या भेवा । वि क्रूर्य द्वा इस्य । मुर्सिर्यान्त्रेय । यथयार्श्वेर्ट्स्यान्त्र्यंत्रित्यात्र्ययाम्बर्यान्त्र्यस्य रट.वर्चश्र.टट.सूज.शुचा.टटा विषेध.टट.चालय.स.झूचा.भुश.टटा भिटश. यः भुः र्वेरः याद्यावोरः नदा । क्रुः यावेरः यभाषाय दरः रेरम् याद्याः । याद्याः इन वस्र रहिन सुन्य निया विष्य निया निया निया निया हिला विषय इन्द्र यान्यासन्दर्भे नक्न र्थे क्र प्रमास्य वर्षे स्वर् क्षेट खेतु रिया स्थय ही र हिट्या निया विया सिया सिया स्थय ही र हिट्या निया । नरःया वदेः र्या इससा धेरः धुरसः निया । रस्देः र्या इससः धेरः ह्युर्या निरंदा ही द्वा इयया ही र ह्युर्य नेवा । या सेवि द्वा इयया हिरास्ट्रमानेन । नार्रे राष्ट्री वासि राष्ट्र स्थाने । नर्रा स्थान र्वाक्रम् भ्रम् भ्रम् वित्राक्षित्राक्षेत्र वित्राक्ष्य वित्राक्ष्य वित्राक्ष्य वित्राक्ष्य वित्राक्ष्य वित्रा वर्त्रक्षेर्वाक्रयम्बर्ध्रस्य निष् । क्ष्यास्त्रिर्वाक्रयम्बर् निया । दर्गेर निया यी द्या इससा श्रीर श्रुट्स निया । वर्षेट सेवि द्या इससा हीर सुरुष नेवा विदु ररावी र्वा इस्य से हीर सुरुष नेवा विद्व सी र्वा इस्रास्त्रिम् सुम्रास्त्रिया । श्रेवःस्तिः नुषाः इस्रास्त्रिमः सुम्रास्त्रिमः सुम्रास्त्रिमः सुम्रास्त्रिमः सुम् रेंदि-र्गाक्समाधिर-धुरमानेग । रमाश्रेदे-र्गाक्समाधिर-धुरमानेग । गिनेव हेरे रुग इसस हिर हुरस नेग । शुः हे रेगस ग्रेर्ग इसस हिर द्युर्या नेता । सुर्यस्य रेताया ग्री र्ता इसया द्वेर सुर्या नेता । वार्रेया यदेर्त्याद्मस्रम्भिर्धुरस्येत्वा । द्यादर्वदेर्त्त्वाद्मस्यम्भिर्धुरस्येत्वा । के:८वादे:८वा:इस्रय:धेर्य:दीवा ।सन्नदःधराग्री:८्वा:इस्रय:धेरः हिर्याकीय विश्वति:र्याद्मस्याहिराहिर्याकीय विराहिरायी:र्याद्मस्य म्रेरस्ट्रियः नेव विरम्भयः म्रेर्वा स्थयः म्रेरस्ट्रियः नेव विषयः स्वर ग्री:र्वाक्रथाध्रेराध्रुर्यानेवा । सार्वित्राक्रियाक्रथाध्रेराध्रुर्यानेवा । इययाधिराधुरयानेवा विद्युरावा खुवे प्वात्वययाधिराधुरयानेवा विद्युरा नदे से दे 'तु ग 'क्स से म सुर से किया | विद्यु म नदे 'क् म मे प्राप्त कर हो म क्रम्भाग्नेमाम्बर्धाः प्रति प्रति । क्रम्भाग्नेमा । क्रम्भागः विष्या । क्रम्भागः । मुरसिर्यान्त्रेय । वि.मर्थान्याः स्थयः मुरसिर्यान्त्रेय । वर्षयः मुर

नश्यास्ते र्वा इस्र से स्युर्य भीवा हिं तुन र्वा पदि से प्रीत्वी वा हिं व्यान्तर्भः वर्षे श्रे महिर्दा मि कि या हा अक्रिया में या प्राप्त के प्रा र्हें हे प्रहें व हो ५ के व रें हो | १ ५ पा वस्र उर श्रुपार विराहित के विराहित इस्र र्श्वेष स्ट्रिट वर्डेट यर वर्षेत्र । रे. यस यगद तस्य साम्य वर्ष यार्याः इतः वस्याः उतः धेरः धुर्याः नेया । या वदः हेः सदेः र्याः इस्याः धेरः ग्री:र्वाक्रय्याध्रेर:ध्रुर्याः भेवा । वाबदःध्रवाः प्रदे:र्वाःक्रयः ध्रुरःध्रुर्यः नेवा विवादास्र राज्ये राज्य स्था स्थान स्थान । विवाद सः सर सः शीः र्वाक्स्याधिराधुर्यानेवा विवयक्षेत्रायदेःर्वाक्स्याधिराधुर्यानेवा । ग्वत्रः इ.त्रे. द्वाः इस्र अ. द्वे र द्वर अ. क्वा विर्दे र से अके र प्रवेदे र प्रा इस्रथान्त्रीराधुर्यान्वेषा । श्रराकेतार्ये ५ त्यारान्त्री ५ वा इस्रथान्त्री राधुर्या निया । रु.च. सह्या देर यो रुपा इसस्य धेर धुरस निया । श्रुपा उत्र वहें त् छे । र्वाक्स्यराष्ट्रीराष्ट्रद्रार्भवा । सार् केंद्रेर्वाक्स्यराष्ट्रीराष्ट्रद्रार्भवा । कु अूरि, भु: इ.नकुर्:ग्रे.र्ग.वश्रश.वर्:व्रेर्चिर सुर्शः भेग । हेश्यवे वरःग्रेश्ववश व्याद्रे यय न्युन नुवे म्हार प्रव्यावर्षे या हे सुद्राय द्यी

र्वे देर.ग्रे.भ्र.ग्रेवे.अर्देरश्र.ग्रेश.ग्रेव.पर्य.ग्रेश.वे.व्या.ग्रेय.व्या.

र्बेट्रा इ.चेट्र.अर्ट्रट्य.ग्रीय.पर्मेच्य.ची.ज.चेयय.चेयय.ची.य.ज्य.ची.य.ज्य.ची.य.ज्य.ची.य.ची.य.ची.य.च

त्विर्यःशुःत्र्युवःश्चेत्वम् द्वा देवात्वरःयःश्चः विराधः स्वरः स्

र्'निले'र्'मित्र'यार्निन्य'र्या देर्'हिं कुय'ह अशेव'हिं मितृस वहिवासावा बुवासा ग्री इसायर न वेरसायसास र मुन्ती वा वर मुन्ते न कुर नर्से अर्गर्ज अर्ग्ये अरदेश अर्भेट लु अर्ग अर्थे हे सूर् नर्से न न ने वित्र न टर् त्रूरमाने पर्देशानि हैं राजन्या में माने नामिन प्राप्त निवाद न उन् ब्रम्भ हे श्रेव कन् भे पार्वेन परन्य पठम पदे से मारा सहिन ग्यम र्हें हे गर्भेर बिर गरेर गणें र ने या पर्ये देश तु गर्भ थ बिर भेगा नक्ष भूर भ द्वा में दर नह भ हे। भेर पार्टे द ग्राचय: प्रत्याः गर्ने व स्था । श्रूपः विष्यः श्री प्रतिः श्रुपः विष्यः स्था । हः स्थी व नगवायकावन्यमान्त्रीत्। विवादि नगवायकावन्यमान्त्रीत्व। र्हि हे विर्धरः नवे रुष्य न र्रेन्द्रित्। सिर्द्र रुष्ये व्यापि नवे रुष्य व्याप्य मेर्सेत्र मित्र स्वि से यानश्चित्र । मयान्तीयनम् नवे से यानश्चित्र । विविद्याले विवर्ण स्वर्ण नवे से नया यानश्चित्र । से वित्र असे के द्वित वित्र नित्र में वित्र से वित्र नश्चम्। विंकुः विया अदे वरातुः वर्केत्। विः स्वाकेव विदेशास्तिः अवव। विः ख्याने नुयानु क्रिंट प्राची । क्रिंट प्यान प्राचीने या । ख्या श्रेश्रश्नाविः मृषः पुः द्वेत्व । देः प्रश्नावावः प्रश्नावः प्रप्तावः प्रम् । कुः प्रव्यशः नन्नाः हुःद्रमुद्रा । अःर्वेद्रावः नन्ननः शुरुः द्रा । द्रव्यश्रमः नः हेदः रु श्लेदा । येग्रम्भाये वर्ष्यम् न्याने निष्या विष्या प्रति वर्ष्यम् निष्या हिमा । सेसराउत्गात्यापार्वे नायके ता । ने पी इसामर श्रेतायापी या । वर्षे मान न्द्र-श्रॅम्पाशुअ-५-१८मा । श्रेस्रश्रास्त्र-गाद्र-श्रास्त्र-भावा । दे प्ये-प्रापे निवे स नःलेश । अर्वेदिशावरायार्वेनायरावशुरा । यहावी खुशायाद्ये सुहशा वया विवरणयार्वेर्यया होर्डेम वियः हार क्रियं सेस्या वर्षेया विष्य न बुर न वेंद्र अप्य न वेंद्र अप्य विष्य | न क्ष्य अप्य क्षेत्र प्र क्षेत्र विष्य | ळगाळे क्रमादा वे नदासहित हि क्षर हुमा ग्री महित्र सम्मा नी सामक्ष्रम्य सन्ति। । निर्द्यन सम्मान्य सामान्य सम्मान्य समान्य सम्मान्य समान्य समान् नवे निये के निये । विन्यो अन्तर अपी विस्था । निर्वे स्थे नियं के नियं नियं नियं । निवन्या । हिन्द्रसम्पदके निवेदित्र होत् । विकेदिर होत्र दिस्य निवेदित्र । गर्गः इन वस्य उर् इस्य धेर धुर्यः नेग । र्घर व्याश्याय द्यः सिवत्त्वकी विश्वदानात्रमामवावके नवे निर्मा से निर्मा सिन्न मा श्रेश्रश्नात्रम्यायात्रम्यश्री । निर्देर्भेरायाडेयायी स्टानिविताते। इससायके नदे हेत्र्र हो । यके नदे हेत्र न सम्बा । मार्मा इन

लटल्सी अन्यक्ष्यक्ष्यः स्वर्धः स्वर

वि नेशमन्द्रद्वन्य र्थेटा ध्रमप्रमुद्दर्वि दुवा मे मा पुर्वि द्वा नाया वर्गुरानाकीरामी रुमा इस्मू अया विमाया स्था सेर्या भीराविष्या संदे वर्ष्यस्थारुर्वित्रम्यास्यास्यास्य वर्षेत्रस्थास्य वर्षेत्रस्य स्थान्य वर्षेत्रस्थाः वर्ने हिन्या श्रेन क्री श विसाय दे से सामा सहित के सामहिन त्या से ना सूति। युत्र वेशसर र वर्देन वर्र र रासिर प्राप्त प्राप्त स्वाय स्वय स्वाय वर्षेत्रश्रापते त्रदावस्य उदापि देवा से राषा सेवा पति इसाय उत् दुर्वेद है। यर्त्यम् अर्थेयाः यः सेनः ग्रीसः विस्तान्त्रेयः स्त्रीसः स विद्या औँ नई सु सु कु हिर हिर प्ये सु हू विश्व महित वर्ष्ट्र न सु है न स्वा हिन हिन है । शेरायात्वाशास्त्रायि श्रुवायाश्चित्रायाः स्वारायद्वात्रायाः वित्रायाः स्वारायद्वात्रायाः स्वारायद्वात्रायाः स्व <u> नगर वार्सेन प्रते क्राम उत्तु वित्र रास्त्र मुल्या सेन</u>

ॻॖऀॴॱॿ॓ॴय़ढ़॓ॱक़ॕॴय़ॱॴॾॕऻऻॗढ़ऺॴढ़ॴॿॸढ़ॴऄॕॱॸॾ॔ॱॸॎऀॱॸॎऀॱॵॱॷॗड़ॗॗॿॎऺॴ क्र.यदुःयर् वराव्या १८८ वि. द्या राष्ट्रा या स्था स्था स्था स्था १८४ व्या स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स न्मयायनरामी से पदि हिन्या से नामी सामिस दि से सामा सिन् न्ययायनरा म्राचित्रेश्वराष्ट्रित के प्रमान्त्रित के प्रमान्ति क र्श्वार्येन्। स्वेन्त्रम् स्वार्यर वित्वर्या सुराम्याया स्वार्येन्त्रम् स्वित्या श्रेन ग्रीश मिश्रामित स्थान स् न्यायमा वर्षेट्राचायमा वर्राच्याचायमा वर्षेट्राचायमा वर्रेट्राचायमा वर्रेट्राचायमा वर्षेट्राचायमा वर्रेट्राचायम विष्याचि द्वार्था निष्या में विष्य स्था निष्य विष्य स्था निष्य स्य उत्र-तृ-वित्र तथा से-विर-पर-तर-ती-त्रसामानः वर्ष-हेर-त्य-सेन-तीका विस मंदे से सामा से मा अं मह निष्ठ निष्ठ

र्य देशत्वुद्द्यते दुव्यत्वेद्द्य वहर्ष्य वहर्ष्यव्यव्यव्यक्ष्य हुद्द्र्य दुव्यत्वेद्द्र्य वहर्ष्यव्यव्यव्यक्ष्य हुद्द्र्य वहर्ष्य वहर्ष्य वहर्ष्य हुद्द्र्य वहर्ष्य वहर्ष्य वहर्ष्य हुद्द्र्य वहर्ष्य वहर्ष वहर्ष्य वहर्ष्य वहर्ष वहर्ष वहर्ष्य वहर्ष वहर्ष्य वहर्ष वहर्ष्य वहर्ष्य वहर्ष वहर्ष वहर्ष वहर्ष्य वहर्ष वहर्ष्य वहर्ष वहर्ष्य वहर्ष वहर्य वहर्ष वहर्य वहर्ष वहर्य वहर्य वहर्ष वहर्य वहर्ष वहर्य वहर्य वहर्य वहर्य वहर्

हैं। ८८.मू.क्रूंब.म.अ८अ.म्अ.चगाय। १२४.२.मू.म.५६.च.मू.म.चरे. नगय । १८.के.क्रम्भाकातकर. नर्गामी नगय। । नर्डे अ.सर् संदे नगय अ गर्डेम निंद्रभ्यः स्ट्रप्रेरम्याः यार्डेम । कुः श्चेर् देव्यवः कुट्यम्बित्। वर्षिरविराविरामा अहिंदामा । शुरामिरिराद्या विश्वा रटरर्स्स् रेवियावयास्यानेगया विस्वा इत्त्रमुट्स्य सामित्राद्रीत यक्र्यायाश्वमा । विद्रायम् स्यक्रिया में या प्रवेश्वर क्रिया स्वार्थिः यविदःवर्गे के अः भ्रुटः युदः यदे के वाया । यूवायः दरः हेटः वहे व वसुः येदः हेव पशुरानी । नरेव परे अशु धे अ र शे ना अ । खु या वरे हे द खा । ना वे द सहूर्रेत्रायम्बर्ध्याच्चित्राक्ष्याच्चित्राचा विद्रित्यक्षेत्राच्याच्या सेसराध्वासम्। ।वाववादादेन्सानिवावायाते से प्रमें वा । पो नेसाई स्यास्यायात् । श्रिष्ट्रात् प्राप्त । श्रिष्ट्रात् प्राप्त । श्रिष्ट्रात् प्राप्त प्राप्त प्राप्त । श्रिष्ट्रात प्राप्त प्राप

द्रा ट्रे.क्री.सेया.योलका.यंसू.याला विट्र-प्ट.ट्रे.क्री.क्रा.यंथका. यश्चा ला.चेका.यंस्या.क्षेत्र.वंद्र्या क्षेत्र.कष्णेव्य.कष्णेवेत्र.क्षेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.कष्णेवेत्र.क

इससासु नेवा परिक्षे देन स्टाह समीव नु वासय परि श्वास गा वस दिन वेर'वर्षेश र्वेग्राय दुवे कुल'न' श्रुश'न्ट'न दश'पवे वेत्र क्रुन्य तुर्य समु मस्य र र दिन ने मरी स्थापम सुन प्रमा विन मर वी प्रमा से दे नग्रायळ्य्रयाच्ययाच्यः हेते हेते ह्या सार्या ग्रीयाचर यळ्यया येद नः केत्र में र नेत्र ने अपन क्षान्य प्रति से अपन अहिं । उपन अपन मान्य नहं न्या न्या भ्या नहं न्या न्या केष्ट्रनहं न्या न्या वेशववश्यश्य हुई हे मु मुरा पुर प्रहेगा हे हे श्रु के रायववाला मुयाया श्रुयाय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय ८८। । पद्भः ८ नटः वी कुषः रेविः स्र शुः क्षेत्र सः ग्री सा । वर्षे नः वर्षे । वर्षे । वर्षे । वर्षे । वर्षे । मैशनशुरमः वेदामेश विदेश्यः शुर्याम्या विदेशयादः न्र सुव्रश्रुयः विवास स्याय स्वासी स्वी दिन्त विक्रिया हेव पाश्रुयः ग्री:सर्ग्रेत:र्रे:द्रे:स:ग्रुस:स्रूर्य:य। । यदय:क्रुय:प्रकृत:वद्वा:स:क्रुय: वहते श्रुव सदय व | वदि वे वहे वा हेव द्वो वदे व या विश्व दूर में वि ग्राम्थःनिरःभ्राद्मा ।क्रिंशःग्रीःद्माःभ्रीःद्माःम्यादाःविः होत्रा । वर्ते ने वहिषा हेव प्यो प्रवे प्रया की शामा है शास वि । प्रयो वर्त्त

द्यायाः क्रियाः हेत् प्रत्ये विश्वायाः विश्वायः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वय

## नुगा-इ-अदे-वर्नेन-नश्चेग्राय-वर्गेन-नगे-नगा-वर्गेय-शु-नगेन-नग

लु.र्थामी.श्रीयावयमामीमातवमा यर्थायाश्रीर.कुपारमूरायश्रीर.ची यरामकूरारा मकूरायामीमा नक्षना नेत्रमायमानिवानभ्रेनामंत्री किं क्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रे क्रेंग्री कुं त्राचु स निष्टेश्वर वेश्वर्य वे.स.निष्ट्रेष्ट्री क्रूंट.म.क्रेट.ट.वीरी क्रूंट.सप्ट.टर.वारा यर्वरर्ग्यञ्चर्दरहे सर्दर्ग्यायमेग्रास्यस्य भी स्रेटर्गावस्य महेस यदे साने राम कु विकास दे वान्व की क्षेट नु प्यायका विन नु कु वा प्यायक व मा ने यस दिन वर्षे मा न्या नयोग समानुया मा उत्र वसमा उत्र कर न कुरत्र अन्त वृत्रा है त्य वेस दे प्यें द्र स्य सु सु र र र प्य स् व स्य सी प्र स सी विद हे वनार्ये वियानिका सुनानिहेशामा अने देशनिर्दर्भ प्रमानित सुरा यदःश्रुवःगश्रुयः नदःश्वरःय। गणयः ययः व्यन्ति व्याः नदः गणिवः ययः विग्रायायहेवाम न्युःश्चन्ययायो विज्ञान्ययायो विज्ञान्ययायो म्रोत्र-त्यम्याया देवे नाध्यत्र-तुः के न्दः हे नाश्यायया भ्रेया प्रवे दूः सुद्देः दवाः ॲ ॱवत्यः वाडेवाः ध्वाः वाहेशः ग्रीः वाषशः हेः वाशुसः ८८ः वार्षेदः ई८ः सः वहें त'या थ'न'हे 'व'र्से नार्या या नेत' हे 'र्से से दे 'वेर्से र मीर्या न से र निर्दे गर्डे वर्षेर वस्त्र उर्गे हैं वेंर कें रगर में अज्ञेर पर खूड्यर में

विग्रायान्य द्वे क्रिं राज्य अळव प्रमायुम् म्यायी विग्राया ये द्वे प्रयाये दिन वेरप्रवेशम्यार्थे द्वित्रायारेयाम्य न्त्रात्त्री यादित्रात्रया व्याप्य स्त्री त्रात्रेया विष् यन'युअ'विरिन्द्र'न्द्र'नठरू'र'भूद्'ठेग'गेरु'श्रुव'र्द्रम्य हं वह्रअ'द्रयय' मिन्ने मि है। सिंकुः सें त्या सें ग्रास्य प्रिन्दिर प्राप्त राम्य । विश्वेत प्राय्य स्यापित विदेश्य स यःश्रुवःवर्देवःव। भ्रिनःचीः अर्क्षेचाः शुरःवह् अःभ्रीनः व्रूरः धेः धें वाया। अवरः वेन् ख्रिम् अप्यो के के नियम् अप्यान्य विष्या विष्य के नियम के मनिवा । नहें नदे श्रुम्य ग्रीय मान्य पदि र माने म्या श्रुम्य । भ्र गुःषः कुःषः राष्ट्रः देश्वः राषाः ग्रहः दक्षुः वैः कुः विषेराः स्राधेरः प्राप्ते गुरा क्षर पर ब्रुग्र गादे हुं प्यश्र दें न वेर वर्षेश ग्रेन हे ग्रेन र रेग्राश्रश्चुवर्द्रा हिन्द्रस्याग्रीयादने त्यासर्विराधरान्वरावसूरान् गर्रेण वेशमर्रेणनाननामराने इस्राचीराणे वेशमी नर्ति हैस यादायद्वात्रायाः भ्रम्यायाः है। व्यास्थान्त्रायाः व्याद्वात्रायाः व्याद्वात्रायः व्याद्वात्यायः व्याद्वात्यायः व्याद्यायः व्याद्यायः व्याद्यायः व्याद्यायः व्याद्यायः व्याद्यायः व्याद्यायः व्याद न्नरम्भूरम्भः न्या कुते भूगायाणर सुन्यायया है हे न्या से हे यः प्रश्नात्त्रात्र क्रित्र स्त्र मुन्त्र स्त्र स् गूर्यासुर्यास्य से स्वार अकी राष्ट्री क्या नव्य है के हैं सूत्र केंग्याय 

यर्वम्यम् भ्रम् । । न्या उत् । यर्वे व स्था म्या न्या क्षेत्र स्था । विष्य प्राचित्र । विषय प्राचित्र । विषय प्राचित्र । विषय प्राचित्र । विष्य प्राचित्र । विषय प्राचय । विषय प्राचित्र । विषय प्राचित्र । विषय प्राचय । विषय । विषय प्राचय । विषय । विषय प्राचय । विषय । विषय

स्वाया विवायान्य क्ष्यान्य क्ष्यान्त क्ष्यान्त क्ष्यान्त विवायान्त क्ष्यान विवायान्त क्ष्या विवायान विवायान विवायान विवायान विवायान विवायान विवाय विवा

क्ष्यःक्षेत्रः अत्याः क्षेत्रः वित्रः क्षेत्रः व्याः वित्रः अत्याः वित्रः वित्

श्रायदेश क्रिंश क्रिंश की मार्थ तार्थ तार्थ स्थान स्था नक्तर्र्भेर्नक्तर्थः श्रीम्रायदे। । नगदः श्रेन् त्य्राचेन् स्वायः न्यः नभूरशःगुरुत्वश । इयःवर्धेरःवर्षयःववेःवर्धेवःयशःवर्धुवःयरःयर्देत्। । क्रूर क्षेत्र सुत्र सर्ग्या केंग्र ह्र वया केंग्र ह्र स्थर हरा । सिया सुत सद्दर्श ळग्राश्चेत्रअः ध्रुवः सः नदः ख्रुवा । ह्ययः नहेनः वाषवाः केनः नवः वहें ययः ग्रे मुल में प्या धुम्य द्याय द्या मुद्दा | द्रेग्य मर्मे प्रमुद्दा यक्त द्या मित्र प्रमुद्दा । श्रुवाश्वाद्ये । नगवः र्क्ट्रेट् त्यशः होट् : श्रुवाशः द्यः नभूटशः ह्युट्रः द्या । इतः वर्तेर्न्तर्रेषानवेष्ट्रीत्ष्यम् नश्चन्यम् सर्हित्। विरःश्चित्रः वृत्ताः द्वाः रेंदिर्रेर्रेडिं। इसमायदेवित्रं क्रियं क्रियं वित्रं थ्व न्यानवीवाशःश्वाप्यः र्या । स्व नहेन सहस्य सदि सन्दे से स्व इस्रशःग्रीश | क्रिंशःग्री:मुवार्सःप्यत्यापुरा श्रुवारान्सः। | देवाराःसःसः नक्तर्र्भेनक्तर्यः श्रीवाश्वर्षेष्ठ्र । निगायः स्ट्रेन् त्यशः होन् स्वाशः न्यः नभूदर्भागुरावर्भ। । इत्यावर्ग्वेरावर्षेत्याविष्यदेव त्यर्भावश्ववायरास्य सिद्धा न्याक्षयासून्यास्ययान्ये विन्त्रम्यान्ये । । न्यानयोग्ययान्ये । र्भःग्रे:विनायःपः १८१ । श्रेनाः वर्षेनाः यर्षेत्रः स्वर्धः नयः वर्षः १ । नश्रव न्या पहें समापि का में वाद्या पायदिया। किया ग्री मुला में प्याप्य प्याप्य

व्याश्चार्या विष्याश्चार्या विष्याश्चार्या विष्यायः र्बेन्'यम्'त्रेन्'म्यान्यानभूम्मान्यान्या । इत्यावर्तेम्'नर्वेयानवेः वर्षेत्रायमान्यूनायमामहित्। वित्रकेत्रायायमानियमे सेतार्ने भ्या <u>निया । में में ते में अर्कें व नियम के व मिर्ने में अरे के मार्या पर्देन पें व सुर्थ </u> ञ्चन में भीर निवर निवस्य । शिवर निवस्य कर हेन सक्त से द्राय हिना ग्रे मुलर्स प्यन पुरा हुनार न्यान सूटा | देनार सर्स न मुन्ये न सुन्यः श्रुयाश्वाद्यी । नगायः सूर्तायशानी द्वाया न्यायश्वाद्या । स्या मुयार्से वित्र राज्य राजीय। । अपि वित्र राजीय राजीय राजी । नसूत्राया यर्वेद्रान्येद्रमानयोग्राक्षरळंद्राकेद्राया । प्रभूवाद्रान्यभूवाद्रम् वात्रान्यवेद र्शेट्रिंट्रिं विराधान्य स्वर्धित् विराधीन विर र्बेन रिते दिन नेर भ्रुवाश गुते इसाय उन ग्रीश र्वे वाश र्क्केट नर्वे स्थायिर ८८. प्रकारा प्रमीया के हिया या सक्त्रया स्थाया श्री प्रिट स्थी स्थित हैया. गैर्भरेंद्र'ग्रम्थ, द्र्यायायम् द्रम्थ हैं है वहेग्रम हेट्र'व्यापित ध्या'गिरेश'ग्रेश'ग्रेश'ग्रेग्पा'न्ट'र्वेन्'रा'वहेत'रावे सुर्'नवेटश'रावे सर्वेद इययाग्री:वृपायाः हुं त्ययाः श्रेयायादे हिंहे हे जाडे पाया प्रस्तर हैं दिन ग्री श्रुपा ठव द्वारा शु शु म् अँ पाया दू हूं या दें से पा पा से दें दु ह पें द पा पा

यक्र्यस्तरःक्ष्रीवः यन्त्रान्तः यक्रमः । क्ष्यः त्र्रीतः सः यन्त्राः व्यान्त्राः व्यान्त्रः व्यान्त्रः व्यान्तः व्यानः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः

यदिनः न्द्रविश्व स्थान्य स्था

ळेंशःग्रे:कुषःरी:प्यनःपुसःविन्दन्दन्वरुषःमःहस्यःग्रे:धून्यार्वःहुः यश्रुभ्रान्दे हे हे नाडेग प्रम्य स्वित् के मुन्त कर की श्राम् यदे न उद्दा वस्त्र र दिन्या है न स्त्र निः हैं स्राप्ता भी दें ना कि हैं नि नि स्राप्ति हैं नि नि हैं स्रा विष्या भी हैं स्राह्में स्राह् वियान् अभिन्न नाये हुन्यामायू के निम्के कुन्यता विवासी अभिन्या अभिन्या कुन्या स् रे.सं.र.लक्षे यंट्री यहै। यही संही श्रे.मी बु.सुटी असे.सं.है.क्रे.हैं. युत्र कें गाया दुरा दुरवर कें अब्द्वा कें दूर सुट्टे दुरवर कें अब्द्वा परा है। यःश्रेष्यश्चाम्भविदःहेःसिःश्रेवैःसिष्यश्चित्रःदिः द्रायः विष्यः गर्नेर:स्यानाधिया । नुर्गेत्र सर्केगान्तु तसदः श्चेन्यान्य । विगाय केतः र्रे शुक्र विवेद दिया विश्व विवेद विविद्य विवेद विवेद

र्म् अर्थे त्य । र्मियायमे वाष्ट्रा अर्था अर्थः यह वाष्ट्र व्यास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्र व

ग्वे नन्ग्यार् राम्या के नह जि. ही नि. गुहु से नि. नु. नु. नु. नु. से नु. से नु. स. विश्वेश्वमः श्रेशंश्वी. वे. स. विष्ट्रे. ४५। ब्रेंट. त. १८ २ १ वी में हिट. ताया. क्रैं पारे व र में के वे र में द पार भारते द क्रिं के न क्स भारी व द र द में के दें द र द र ति । न प्रश्न तुर नदे निर्दे स्थान् ग्रम् निश्च अदर निश्च अन्य स्थि । नियाग्री नर्दि हिते क्रिं अर्कें के वर्षे म्यून क्रिं अर्थे वर्षे अर्थे वर्षे अर्थे वर्षे अर्थे वर्षे अर्थे वर्षे यन्याने प्रविवाना ने प्राया मुखाना से वा के वा सामा सामा प्रविवा पर्वा । वि नविव निवास प्राम् त्रुवास सहस्य प्रमाय स्वाप्त विवास व यानेवारासः भुष्ट ग्रस्यास्य स्वाप्त स्वाप्त । दे विदायानेवारासः अःश्वाया श्रिट्याशुस्याविः नद्याः र्वेषायः इसयः द्रा विः देरः सकेदः थः नर्भवःश्चेरिः नवस्य विद्याः वद्यान्यस्य वद्यान्यस्य वद्यान्यस्य विद्यान्यस्य मुयायायम् १३८ मी । सियास्यावि निर्मास्ययाया । निर्वयास्य इयादर्रेराधेवासर्वेदागुवा विशादराग्चाता है मेर्या विराधना र्नेन। अस्तर्भ्वा । अस्तर्भे वाक्ष्यान्य । वित्राम्य । वित्राम्य

हैं। वक्षे नन्यावया में में में या या है। विया या निवाय विवास में श्रॅगायास्ययायियाक्षेत्रहेति। विवार्यायाक्षेत्रप्तिस्रेत्रात्र्वा वुरःचवे:नवुमायःवे। विनःस्यायळवःयःस्यावुरःच। विनिदःद्यावियः रासानेतेत्वार्द्दा । वाचेदावयान्द्रसासके नामाने नामा । विभागते सुन इन्यरसंख्वा अन्यरश्चराष्ट्रिय । अन्यर्थराष्ट्रिय । विषया विषय । न्यानयोग्रायकेटा विषयाययान्युगाययाम्यान्यान्या र्रा ग्नित हे ते र्र्क ग्रमा । यार्स के दार्स दु सुहै। । हे ग्रम् सर्म दिन । यहरामा । व्यत्रद्भान्यक्षायंत्रेर्यायान्यम् । भारते व्याप्त्रेयाः थे। विर्मेर्स्य मुखर्के सर्केर्यं विष्य विषय विषय विष्य विषय विषय त्रा । श्रुरः हे अः त्र्याः नवोवा अः श्रुरः तुः श्रुव्य। । श्रुरः नवेः त्र्यः त्राः त्राः विः । नवोवासा । नर्रात्राचरार् वार्डित्या इससा । ब्राह्म स्वीवा किरसा निवा 

ठेग'रेट्रअ'रार ग्रीका भिःविया'यर्विव'ठेया'स्यार्थ'रार ग्रीका भियःवियाः क्रिया निया इसायर निया । ह्या स्वारं सायार से दायर सिंदी । क्रिंगाया कुराक्षुं यत्। क्वें इद् स्रिव्वे कुर्यत्। क्ष्याम् क्वियाकेवा भीवाहे ते कुरायां वर्ष्ट्र-वड्याग्रीया । अप्ते-भ्रन्टार्स्ने वबटाग्राम्यायायायी । वसून यापिट्र नम्सिंद्री । भ्राप्तास्त्रम् नामासाया न्या यत्रस्त्रं सत्। साहेदार्येद्रास्त्रास् यानेयाद्या विषयाप्य मुयायायाय क्षेत्रायया विदेश विष्यायाया नश्चेशन। । ने ग्रान हिंद श्चेशन वे वेद सहत से वार्य। । नह स्थ्रहीं वार क्रिंद वर्वेर्नरवरुषार्मावरुषारुषान्वेषार्थारम् शुम् इसाम्याप्यस्य रहेवा वर्दर्यत्रप्रमा । हुर्यविष्ठो नर्या सम्बद्धा स्थापि । भी विष् भ्रे नर वह अन् ग्रुट अवि वि वि वे वा विश्ववाय से दायर हे अ शु वहीं व ग्रुट डेग विष्यःसितः हे से न सुः खेरे न न न कि से र न न न से न में वसर अर्देव शुर्व रा । अवव द्या वर्षे वदे में वसर दे हे द ला । अद हे या हेर्यायने त्र्यायमें रायर नेया विकायहेर्यर ह्या

### क्र'ग्रास्य मी के मा

**७७**। १८६ेर.क.प्राश्चिमामें हत्यर.पर्हेट्र.स्थामाहेर.स.हेर.ह्यें ट्राट्र.सठश्रास.समा.सेव्रा.सेव्र.स.हेव्र.

न्वसम्या सक्रें न्या हो ता हो सम्बन्ध स्था स्था निष्ठा हैं। स्था निष्ठा हैं। स्था निष्ठा स्था निष्ठा निष्ठा स्था स्था निष्ठा स्था स्था निष्ठा स्था निष ८.२.२.२.२.५.४.५.५६.५५। क्षू.४.५५५५५५५५५५५५५५५५ नुईविन्। ब्रेंट्रमानेट्रमा ब्रेंट्रमानेट्रमाना स्राम्य स्राम षर्याक्षित्रकुः के नाइयया ग्री वरातुः औँ दिन तुः वाषया ग्रुट नदे थुः ह्या यशः व्यवः मदेः सर्वेदः विवयः वर्षया से रेवा वर्षः श्रेश सरः से। दें किया विषा त्रमा रेषा से इसमा दूरमा विराधितामा से दारा विसाधानिया न्दासहसामरा मुन् के अक्षेष्ठ्रही के मंद्री के नह रहि स्रक्षे क्षें नह इने अक्षु के के नह अप के ने अक्षु के नह नो के अक्षु के नह वै.से ५ 'अंक्ट्रें। के नई 'नम् अंक्ट्रें। ने क्या महिन सं हो के मनक्ष मही के स्वान्ति स ने नि हैं इस्के नह से हैं हैं। व सक्ष क न नि हैं। वे नि सु सि हैं। वे स्व सि हैं। निन्दिः ख्रिन्या ने श्वर्मा है अया या या या सि ख्रुत्वा के लि ख्रिस है स्ता के लि गूर्ने सुर्वि सम्ब्राही अर् तुर्वि प्रकृत्व क्षा व सक्षम मित्र प्राप्त स्थे गी हे खेँ अझूर अझूर हैं। खेँ उउ सुउ है यु हि भेड़े थें उ दे अस षद्युः इते युत्र

नन्गामी नमस्य मित्रे मुनस्य न्द्रित्व । दे नित्र विव मिन्य स्य हित्र

क्रन्यर्द्रा विर्याणीर्वित्याणीः स्रिन्याम्ययाणीया दिवः म्ययापारः न्वा नर्यस्य मानु । ने न्वा वस्य उत् के नेवाय प्रमा विवाय प्रसेन प्रमः यतुर शुरु रेन । हेमानदेन क्षूनमान देन देनमा भुव द्वार नहीं सर्गेत में गुत ना ने ना भ यान्त्रायान्त्रवाया । नास्त्रभ्रेवायायास्य धिः न्या । वास्वेवायाः नेनायाः रादे पात्र शास्त्र । भू गुरि तस्त्र राजस्तर । निर्मा उमा स्थरा यास्व मिन्यासा से ना विषया परि हिन्द मिन्य स्व मिन्य स्व विषया । सिन्य स श्चिर्विनाहेत् श्चिर्वान्तराद्या श्चिरहे व्यवसास्रावसा श्वासाद्या न्ग्रेयार्ने है। अन्तर्द्र र्रेट थे न्याय के तर्रे सा विष्य के वार्षे ८८ दे निर्मेद की निर्मा निरमा के स्थित के स्थान के स्था के स्थान क नड्वे पहेनाहेन क्रिंट न न विन्य अर्थे प्रकल । निरूत्र म क्रिंप मिर्य क्रिंप निरूत्र मिर्ट क्रिंप निरूप मिर्ट क्रिंप मिर्ट क्रिंप निरूप मिर्ट क्रिंप निरूप मिर्ट क्रिंप निरूप मिर्ट क्रिंप निरूप मिर्ट क्रिंप मिर्ट क्रिंप निरूप मिर्ट क्रिंप मिर्ट क्र क्रिंप मिर्ट क्र क्रिंप मिर्ट क्र क्रिंप मिर्ट क्र क्रिंप मिर्ट क्र क शुन्दरेन न । पर्मे नदे नेन से मार्थिन सके निया मार्थिन । सि नुः रारामे सुरायासारारात्रात्रामारारात्रात्रामाराया याणे क्षी वेममानम्बन्धम देवमा क्ष. र र जो क्ष. न प्राप्त क्षा.

न्नर से हैं हे तकर नवे थ्रा थ्रियों कुय से महिन की नन्म धुँग्रयान्त्रिः मुः क्ष्यायाः प्रक्राया । यक्ष्यः प्रदेशः नश्चितः मुग्याः प्रक्रिया । स्दे सेंग्र म्या । यर्के द्वी मार्ग्य विष्य में प्राप्त विष्य है । यगान्न ने रेन पळटा । अ सेने कुय में गरेन ग्री नन्न । क्रें सेन यानेन ग्रीः र्क्षेष्वायान्यस्या । यर्केन् उत्तर्भेन् ने स्वायान्य वर्षया । यने व नि व्यान येग्रा थ्व थ्वा अव सेवे कुय से गर्ने व की निमा क्षि व्राप्ति ग्री:क्रियायानक्यात्वा वियायानः र्वेग्यायाकुः धेः श्वा सिः धेः क्रियारीं मित्र सी मित्र सी वित्र सिंग्या मित्र सी सिंग्या मित्र सी सिंग्या सिंग्यी सिंग्या सिंग्यी सिंग्या सिंग्यी सिंग्या सिंग्यी सिंग्या सिंग्यी सिंग्यी सिंग्या सिंग्य सिंग्या सिंग्य सिं क्रियायायवर्या । सर्वेद्र केट नर्वेद्र हो निया ग्राट पर्वा । सुट हे र्स्या ग्राम्प्रिक्ष । देवाप्य विकाल विकास ग्री:र्सेग्रथ:नडर्थाया । अर्केन् डेन् नर्सेन्ने सुग्राग्रमः वर्षया । पार्वेन् श्री व सक्ट्रियान्यान्यक्ष्या । विश्वस्थन्द्र्याः । विश्वस्थन्द्र्याः । विश्वस्थन्द्र्याः । विश्वस्थन्द्र्याः । विश्वस्थन्द्र्याः । विश्वस्थन्द्र्याः । विश्वस्थन्द्रयाः । विश्वस्थन्द्रयाः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्थन्यः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्यत्रयाः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्यत्रयाः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्थन्यः । विश्वस्थन्त्रयाः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्याः । विश्वस्थन्यः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्याः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्यत्यः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्यः । विश्वस्यत्यः

न्यास्त्रीयाश्चर्राहे उत्राची श्वेष्ट्र व्यास्त्री । व्याप्त्र व्याप्त्री । व्याप्त्र व्याप्त्री । व्याप्त्र व्याप्त्री । व्याप्त्र व्याप्त्य व्याप्त्य व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्य

यश्चर्षा

यश्चर्याः विद्याः व

म्ह्ना स्वर्था स्वर्या स्व स्कूर्र्स्त्रिं होते स्वास्त्रिं हेर्स्य विश्व स्वत्रम्य स्वित्रम्य स्वत्रम्य स्वत्यम्य स्वत्यम्य स्वत्रम्य स्वत्यम्य स्वत्यम्य स्वत्यम्य स्वत्रम्य स्वत्यम्य स्वत्यम्यस्य स्वत्यम्यस्य स्वत्यम्यस्य स्वत्यम्यस्य स्वत्

क्रॅंने स्व वृत्वा ध्या मङ्का अर्थन वारान गे इन यर्ने न वा यर्गे भा बड्डी वैस्ट्री भूस्य स्व म्या वारान गे इन यर्ने स्व क्रिक्री इसे ख्रुलें गो बड्डी वैस्ट्री भूस्य है क्रिक्स व्यक्त स्व क्रिक्स क्रिक्स विक्री व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त विक्री व्यक्त व्यक व्यक्त व्य

वज्रुद्रार्भे मादाद्रमा दे र द्रा से द्रामान स्थाप्त । प्रमादा विषय द्राप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत धीःगावशः इस्रशः न्दा । ११ स्वारं १५ दि । हिसः इस्रश्ना । १२ से गुन्यायादाद्यायावर्षायाद्या । देव केव स्ति द्या स्वाप्याद्याद्या ५८। कि.मू.भीय.२८.के.मू.४.४६.४४.२८। त्रिक्ट्र.मी.के. र्देग्र अन्तर्भ । नायवः कुः नशेवः अः उत्र नारः मत्र अः न्तः । मूरः न्तः धुन्य अः क्षेत्र:मूर्ट्स क्षेत्र:म्राप्त । वित्रः क्षेत्र:नवाःन्दः क्षेत्रः वित्रः सः न्दा । विद्वाः यग्।पिरःर्रः अर्केरः हेत्यात्रयः इययः र्रः । । र्गादः श्रुवः वात्रयः र्रः श्रुरः क्रेव्यंत्रेश्वस्थर्भात्त्य । क्रियासेद्वात्रेश्वर्म्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्या श्रद्धारा श्रद्धारा स्त्रिया । यादाद्या त्या स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स्त्रिया स् गडिगानुमा । तुमानिमा केवामें विषय अध्या केवामें मिना । केमाने नेमान गठवःगववःगवयः । । वर्त्रेगः केवः वहेग्यः शुः उदः वदः गदः यावर्गन्ता ।यादान्याः भ्रीदासळे यान्याः वावर्गान्याः । श्रुवः से न्याः भ्रिवः से न्वान्वाव्यान्यस्य । स्वानुन्त्र्ये अःविदायवाः वरायुराव्यास्य । द्वेदा नः भे र्हेन् दि र्दर नर्गा सर नरमा । नर्हेन् र्दर महिर सासर से मुरा वर्षकार्या विदे र्या निर्दे त्वी निर्दे विदाये विश्व विष्य विश्व व यश्रामु वर्ष्य स्तर्भात् स्तर्भावस्त्र स्तर्भात् स्तर्य स्तर्भात् स्तर्यस्ति स्तर्यस्ति स्तर्यस्तर् स्तर्यस्ति स्तर्यस्ति स्तर्यस्ति स्तर्यस्ति स्तर्यस्ति स्तर्यस में अर्द्ध सहित्तु सुरान्यसम्बा द्विक् वर्द्द मुख्य के स्वाक व्यव्य के अर्थ के

अक्षत्रान्तान्त्री वेशव्यत्वश्वर्ष्ण अत्ति स्वत्व विष्ण विष

या विर्मित्रक्षेत्

ने ने ने न्या कर न के ने निया विष्य में अपन के वास्त्र में स्तर के अपन के वास्त्र में स्त्र में स्त्र में स्त्र कर्याश्वर्याया से । । द्यो श्वर्या में द्राप्त में द्राप्त में स्वर्य स्वर्या स्वर्य स्वय स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वयं स्य स्वयं स्य श्रे प्रहेवाश्राचाराधराभेत्। प्रक्रें प्रवे श्रेवाप्यागुत्र ग्रह्सा । स्राची खुर्यायान्ने वेदिया । वाववायाविदायम् या होन् हेवा । वेदि के वार्ये दया कुर-दु-वार-द्या-वी । खुर्य-त्य-सर्देव-धर-वार्वेद-शुर-धवे। । वद-दे-हे-घर-द्युट:व्यास्त्रा । वार्ट्व:दे:रट:वी:वाव्यास्त्र:देट्या ।दे:क्षुर:वदवा:वीय:हे: व्याग्रीया । यर्केन प्रत्याप्त व्याप्त प्राप्त या । प्राप्त वा प्राप्त या । यावर्यावर्षात्र्या । यद्यायो पर्देद्राय स्मूरायर सर्हेद्रा । ह्या प्रत्या क्षेया त्या यावरा भिरा विरेर्ते कु क्वें र विंव यह या यी विर हे हे यर से या सह र ययोग्रास्स्रस्य स्टायात्र सार्यं या नेया सारा शुरा सरायस्य

मश्यक्तिम् स्वान्त्राक्षाक्षेत्रम् स्वान्त्राक्षाक्षेत्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्

श्चित्रः क्रिंत्रः क्रिंत्रः क्रिंतः क्रिंतः व्याप्तः व्यापतः व्या

शम् सम् त्या

#### नवीवारायार्ने र वार्ने र खुंवा

अश । नरः छेन् अनः छेवा वी शः विं ने विदेवा हेन वा शुं अः क्रुयः नुः गुरा अँ नइ अनु र्गे इ दू राष्ट्र रे सू र नई राष्ट्र राष्ट्र र हैं। धे ने य नभ्रयामदे से सूर प्रवर नदे रेंद्र । । सरे वा परेंद्र मदे सुर प्रवर प्रवर विस्था उर्-ख्रेम । बे.क्ट्मिनम्बेर-हेदे.पहेम्या-मः वस्य उर्-पहेस्य । । न्ययः र्वेः केन्सिन्द्रम्यास्यास्याराज्या । विवापद्रेन्सेन्सिन्सवयार्वेन् न्यायन्याय। भियायवे कुषारी विभिन्न विषया अस्ति । विषया यहेवः वर्षानवे सूर्र् शुवावरेव वा विशेषित वे रेव श्री सार्के र श्री का वाके वाका शुःगश्रेत्य । श्रें नई अनुः ग्रें इ दू शसू दे सू र श्रे छ है। इ स र श्रे ग रे अर्मे रा हे के हैं श्रुद्धा गा अप्य पो श्री बेश मन्दर ख्या के नह अद्भर्गे क्रिक् इं यात्रारी सुराया साराया राया राया है। यही यही हु यो खू र्योगी गड्डी वै भेड़ा नम्म देह हैं युद्धा वेयमही ने वयम में नम वे हैं। के या हेन में नम यिष्ठेशसेन्दर्षेन्यश विहियाहेवः श्रुन्यते ख्यापरसे श्रुन्विता । वनश्यायास्यायवे वहेग्रश्चेत् सुरः द्वेत्रा । विक्तित्वरायनरः नवे केंग्रश ख्यायात्रात्रीत्रस्ययासूनयाउद्या । याशुरायी रार्से त्र्युवा सूरि से रायदे श्रुश्व । सासुश्चन्द्रन्द्रन्द्रन्यासुगायक्याये । व्यूगायदे पो स्वेशमें स्वाया

क्रेंव'यह्ंद.वृटा । क्रेंगशतप्रे यक्षेंव'क'श्रुक्षेंगश सुगाव'नश्रूयया । हेंव' र्शेट्यार्केन् इट्रिय्यायह्यायाह्या । श्रुयायाद्याः क्रिन्यो या यास्त्राप्टर्वा विश्वयाप्रदेशे स्ट्रिम्प्यम् विर्मेत्राप्ट्रिम्प्यम् विर्मेत्र र्नेतिः सूर्याः सूर्यया गुर्मार्या गुर्मायया हुता न्या । हिः ह्या प्राप्त निर्मा श्रुव्रक्तीश्रश्यद्भाषीश । विषीवाश्वरद्भद्भद्भवाश्वर्थर्थः स्वर्ध्वर् वळवावी विष्ठाळे दर्भासवि से स्मानि विष्टि विष्टा विष्टि वर्षुःवर्द्धः विंचित्रेरः सके नः विदेवाया । इस्र संदे रः रे वर्षुवा शुः हें रः नविनःश्रेम्या विक्तियानमेग्रास्यायान्यस्याया विवादस्याया विवादस्याया विवा वहिवासायदे हुँ सुन्स सूर्वास निदा । वर्वोवास इससा सासुस वहिससा सहराम । प्रेर्म् समुनावस्था उर् रेंड्स्यानिये क्षा । प्रमेग सम्भाग । वळवा नर्हेन्। विश्वश्चर वहेत न्द्र सकेंद्र नर्हेन् श्चे श्वर ग्वर विश्वर विश्वर

इटा हेट्ल्र्ट्ट्व्र्य्य्ट्व्य्य्य्यम्थ्यक्रियक्रिय्ये स्थान्य्यं स्थान्य्यं स्थान्य्यं स्थान्यं स्यान्यं स्थान्यं स्थान

द्वासा श्री (विवास सा स्वस्था छ दे क्री स्वीद स्वास स

म्त्रिक्षः स्वाप्तः विकार्षः स्वाप्तः स्वापतः स्व

য়्र श्रुञ्च ते श्रुञ्च त्रुँ। स्र ग्रेड्र त्रुं स्र ग्रेड्र त्रुं स्र ग्रेड्र त्र प्र म्र ह्र त्रुं स्र ग्रेड्र त्र प्र म्र ह्र ह्र प्र म्र ह्र म्र म्र ह्र ह्र प्र म्र ह्र ह्र म्र ह्र म्र ह्र ह्र ह्र म्र ह्र ह्र ह्र म्र ह्र ह्र ह्र म्र ह्र ह्र ह्र म्र ह्र ह्र ह

## वन्यदेकेन्सुन्यार्नेन्द्रथा

अ । वर् सदे के र सुर पहें र वर वर्र र वा शे वर्त र तर र र र र र र र से सुर । गर्हेर्स्सादि सेंद्राया विद्नित्र प्रामेंद्र प्रास्त होत् हेग विष्णे सुत्र दि स यानिहरा । यायानियानदे स्रायदे स्यया । सिर्टिर्योहरायादे स्यायदे । स्र या विवित्र न्यामेर् न्या सामित्र मेर् मेर्स स्थाने स्थान स्थाने स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान यान्यम्भारवे खुरद्दे स्रम्भ । सुन्दर्गार्दे रामा विद्यम् नर गर्वेर्याया होर् हेग हिंद्रा होर्या वर्षे स्थाप मेर्टिया । से त्याप वर्षा परि स्थाप वर्रे क्रम्भ। भ्रिन्निर्मित्रं स्थायने विष्ट्रं प्राथी। विष्ट्रं न्यायिन प्रायो हिन् डेग । न्त्रग्राशी:सून्यिन सून्यागर्हेन। सून्याग्रम्यायेश्याये स् म्यया । सुन्दरमहिन्यायने विराया । यिविन दरमविन्याय स्वीत्रिन । शेशशामी मुन्दि समिय या निर्दा । समिय या निर्दा स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित मुन्दरमहिर्यादि स्वापित्र प्राप्ति । विविव निर्मा मुन्दरमा मिन्दर । विविव निर्मा मिन्दर । विविव निर्मा मिन्दर । स्रायतः वर्गे हि। कि क्रि. क्रि. चर्या क्या वर्ष्ट्र प्रवस्था ही। विराद्र प्राय वर्रे वेंद्र या विषय मर्वेद्र मर्वेद्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र

म्बा क्रेंट्र प्रति प्रत्याक माश्रम क्रेंबर प्रामें प्रत्या माहें र सा अधी प्रमाय करिया क्रेंट्र प्राप्त करिया करिया क्रेंट्र प्राप्त करिया करिया करिया करिया क्रेंट्र प्राप्त करिया करिया क्रेंट्र प्राप्त करिया करिया करिया क्रेंट्र प्राप्त करिया क

निरक्तुःके नदे न्दर् अँ एका महिरका नुद्रमा निर्मेग्रामा केर्परे थे नियागी नर्र के ते का अर्थे के तर्म र गुरा औं अर्थे व्यवन्त्र सम्बन्ध म निया ग्री म निया में म निया বরুবা ব্যারজ্ঞার দের বাদে জে প্রর্থি দি জি কার্যু মার্মু মার্মু মার্মু বি नविव मिनेग्र मार्सेव केव सम्पास्य प्रमायक्य में। । ने नविव मिनेग्र मार ग्राञ्चनारुष्याहेरुष्ट्रयायायायुगायळवावी । १ निविदानानेनारुष्याञ्चा वर्चेत्रश्राभाषास्यातक्षात्र्। दि.यध्यानेवाश्रासायह्याश्रासायस्य नर्न् के कु अर्केंदे गोर्ने र अपदी अप्ये खु से नहत्य सर्र । स्निर गासुस गिवि निर्मार्के मेश इस्य रिटा विं सेर सके रिय मेर सुर सिर निरम् ग्राम्य उत्राग्रय या त्रया वर्ष या उत्तर । । व्रिन्य स्थाय द्वित्य या वित्र वित्र । ध्याः भ्रावि वन्वा इस्रायायत्वया । विवेशवस्य वन्वा उवा धेव सर्वेनः इसमा विकादराग्चानाके ग्रेत्या वित्यारा वित्यार्थनार्देवासासहरासमा समुत्रमेत्रधेर्पत्वेत्रप्रयुव्ययस्य

### गिले निम्मामि मिन

यद्या विश्वेश्वर्यं स्वाद्यां स्वाद्यां स्वाद्यां विश्वाद्यां स्वाद्यां विश्वाद्यां स्वाद्यां स

यन्याःचीः त्रश्रस्यः द्वेत्र्याः चित्रः वित्रः वित

# वर्द्युद्र निवे गिर्दे द्राया में दर्ख या

यहरा ्री त्री स्व अंद्रर्ग स्व त्रा प्राप्त स्व त्रा प्राप्त स्व त्रा स्व त्र स्व त्य स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व त्य स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व त्य

इना क्षिट्र वश्यश्च २८ चन्ने या भि त्या प्राप्त ने ना वस्यश्व त्या है स्त्र प्राप्त ने निस्त प्राप्त है स्त्र प्राप्त निस्त निस्त प्राप्त निस्त प्राप्त निस्त प्राप्त निस्त प्राप्त निस्त निस्त प्राप्त निस्त न

वर्षेर्या सार्श्वेर्या वरात्राचीया वर्षा वर्षे वरमे वर्षे वर क्र.चर्सूर.च.र्टा विर्वातिषय.रेगे.च.घेट.क्य.हीर.चर्ड्यू हि.चर्ड्य. सम्मान्त्रीत्। विश्वायायने वसार्थी विष्या प्रमानिक सम्मानिक समितिक स क्रिन'सहन्देर'न्देर'न्युन'स्युर्या विहर्यस्य अर्थिन विहर्या स्याश्वरमा श्रूट्रायि प्टट्रायश क्षुं प्यश देत्र सें के ते श्रूट्रा प्यट्या भेट्र कुं त इस्रमाग्री वटानु प्याप्ते ने विषय सम्बूट निर्देश वर्षे सिर्देश विष्टे स्थाप र्रेगाः देः र्रेश्यायदेः प्रेवः प्रवः समदः प्रयः सम्वायः द्वः सम्वायः द्वः सम्वायः नुसायवित्रानाही श्रीतानु गावसामा यदेता वितासान स्थान स्यान स्थान स मु अर्के केत्र में म् मु अर् अर्थ व्यवपार्श अर्थ के मिन के ग्राह्मण्याक्ष्यां व्याप्तात्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्य व् ग्रैमनश् अक्ते'न्या अविवेत्रम्ग्रीमार्सेन धि'यया ग्रुट्निति हिट्ह्यानी दु उदि। सर्वा उत्यापर विरावार्षे नवे वाहिरासवे स्वार्था विर्देर खेता स्वार्थ नर्रः हेदे कु अर्के परी । व्याया हे हे से असार्याया थी । सामया पर्यो क्रूशःश्चित्रः अर्थः क्युशः क्रूयायः द्रा । वितः धरः अरः श्वेयायः हेः हे स्रोययः न्ययः भी । भ्रुः स्वामायि मान्य मान् नन्गारुगायनुरानवि क्रूँ समारान्ता । श्रूरान हेन यने या पळ र विट हेन

वर्षेयाची। श्लिष्वमावर्षे देवासमयाप्याप्याप्याप्याप्याप्याप्या ५८. अर. श्रीर. श्री अश. २४. श्री विश्व प्रती वर्श वाके में श्रींदे श्रीम श्रीयश्री देश हैं दे बॅर्स्साले स्ट्रामित सुमाले नार्ता । क्रुं न्वर कुषायमें राष्ट्राधी मर्दिन क्रस्स ५८। १७४.सुंग्रां दे वित्रान्ति स्थरावि नर्स्सित् विराद्धेव प्राप्ति दे वर्षान्यानाश्वरायान्वेनाराहे। वि उं कं हं इं १९ दे। के के दि दे युत्र नश्वराययान्त्रन्ते ही य वर्शे इरविव्यक्ति रे.जश्चिर्यक्षेत्रे हि.जश्चिर्या विर्या विर्या विरा वनर्नित्रोहेर्स्सदेर्स्या विर्देर्स्य वृष्ट्रम्य वर्त्र हेरे कु सर्से वर्ता यः अ. मुच. कुच. पर्वेर. कंच. लु. ने अ. क्षी । श्रायदः पर्वे. कूच. श्रुं र. अर अ. क्षी अ. क्रॅंशक्स्यायान्या । विन्यम् रह्में द्वियायाने व केव विन्य हो । विन्यं क्षेत्राया वर्ष्ट्र-१८ वडराषा अर्के ५ पर वर्षा । वर्षे राष्ट्र वर्षा वर्षा वर्षे राष्ट्र वर्षा वर्षे राष्ट्र वर्षा वर्षे र नविःश्रूब्ययान्। विरानःहेवायनेयायकराविराहेवायनेयानी। श्रिन्या वर्ते देव अन्नव प्याप्त स्वाप्त स्वाप्त । विष्ठ सम् विष्ठ सम् विष्ठ सम् विष्ठ सम् विष्ठ सम् विष्ठ सम् विष्ठ सम सेसराउदानी किंदासेंद्राटा मुखासे रास्नु वि नान्दा । सिविसाद्रान्त्र नड्य-स्राधीः पार्ट्य इसस्य ५८० । व्हिं हिंग्यास्य निवाहे वे पार्वे ५ राजे ५ राज नैति वश्यस्य वर्ष की स्राय्य स्राय्य वर्ष स्राय्य स्राय्य वर्ष वर्ष स्राय्य स्राय्य वर्ष स्राय्य स्राय्य वर्ष स्राय्य स्राय स्राय्य स्राय स्राय्य स्राय स् यर्गारम्य नक्ष्या निर्मा निर्म

नर्रः हेदे कु अर्के वरी । व्रायासूराना समयाप्यापे । न्यासू । समयाप्या सबयःताश्रामी । विः क्र्याशायित्रः निराय कश्रायः सक्रिनः समायन्त्राया । प्रविशः वसानन्याः उचा त्र वृत्यावे स्र्रिस्याया न्या । स्रूत्या हेव त्र वे त्र वितायक स्वितः हेव पर्वेषाची । श्रें वयापर्वे देव समय प्रायवाय प्रमास सहित । विदासमा नन्गान्दास्य सुरक्षेस्र स्वत्ती । दिन् से द्या स्वत्ति । स्वत्र स्वत्य स्वत्ति । नन्ता । मन्तर्निस्था श्रे सं मिर्देश मिर्देश प्राप्ता । स्वार्से मिश्रासी मिर्देश वि'नर्स्प्र् न्'न्'न् र्रेष्य वेशव्येद्यस्य वर्ष्य ने द्रम्य शुन्वे व्यन्येग्रम् र्रे नि'न्'न इन्निया वित्रिक्षिक्षित्र्य महामान्य क्षेत्र महामान्य क्षेत्र महिन् वित्य महिन् वित्य महिन् नदे अः ह्र अः ग्रो रः श्रु र अः ग्री । अर्दे गः ठवः श्रः विदः अवशः पदेः गर्दे र अदेः क्रियामा । तर्रेर : प्रेंत : स्वर नर्र : क्रिये क्र : यरी । क्रिय : रेंत : प्रेंत : युन : रा.लु.र्या.क्षी विधित.पर्चे.क्ष्या.श्चेंर.यर्था.क्ये.क्ष्या.क्ष्याया.र्या विधि धरः ग्रुटः श्रुवाशः र्देवः व्यदः ग्रुवः यः व्यो । श्रुः स्विवाशः वर्षेत्रः प्रदः वरुशः वः सक्रिन्यर प्रतुषा । निलेश द्रशानिना उना प्रतुर निले क्रिस्स शानि । ब्रूट्यान्त्रेत्रायत्रेत्यात्रकर्विटान्नेत्रायत्रेत्यात्री । श्रिव्यायत्रीर्देत्यस्यायस्य वर्चीयःसरःभर्द्द्री विरासरःयर्वाःर्टाःसरःचीरःश्रेभश्राःश्रवःची विर् ब्रॅट्शःस्रमार्ट्रमाःसास्यरावे न्याद्वा । न्याम् व्यत्ताद्वाते स्वर्धे विस्तर्भे वि

वर्षायवर श्रेर श्रुर महामार प्रकार का श्री सहमारे में श्री प्रचुर मार मार्हेर । व्रि. या महिरा व्रि. या महिरा महिरा या महिरा का महिरा व्रि. या महिरा महिरा या महिरा महिरा महिरा महिरा महिरा या महिरा महिरा

बर्ग ब्रैंग्स्.वेच बेचक्रक्र्री ब्राव्यत्तर ह्यां क्रिंग्य क्रिंग

### ळन'गर्नेर'गर्नेर'कुंवा

७७। | कन महिंर भू मु मुन साम महिंद नर पर्दे दाय श्रुवय पर्वे से सम वर्मे दाय हो रूट क्षेत्रभूत्रचेषाचीर्यास्य ह्वियाचीर्या त्रायाक्याचान्व्याचीर्भः यर्गाम्येर्न्यर्रे साक्ष्यः तुः वियाम्डिमा स्मामित्र सामार्वे व र्र्यास्त्रसः ग्विग्।मी:स्रुग्।कु:उद्या अळ्द्र-च वर:र्से:सुस्राःसुरु:स्गिहेश:५८:५मे:सुर् नवर में नकु ५ दुरु शुरु भारत दें ५ तर्दे अ निरान दें ५ वे मा अवद प्यराप दें । न। व न न न न के रामें राम्युय प्रम्युय प्रमे प्रमाय मान मान प्रमाय प्रम प्रमाय प्रम प्रमाय प् वर्षेर्ची केर्न्य प्राचित्र केर्ने विश्व के स्थाने यन्भेग्रयम्निन्ने हेन्रेग्रयम्ब्र्यम् अक्ट्रे'र्स्ग्रयम्ब्र्यम् निस्रयम्बर्धाः धि'वर्त्रे'गुव'ग्री | दव'र्सेट'बस्रम'उट'र्श्वेट'स्ट्रेट' । क्रिंस'ग्री'वर्षेट'र्से नर्भेर्स्स्यह्र्न्या । भूगुःशेर्म्यो ने त्यायत्त्र । विश्वमङ्ग्री विषयम् विषय । ध्याक्ति च्या व्याप्त व्यापत व য়য়য়৾৽ঽ৾৾৾ৼ৾৾য়৽য়৾৽৾ড়৾৾ঀ৾৽ড়৾৾ঢ়৽ড়ৼয়৾৽ড়৽য়৽ৠ৾ঢ়৽য়য়ৢয়৽ उर् थे इस ग्री नर्र हेरा वस समिते । नसस वस सम्य यून् डेशनहें प्रेंद्रप्रभण्णे अर्थेद्र इस्स्याणेश महिन्स मार्थेय प्रस्ति स्टिस प्रम्प्यस्य

শ ব'য়য়য়য়'ঢ়'য়ৢ'য়ৢ'ঢ়। ড়'য়'য়৾৸ঢ়। ড়৾৾'য়য়ৣ'য়। য়য়ৣ'য়'য়ৣ৾। ঀয়য়ৄয়য় मनुबन्बह्द्वमा अर्वेदि तस्या राम्स्यरा अर्केद्र प्रशासहेश सुरिव । द्रा ठव द्वाया श्वाया द्वाया द्वाया वित्राया वित्राय वित् क्ष्याच्यूर् हेन। वित्र कन्य अत्तर्भात्र वित्र चित्र चुर हेन। हेर प्रदेश हेर स् वहें तर्भग्रान्द्र स्वा क्रिया क्रिया होत्र न क्रिया यहें तर्में तर्मित्र या वर्देर्'र्लेब्'स्व्रस्व'ग्री । इत्वर्द्धर्'श्च्यार्थ्यायाश्च्यायार्थ्यायार्थ्याया अर्केन्यस्यान्यस्थान्त्रस्याः भ्रीनान्तरः त्रीन । भ्रान्तः स्यान्यस्य । गशुस्रायाया । सर्केन्यास्यापस्य नर्सेन्यस्य विवा । नस्र्यः रानश्रुट्रनिके के अर्भेट्रिं नश्रुट्र अर्था । विहिन्स अर्थिय नश्रेट्र अर्भेवाश वेद्रायर र्वेन दिन्य र वृत्रायय ग्रीय र सूय रावे से सय उद्या । श्री दर्य गर्नेव नगेगशय। वि. वेव नडव नशयव कगशहिर नर वेग । ध्या द्विग्रायान्यायाद्यायान्यायान्याया । प्रकृषाया प्रशादित्र त्या रा से द्राप्त में विष्ठ हैं प्रश्नित्र विष्ठ विष्य वर्देन् प्रवे वे त्या के प्रवास के प अर्चेव्यक्तम् । प्रमान्यक्षित्राच्या विष्ट्रम् । विष्यः । विषयः । विष्यः । विषयः । व यायने प्यान्य इत्रायार् स्वान्य हिष्या मुन्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स

# शुः तुः भवे मार्ने मः समार्ने मः स्वा

शुःकुःमःगर्नेदःवरःवर्देदःमभ। श्चित्रभःवर्शेःशेश्रशःवश्चेदःश्वःतुःवन्दः। रदःवेदःभूदःवेपाः गैर्या बुग्राया से रासु गुर्म के प्राच्या विष्या विषया त्तर्। लू. ये.वे.स. विवैकाम वेशेक्षे.वे.स. विष्ट्रे. ४२। कूट. त. १८.२.वीम कूट. मित्रे मित्र मित्र में कित्र में कित्र में मित्र यशगिर्देर्भार्द्रम्थःविदार्वेग्रथःयास्य स्वाप्यःसेद्रायदेन्द्रद्वे स्व सर्के के ते से स्याप्त के लिख यार्वेरमाश्चित्रम्थाक्षेत्रमान्वेरम् न्याने नमान्य मुत्रम् न्या स्थान म्यापान्त्रयान्त्रापाक्रमाने स्वर्णामान्यान्त्रापा न्दामा के स्वर्णान्यान्यान्या रेव केव सर या सुना पक्ष या वि । ने नि नि नि नि नि नि नि स नि नि नि स नि नि नि स नि नि स नि नि स न्यायायास्त्रमायळ्याया । ने निविद्याने नेयायायास्त्रम्य स्त्रायास्या वळवार्वा । दे निवेदाम्नेवारायहिवारायात्रस्य स्था उद्दर्दायायाया स्या तक्या वे । वहिवा हेत् श्री विस्रमा सम्या सम्या स्वा विष्या विषय । इससायान्यानवदानादि स्रेर्ची सुग्राम्यास्य स्राम्य सिर्दे रहेरसा निगा

यो प्राप्त विष्ठ प्रता त्र विष्ठ विषठ विष्ठ विष

डेश श्रें न्या स्ट्रें न र्श्कें द्राया मुद्रें विशास एटी प्यत द्री स्ट्रें स्वार रहें श मिला सह द्रामी श्रें वर्गे द स्वें | ||

ब्रू.श्रेश्री वय.यमेतृ.वज्ञुम् व्यूच्या.क्रिय.च्यूच्या.चश्रुव.व्यूच्या.च्यूच.व्यूच्या.च्यूच.व्यूच्या.च्यूच.व्यूच.

## युःगर्नेरःश्चेःरेयःग

र्यायात्रकः इद्वास्त्र श्री स्वास्त्र श्री स्वास्त्र स्

मेन्यसुगर्दरश्चित्रभदेत्व अर्धिः ह्रम्यस्य शृज्यस्य हुँ त्यात्रभ्य हुँ त्यात्रभ्य हुँ त्यात्रभ्य हुँ त्यात्रभ हुँ त्यात्य हुँ त्यात्य हुँ त्यात्य स्यात्य स्यात्य हुँ त्यात्य स्यात्य स्

र्शेवाश्वास्यास्य सु सु सु या वित्रान्य निर्मा वित्रान्य वित्रा वित्रान्य वित्राम्य वित्रान्य वित्राम्य वित्रान्य वि र्येट्र र्श्वे द्रित्र श्रुय र्स्ट्रें न्या या प्राप्त र श्रुप्त व्याप्त ह्रित्र ह्रित्र ह्रित्र स्थित हित्र स्थाय हित्य स्थाय स्थाय हित्य स्थाय स्थाय स्थाय हित्य स्थाय हित्य स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय **प्रुङ्गे** विशयक्षा **प्राध्यक्षे** विशयक्षेत्रम् क्षेत्र विश्वयक्षेत्र विश्वयक्यक्षेत्र विश्वयक्षेत्र विश्वयक्षेत् धुन:इर:वादी रट:वी:अरुव:रु:रेव:वि:खे:खेश:युव:पवे:य्वापाकेर:यी:यु: श्चित्रशास्त्र श्ची दिवा हा सर्के प्रदा हिरा सुराया प्रदा ने दुः शेरा शे र्नेगामीश्वानक्रुवायाद्वा कुःश्रेगाद्वा विवायाद्वा वनवाकुःद्वा खाश्रा ८८। श्ररःहेर्याप्ता श्रेरःश्रियाक्यायाश्रीवायायास्यावियावयाप्ता सः ग्री परिंद्र ग्री अ नर्ज़ें र न परिंद्र पर ग्री र र न्ती मिया अ गरि है के दिंद ने र ग्रीभ मुःसर्ळे केत्रां त्रभाग्ना मुत्यायिं रानवसा सुत्र द्रार्भ रामरानस्यस्य व्यादवा हु। वादेदशाया र्वे सातु व्यवसाय वे वेदि हो सा ही या। या वेदा सुवास्य ख्यारोपायह्रापति । नसूरापार्यापायस्य सुर्वे नयानयस्य सिन्। सु कुषायासुरायिं रावर्याम् रायदेराम् नेम्या । भैं तृ मा दूर्राया राष्ट्री सूर्अके हे दे राज्य पार्ट है है दे दें ने दें प्राची माना पारी दें। देव राज्य पार्ट प्राची के विकास है। हे<u>िर शुक्र रसःग्राचेगसः सुःग्रस्थः नदेः धुग्रा</u>गी सम्रेखःयसः नर्*र् से*देः सदेः कुत्रः तुः नन्याः सः न्दः वहेया यदे। यत्वः क्रीः यकेंद्रः पहिंदः न्याः ह्याः देवः

र्रे के निर्भेष्ठ से स्राप्त माना निमाल स्राप्त में निम्मे स्कृत स्राप्त में स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स् र्रे लासर्वेत् इसस्य ग्रीसर्वे दस्य श्रुन् प्रसासुस्य न्या प्रमान्दर् न्या स्थान क्षर्याय र्ष्या सूर्वा नस्यादर स्विता स्वित द्वा स्वता से द ग्री प्रदेश प्र कुन्यार नर नरस्य वाष्या वाष्या याष्या याष्या स्वर्धित वार्षे र व्या दि वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र वाष्ट्र क्तु अक्षेट्र न न जिल्ला का का निवास का वै: मुंगिर्द्र माविष् |देवमा सुंकिषा मातु स्था सुंकिषा मातु स्था सुंकिष्य स्था सुंकिष्य स्था सुंकिष्य र्वेर-तृते रेंद्र-बेर-क्रीश । एर्देर-द्युते दिर्मश्चान अर्केण क्रिया नदी । अस् हःयासुमायळ्याया । अवयाध्याप्रान्दावे यहेमार्यान्दा । क्षेत्रया ग्रीकुन्दा रेग्रथः ध्वर्त्तरा विरक्षियः द्वर्ति द्वर्ति द्वर्ति । यद्भर्तरा विष्ठः भ्रत्तरा न्वायः र्वे न्द्राचे के रान्वायः वी । क्रु अर्के न्द्राचे क्रु अर्के के । न्द्राया क्री कि ८८.५८८. कुष्टित्रा विश्विष्य अ.कुष्टित्र अ.स.स.कुष्टित्र अ.स.स.स. वर्षिर-१८ नवस्य वर्षेर मिन्न स्वानियास मिन्न स्वानिया विस्तर स्वानिया वर्षे स्वानिया स्वानिया वर्षे स्वानिया वर्षे स्वानिया वर्षे स्वानिया स् रांदे'न्गर'गशुअ'अर्केन्'रा'न्न। । अरर'गशुअ'र्दे'अदे'कु'अर्के'दिविषा । रेव केव सहे अ परे में अ अ अ अ वि । त्यु पे स्वा नस्य क्रिंच हो । सम्बद्धारावे स्थार्था वर्षे मुन्ते वा । यर्के दार्श्वे व वार्के र सावदे विवास । नन्गारमार्धेदासर्हेन्य्वेर्त्राचर्या । निविन्त्र इनविदेव्हार्स्यया ८८। अि.जम्मी मान्या विष्या विष्या

नससम्बर्ग्नान्दावास्त्रम्यान्त्र । श्रिम्यते न्यायास्य वार्याम्या खुर्याद्युर्रातुं विः शुरुरे वे । यद्या प्यराया हेर्या प्रदेश होराया । शुर्था वद इस्रश्वि नर्स्स्रि । विश्वेष विश्व म्यानि विषे निर्देश गुन निर्देश यर वर्षस्य वर्ष भूरा भ्रुव र्ग्ने : मुला से प्रवास का वर्ष का स्वास का वर्ष का स्वास का वर्ष का स्वास का वर्ष का स्वास क र्शेशः शुरु हेन । द्वं : हे : त्रुर : त्रुय : त्र य व दर्शे : धेश । १९ : व्रिया : यक्वेद : यः द्र यथ : यः ठेग। इ. गुदे अर्दे दशदा दर्से द ख्या। या वे अद्र या कु या निर क्षेट हैं। न्। विषय अर्वे निष्मु में राज्य विष्मु राज्य विष्मु राज्य विष्मु न्नर यना कु: श्रेव श्रेर शें प्रेश | प्यव यन १३ समा संस्था सुर हिन | सु नियाक्वेन्द्रम् कुर्याभ्या । इक्त्याष्ट्रस्याम्यास्य साम्युर्माक्ष्यास्य स्थित हेश है। बर गा। कि अर्के सिया तर्य अर्थ यो श्रेष । श्रेष हो हो येया श्रेकें यो अर ग्रेमा सिर्धियम् भ्रें अक्टेर् क्ष्यमारा स्मा रिव क्रिव से से प्राप्त स्था ग्रेश। निट सहिट १८ सरा संस्था ग्रुट हेन। निगर नासुस सर रागसुस नि वर्षाण्येया । विर्देगानुस्रस्यान्यस्य गुरुष्ठेया । सर्देर् द्रास्र व्यवस्य इस्रयाधिया । सुन्दर्भागन्या वस्रया उद्यो । वद्रन्दर्भ्या नस्या स्र

गुरिन्द्रिंग्यययःविद्यार्थित्यःश्चित्रः मुर्या । गुर्ययः पदेः सेययः ग्रीयः कुन्यान्यस्य । वहियाःहेत्।प्रस्य इस्य वस्य उन्त्र । वि ध्रुयायायेषा निरळर.कु.श्रुंसमा । है.नड्र.प्रच्यात्राक्त्यारास्यहित्। ।देवमास्यम्यः म्भेगःम्चेनःम्बरःनदेःम्चेम् त्ये न्द्रः न्यः प्याप्य वेशः स्वाराधः विष्वाराधः विष्वाराधः विष्वाराधः विष् डेर्नगशनम्बर्ग केंग्राइस्य निम्मानम् विम्मान्य स्थानिमान्य स्थानिमानिमान्य स्थानिमान्य स्थानिमान्य स्थानिमान्य स्थ रेग्या में सु दूर राजन्य वित्र पठरा ह्या । यह यो सुराय द्रो विहा या । गावन या गार्ने प्राचार हो प्राचित्र के वा । यम यदे वह सा स्वाचित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र मर्वेद्रायदे प्रवास्त्र स्वाप्त स्वाप्त व्याप्त विष्टा । स्वाप्त के प्रवास सम्बद्धा । वर्चरानुःकं नःवर्गुरःवर्गुरःविरः।।रार्नेवःसररःनः इसरायराये।।वर्चराः नु'सदर'न'दर्गुद्र'नर'दगुर्ग । ने'निवेद'न्स'क्षेम्'इद'ग्रेस'य। । वे'सूर' विनिदेश्रेस्र विनिध्य । विस्र विनिध्य । र्र.कं.लु.श्रूर.लेय.री विरूट.र्योषु.सूरमाश्रूर.सेय.श्रेश.क्र्यमा वि.लु. वर इस्र अर्थे अर्गुर वस्र । स्वाप्तस्य गुर्व प्रस्ते व गुरुव । स्वाप्त र्रे हे ते विषा अर्वेट है। अपिय हैट है क्व प्रहे ग्रामा प्राप्त है । नर्यायमार्ग्यावमा हिंहे सेसमान्यते के विन निन सम्बूना क्रां राम् दे सू दू न है वेशमिनेगश शुम्रिय वेदा म्वव प्यट न हैं न हैं द यश है देगश स द द नेशयानाईन्यर मुद्री

यश्चर्या।

याः क्रिय्या।

याः क्रिय्या।

याः क्रिय्याः व्याः याः व्याः व्याः याः व्याः व्याः याः व्याः व्याः याः व्याः व्याः याः व्याः व्यः व्याः व्यः व्यः व्यः व्यः व्यः

सर्च.पूरी

### श्रद्धाः क्षुश्रादेन् 'न्यम् सेन्' ग्री 'दर्से 'न

७७। । अरमः मुमः देर् द्रम्याः सेर् ग्रीः वर्षे नः नर्से सः सरः वर्देरः प्रभा वयायापदान्दायाष्ट्रयापदे सेययाउव वययाउन ग्रीनेव नुःस्या मुश्रार्वेन प्रमान्त्र देवे श्रीमानु वनायसायसायसायते स्वायते मान्या विश्वान विष्यान विष्यान य। तसम्बार्यात्रात्वात्रात्वेर्य्यस्याम् राष्ट्रात्याम् स्र्रेट्यः वि.च.भ्रे.च.भ्रेट.सद्यः ख्रेषा । भ्रे.न्वेश.सश्चे.पर्विर.चर.प्रविश्रःसर.श्चेरा । दे द्वा श्वाया हे अदय वया श्वया रहे व्यद्वा दिवाया या वहा द्वा वीया दे वहूं न प्रमः सहि । वेश वार्षित्रा त्रा क्रिंश इस्रा ही हिंव से वि हिंदी वारा धर्द्रग्रद्भविद्या देखाँ हैं वार्षा स्वीद्य द्या स्वीद्य स्वीद नर-५-१९विर-नर-वाशुरश्रप्या कें रनशःगुन-५-नरे नानशानि-नर वर्ते नदे नव्या वय व्याप्य वर्षे नदे देव नमूव न प्रेव है। युन केव से इ र्दें मीदे वियावया के विदेश कुर्गी थी द्या नर्से या । नर देवि नर्से न नर्झेबरमराग्रा विविध्यासराग्रुरकेरागुन्गीराग्रान्। श्रिःनेराञ्चरा श्रिः ग्रीमायानियामानिया हिन्दी सङ्गान्त सङ्गान्त स्वानिया दिन्दी स्टानी देव केव इन्वे न्ना संयो क्या म्या क्या निवास निव

न वर्षिते पर्वासूरमा ग्रीमा न व्यमा स्वीता स्वीता व्यमा स्वीता यिष्ठेशः श्रीशः र्क्षद्रशः तुवा वाष्यश्याषेत्रः स्रवतः राः यिष्ठेवाः वर्षेत्रा हिंदः स्टः अत्रित्रानीयः श्रुत्रायः हे केत्र में विषानित्रान्ति नाम्यायानमः नमसःमदेख्याग्रेक्टर्जुः इत्तुः सञ्चासुन्यः सुन्यः स्यः स्यः सुन्यः सुन्यः सुन्यः सुन्य मदे तु ग्राम् प्रया तु द र्थित् या स्रम् क्षे क्षे न र्के स वतु द गी द तु स सु । तु ग या गठिगानर्झें अप्या क्षेटापिये बदान् इस्यायम् ने अप्यये में निष्यम् याहे न्यग्रापुः सेन्याया स्थापा स्थाप्या वर्षे व्याप्य वर्षे वर्य वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे नविव निवेश्यान न्यान के सामा प्यान न्यान में निया माने सामा माने सामा माने सामा माने सामा माने सामा माने सामा देर्-रमग्-रु:सेर्-रा:पा:सुग्-पळ्यावेष् । सर्केर्-रे-सुग्रमः सु:सकेरेष् । यहः বঙ্র্বাশনইন ইপ্নার্থিতানানদ্বানান্ত্রাপ্রাপ্তার্থা नु:बुर्। ब्रिंन्स्रामी:श्रुं मार्डमा:र्क्र्स्थ:सदे:नु:मान्यःस्रास्तुम्य। इन्नु: स्रेट्रावर्गावर्गाय्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्राचे स्रेट्रावर्गाय्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्र केत्रसंखित्रा हैं।प्रनायेत् श्रीख्राकारम्प्रनारायेत्।यर्षेत्रप्रायित् षरःश्रॅरःय। श्रुःत्रॅरःवलुग्रयःयदेः त्रुः अःत्रॅरः द्यग्राः सेरः श्रुग्रागरः विसामित से सामा की सामा विस्ति स्थान नर्डे अप्युत्रप्रद्र्याने प्रविद्यानियायाया नर्जे अप्याप्य प्रद्र्याया

यदे अदशः कु अर्देन द्रम्मा हु सेन स्थाय सुमा दक्षा दे। । सकेन में सुन्स शुःसकेर्दे । व्यायः हेयः न वुटः र् ग्यायेषा न सुनः र ग्यायेषा भेगः सुनः सुनः नुःगर्रेषा यसःनमूनःनुःगर्रेषा नरःनेदेःवहेग्रसःसम्बदःन्गःयसः क्केनियम् सहिन्द्र पार्शिया दे सूर्यार्शियान निर्मयाया महेन निर्मा सुः स दिन न्यम हि. सेन प्राप्त के स्था व्या क्षिम स्था विषय । रदः धदः देरः से 'हेंग' यद्भदे । वरः श्लेश द्या प्रता प्रता विदः श्लेष । व्या स्या धर्द्रवाद्याच्यात्रवा वाद्रस्थाच्द्रा हेश्रास्य वाद्रद्रास्य स्था या श्रीशा भेगा सुया निराद्ये प्रशिया वर्षे राम स्ट्री स्वाद्य स्वाद निराद्या वर्षे प्रश्नी स्वाद्य स्वाद स्व रा नेत हिराहे अ यश भ्रेश । भूट न अवद यश कुय नदे अर्दे र शुस है। । खुर्न्न स्वर्ध्य प्राप्ति या वी राने रार्चिया । विश्वया विश्वर्ष स्वर्थ विष् ब्रेटमिद्रेश्यास्ट्रेष्ट्रित्त्वम् मुस्ट्रित्याश्चराद्युयायया बुर्ट्स् सुटानर्दे॥।

# सर्वे व से कि त्या से प्राप्त होता व से कि त्या से प्राप्त होता के त्या से प्राप्त होता के त्या से प्राप्त होता होता है कि त्या से प्राप्त है कि

२७०। विदे वापर देव ५ विषे वाश्वर वाप्य वापर वाष्ट्र विद्या वाष्ट्र विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या वर्नेनशः हुवा ग्रेनेदार्राव्यावर्री ना ग्रुः हुवा न्दानि वया वर्ने मञ्जूनशः सुन्नवश्या ग्रेनेदार्री वा वर्षे ना वर्ने नशः श्चिर्वे रावर्षे नावेशनवे नाम्यसानवे निर्माने स्वामा स्वामानि साम्वी नामिन्यसानि स्वामानि साम्वी नामिन्यसानि स गशुरशःग्रुरः। गार्डे र्ने संसुर् हे मान्द्र निष्ठा निष्ठा निष्ठा निष्ठे मार्थे संस्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थान नत्वाराग्रह्म देवादे द्यार्थे । दे पर्मिताया सहायी किन्यून त्यायि दुह्म स्थापिता सुहा सुहा द्याया प्येत यम्। त्रुःश्चेनिःमिष्ठेशःमिदेःन्भेमिश्रःभःन्नःभूवःभदेःखुनःन्नः यन्देवेःबिनःश्चेम्श्विन्शःन्वव्यःमिर्वेशःह्रेश। न्नेवः यवे मात्र भार्यु पर्यो नाया श्रु र भारा हमा भारा भेंत्र श्री नार श्रु र भा हे भा त्रु स्ववे मावत या पर्ये नाय दे न भारा या गशुरःगी'गवरःनःर्वेनःहेशःस्राहेर्वित्यर्वेनविष्ठः क्षेत्रान्दःर्हेश्यःयःयागवशायविश्वेत्वेन्त्रःयायित्रश् यः तुर्दे । दे त्रशः स्टा हे द याव्रशः यादः धेवः यादे व्रशः भे विदे देवः दुः वर्त्वे व्यस्य विदे विदः व्यस्य । धे द्रशः हैं *ॾ॓ॱ*ढ़ॾऀॺऻॺॱॻॖ॓ॸॱख़ॢॱॻॖॱख़ऀॺॱॺॱॸ॓ढ़ऀॱॸॱक़ॗख़ॱख़ॱॺऻॺॺॱय़ढ़॓ॱॺॖॺऻॺॱॴढ़॓ॱॺॱॸॕॺॱक़ॕॗॱख़ऀॺऻॱख़ॺॱऻॕॎ॒ॱॸ॓॔ढ़ऀॱक़ॕॺऻॺॱॸ॔य़ॺऻॱ तुःसेन्'राःर्श्वेराःने'र्र्के'यन्राःग्रीः।परःययसागुरःर्शेग्रशःग्रीःस्नेन्दिग्।र्सुग्रायस्त्रस्यस्यस्यस्यस्यस्य वन्याग्री क्यायर नेयायावात्र एविह्य नवे मने न्या स्वाय वन्याग्री इसायर नेयाया नेवावहेया से पार्से नायर प्राप्त विवाय है। या नेवावहे वस्त वस्त्र वायर वाया से वाये विवा व्दिवे क्रां ने अन्दरहे दुःवासामार्वे दायर सेंदा विमा डे अन्वर्हे दाया माया है। सावर्शे वरासूमा सामिता वरासे सम



यञ्च अत्राचन स्ट्रिं।
स्र प्राचन स्ट्रिं।
स्टर्ग स्ट्रिं।
स्टर्ग स्ट्रिं।
स्टर्ग स्ट्रिं।
स्टर्ग स्ट्रिं।
स्टर्ग स्ट्रिं।
स्टर्ग स्ट्रिं।

*धुः* न्तुग्राशः कन्यान्यस्य नानुः क्ष्यान्ते। नन्यस्य ह्यान्ते । ने प्रतिन प्राप्ते प्रसिक्षयान्तुनः त्या ज्ञुः अःश्चेरु अः तुः न्याः व इययः ग्रीः यातु रः तुर्या द्यीयः विषेरः श्चुतः यक्षेत् म्यूनयः ग्रीः हुयः क्षेत्रः नरः। तुर्यः विषेरः <u> न्नरः केवः गवरः भ्रूनशः ग्रीः मुयः केंव। अर्थेवः तुः के नः येथः नश्चेगः मदेः मयः ग। में मिनः येवः म्यूयः स्रीः यः विनः</u> र्बेर-वहनामानाञ्चर में दर्दर सर्भुर वदे हो न्यु ही वाइन ह स्वर सम्मानित क्या हुना दे प्यर ही द्वनमा मदेः भूनमः ने रः यने नमः नर्गे मा सक्तर्यान्त्राचि निर्वाचित्रक्षेत्राचित्रकेष्ठेत्रकेष्ठेत्रकेष्ठेत्रक्षेत्रच्या क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका *૽૽ૺ*ૹ૽ઽ૾ઌ૾ૺ૱૱ૡઌૺૡ૽૽ઌૻ૱ૹૼઽ૱૽ૢૹ૽૱૱૱૱ઌૺ૱ઽઌૢ૽ૼઌ૽૽ઌૢ૽ૡઌ૽૱૱૽ૼૹૺ૾૽૽૽૽૽ૣૼૹ૽ૢૼ૽ૼૹૢ૽૱ૢ૽ઌ૽૽૱૱૽ इस्र ने सन्तुनामा बुरानु से नर्ने समाधेवा ने वसारे निर्देश से न वर्ने सम्सम् से मानुमाया से मानुमाया स स्यानितः स्वाप्ति स्वाप्ति । स्वाप्ति स्वापितः स्वापितः स्वापितः स्वापितः स्वापितः स्वापितः स्वापितः स्वापितः स विर्यम् नु मिर्या नु से मिर्या ने से नु प्रति र ति है ने प्रति में निर्मा ने से मिर्या में से मिर्या ने से या न ह्यॅहर्निंशः कुंवारेशः वेशः नश्चेरः याधीरः विद्यारेशः विवार्श्वेतः रुप्तहरः यावायः के श्वे। ग्निन्दर्भिन्देन्द्र वाबुदर्भःस्वार्भःवाद्वःवःद्वः। दवःशॅदःक्षेुदःववेःक्वेंःवाःवार्वेदःवःद्वः। वर्षेःवःश्रेवार्भःवुर्भःवःदेःवःश्रादवाःवःद्वः। महिन्दिमान। मधिन्यायासँग्रायास्य म्यान्ता न्याक्षेत्रासी मार्यन्य स्वायास्य मार्थन्य स्वायास्य स्वायास्य स्वाय ॱऀ॓ॳॱॾऻऄॕॳॱॺॾॕ॔॔॔॔ॸढ़ॴॱॻॖ॓ॱॺॱढ़ॸऀॱक़ॺॴॻॖऀॳॱॸॸॗॴॱॸॿॣॖॳॱऄ॔ॱॺॢॺॱढ़ॳॱऄॱॶॖॖॖॗॺॴढ़॓ॱऄॱॸॖॴढ़ॱॸॱक़ॆढ़ॱऄ॔ॱॿॗॢॗऄॱ

यनेशयळ्यशर्भें राग्नशत्रयत्र सेंटानु वर्षे नदे मेन्न नु वर्षु रान्नि हे नद्व से वर्षा से पी नदे रें थे। · इस्यासर्वी या । विस्योत् त्येत् त्येत् प्रति । विस्यान्य त्या । विस्यान्य त्या त्ये त्ये विस्यत्व व्यापन हर्वे स ऄ॔ॻऻॴॾॕॻॱढ़ॎॕऻ॔ॸॱॻॖऀॱॻ<sub>ढ़ॕ</sub>ॻॱऄॺॺॱॸॣॸॱऻॱॻज़ऀढ़ॱय़ॕॱॸॆढ़॓ॱॾॣॺॱय़ॸॱज़॓ॺॱय़ॱॸॣॱॻऻढ़ॺॱॾॣॸॺॱऄॱढ़ॸॖॱॿऀॻऻॱफ़ॗॱॲॸ॔ॱ ॱॺॢॺॱय़ॱऄॸॱॻॖॆॱॸॖ॔ग़ॖॱढ़ढ़ॸॱऄॸॱय़ॸऻॱॱॱॺॾॕढ़ॱॸऄॺॱऄॕॻऻॺॱॺग़ॖॱॸॱढ़ॸढ़ॱढ़ॏॻऻॱॿॢॸॱऄढ़ॱॸॖॺॱॸॖ॓ॱॸॸॱख़ॱॲ॔ढ़ॸढ़ बेन्ग्यूरार्धेन्यरार्भ्वे निवायायदे सेवा बुस्य बुस्य न्या क्षेत्रय बेर बेर वी वार्षे क्षुरावावत् सेस्या नहीं नदे गुवःर्श्चे निः ठवः निन्न निन्न निन्न अन्ति व्यापयस्य गुवः वान्त्र निन्न स्त्रे निवनः स्त्रे निवनः सर्वे विवन् र्द्राकेट्राक्राक्षात्रकार्ट्राहे प्रह्मायात्रक्षेत्राह्मात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्रक्षात्र गट्र सेंद्रियाद्य अःशुः शुः स र्सुम्बर्गस्य मुज्या मिलेव से दे हेट्य स्ट्रेंदे खया दयदा दें ना से दिसे मुका सदे द्यमा नी का नर्से दाना क्रुका येदा ॱब्रुट्र हे पुन्न अर्जन के क्या के क्या ब्रुट्र हे स्क्रु अरमा नवित्र क्यो अर्ज के कि नित्र कि नित्र अर्केना वा ॱवार्केषाचायदेवकायवे क्वेंदरानुवाकादवार्के प्रतृतावकाक्ष्यात्रवान्वे प्रवादेषात्रुवकाक्षेता हे प्रवाकादवार्के नश्चेनन्। कुलानर्देनन्मनासेन्छे लेनानर्भेन्स्ग्रीन्स्मिन्स्निन्स्हिन्स्हिन्स्हिन्स्हिन्स्हिन्स्हिन्स् देवरःद्रश्चेषाश्राधुवावक्के।वाश्राक्षातुःविषाधिवावाविःस्राचारावार्वेश्वार्थादविः ह्वाश्राद्दर्दिनः विद्यास्त्री बरादश न्यभवान्वास्त्रवास्थान्चास्रवे सर्वे सर्वे स्वाभान्दावार्षे वायदे वस्य क्षेत्रावस्य सुदानम्वासान्दा क्षेत्रान्चायदे । ग्नेग्रायक्तुन्र्स्ग्रायः ग्रीःस्यायः स्यायः त्रस्यायः त्रु। स्वः त्याः विः वे स्वः नेयः स्वः विः विः वयः विनः परः नुःदर्जेन् वनमः धेत्रः मभ विन्यमः भेतान्यः भ्वीः वाद्ववाः विनयः वार्तेन् दिवाः वेत्रः वार्त्वमः विनयः वित्रः व ने वशायके प्रस्वान ने रेडिंग सुर ग्रुश्य वशायहेंगा स श्रेंगशा वे प्राया ने र से प्रवास र सा सर নম্বাধ্যমে

यार्च् - प्रत्ने क्षेत्र - प्रत्ने क्षेत्र - प्रत्ने - प्रत्ने क्षेत्र - प्रत्ने -

देवमा सुवा हुट सह दास्य वर्ते वा से अपन हो स्वा विदा विदा विदा डिगाः इतः प्रशायके यद्याः यहे ग्राशः से हः दुः देन्। ह्याः हः वहः वशः यर्गे वः नु निवेद निवेद अप्तुर या । श्रु अदे स्वेद या के निया से निया स्वाप्त स्वाप वै । श्वनःमदेः ननदः सै अः यवः मन्यः सः सः । विम्यायः सः स्पेर्स्यः सुः नस्मार्थाप्रदेखेटमी सर्वेम । नदे न उत्रु मुं नदे र्र्सेन प्रस्ताय । नहे नवे नन्न में अहे क्ष्र नु अनिवेद नहें न वितः में राग्व अह अअ अरेग वश्वारीयानश्चित्रा । विटार्विवे सर्वेद मीया सर्वे ने सर्वे वा वर्षे वा केटा । वर्देन श्रेन विवास प्रस्तिम निर्देश निर्देश मन्त्र निर्देश । विकासी कि स्त्री स्त्र मिन श्चित्रक्षः नद्याः कुः श्चेत्रावरः कुद्रः प्रशा । श्चिः वर्देदः श्वृयाः नश्च्यः विरः ग्रीशर्देव ग्रुरःय। । सर्वेव से दः यद्या मी क्ष्यः वया दः रे स्थेश। धिदः यः र्र्सेवः यायग्रीयायदे। निर्मा । विस्थायदे। यादेवा विष्यायदेवा पर्मे प्राप्ति । मेर्। भिष्ट-रम्भाग्विग्रार्यरामुख्यस्यम् स्वर्षेत्रः स्वर्षेत्रः स्वर्षेत्रः स्वर्षेत्रः स्वर्षेत्रः स्वर्षेत्र नडरायागुरायरायार्थेयायदेनराय। । द्यमासेदानस्रायरायद्याः उमा

इससाग्री भी विवास सक्रवा न भी न सम्बन्ध न सम्बन्ध न न वन्नानवन्यार्रे ने खुःषे प्रमायानित्। हि वसुयार्भेनमा ग्रीमानहे नमा वर्देर्यानेवाराःनेवा डिसम्बस्यम्यन्यम् सर्म्यस्यम् स्वतः स्व ৠ ঐ পুরু দু দ্ব বর্ষ শুরু শু জারু দী দূর । हेत सूर प से प से प से प र्द्धरामान्द्रेत्रपुत्र द्वेत्रामान्द्रमान्द्रमान्द्रामान्द्रमान्द्रामान्द्रमान् येशनमुद्रम्। धेर्मस्युगुर्मम्यया केल्यस्यद्रस्यम्यस्येकः च्र-उद्य-स्ट-स्निम्यय-द्र-भ्रेष्टे सक्रेन् व्ययय उद्ग्यायय विद स्प्रिस्य सु क्रिंशः श्रीः नदेवः सन्दा द्योः यद्वः श्रीः नदेवः सन्दा देः नविवः यानेया सन्धः न्दा हैं हे न्दा देव में के न्दा महान्दा स्था में देवा शासी मुद्रा स्था में हो है ने वा शासी में स्था में हैं वस्रकारुन्द्रा क्षेट्रस्ट्रा ध्रमाक्चित्र्रा वाक्यरक्ष्मकार्य्या देवा स्ग्रामा भी स्रोते । वित्रायमा उत्तरम् स्रामा भी । यदेवाया नित्रायमा । नर्डे अ'स्व'त्र्र अर्गेव'र्रे 'देर्'र्म्या' सेर्'ग्रे' मुग्रुर' श्रुपार्था' ग्रायर'न व्याया येदायदे प्रतिवादा प्रतिवादा के वार्षि विष्ठित की या व्याया विष्ठित की या व्याप्त विष्ठित की या विष्ठित की या विष्ठित की या विष्ठित की विष्ठित की या विष्ठित की विष्रित की विष्ठित की नहेत्रत्रायदिगाहेत्यदीत्रायप्तार्या प्रार्थेट्या हार्ये विषा न्याये द्वार नर-नेशनाम्बर्गन्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्या 

सकेशासर गुर केमा केशामदे नर त्यव महासम्बद्ध महासम्बद्ध हुमारा मा वर्ष दिन होर ञ्चन्यायाः शुः नुः तर्द्वे याः प्रयाः कें त्यन्याः शुः इयाः ने याः नि मान्यमः नि मः ग्रयान्य अप्तर्भा सुद्राची मा सुम्राया स्वर्भा सुर्भा सुर्भा सुर्भा सुम्राया स्वर्भा सुम्राया सुम्राया स्वर्भा सुम्राया स्वर्भा सुम्राया सुम्राया स्वर्भा सुम्राया सुम्राया स्वर्भा स्वर्भा स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्भा स्वर्था स्वर्था स्वर्भा स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्व श्रुटावरवियायर गुरा कें नहा अड्डा अड्डा कें नहारा निः हैं। कें नहारी तःम्। अर्भानद्वान्त्रम् व्यवस्त्रम् वर्भान्यस्याम् याम्यान्त्रम् अर्थाः यहान्यस्यान्त्रम् वर्भाः शैं यदेव य द्रा द्रो १२५व शैं यदेव य द्रा दे यबिव या ने या व्या राष्ट्र र्हे हे दिन देव में के दिन वहारिन वश्यों देवाय शुः शुः मुस्य प्रथा व र्टा क्षेट्राच्टा ख्याक्चर्टा यथटक्यथर्टा द्याक्यथाक्षेट्र विन्यम् उत्राह्मस्य भी विन्यम् विन्यम् नुस्य विन्यम् । वह्रमान्ययान्वितः हे नाक्ता भेत्रा भेत्रा स्वामान्य वित्रा नित्र प्राप्त स्वर्मा भी नित्रमान्ता नित्रमाळेत्रभिति होत्राही अन्तक्षन्यमानित्रम् वहिना हेत वही त्र अप संस्था हु अँदान के नो अँ विश्व न नी न न न स्वा नि वःकें ग्रवस्यायायायर, ग्रविद्यस्य कें वर्षस्य ग्राम्य स्थानम्य यायानरातुगार्वेत्यरार्हेसायवे नवोग्या ग्रीर्वे ग्रया इससार्टर्ट्स र्शेदे नात्र शर्श र्शेट विना के सुझु ते सुझु हैं। के नी हु ते नी हु हैं। के नी हु माणानीकृष्याणातु। अष्मानाणाने। इपाभ्यानानिकाने क्रियाणान्या न्म औँ दे के क्षे में में पूर्व तर हैं मता वनमाश्रमा ध्रम्म में वनमा के प्रमाय नि

#### ন'নবীবাঝ'রয়য়য়'য়ৢঢ়'য়ৢয়'য়য়ৼয়ৣয়

स्वाय्वयां विद्वाहित्यः विश्वयां स्वायः स्वयः स

श्रेते के ना श्रुप्तर में ना श्रुराश्रद्भार प्राप्त स्थित विश्वास स्थाप र्दित्। सुरार्वेगाम्यानभूवामवे सुराद्यावस्त्रं नायवे न्तुयासु वेसयामा त्रा देश हिरान क्षेत्रे ते देश यह गरा भूग त्रा स्वानस्य स्व केंग्रास विगाष्ट्रित्ररायास्त्रस्त्रस्य स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र न्त्र स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स यदे ह्या राषिता यावद पट सुरु शे ह्या रादे दे र र र पट हि स से या राय ग्वित्र नु तर्वे न त्वन् न हें द न् न न करा राषा न क्षे न समा राष्ट्र सा ही सा श्चेनश्रान्दा धूराकुत्याचिदावेदावन्दर्गेश्रानायादाकुदेरवाशे न्वीरायन्ता न्यायी ह्याया स्र एथ्या से सामिस सिसास से सामिस स् हे ब्रिटे ब्रूट न के प्रकर न निर्मा वार न के प्रकर के विन्न के कि न्नरःसँ गुत्रः रूरः नः सः नदे खुर्याया नरः नुः स्रेतः गुरः मेना सः से विद्युरः नः है। देशरावे ह्वाश दुवा ५८१ धुर उस रे खदर कुश खेर य ५८ से र मदेग्वात्र अधिन पुर्वेद न प्राप्त । अदि । या अस्ति वा अस्ति । यो प्राप्ति । यो प्राप्ति । यो प्राप्ति । यो प्र र्बेट रें न्दर अर्केट हेत त्रया वृद्धा त्यवा विट रें वाया हेत या देया या व नहेन मन्ता वर्ते वर्ता क्या क्या वर्ता मी ह्ये न व्या अपने अपन क्षे स्वी अपन वर्षासारेश्वापाववराद्याञ्चालेषात्रायायायात्रीर्वासुन्याद्वा सूर्वारे वेशा

रान्द्रा भी अर्घते : व्यापा अर्दे अर्घा श्रुर क्षेत्र या अर्घा व्यापा अर्घा न्द्रा सुरासूर्वेग्रास्य स्वादि । स्वाद्या स्वादेश स्वाद्य स्वादेश स्वादेश स्वादेश स्वादेश ययर भ्रें गशुसाग्ची सूर नासारे सामित यकर भ्रें सूर्स वासाम विवाद गुर दिर्यन् अभावह्रं अधी भावश्चाबिरावाधी व्यवशामी भावहेर्यान्या व्यवः ५ग×५वा'वी'र्रायाञ्चवारा'ग्रीराख्वर'ठेवा'श्लेरायदे'खु'वर्देरा'वर्षा'ग्री'हेतु' नगरन्वानग्रम् इस्नेर्याणेर्विरह्णानुसेर्येवस्यर्भुंकन् स्तरियो अपर्मे निर्मा मुस्य स्वर्धा ने निर्मा ग्राम् हिन्न स र्द्र-पावर्श्व-स्वार्थ-लेवा पावव-लट-र्श्वाय-त्र्यम् रास्त्रे-स्री-नदेन्नरम्र्रिर्द्धार्यस्थार्थस्य स्थान्य स्थान्य न्यान्य स्थान्य स्थान नुरत्नुर्न्तर्गशुर्यायय। नृष्ट्रम्हिन्त्यन्ने तर्ने म्रुन्ते सर्वन्यः इस्रशत्र्वात्रः नेव पुरायेषा याय हे प्रवादि र हो प्रति सक्त सान्य वर्गाःग्रम्। नमःर्देवेःश्रेशशास्त्रम् कुःवमःगोःगों नःश्रमःश्चरःश्चा त्रःशस्त्रम् गशुस्र शुग्राम हे द्र दिन क्रुन्य नयस ग्रीय से हिन् देग स्वाय द्र

हैट-दे-विद्देव-ग्री-त्यायाः क्षेत्रयाळे नयाविष्यायाः सुषा ग्रीट्-श्री-द्र्षीया सर्र्रात्रादिवाराञ्चवान्दर्यावाश्वराची सूरावार्ड चुरायर हिन्ची। सेससायविषानदे सूरानासामिनासार्दे नार्देसारेदे सेरान्सामुनासा ह्यार्डसायरासेत्। कें सूँव संदेगाहेव हे तु। मैंग्रायात्याद सहत सुरा स्राश्चित्रम्भाग्यत्। हित्र्र्त्रम् वित्रहित् हित्र हित् र्देर-वःधेवःचमा देःवस्रभः उद्देश्यसः श्रुःसः मृत्यः देश्रां वादःयः धरः क्रम्यानेत्रायाचेत्। नक्कात्यानेत्रानेत्रान्यानेत्राहेत्रात्राचेतिः वहेग्रायायायाये। न्यू न्यू विविध्वहेग्रायायायाः विवर्तेन न्वीया अन्यान्त्रायान्त्रीयायक्ष्या हिन्छी सर्वीय अन्यान्यायम् नत्वाया मया लीट्र के पार्ट्या स्था सुन्य सुन्य सुर्ये हिंदा ही या स्था सिट्र हिंदा हो साम स्था सिट्र हिंदा हो साम स्था न्दाविक्रावायशस्त्रम् न्त्रावरावस्य ने स्रावश्वात्रम् र्ने त्यारमार्था स्वेर सुर्था हेत् यो दार्था ने या सर्वे या स्वृत्ता श्रुरा श्रुरा श्री यो द्या श्चेत्रप्राष्ट्रित्र्राय्येव्येव्यव्ययम्यश्चेत्र हेत्यदेख्यस्य लेखाः ळग्रायदे हेत्य संह्ति त्याधित ग्वत् तु साम्योत्रायर यस्य साम्य नविवर्र्अईर्डि

होत्रर्ना सुर्या छेत्र स्थे हो निर्मे हो निर्मे हो निर्मे होत्र स्थे हो निर्मे हो निर

शेसशहिदःविगायोः दगारः विं श्रवः सः दंशः देदः ग्रीः रदः चित्रः वसरः यः विदः मालेगानक्षेत्रा क्षेपाइगाक्षाक्षात्राहिष्याप्राहिष्याप्राहिष्या ब्रेट्ट्रिट्ट्रिश्चित्राञ्चेत्रवित्रिक्षिण्याचे द्र्याप्ट्रियापट्टियापट र्नेर्न्स् न्द्रः न्द्रः न्विः याद्वः श्रीः क्षेट्रः नुः स्वः स्वर्गेवः से र्वेदः द्वयाः हुः सेदः स श्चार्यान्यर से वया विवा ध्वा विश्व हैर हैर हेर दे वह व की ध्वा कु दे हेर ५८.८मु.घ२.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे.वर्षे चल्वाराया नेदे श्रु वेद्र अविद्याराष्ट्र श्रुवारायादे हुँ वीरायळ्टा या श्वारागिते हुँ व्यर्भ दें द्वे स्वर्धे या त्वार्धे ग्रायने पाउदाद्वया हु या यःसिंद्

शुःद्रवः भ्रेष्ट्रवः वह्रवः यरः वत्वायः गर्भेषः वदेवय। । द्र्योः वः त्रुः भ्रेदः ग्रुः क्र्यक्रित्रं । अष्ट्रयावन्त्रवानन्त्री अःयाविःश्चें अःयीअःयुपाअःविदःशेःर्नेपाः नग्रम्। दिःस्वः ग्लीरः विति हैं न्त्रसः वित्रः वित्रः वित्रः द्वी । विते केवः वितः दुः द्वी वासः हे त्रज्ञानर नश्ची । के त्रन्य नहे न उत्तर् भुं नर निम । के दे सु र र दू सह्यान दे हार् पारी देवमासर्वेद में दिन नम्यासेन वाम स्थान हे यहिया महे महिया महिया स्थान है । मयार्थे श्वराहे पर्दे भूरावर्देन व्यास्त्रित पानर्देश प्यताप्यत पर्देश दे प्रवित पानेपारा । <u> न्वा नर्डे अ न जिंदा न्या नर हैं गुरु निवे अहल कुरु सर्वे द से दिन न्या ।</u> नर्हेत देवसमाद्रसम्ब्रम्स्रम् स्राम्यम्यम् स्वास्यम् मात्र्रदे स्रीतः वर्षाः स्वस्य स्वतः भ्रयाथ्व रेग्राया श्री । यर भ्रेयाये घ्या पक्षे ना धे म्वापित हिन्यर भे प्रमायमा दिव पके नया नुमया पार्वे अपने के या । भे र्वि:र्वेश्वान्त्रन्तिः येवाश्वान्त्रन्ति। । श्रेश्वश्वाः योद्याः श्रेदः वी द्वीयाः पुः र्वेग । तुःसुर्याः हेतः यदेः त्याः स्वाराः नेग । वे रः वे द्राः श्री दः श्रेग्राराः यः क्रवाशः निवा । धुवः। वटः हिसः स्वाशः वः सः क्रवाशः निवा । वाहेतः हेः टुः स्वाशः यासाळग्रानिम | क्रम्यासात्राचीरार्सम्यासास्यासात्रास्या उदानु पर्वे । नरमम् राये वा साम हिन्दा । नर्वे मार्थ परि वा साम हिना 

नु:बिन्यप्रके नवेन्स्य ने बुन्। । नु:बिन्छेन्। मुडमान्यप्रके नासेना । वस्र १८८ तरी विते के साहे दाये । भी स्रुस स्वा नस्य ग्रा से प्रा वि हिन्यमन्नायन्त्रसुण्यन्सेन्। हिन्यमः श्चिन्यसः श्चिन्यस्येन। श्चिः वाद्वाः है ब्रिटेगिन्व क्रेन्त्र । दिव उव इन्ये ब्रायन्ता । निर्वे र ये निर्वे न ये मेर्भात्रमित्रम् विवासा । यसामी नर्मा स्वर् सेयान नरा । वर्मे निर्दे यसासूर वेव प्रते से मा निर्मेण न से माने निर्मेण निर्मा विकाम में निर्मेण निर्मा निर्म लर.है.क्र्याचिवा.धे.वीवा.पषु.श्रम.है।व.वीश.खेटा लर.है.श्रम.विटाव.ही.च.हे.वीम.वीम.वपु.श्रम.हैद्रविट.टी. इस्र ने राग्नी में में में में प्राप्त में मान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त <del>इ</del>अप्य ठ्व'नु'ग्राययाननमङ्ग्रे'ने या येययान बुद व्ययस्य गी श्रेदाग्राच्या कुद कुद बद श्रेव्य हे के यद्या ग्रीः भ्रीताची भ्रीता खेरी देवी मुम्मवस्था सकेर वसे या नारे सभी मायो न भ्रीता या न सुरास न सम्मान सम्मान स्थाप के वित्र स देकिन्शोभाग्यम् देख्याम् विष्याचाम् वायम् व्यास्य विष्यान् विष्यान् विष्यान् विष्यान् विष्या विष्यान् विषयान् विषयान् विषयान् विषयान् विष्यान् विषयान् वि बेर्'र्गेव्'सर्केन्'ग्रुस'ग्रे'रेरेंने । । द्व'र्सेट'व्हेन्य प्यार्सेव'नि न्ययः वें स्त्री । न्यायवे वेट न् यहिन यवे ने न न वें व अर्थे व । अर्थे व वें वें न न्यगाः सेन्या मर्सेयानायने नस् । यात्रन्या रेन्या भेतः हेते यहे यासायसः भुन्यासुमिर्या विदेवायासुरावस्तिवेत्यस्याययानसूयानुमिर्या नर्जेन्द्रम्याय्द्रम्याय्द्रम्याय्द्रम्या । विद्रासकेन्याः



ठव नेर प्रिचेत्र नु पार्शिया । रे स्यापालव व से मेरे में मुपास है स में हिसा

वयर्दिन्'ग्रे'सु'गु'सु'सुरावकुरयामाकृत्यामाकृत्ये विषा ग्रुट्स्ये क्षेरयासुषा हु' सुषा विषेत्र विषये विषये स्था नु न्वुर न न नु अये न न नु । इस मर ने सम्बद्धे र ने में ने माये र ने स्वाप्त मान न स्र में भी र ने स्वाप्त स् मर्भाष्ट्रेता वित्र मात्र भारत केर प्रयोग ना ने भाष्ट्रिता यो न क्रीता स्थार मात्र भाष्ट्री **अन्याग्यन्यम्यम्यान्यः** ढ़ॴॱड़ऀॻऻॱॸॸॱॸॖॱॹ॒ॸॱॺॖॆॱॸढ़॓ॱॸॖऀॻऻॱॻऻॶॖॺॱॸॣॸॱॻऻढ़॓ॻऻॱॸॿॖॻऻॱॸॖऀॻऻॱॸॣॸॱय़ॕढ़॓ॱॠॸॺॱॶॱक़॓ॱढ़ॸॣॺॱॻॖऀॱॾॺॱ भूनर्भार्कर्मात्रुवात्र्माञ्ची विस्तृत्वासार्वे द्राप्तवासे द्राप्ती सुवार्मायो दे द्वे स्थिता विस्तृत्व विष्ता निर्देन् प्रदे के क्षे माइमामी अर्मेद में दिन न्यमा सेन न्यद केद मुक्ष सन्द दयन समाविद नुमने पाउद नु मिलेम्बराहे श्रुवामिले वाचेया देवे श्रुम्यामात्रमा श्रूमा प्यान्यमा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व येदेॱह्रयःयःउत्रःभ्रूरःयन्दःदर्येयःयःनवितःर्वेतःनेःयद्भावन्नःयार्थेनःन्दःव्यतःयःविषाःषीःश्चनयःशुःवेषाःकेत्ःग्चीः देग्रायाच्याद्रवादाईत्, दुर्याहे भ्रुया वर्डेयाध्वादियाची वियायर्डेट विटार्क्स यात्राययायायायाचे प्रवित् ह्रवाची केंग्रिया याया या या वहुं या व्याना वहुं या पाया वहुं या पाया यहुं या पाया यहुं या विश्व विश्व विश्व व <u> अरशः क्रुशः ग्रीः बिरः ग्रद्या सेर्परा नर्गेर् प्रसा नेता पा केर् मेर्यः केरा क्रिशक्त विरास प्राप्त पर्या प</u>र् नवे नुरुष्य मंत्रीय राजे न प्रति स्वार्थ से स्वार्थ में निर्मा प्रति मालके मालके प्रति मालके स्वार्थ से मालके स *चह*ःङ्क्षन् प्रदे स्थ्रमा खेद प्यतः के दे दे दे दे दे के सम्बद्धन्य । स्वत्या मिल्ला स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स यार हो र प्रमुख। द्रियाय पुष्य देसया वर सेंग्याय हो या भी न प्योव व या भी वर्षे दे से सम्मार से सम्माय हुं र से

बूट न सबद प्या कुष न सामित सुरा । शुर न सूत रा प्या के ति सा नेर्जिन र्वेन विनेत्र अहेर अळ्यया श्रुर्या वर्ग विनामियया नदे न उन् । मह्ने दे श्वेद से ने ते त्यु प्या । नह्य हे भ्रे न पे त प्रमा । नेष्वभार्मित्वस्य नन्मान्नाम्वन्ग्रीन्याम्बुसान्नावेषान्देर्सम्य गहेशःग्रेःकुः अर्ळेः इस्रशः र्धेग्रायाठेगः हुः नर्धेस्रयः प्रदेः स्रश्रः यहेतः वशा नन्ना पक्के नने नुसा है नर नावसा भारत पर्ने व सार्वे न नमा हु से न सर्वेदाविदा देवे के कुया नायि स्पर्दान कर्या या पार्टि स्वाप्त ५५-४-२ग-स्.भ्रेश-५। यवर-यार्ट्र-जी-र्या-यर्था-यर्था-स्-र-। ५५-स. ध्यान्दान्यस्यास्य निहेन्यदेन्द्रम्यस्य निवर्षस्य सम्मानु कुयानदे न'निव्र'र्'नश्रुव'रा'य'नहेव'व्याने'न'ठव'री'वेट'र्'देव'र्रे' केदे'यह्न यश्चेना यः केव रेवि रेनाश उव प्वर रेवि रेवि स्वा पुः क्षे नर गुर डेग क्रेअः अः वर्गाः पुःग्रा बुर्अः द्रा प्रेरः रेष्ट्रेतः द्राद्रः द्रिया अः यः सेदः यदेः ह्य हुन क्षेत्र क्षेत्र अपन्य वर्ष अपने अपने क्षेत्र अपने क्षेत्र क्षेत्र अपने क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र

ग्रीः सैंग्रायान्त्रायाः तुः सेन्यान्यान्याः हैं व्यायाः व्यायाः वित्यायाः वित्यायायः वित्यायायः वित्यायः वित्यायः वित्यायायः वित्यायः वित्यायः वित्यायायः वित्यायः वित्यायायः वित्यायः वित्यायः वित मेर्पायार्थेवायापार्धेवायापड्वे मुखावार्थ्याप्टरावड्यापावययाउद् सहेशासराग्रसान्याचेषापाळेत्राचित्रामायास्य । स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स शुर्रिया दे द्वर्यश्राश्चित्रहे स्थान निवत्र दुर्निट दुरु दुरु दुरु दुरु दे निवत्र दे निवत्र स्थान रे'यदर'यदयामुयाग्री'विर'र्यायग्रम्यासुरह्र'यद्युवाग्रीयार्वेग्यसेर्'र् नर्में ५ त्र महा कुन से समाद्यां में ५ त्या कुन सामा कि नामा समाद्या के नामा समाद्या के नामा समाद्या के नामा स शः ह्रेन्य रायर छेर प्रत्य कुर हेन र्या प्रदे विर रु हो रायर यह य नुग्रार्यार्य्याम्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रे विष्यायायाये न्याये हात्र्याया मे गर्डें 'र्नेर'अ'न्ग' पदे 'वेट'नु 'ध्रेत'त्र अ' से सस 'उत् 'बसस 'उन् 'ग्रे 'रट'रट' मी भ्रयाया है भ्रामाम निवाद है ता मह्माया महेता मुखाम भा नश्वारापदे प्रथा इसामर न्वापाय पर्वो न तुरामर कुर हेवा र्श्वे न स **য়८.२.वै८.२.५.८०.शै.४.२.६्याश्रास्य विश्वास्य प्रशास्य विश्व** वर्ते नदे देव दु कुष नदे वे वयर नदे स्वा ह में न सर कुर है ग वस विगाके थे पर्नु हो न गहिन न न । पर्विन केंग्रा का अर्के अ न क्रेन न वि रेदि न्यगासेन्। सिगामी यसान् ग्रामाययान्य सर्वेतः शुरान्य। । न्नान्य स्वेतः हेश नन्ना कुन्नार नम र्नेन । नम देवे श्वर न नम नम सुम सामा मुयाश्रयानमुद्राभ्रेयायार्वेराययानसूत्राहे। । नदे नाउत्रु भ्रेयात्रया

श्चर्यायाधिया । यान्याविनायी तर्यो नार्देन शुरु हैय । ने सु नु दे में त्यम सर्क्रेया'स'र्ह्रेय'मदे'र्स्ट्रेरेप्य सम्भाग्य प्रमानिक्ष्य प्रमानिक्ष्य प्रमानिक्ष्य प्रमानिक्ष्य प्रमानिक्ष हैंग्रायायार्थेयापाद्याययापाद्यार्थेयायाह्यायराद्यायाङ्ग्रीयायाह्याया हेव-११ कृषा वितासर शुर देवा हेव दे । प्यास विवास के वितास वि मुन्दर्भे वर्षायरम् सुर्रे वेष दे सुर्वे पात्र भूवर्भवर्भावर्भावर् डेग क्रुं न वस्र र उत् र होत्य सम्बद्ध न वा त्य क्षेत्र से से न स्म समिति है बर्पिते : वित्र मुक्ते : विद्या वित्र प्रति । विद्या वित्र व नर्डे अ'युन्दन्य'ग्री अ'योग्यायम्'ग्रासुन्य'पदि'र्के अ'युन्य'न'य'म्न'हु' वुरावा बेरायरा कुरा हेवा रवा तुः बुरावदे के वा प्यार हे या सूरा स्रार्थे या ग्रारा यार्वे यायराळुवाविययाग्री सुराये यवराष्ट्रीतायरायहरायवे क्वेंत्रयाग्री कुनकेन में नहे रामन्त्रे क्षित्र के त्विन राम हिन्तु म्यून केन नावन पर भ्रे जान्यस्य उत्तर्त्र गृत्वस्य देव से दिस्य प्राप्त म्याप्त म्याप्त म्याप्त स्थापित स्थापित क्षानानित्रान्तित्त्र्त्रकुत्त्वरास्त्रम् स्त्रेत्रामेत्रे प्यानार्के राह्मस्राराणीः ळेग्। ५८ : ६व : सासुराया से निहे ५ : यर विहे व : यदे : या तुर्यासुव : सुरा क्रियाश्वास्य म्यास्य स्टाप्तेन स्टा क्रूॅंवर्यायार्वेषायायात्रेर्ययेर्श्वेषयायात्र्यायम्प्राप्याचेषायम् शुर्वे

ग्वर थर भ्रे नाम्रस्य उद्दर्द प्रमाय प्रमाय विष्टि । वहें त. मी. क्रें . इससा प्राप्त निवे से माला क्रें माना प्राप्त क्रें त समान हैं वसुवान्ती खुवाने यायाया स्वायायाये स्वायायायाया स्वया स्वायाया ८८.शु.पर्यकायम् क्रीम. यावयःलटःश्री.यःवश्रश्चरः री.धिटः रूपी. धरःशुरःडेम गुवःवयःहेवःबेंद्यःधरःद्दःह्यःधरः गुदःवदेः ळः वयः धः विराधानाम्मस्य दे द्वानानिवान् साम्य विष्य स्वानिवानिकार्यः वार्यायाः विवासम्युम् हेवा साहेवाराया द्रात्या सम्हेवा साद्रा हे विस त्री:तसस्य:प्रःश्लेस:स्या:प्रःस:एस्याः प्रःस्यः विकार्यः विकार्यः विकार्यः स्वास्थाः स्वास्थाः स्वास्थाः स्वास् व्यास्य स्थान विषय स्थान स क्रिंगार्ने त'त्य'गा हुगा य'यं से न्यं र त्रह्णा'यदे 'ले य'रन' वन'यं र विन'यर' शुर्रित अर्देर्त्रत्वयानदेः नेशर्मा शुः र्र्भुवः वस्रश्राउदादाः व्यानदेः नेयार्या श्रीया गुरुरार्या श्री किया देवा वहीताया याव्या याव्या यावे र्शेन्याहे नद्वायद्वायद्वायदे न्वाया मुन्या ने स्थाय के स्वार के स न'नारुष'न'सुर्-न'स्त्र स्त्र में स्त्र में स्त्र स ८८.ज्या श्रु:ळऱ्या कॅट्रयाद्या अविश्वायाश्री प्राप्ते प्रवेश्ये प्राप्ते व नवे ग्राह्म स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वीत्र स्वार्थ स् रायास्राप्तरायदे यार्ने या तुन्य प्राचित प्राच प्राचित प्राच प्राचित प्राचित प्राचित प्राचित प्राचित प्राचित प्राचित प्राचित प्राचित प बस्रशंडिं न्या के स्वार्थ के स्वा कुनःशेस्रशः न्यतेः श्रुं नःयः क्वनशः सें के त्यः श्रुं नः खुना केनः वुसः यदे नशसः मः वस्र राज्य निष्णा विष्णा वि नुरः कुनः से सराद्यादेः र्से दःया बसरा उदः ग्री सबरः से दःया हे न द्वंदः सुदः रशम्बेगश्रान्तरासुगाः कृत्रम् सुरान्तरा ग्वितायरा क्री नावस्या स्तरा व्याग्नरः कुनः येययः न्यदेः श्रुँ नः यः वययः उनः ग्रीः यवनः येवः यः हेः नद्वः ग्रम्यायि विष्युम्य विष्युम् विष्युम् विष्युम् विष्युम् विष्युम्य विषयि विषय नर्हेन्'द्रमुक्ष'ग्रेक्ष'ग्रुर'कुन'ग्रे'र्बेन्'य'र्षेट्रक्ष'स्य सु'हेन्वर्ष'यर'ग्रेन्'य' केवे न हैं व व नुष्य भे भें व य नुष्य केव केव में नहे या य यह य से प्रमुग्नि । मुलारी क्षुत्र सुरा कुरा क्षे ता वस्य उदा दु मुदा सदी नर कदा खुर्अ। ५८: श्रेस्रश्रः ग्री: ४८: वस्य १४: ४८: वस्य १४: वि. १४:

र्श्वेर्यायार्वयाग्रीयायुर्यात्वायीत्राम्यायीत्राम्यान्त्राम्यात्वात्राम्यात्र्यात्राम्यात्र्यात्राम्यात्र्या व्यायायदे प्रमानेवायायाञ्चर प्रदे क्या से स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप यर भ्रे नामस्य राउदाद है भूर वर्दे दारा निव के समर भ्रेव पाया सक्त वशः र्रेक्षियायार्थ्या मुक्षायायायाया विष्यत्र । यद्वीयायायाया । वेत्रव्यामाकुषानाके त्यमा हु सेत्या क्षृत्य स्थून के वे नम् कत् वर्चूट-५-११-व-४० व्याप्त विष्या हि.से ५-४-४ विषय विष्या दिने व वर्षानार्टा हे माशुः सष्ठ्वायदे सुदे सूटानार्ना हुनसूवाया सर्वेटा विटा अर्वेदायावना हु के दे नर्तु नार्वेदायाया सुर्याया है। नर्ते नर्त्तुर हेन ग्राम्भेरायन्त्राचान्द्रावळं स्राध्यास्य सुदि स्रूटाचानसूत्राची त्याचे । कें न्यम् कुः सेन्य प्षेत्र यम् में लेश्य त्रा नर्डेश्या साथित यदे न्य प नहत्रीं भ्रेशिक्षिक्षित्। देवे अधुष्य नहेत्रत्रा भ्रेष्ट्री न प्रमाण कर् न्यमासेन् ग्रीसान्मे प्रते प्रते सम्बन्धा महेन् प्रति साम्या स्वाया नरः शुरु देवा वावव प्यटः भ्रे ना वस्य अ उत् नु वहेवा हेव न्य वहेवा हेव यशयन्यासदे पेंत्र न्त्र वस्य राउन ग्री इन्य वेवा स केत सेंदि न्वो नदे निनेशमित्रेव सळव हिन्न म्यूव स्था अहेश निवेद नु हे श शु वहें व सर शुर्रिया हेशाशुरव बुद्रावदे छे तथा प्राप्ति विश्व विश्  शुर्रिया बे अहेशाया अद्भाद हिया रहेशा थटा बे अवायर शुर्रि हिया दियो प्रदेश निनेयामित्रेवाम्ययाम्ययाम् इयास्याम्यस्य प्राच्या नः बेद्रायाः वर्दे समायाः गुरुषे व दे द्वार्याः गुरिद्वा वसमायाः व दे द्वार्याः गुरिद्वा वसमायाः व दे द्वार्याः निवत्रिन्तिर्त्तु कुत्रव्या सूनायया सम्मित्र सम् होत् वुयायम शुर डेग अ'न्गे'नदे'नलेश'गहेन'न्र सेग'मदे'र्गेगशरेंदे'न्नर'नुः भून' ठेग्'र्डस'यर से'रर्मे नर गुर ठेग क्रें'रा त्रसम्य उर् र्'र्'यम राज्य स धीर्केश्यवेर्द्राप्त्रा देशविद्द्राप्ता व्राक्ष्यक्री सेस्याद्दा क्ष न इसाधर न्वाया सम्बद्धा ना मिंदा नुः कुत्त स्था है या ना से ना से हिंदा ना धिन् ग्री क्षे व्यान्नो नदे ह न हे खेन् के न ज्या व्याप्त व्यापत व्या ८८ श्रीत क्षेत्र मुक्ष प्रमान्य प्राप्ति विदेश क्रुम श्रीम हि

है : श्रेन् । तुर्या अर्के निर्वे अर्के निर्वे । विद्या निर्वे अर्थे निर्वे । विद्या निर्वे ।

बेद्रासर्गेव्स्या विश्वयान्यः सर्वेद्राव्यापके निष्या निष्या विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विष्य विश्वास्त विश्वास विष्य विश्वास विश्वास विष्य विश्वास विष बेर्-रेगावहें वर्षु र-र्-रेंव पर-र्वेग । के र्यश्रामुव कु के र्यमा बेर्-य धेया विवासकैवानिनेयाविवन्दियासुः सहन् प्रदेशसूत्रा विवासका नश्र्वार्यायाये व्यया । अन् उत्तर्या गुरुरेग । शेस्रश्रास्त्राध्यायरार्देरात्रश्रास्टार्देताया । रेप्तिः र्ह्वातेष्त्रा यर से भ्रे विरा गिवर रें व भ्रून परे खुयाया स से र रापे वि विराया यायश्चरायावन देव सूर येव विवा । वन्या वी सेट र स वहें न न न न मश्राग्रम्। भ्रिवारविष्यश्राग्रीविष्यश्राम्यस्य स्वर्यात्राम्। चदुःर्भयःर्भराद्भ्रिं स्तुर्भ्य । विवासिक्वा नर्ग्रिं सदि वेसः भ्रम्यः दहेवाः गुर्रेग । कुष्रत्रेश्वराग्री ह्या वर्षे व्याप्तराष्ट्रिया वर्षा विया । यर्कें वर्षा राज्या नशःक्रियःश्रशःश्रुद्रिः प्रदेश्वोग्या । शःश्रशः विःविदः श्रश्रुवः पदेः स्वायः स्वरः गुन्ना वित्यान्यस्यस्य राज्यस्य श्री सर्वेन । भूगवित्तर्म वित्र रार्दिन्द्रमण्येत्। । श्रीःस्राय्यस्यात् ग्रुट्रम्याय्यस्यात् श्रुवःस्राः यां विषया । यदे या नेवा शत्वें र यह शाहे द र द वे या शे यह यह । यदे द मश्रीत्रायसायि प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति । ३ मामाप्ता पावतापराव हार्शे प्राप्ति । त्रश्च स्वरायम् वित्रा

च्या स्त्रा स्त्री त्र अंत्र स्वर्गा त्र स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वरंग स्



र्शेन|अ:हो=,८च्चे|अ:क्|८.। ज्यूट.२.चक्|८:वःक्ष्य:क्|अ:बच|वःकःदेःक्ष्य:श्रे:८च्चे|श्र| लट:प्रटःक्षेट.सूट्यु:श्र *য়ৢ*য়য়৽য়ৢঢ়ৼ৾ঀঢ়য়য়৽ঢ়য়৾৽য়য়ৣঢ়ড়৾। ऄॱঢ়ঀয়ৼ৾ড়ঀ৽য়৾য়য়ৢয়ড়ঢ়ঢ়ৼঢ়ঀ৾য়য়য়য়ঢ় য়৾য়ৢ৾ৼৼৄ৾*৽*৾ড়৾য়ৼ৾ঀ৾৽য়ৣ৾৾৽য়য়৽ঀ৾য়ৼ৸ৼৼৼয়ৼয়ৼয়ৢ৸ড়য়ৼয়৽য়য়৽৸য়য়৸ড়য়ৼ৸ড়য়য়৸ড়য়য়৸ড়য়ৼ৽ त्रसेट्र्यं स्ट्राप्तरस्य विष्या स्ट्रेंद्राय क्षुत्र संस्था स्ट्राप्त स्ट्रेंप्त स्ट्राप्त स्ट्र 'दृर'न'यदेवे, प्रवे मनमासु सुरूप विवादरा रुपो माहेद नगुर देव दु से पहिर नर गुत्र र्से राह्म प्रवामी से ढ़ॺॱढ़य़॔ॱॸॺॱॺख़ॕॺॺॱॺॗॗॱॸॱॸॱॺॱॸढ़ॆढ़ॱढ़ॺॱॻऻऄढ़ॱय़ॕॱख़ॱॸॻऻॱख़ॻऻॺॱॾॖॎॸॖॱय़ॸॱढ़ढ़ॱढ़ॎॾॕॻऻॱढ़ॖॺॱय़ॺऻॎॱ॔ऄॸॱक़ॗॗ॓ॱॸॱ र्नेत्रः भेन्यन्य त्रुर्व्यात् स्त्रुर्वे प्रत्याचे प्रत्ये क्षित्रः क्षेत्रः स्त्रुप्त स्त्रः स्त्रुप्त स्त्र म्बर्यायस्य न्याये न्याया मारामी भ्रम्य अस्य स्थाय भ्रम्य मार्थ प्रस्तिमा अस्य स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स देरःर्ह्मेशः वर्षाः पर्वितः स्वायः स्वेष्टः स्वेषः स्वायः स्वेष्टः स्वयः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स सेन्यमः स्नुनःवः प्यमः विदेवः यार्वेन् न्यवासेन् ग्रीः विवासहयानः नम्यासुनः स्वास्यः स्वासः स्वास्यः विदेवे स् য়ৢ৴৻৴য়৾৵৻ঀ৾৵৻৴য়৻৸৻য়য়৵৻য়ৢ৾৻ঀড়৻ড়য়৻ৼ৾য়৸৾৾৾ঢ়ঢ়৻ড়৾য়৻য়য়য়৻ড়৴৻য়ঢ়ৢয়৻৸৻য়ৣ৾৾৻৸য়ৼ৾য়৻য়ৣ৾৾৻য়ৢড়৻য়ড়৾য়৻য়ৣ৾৻ विवायमा क्षेतायमे भ्रेमा उदानरं प्रचमायकं मान्या क्षेत्र मान्या । यानर्से यायकं मान्या पर्या पर्या हे या । सुस्य क्तुन् स्रेतः स्रेन् स्याप्त स्याप्ते । विषानस्यायान हिन्सहन् सानविष्टान्यान्त्रायास्य सरी सर्वायास्य स्राप्ते ॻॖॸॱय़ॖॖॻऻॱऄ॓ढ़ॱख़ॱॿ॓ॸॺॱय़ॱढ़ॊॻऻॱॻऻढ़ॸॱॸॱॸॆॻऻॺॱढ़ॊॺॱॸऻॴढ़ढ़ॱॻऻढ़ॱख़ॱॻऻऄ॔ख़ॱॸॱढ़ॸॆॸॺॱऄॕऻॎ

 

## नम्दिश्चेंद्रायमा

्राच्या । वर दें तहार ह्या यो वार्ष वा वरे वर्ष वह वार्ष ह्या था हो । न्ययः र्वे त्राचा वार्थे गुः सुः स्ट्रिष्ण नुष्णा सुष्राया सुष्राया ने या ने य कैंशन्दरकेंग्रायन्य वा विद्यान्दरस्य विद्यान्य स्थान विद्यान्य स्थान विद्यान व नुरःकुनःक्षेरःरेविःनरःरुःक्षुनर्यःशुःसक्षे। । यदैःश्चेःनरःदैवेःयहेग्यायाययः नश्चतार्गाम्या । हेर्रान्गवादियाः सम्भानवे हेर्या न न स्थानवे हेर्या । विष्टेर श्चित्रस्यायद्यायदिः स्रव्याधितः प्रथा वित्रसेत्र स्टेतिः द्यात्रस्यः गणेर नम् । र्ने व के व श्वेर में वेव सम् हिव ही श क्रें नशा । वर्श सं वहाय व्रेव क्री शः क्रें नशा | गा बुद प्रहें व क्र क्र कें गायबुव प्रवेश केंद्र हिस हु। । क्रे याद्रद्रात्र विद्रात्र विद्रात्य विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद क्रियायायदी । यावर यार्डेर सूया यस्या वे यर हो व हो या है यथा । यारे या धर्मिक्षर्भार्यदेख्याभ्रेयान्त्रीयानुस्यान्त्रुया । विद्यायानुद हेदे-न्य-में अर्देन-नुम् । न्यायाश्वस्य स्वित्यी सन्दर्भेया या हेन् सदे के। शि.रमेदेःविष्यः श्रूरः वे नरः चैत्रः चैत्रः श्रूनशा श्रूतः प्रशः मेर् देवः रेअ:ग्रेंशनर्ह्मेना हु:सेन्। निहेत्रह्मस्य निर्देत्र नु:रे निरे रे विन कन्। निर

हेर्डि: ग्रुमिर्वेषासेर्गुरायदेखें। ब्रिसंदेग्वर्मात्स्यारम् । ब्रिसंदेग्वर्मात्स्यारम् । ग्रीशः र्हेनमा । शेरःश्रूशः नश्माशः प्रदेश अस्तिरः शुष्पः नुः स्तिरः गर्रः चरे महेव र्राचाहव ज्ञाय ज्ञा । १९४१ र दे मावश शु माठे मा स्र वर्त्ते.यदुःक्षे । र्यादःश्चेदिःयारेरशः र्टरःक्षेत्रःसरः ग्रीतःश्चेशः श्चेत्रश्च। । शःकुः ये कुट वर्गुट न देय ग्रीय विया । त्युय ग्री क्रेंनय के दिराव श्रूप युप्त स्थान नहेश | र्हेन्यस्य न्त्रवाय नहेवाय न्य सुप्तित्वेत प्रते स्वे । न्वे सेसय क्रॅनर्थः खेर क्रें नर चेर चेरा क्रेंन्य। विदेशया सुरादिय सुरासे क्रेंन्य हिन्यरः तु । श्चेयाः कुः तुः नः समयः यद्वेरः श्वरः न्या । यदः नवेव नकुनः दुवे नर्वेद सावग्यायाया से के विके से दाग्याद्या सामें ग्राया से निया से मानिस ग्रीयार्स्स्यया । सुरावस्ययास्यानेयात्रेयायरार्स्स्यायात् । श्रिप्तत्वायासुन कर्याहेशःसूरःस्याशःमःविस्या । सरःसे त्यरः तर्दे सूरः यः तरः तर्दे हे । इवःलेशःल्याशःइयाःश्चेःचरःद्वेवःद्येशःर्ह्वेचश्च । श्वरःसकेदःर्वेचःयाशुसः र्श्वासी अर्धिया । मिर्द्धा अवास्त्राधियावर्षे । विद्या वर्षाक्षेरायरहें वाषायवे द्वायावर्षेरा श्रीषा । यरारे यरा वीषायरा व्रेव्रक्तिशः क्रेंत्रमा विराधिता वस्य उत् क्षेत्र पर विसाय स्या । गुवाहिनाः र्श्वेरायागुरावे श्वेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रेराग्रे द्रिन्याययः सः तुः दर्सेन् सरः ही व सी यः है नया । क्रेंन् नि वे दे त्या सु स्वा भी । हेशपर्मे नित्र । व्हर्भपरियोधिमारे में राउदानत्मा । भूदासे भारते ।

क्रॅंट श्रुर नवे प्ये के राष्ट्रा विश्व विश्व के सम्बद्ध मान्य होता हो स र्केनमा । दे प्यमायदमा के प्रके प्रदे पेंद्र ग्रम्य ग्री। । क्रुट से समार्थ यशः सळ्तु द्रोदे द्रायायनम् । नम्द्रे विद्रशः श्रुदः ह्रे न्या शर्वः श्रुमः निवेद्यान्या । श्रुप्यदे हिरावहें नियाया सम् हिन् होया । वाया हे वर्षा ग्रीरा नर दें ग्रुन शुरु द्या विश्ववाद नहमारा प्रशासी विश्व वर दें प्यी । वकरन्तरः होत्रः हो अः क्वें नशा विद्युद्धः नः वें वा निवें दि व गशुम्रा । संदेश ह्याश इसश श्रु कें याश ११ में १ में १ वर या सर न नश्चर्नाविः इया वर्धेराग्रेश । इया द्या विटा दुः श्चे नराग्ने वा ग्वे यानवःश्रुं नःरेगाःमःवहेवःमवेःहेवःसर्वेगायाया । कंद्रशःश्रुं नःनसूनःगशुराः थ्व पर्व खुरा न बुर श्रे । दिया गहिरा यया ग्री हिंग या या यह र श्रिव वर्षा |भुगशुअ:शुर:५:वैन:धर:वैन:ग्रीअ:र्सेनश||

सतु.क्चित्व, सूर्यं क्चिर्यू । ॥

ब्रिश्चर सूर्यं क्चिर्यं क्चिरं क्चिर्यं क्चिर्यं क्चिर्यं क्चिर्यं क्चिरं क

## वर्ने वर्षे वर्ग वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे

२० विर्म् वर्ष्य मर्के न्या मुस्य सम्बन्ध समित्र सम्बन्ध समित्र समित वर्त्रवर्द्धुः यत्। ब्रॅ. युः चुः सः भुङ्कः यक्षः अङ्गः युः चुः सः भुङ्के १ हेन् रापः १ न्यः गुरा क्रूंट मदे दट वका के वका देव में के दे क्रूंट प्यटका निरक्त के त इस्रार्शी वर्त्ता अर्तिन्त्रिष्ठा त्राय्या श्रुट्ति वर्षे द्वार्ष्य स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्व वर्देन खें त्र इस्र अन्दर्भ निर विषय अन्य सेन प्रायम सेन प्रवेशन ने प्रायम यर उर न क्रेन पर गुरा के जिलागा रे सावि यह क्रिक्ष क्रिन स्व क्रिक्ष क्रिन स्व क्रिक्ष क्रिन स्व क्रिक्ष क्रिक क्र. स्रेक्ट्रे. सर. में दी वय. वश्वा क्र. स्रेक्ट्रें। वय. वश्वा के इस अ. तथ. चीय. सपु. वर्देराधेवाइस्रयाव्यायासहेयाया सुसूवाया देवियाया देखर्राया रेगा गुःवह्र अपा वर्दे दः पवे व्येव प्रवास्य स्वाप्त विष्य स्वापित मुन्त्रमुन्त्रभुन्ति गश्या औँ कु पानह अक्षु निम्न नह अक्षु गड्डे नह अक्षु राज्य नह प्रकृष्ट्व अञ्चन न अक्षु विन्द्रवान विनय येवाय भिन्दि स्वा र्धेग्रथः नुभः गुवःवः ग्राञ्ज्यायः सर्वेगः हेः सर्वेशः स्वा । स्वारः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर यसःस्वायाक्षेक्षेत्रः प्रवेषः के व्यवस्थावेषावावश्चराः भ्राया व्यवस्था व्यवस्या व्यवस्था व्यवस्यस्य व्यवस्यस्य व्यवस्यस्य व्यवस्यस्यस्यस्य व्यवस्यस्यस्यस्यस निरम्भासे द्वारा मित्र विष्य के निरम्भा निरम्भ यास्ते स्राप्तास्तास्ता का नाहा स्राह्म के ख्रिक्ष्य द्वा या प्राप्त स्वानेत

न्द्राया वित्राप्ति। वित्राप्त्रायी निर्देश्य वित्रा वित्र ग्री:क्षेत्राक्षु:वर्षकाग्री विषेत्राक्षेत्रः भेत्र मुत्रः भेत्र विष्टिः स्त्रः भेत्र विष्टिः स्त्रः भेत्र विष्टिः स्त्रः भेत्र रुनेङ्कार्यायायायार्यासे सुर्रायायायार्या से सुर्या स्वार्या स्वाया स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वाया स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या हो ८ इसमा । समा हिमा हे ता हो । सुरा है १ वर्ष या हो। । यह सा से ८ स न्तरः कुनः विना । विष्युः नुः ने क्वार्यः व्यार्थः व्याय्यः व्यार्थः व्यार्थः व्यार्थः व्यार्थः व्यार्थः व्यार्थः व्याय्यः व्यायः व्याय्यः व्यायः व्यायः व्याय्यः व्याय्यः व्याय्यः व्याय्यः व्याय्यः व्य गूर्मान्। वित्र स्राहे ने प्रार्द्ध हिंग्या नुयान्य ने से निराम हिंग्या निराम निराम है। खुर्या से सर्या नहरूर ने दुर्ग से सिक्त में निक्त में नि वरायत्यामी। विवेशानिरात्वाभेरामुरास्त्राम्याम्याम्या यर् इस स्यायायास्र से स्यार राया स्याप्त हा नि हि ते खू खूँ । स्याप्त या स्याप्त स्याप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप रुषःगुवःवःवह्राः अहेवःविवः कवाराः भवे। निवाः ग्रवेः विदः सरः सुराः स्रम्भा विस्त्रम्भा विस्त्रम्भा विस्त्रम्भा विस्त्रम्भा विस्तर्भा निरम्भाग्रेन् गुरम्भाग्याम् निष्या । भाग्याम् निष्याम् नि स्र-स्रुक्त-नई अंक्ष्रुं। वसराउन द्यासित सहिन निवन न्। विन्य र्श्वेद्रास्त्र अद्रास्त्र अव्या हिंद्रास्त्र अद्रायके अद्रायम् । स्टान्न द्रा वे श्वें न प्रमः विवा । यन्या उया श्वे व प्रये यन्या से इस्य श्वे (वहेयाहेव वहे वस पहेनाहेन'सर्सेयानुः श्रेन'सदे सेसमाउन्हें प्यमायन्मामाइसमाश्रीः) **सेना ने 'धुत्य'नु'ना तुनामा**  स्व शुर्या के वार्या मार्या स्वति स्वयः पुर्या स्वयः सुर्या स्वयः स्व-श्रुयार्क्षेषार्या ध्रेते प्राया नु रेते प्राया स्वया स् ळग्रासालेवासदेः क्रीं व्यावगासेन् ग्री पर्नेन् प्रांता क्राया स्थाया वेद्रारा र्श्वे द्रायदे अवायाद्या स्वाय यर्ने त्ये स्त्र स्त्र मित्र प्रति देव देव स्तर स्त्र मित्र स्त्र मित्र स्त्र मित्र स्त्र मित्र स्त्र मित्र स्तर स्त्र मित्र स्त्र स नः इस्रयः ग्रीयः सन्ध्रायः नदी । भ्री नेदिः स्विन्यः इस्रयः श्रीवः नयः मैं यः ग्रीयः ग्रीयः ठेग के वन्या के वन्या के वन्या न्या वित्र वित्र । वित् शुन्यसेन्यस्था । भ्रान्यस्थापिते स्थारीया श्री । के प्रम्यास्य मुर्अासुर विवा पिद्धा प्रदेश मुर्शिया विवास विवा र्वेश्वरादी । श्रेन्यदेय ह्रीयश्चरा हुन्य। विनेवा विनेवा ।

# ग्नित्रसदिः केन्-न्-नर्भे नदे वर्नेन् भेत्र की कें ग्

७७। । ष्र. पहा. त. प्रा. हूँ। ष्र. प्रुड : हुं त पहा अञ्च : स्यूड : में हुं । मङ्गान्दान्त्रः वाद्यान्यः वी केटान् द्वां प्रथाने हे दे दे वी या यह वादाने । लूटशःश्रीचीरात्राज्यश्राकुःतर्शाह्राह्राह्राह्रात्राज्यात्रीं अर्ट्यार्यात्राच्याः युगागिहेशःग्रेशः हें हे दरहेणः तुः वहें तः या उतः तुः ग्रुम् के वहं सातृः सानूः रे.सं.र.भक्कें,र्य विश्वां हे.के.दें.वैये हे.हं.शुक्रा हे.हं.हं.शुक्रा हे.हं.हं. र्हें हे ने नविव ग्लेग्याया गुवा हिंहे न स्था गुवा हु गवा । धुगा पळा थ र्हे हे सेसस्य नियय । सि नह प्या है। हैं नह स्यान ये नियं निर्म स्वा लू.ये.वे.स.विचेश्वच धर्षे.ये.वे.स.विचेश्वे। ह्रेंट.स.धेट.टे.वीची ह्रेंट.सप्ट. ८८.जश्र.ब्रू.जश्र.द्रेव.मू.कुप्त.ब्रूट.लटश.कुट.म्.कु.क.च.स्मश्र.मु.वट.री. ग बुग रु. न बर. न वि. कु. कुर न वि. वि. स. मा के स्थान के मा चि. वह स. मा उर्वारावरात्युम् अँ अक्षतेरात्वुम् युः मत्तुः मत्तुः मत्तुः मत्तुः मत्त्रः अप्तान्य । र्ने। यह अर्र हामी कुरायही अन्नियही महे यही रायायही अने नई खुःहुँ। वयः वर्षः रेन् मुः ध्वः प्रवेः प्रेनः वर्षे गः या। विग्राश्वः सुरः वरे वेः

कुषानाश्रमानवसाय। । १८ मसास्यानसायर्थे नायरे ५ मागुरा । यर्के र थ्व हिर वहेव वर्षाय श्रें र पर विग । यह वै भे हे खू हैं। य रेंग र हिनस येग्रया भेर दें दा क्रुव भेर ख्वा भिर्मिय र त्या गुव वय ग्वी व्याय अर्के गरि वन्यान्तराकुनार्वेनायमार्वेन । व्यान्यन्यन्त्राम्यान्यन्यन्तर्भाने । हैं। द्विम्यान्याम्यान्ययाचेनान्याचेनायवे। व्यिनान्नावीनार्येनासूना ठे' सके रापा । सिं रार्हे रार्हे राद्य राष्ट्राया सुरद्याया । प्रविशासी यार्हे वन्यानुमाकुनार्वेनायमार्वेन । व्यानिहायहार्याक्षामुमाना निहास्य हिर्मा र्रे किया हो न ही । ब्रिया क्रिया के प्यन्या थुए पर है। प्रत्या । प्रत्या । प्रत्या । प्रत्या । प्रत्या । वर्षान्तरःक्रमः व्याप्तरः विवा । क्षे निष्ट्रं स्वत्या वे वा माना विवास । विवास विवास । विवास । विवास । विवास । हैं। द्विग्रभःत्रभःगुरुष्रभःर्रःद्रान्यद्वर्ष्यःभवे। । सुर्यःश्रेयसःस्रभः होतः र्रासक्याक्षियाम्। सिर्मार्स्य अक्षेत्राक्ष्याम्य विषया नेवाक्षेय्यम् अनुमक्ष्यार्षेव्यार्थमः नेवा । भैं वह अनुम् अग्रम्याम् ग्राम्य वत्यात्रा । निवेश विवाक्ते विद्या ग्रीत । विवास श्रुक्, गाम्म गा क नहीं सु के ने हैं। वस्र रहन दस समिते सहिन निवेद है।

बर्मे निर्मे नि

न्गॅ्र अर्केग नेव केव न्यय विट न्। । न्ग्रेव अर्केग नेव केव यश हुरःग । नुर्गेव सर्वेवा देव केव रेंद्र हेर हो। । देव केव होर न इस द्वा मा विक्रम्या मान्या निर्मा यम। वि.य.मुर्गाहरायरायम। विराक्ष्यायराकरामेरायदे त्यम। विमा धरः मैंयानवे यस द्याया । यहेत त्र अधिया भग्ने हुँ द्व या । वसवाया मित्रियसान्त्रम् मित्रा । क्षि मह्ने सह्ने सह्ने मह्ने सह्ने सह्ने सह्ने सह्ने सह्ने सह रतेरङ्गरायने भुद्रे। र्वेड्रायायहायाये द्वैषत्। यद्वादन्या ग्रीयाया में राष्ट्रम् । श्रेन्याशुस्रः देशस्यासामें सामित्रा । श्रेन्यते यह त्यसा हुन्य। ग्रङ्क सुद्वा कें व्यन्य ग्री ह्र संभित्र प्राप्त स्थापी स्थाप नियाप प्राप्त हो र से प्राप्त है स र्यतःश्ची वाद्यात्र अर्थे दिने वित्र हे क्रुश दे त्यावयायते ग्रह्म सेस्य क्रिटा सम्मा ग्रीया के सम्मान मुना

५ अर्च क्रिक् क्रिक्ट कर क्रिक्ट अरम क्रिक्ट हैं क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र बुगम्बुरक्षम्बर्गकेरवाकेरवा केरिया केरिया प्राप्त मुन्य केरिया स्ट्रिया वर् नदे क्रिंच म सेन्। किंगन्य वर् नदे नवे न सेन्। । नवे वर्त वर्ष नदे र्बेन् सेन्द्री स्वायान्य प्रमायान्य प्रमायान्य स्वायान्य स्वर्षाः विष्णा स्वरं स्वर चमा नन्नानीमार्केना न्यानिमार्य देश महामानिमार के मान्य निमानिमार के न यर्गेत्रेरें भेश । यदयः कुरायह्र पाया यळ्तर के। । यादः धेर प्तर रेंदः क्षुर्या । शेस्र राष्ट्रम् वित्र स्त्रीया । वित्र वित्र या ने या स्तरिः র্ক্রমার-বিষ্যার্থা ক্রিয়া ক্রিয়ার-রের ক্রিয়ার্থার বিষ্যার বিষয়া বি <u> ब्रह्म क्रिया मुस्रम ग्रह्म स्थाय मित्र । क्रिया मुह्म स्था मिस्रम है ।</u> येर्भुरान्यसायया । भिःसासर्या कुराह्यस्य ग्रीयदी । स्वाय ग्री दीतः क्रुनर्भाषाः अळवः के। । वादः श्रीतः अळअर्था से दः श्रूदः नः पी। । श्रेस्रशः उतः श्रुः सूर-प्यर-वर्ने न उत्र-तुन्न नेवाय स्यर-शुर्व अत्र-तुन्न हो हु सुन्न मुयानदे न्रीयायर्दे रावबदावेदान्यायान ने । पर्दे न्याया वेदा पुरा है या यशः भ्रेश । श्रूरः नः अवदः प्यशः क्रुयः नदेः अर्देनः श्रुयः नु। । शुरः नभ्रूनः धरः यरकें वर्षाने मर्जेन र्वेग।

# महाकेत्र क्लें महाराकें भाक्त्र क्लें महाराजे साम्यान

ॐ। विश्व स्थान विश्व स्थान विश्व स्थान विश्व स्थान स्

ररकिर्ञुवरस्यावविषयासुःवास्यावाधी । श्रुवासागदिःदेर्गुसः शुन् इत्यादर्दि पदियाद्व त्याचल्याया या । भी नई अर्थ का मुह मु.२.४.२.५.ई.त्रधा ब्रू.ये.वे.स.विचै.यम.वेर्धे.ये.वे.स.विचै.४५। क्रूंट.स. हेन्न्युम् क्रूट्यदेय्ट्यायमञ्जूष्यम्भेत्राकेदेर्बून्यद्यानियम् नवे वरान्। के अं अं के विरान्ति विषय का निरानि के विषय के के कि विषय के कि विषय के कि विषय के कि विषय के कि वि सुत्र सुरार्के ग्रायायाया प्राप्त निर्मा हित्र वस्य उत् ग्राप्त स्यूरा के हैं। वेशवादावत्वत्तर अँ माड्डेग्या सामा हार हैं। हैं नि नि नि हि हैं। विश्व निस्न भी देश देश में देश वर्ष स्वरायन सामे प्राचीत प्राचीत सामे प्राचीत स्वराय के प्राचीत स्वराय स् केत्रसरायासुनायक्यायाँ । दे निषेत्रना नेनासारामा सुनासासहसाद्याया

यास्त्राप्टियाये । दे निविष्णियायास्य मुन्दिस्य मुन्दिस्य स्त्राप्टियाय वैं। । दे निवेद ग्रेनिय प्रति ग्राय म्या प्रमा । वळवाची दि सळेवा वर्दे द र्धे व खू व रावे। विवा से द वा सु र सी से व रायदी । त्रुः अप्धेः द्रअः दृर्गे दः अर्के वा वाशुआ । अविवः वर्वे : र्के अः र्र्भे दः वस्र अः उर्-१८। । १९: बरे कुष र्ये र्या र्याद स्वाया । १९ वरे स्वाय स्वयय स ख्यान्ता । यासूनाने वायान्या से स्था उत्तरमा । ध्रिया स्था विता स्था विता स्था विता स्था विता स्था विता स्था वि क्र्यामास्यमान्त्रा । त्यत्रःकवामान्त्राव्यंत्रं वाहेरान्तरा । विदासरावः यर.रे.र्रट.चर्। वियर.क्षेवया.क्षेत्रयासृ.खयार्चर्। ब्रि.खयायाह्रेट.चर. र्रे भी । हे हेर से समा उत्वस्म सम्बद्धा । त्रुष विद्या विद्या स्था सम्बद्धा इस्र ग्राया विर्दे न न्या के कर में राक्ष स्था मुर्दे के विषय गै'लेशप्ता गलन भी दें तथिन के। श्रे त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त म्रेट्य म्या विस्थान स्थान स्य नवित्रत्युनःसरःसर्हित्। । नरःदेविःस्रेस्रशः उत्वस्राशः उत्। । प्रदेवाराः भूगास्यानस्यायस्यात्रभार्मेवाने । व्रिसंदेगान्ससाम्यान्तर्यान्तरम्। । वरे नः ठवः रुः भ्रेः नरः वेन । यवः क्रम्यः सुः वेवः र्मः सुरः वया । वर्केः गुवः नरेः श्चित्रभ्यान्त्रा । ध्रियाञ्चानि नित्रमा इस्या ग्रीया ग्राम्या । ह्या हिया के या भेन भेना भारतीन किया विष्य के मन्या स्वर्थ के मन्या मानव सी में विषय के कि कि मन्या मानव सी में विषय के कि कि में कि मानव सी में विषय के कि में कि मानव सी में विषय के मिन के मानव सी में विषय के मानव सी मानव नन्गायके नदे न्या ग्रीके । निवन निर्मा नस्य नम्यानि न्या परे

विट-५: भ्रे अवश्रामा विर्धे गुरु यह निर्दे स्थानर विष् । भ्रम् अर्ग रेन्यस्येन्त्। श्चिःसंविष्यं कुन्त्रन्त्। सिष्यसंत्रिंगन्तः श्चेत्रः सु। वर्षानुषाकेषाक्ष्याम्ययाने सूरानस्। । ने सूरावदावेदानी श्रुवाययाक्षेयया मायाकें सामन्त्राम् मुन्तें वात्रसाम्याम् मायाके सामान्यसाम् नन्गामी नससारि हैं नसन्गान्ता । ने नित्रित्म नेग्रासि हैं तरहें नस ८८। क्रिंश ग्री ५ ग्री से तथा समय ग्रीया विस्ताय सम्मयाया मक्र्यान्ता । श्रेम्या उत्त्रम्ययायायत्वान्वायाध्या । द्वान्ययायातः न्वान्यस्य मान् । ने न्वा वस्य उन् के नेवास्य । विह्या हेत्। वस्य । वर्दरसासुराया विवायायाये दाराय व्याप्त विवायायाये धिराम्बर्धराउद्गानिम्रायाधी ।में त्यद्य में निष्क्र में निम्नि निम्नि निम्नि म्नार्ट्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रम्यायविष्यायवे। श्रिर्ध्यस्यस्य स्त्रिन्त्र र्श्रेयानरंक्ता विवर्शेयने येग्यायास्त्रस्त्र निर्माया विष्ये म्यूरायरा नदे खेनारा भीटा । वित्र सक्त ह्ना पु नदे खेनारा पदी । दर्गेत सकेंगा गशुस्रामी नग्रानिसार्वेग।

ढेशन्ह्र्यश्नि, दि.क्षेचेतु, क्षेत्र मि.च. द्वीर स्था । । । । । । । । । विषय विषय क्षेत्र मि.च. हे । विषय क्षेत्र क्षेत्र मि.च. हे । विषय क्षेत्र क्ष

### नर्शे.च.चे.क्ष्यावचेटारी

अश | सिव-श्रेयार्क्षणश्रासदे। देवो । यद्वासा स्थया ग्रीयानर्थे। चिवे। न्यर में न्रायमुन प्रमुन सहन प्रमाल्य में याया यह है हो हो राम्य प्रमुस्य <u> द.चर्चेचेत्रात्र.घंदुः घः केत्राचः श्रेत्राच्टाच्यत्राचः ध्रेत्राचः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व्य</u> सहस्रायदे से सर्वा उत्वस्य उत्। या श्रुवा सान हे ना केत् रेवि क्वें त्रा ग्रेग्रं क्रिया पूर्वेद्रायुर्ग्य श्रें व्याप्ते व्याप्ते विद्या नदे इन्वरदेश सर्वेद्या स्टर्माव्य हो स्वर्मा अप्पेर्य में अर्म्य म्या नश्रम्थायात्रः नमे नदे इत्यादे स्थेत स्थित स्थित स्थित स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय स गठिगाः तुः नर्धे सराः सदेः सत्रुः यः नहेतः त्रा कुयः नदेः नसूतः सः नेतः रेतः हैः श्ची प्राप्त वित्र प्रमान् प्राप्त प्रमान के वार्ष के वार के वार्ष <u> स्वायः बुरः दर्वेषः ग्रीः रेरः ख्वायः देः यः येरः यायेरः सुरयः वर्षेः यः सृः तुः</u> वर्रे हिन् स्मित्र र्यान्य मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र स्मित्र रेटर्रा मन्यायर्श्वर्षेया देख्दिवःश्चेश्चेयः छेन्द्र्यायं मेंद्र्यः <u> नर्वे रश्रासः के श्रान्ते रश्रास्त्रान्ते । यस्य में व्याप्त स्वर्धिया वस्त्र स्वर्धिया वस्त्र स्वर्धिया वस्त</u> इससान्ता रतारमाइससायानगवादित्तम्भगातुःकेनाथिति। 

ब्रां इस्र अप्पेर्य श्री हैं वार्य प्रम् शुरु हैवा प्राप्त महित प्रदेश देश देश हैं वार्य स्वर्ग व नु वियानवृग्रायाये रेया सेन् नसून यहेन सी से या केन नया पान न नब्ग्रथायाः इस्रथान्ता हिन्यमान् । व्यन्यमान् । विन्यमान् । यहे नर्द्ध × रटावी इत्तरे न्नुः साम्बर्धा ग्रीः सळ्त प्ट्रिवा पूर्वे श्रायाम्बर्धा प्रदेश प्रेश्वाप राज्य प्राय नवर में र्श्वेम् राम्य निव्याय विषय विषय विष्य के निर्माण निर्मे के निर्माण निर्मे के निर्माण निर्मे के नि केटा इसान्गराद्येवायसाग्रीसहन्याइससाम्रीक्रस्यानेटार्गेटावसा में र-र्-दिसेया वैरा कुरायर कुर हेगा मावर पर मुनास बर रेश से र ग्री-प्रमो पर्त्व भे भ्री-प्रमा व्हें प्रभावदेव प्रमो पर्त्व ग्री भे से देव से के पर्देश सर्वेता र्रीयायान दुते द्वो त्र्त्र श्री से मयया उदा सुनाया समुन विदा विस्रयाग्रह्मस्ये द्या यस्य नसून या गुस्य मी कुस्ये सुन् सून गशुसानी प्रका निष्मुन पर्वे र ते प्रास्त्र माशुसानी नुम्म स्था थे। क्रम्यानिराम् राम्याम् राम्यानियानिया मुमायरम् मुराधिया विवासिया विने विकास देवा पुरर्केट विटारो सका उत्र के विकास विद्या विकास वित त्तुः अ: नृषो : वन्तु न : नृष्टः निष्ठ अ: या व्याय विश्वेष्ठ क्षेत्र क्षेत्र विष्ठ वा विष्ठेष अअ शः उदाकें यशादन्यामा है स्रेन् विवाधिन मा वस्य वन् ग्री कें विविन्त न विवा असे दः या त्र अन्य या अर्थ दे व्य अर्द्ध राधि स्थे मा श्चे चर्च मा कवा अर्द्ध

नडशःपः वसशः उत् नुदः विदः द्वा वसा सुरः तुः सर्देवः परः है वाशः परा वर्ळर कु नर कु र हे न के वर्ष न्यान्य संराद्य वेयान श्री ना इसया श्रीया दिन्य सुः या न्यो पर्त्र न्र नदश्यायात्वाकु । त्रशापायवाची वित्रेयान हिंग्यायान्या अर्गेत् सुन्याची । रे.क्वेंश.पक्रय.य.म्अश.ग्री.क्वेंय.जशादस्या.म्रेय.जशाचिंट.यपु.संका.ग्री.य. क्ष भ्रम्भाग्री भूगा नस्या नर कर दर क्या क्षेष्ठ अर प्रमास्य कर के नर वि-वि-। समुद्र-मेद-के-नर्भ-रर्भ्नर्थ-एर्ट्र-। सूद-ग्राप्थ-स्-र्भ्याय-वैंदिरदरेखर्, मुरुष्ते। दर्वे दर्वा ग्रम्भ माशुस्र हेद्रास्य ग्रद्धार स्था म्य र्देव वस्र राज्य प्रतास्था स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा ठेगा अर्रे र त तुः अ ५ गें त अर्के ग रेत रें के त्र अ र ग ग शुअ ग्री श्रु ग श हे । व्येत्रस्य अप्यायहेत्रत्य अप्यहेग्।हेत्र्यी।विस्र अप्यस्य उद्दर् कर्कुः द्र्यः शुःदर्गेनमा वे धुनामाह्या हुःयेगमा नगःविमाहर नहे येगमा ग्रीः ह्यो यक्ष्यं मुन्ये कर्न् । यहुर नर्मु रहेगा

वेशयपदी नर्थे न कुशयपश्य उद्गन्तस्य ने नर्गे न सद्या

# নষ্ট্ৰান্যসম্প্ৰাম্য ক্ৰিল্মান্তন্মা

७७। पिंत्र'हत्यकेंग'नहें अ'क्रुय'न'श्रुश'नठश'ह्यशा किंद्र' बेट्र बुग्र हे वे द्वर ग्रेश देर वर्षे र द्वेर द्वेर या । वर्षे श अर्कें व द्वे र वो प्रश यव ने विद्यान विष्य । यह या कुया न सूव ना हुन कुया गुर हे न । न्यूयि:कुय:रें व्यार्थे व्यार्थे व्यार्थे व्यार्थे । श्रिव्ययः प्रमान्य व्यायः इययः न्व्रामाल्यामाल्याम् वार्यान्याम् वार्यान्याम् वार्यान्याम् वार्यान्याम् वार्यान्याम् वार्यान्याम् वार्यान्याम् नह्ना विवास सक्ता है सम्बन्ध निष्ठ न कें प्रशादन्याया वेयनक्ष्येनानम्बन्यस्य वेयानम् नियानम् । न्भेग्रम्भरावे धुया इस्रम्भर द्वार्भेट विदेश्य मान्य विद्यार हिन वर्षेत्रभुगार्श्वअस्त्रित्र्वित्। ।शेश्वश्वः के दिर्ध्वतः वेश्वर्ष्ण्याः मह्यः स्था विश्वा श्री नायः श्री माश्री विश्वा नायः स्था विश्वा गुरुष्यः मार्थः इयानगरास्टारें के सके या । हे खेट सेंग्या पर रात्या सुयादकें क्रेंट नदी निर्ने निर्मेश्वराह्मस्य राष्ट्र गुवान निर्मेश निर्मेष्ट । निर्मेष्ट गुवान निर्मेष । निर्मेष । है निविद्यान में निविद्या । विद्या हेद प्यान में निविद्या । विद्या । वययः उर् री । भ्रे: नेयः मुर् प्रदे भ्रेरः प्रदः भ्रेः प्रमुरः विरा । भ्रेरः रूरः विः

दश्चर्यः स्वरुप्तः स्वरुप

डेशनर्थे नविन्निक्षाया भूनशाक्ष्मा मुस्ति ।

# श्रीतिश्वेयायात्रास्तुःश्चीत्यास्यास्यास्यास्यास्यास्या

७७ | वि.स्. यी. २ . ही पर्नरः स्वयम २ मार्क्ष वा हा खंबा सर्देरः वसू माही विमानुसार्करः व्याप्तराम्या विष्याच्या स्थापत्र विष्याच्या विष्याचा स्थापत्र स्थापत्य स्थापत्र स्थापत्य स्थापत्र स्थापत्य स्थापत्र स्थापत्र स्थापत्र स्थापत्र स्थापत्य स्थापत्य स्थापत्य स्थापत्य स्य वजुःवार्डरःसःयःहेत्रःवज्ञेयःक्षेरःसे प्राम्बुरसःसेवासःश्चर्ळिवासःसवेःवाज्ञुरसःवालुवा। तःवज्ञवःसःप्राम्यस्यः शःशेरःश्रेवाशःवारःतुरः। वावतःषपरःहैंदियःर्वेरःवतुःश्रेवाशःश्लेविःत्वशःहे। नेःनवाःग्रटःवार्वरःश्लेन्द्रःविः ८८:वर्षःगुवःर्श्वे८:८नोःशेस्रशः हिट्यरः ठवः हीः क्वें व्यार्चेनाः सरः श्लुनशः शेस्रशः हाः नःदे। **सर्सः हुसः** क्रिंग्राया विटाक्यायर रुप्ताया विटाक्यायर रि.सीयया शिया विद्या रिटा गवर देव न भून भूत द्वा । नन्या यो भ नुह कुन से सस न भेतर दिया भुनमासेसमायन नाश्याचा रूट हिट भूट हेना ने सान हैं साथून पट्या है है से विश्वयायायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय सहस्रामावनानी सेट द हैं है निस्त्रस्रामा देव में के दे क्रुव द द र हैं है নর বের্বা বিনম ই ই ষ্ট্রী অ শুদ দী ম ন ব্রি নাম ন শুদ্র ইম ন ষ্ট্রী বিষ্ सर्वर्रे स्वर्रित्र वर्ष्य से स्वर्याया स्वर्या स्वर्य युःचुःसः भुर्द्वेष्ठभे ब्रेंदः राष्ट्रेदः दुः सुदः रावेः ददः ययः वर्डे सः ध्वः यद्यः <u> इ. इ. श. तथिया श. तपुरा श्वीय श. यो श्वीय स्तुरा श्वीय स्तर्भ श्वीय स्त्रा श्वीय स्त्रा श्वीय स्त्रा श्वीय स</u>

क्ष्मायान्द्रस्तुत्र्व्रभ्रम्भान्त्रस्य क्षेत्रः क्षेत्र

या न्तुःश्चन्या क्रॅंग्न्डंग्लक्ष्णे हुन्ने हुन्ने हुन्ने हुन्ने हुन्य विद्या क्रॅंग्ने स्वाप्त क्रंग्ने स्

उटा <u>भ्रष्ट्रश्राणश्रामुनामंत्रीत्र</u>ान नित्राचन स्थित । अर्छत्र न्ये अ सहें अ श्वेन प्वेन प्वें अ न श्वून प्रते श्वू य प्रते क श्वन है अदे क्तराधियाद्र दिन् ग्री दान्य न्यू रानदे द्व्यात्र विनया है हे श्लेषा ग्रुट मीर्यायत्वायायिः श्रे में स्ट्री अम्बिर्यस्खूः श्रम्यायः हैं। देख्यः देर् वेर वर्षे अप्यापा भेयापा प्राप्त प्राप्त विश्व के प्राप्त विश्व के प्राप्त विश्व के प्राप्त विश्व के प्राप्त के प्रा नमुन्यर्यर्युर्व हेरानभेर्या केरिनई कार्ते मुडि स्टि स्टि इसे खू र्ये गो। माड्डी वै.सुट्टी निस्प्ता है हैं हैं सुद्धी बेयायहूरी बियाया है के हिव. सहर्नित्रें अन्तर्भ । भ्रेष्ट्रिया अक्ता स्वाप्तर्भ । विवापक्षेत्र सु स्ते व्यायाग्राम् वञ्च नायाग्रव्यायाद्या व्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्याय्यायाय्याय्यायाय्याय यश्चर्र् हेते कुत्वनश्मश्चर्या व्यापान्य व्यापान्य व्यापान्य व्यापान्य व्यापान्य व्यापान्य व्यापान्य व्यापान्य र्यम्यम्य म्यान्य मुर्या सुर्या सुर्या स्थित । से या पान्य प्राप्त या स्थान स् न्याकेषायान्यस्य स्वाप्तियाः क्रियाः नियान्य स्वाप्त्र स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स

वृद्धं वेश्वारयरवर्ष्ट्रव्यम् अस्त्रवर्षा

वृद्धं वेश्वारयरवर्ष्ट्रव्यम् अस्त्रवर्षाः विद्याने विद्य

नेवसङ्घेद्रह्मसम्बन्धत्वन्त्वान्त्वा क्षेत्रस्य हेन्यत्वेद्या हिन्य हेन्य हेन

गावी रें ड वे रें ड वी हें त वे हें त वी इ अ वे इ अ वी इ ह ज वा इ ह न वा यम्यास्यम् त्राम्याम् वे याम्याम्य विष्यम् वन्याया के वे अवि दे हिन् ग्री भेवा भ्रीना श्रीना श गशुसर् भुें नदे कुं लगर्द सेग सेन सम्भाउद सुर विदर्ग विता विन् पर उव विन के शुर नु अर्देव पर हैं ग्राय पर पर्वं मुनर गुर केमा केमा केमा केमा केमा नित्त निवस्त मारा नित्त है। यहा के सम् यत्। क्षॅ क्षु ने तृ न्याषाष्य्र सम्ह्ते नई क्षु यत्। क्षे र् रे ने ने क्ष क्ष थ रहुने नई हैं यत के श्रेश्रायारायायारायायारायायाराष्ट्रायारहे ने हैं यत कॅ द्वैं ५ र र ५ र अ इ खू अ र हु दे द्वैं यत। के द्वैं यत अ इ खू अ र हु दे रे र्श्वेन्यत्। ब्रॅं श्वे हे शे हे अस्ष्य सम्ह ते हैं यत्। ब्रॅं इत्र हत्या ष्युःसः रः हु ते द्वुं यत्। ब्रॅं कें इ कें इ श्रमः ष्युःसः रः हु ते द्वुं यत्। ब्रॅं प्राप्तः <u>श्रम्भ स्थान । विष्यु । विषय । विषय</u> श्र. खेश न श्री. य. परी. केट. श्री. क्षेया. क्षेया क्षेया अध्या कटा. यटा. विट. यटा. दी. त्या हिंदे. यटा. दी. श्रूट्राग्रुस्यां सूया नस्या मस्या उद्रायश में या हे सुराद्रा पर्वे साय्व वन्यार्से हे से विद्यायायते में विद्यार है या सम्बार है या हे या हे समहें न हे दा हवा है या গ্রী:ব্রবশ:ঘর্টা

ने व्याह्म भाग्नी क्षेत्र क्षे नक्ष्रयान्य व्यामीयात्री । भ्राम्ययामीयात्रीयात्रीयात्रम् । भ्रापी क्रांते न्वाराधिया निरविवरनन्यायीयः भुष्वियायार्थिया । ध्रिष्यमः पृष्वयाः पृ षाञ्चे १२ गा ५ सा सा सा से प्यो हैं। यह वे वि वि सा सके वा दाया दा स्वा । श्रग्राश्चेते कुनि ज्ञान । श्रिन क्रम्याणे नेया कुण्येयाने । वितर्देन हैं। मुलानवे भुला हैं व र्वेट या की सदय पदा । कि वद्या सुया में निर्मा श्रुटःश्रद्द्वा । श्रुयः नवेः श्रुयः व्यव्यावदेः नवे व्यव्यायम्। विः व्यव्याय्या ग्रे श्चेन मन्त्रा शुरु हेन । ब्रिं अक्ष महा श्वा ना कि । व्रिं अक्ष महा भी । व्रिं अक्ष महा श्वा ना । व्रिं अक्ष महा भी । व्रिं अक्ष महा श्वा ना । व्रिं अक्ष महा श्वा ना । व्रिं अक्ष महा भी । व्रिं अक्ष महा भी । व्रिं अक्ष महा । व्रि हैं। मुलानवे गश्राम्यायामा साभी सम्यायमा । के वन्यामा मी भ्रीनामा न्यायी श्रेन य न्या श्रुम हेया । के सम्द्रम् श्रुमा ह । के मा ह सम्याप श्रिम भेर्द्वै मिलायदः श्वायायादितायः श्रेष्ट्रायाया । क्रि. यर्थाल्ये । श्रेष्ट्राया राश्चरश्चर्र्य । क्रियानवे श्वायायाष्ट्रयाक्षयावर्षायाया । क्रेय्य ल्री.श्रीयात्रीयीयीयात्र थे द्वा ने निवित्र मिलेग्र प्रमान के प्रमान के सम्बन्ध स्था । मेन के न सुस्र सम्बन्ध स्था । सेन के न सुस्र सम्ब र्रे क्षेत्राण्चे कु। विन देन वेन्यायायम्य नगर न सुन्द दे। विवासे मानस्य इय-पूर्य क्रि.यहं.स.श.श.लेंक्र्रं है। ट्रे.ट्र्याश्चेशत्वा श्चिट्रट्रत्यश्चर्यात्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्या

देव्याहेवायाह्यसम्बद्धायार्थयायदेव्यायदेव्याह्यसम्बद्धायाः स्वर्णस्वरायाः स्वर्णस्वरायाः

व्याच्याची तरे वे श्चे व स्ते स्ता स्वाचित्र हो। श्चे स्था स्था हो स्था स्वाचित्र हो। व स्वचित्र हो। व स्वाचित्र हो। व स्वचित्र हो। व स्वचच्या हो। व स्वच्या हो। व

सर्वित्रम्हेग्रायर्यस्यक्रम् मुन्यस्युर्

विन्ने नर्वे नर्वे नर्वे नर्वे नर्वे नर्वे नर्वे नर्वे न्या विन्ने विष्ठे न्या विक्रा विष्ठे न्या विक्रा विष्ठे न्या विक्रा विक

यम्। तक्षराक्षा व्याप्त क्षेत्र क्

यदी ते न्यस्य नित्र स्टानित हो। विस्थानिय हो स्थानिय हो स्थानिय स्टानित हो स्थानिय स्टानित हो स्थानिय स्टानित हो स्थानिय स्टानित स्टानित हो स्थानिय स्टानित हो स्थानिय स्टानित स्टानि

र्टा धिर्यरर्ेष्ठ्यं स्थान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्था

त्नेतिः नेशास्त्रास्त्यां वित्रः ह्या विश्वायक्षयः द्वे स्वायः विद्वायः वि

नेत्रभद्दान्द्रहृद्धः वर्षे । वर्षे स्वयं स्वरं विद्याने स्वरं स्

तर्देन्क्रम्थाले स्र्रामि स्थ्रमाम्थ्या । ने नियादि माहे त्रिम् माध्या स्थ्रमा स्थ्रमा स्थ्रमा माध्या स्थ्रमा स्थ्रमा

पर्ने न्र क्या अप्ते श्रू न्या ने श्रु या या श्रु अप्ता या श्रु अप्त या विष्ट या या विष्ट या विष्ट

#### वळ्टाक्च.चराक्चर.द्वेय

नेवर्गके किरमञ्चरम्बी गाराया से राष्ट्राह्मसाळग्रामा । ह्रसायहें सर्गादें

यासेन्स्मिन्दिन्। श्रियायान्तिन्त्रास्मिन्द्रम्। । श्रिन्त्यानने येग्रायाहर्म्य । विदेव प्रायाह विवादर्शे न इस्राया । वर्षे व्याया नुःवहन्यहन्। विकान्ययात्रयात्रम् । विनायानने येग्रायास्त्रप्रम् । क्रूंन्यायम् नाम्यायम् नाम्यायम् । ग्री-देव-ग्री-भ्रीम्। । ग्राम-विगानने ना सम्दरसम्म मान्ने निमान । यहर्तित्रम् श्रुम् । श्रुम् वर्षायापात्र विवा श्रुम् यात्र । श्रुम् यात्र । श्रुम् यात्र । न्याग्वा विःयाठेयाःचलेवः न्रःह्याः श्रीत्यः नेया । हिनःयः चनेः येयायः सहनः धराशुरा यारावियायिरायरायशे प्राथी । श्रेश्रश्राउदागुदाशे हेदाशुरा केरा । श्चिर-५८-५५८-पाहेब-शुर-ध-५२४। । हो५-त्य-वर्ने-त्येवायायह्र-धर-गुर्ग । यार विया के शाह्र सम्बन्ध सर्व सुरा गुर्म । यार्ड र विर न सुर न से सरद न। निश्रम्यार्यम्यम्यम् स्त्रम्यन्या विम्यानम् सेन्यम् गुरा | रमयर्ने केतर्मे माराश्चेशायदी | स्त्रश्रम केंग्यरेत पर्वेर गुर केरा दिनमुनक्ष्याग्रहायमुनायाहेया हिनायानहे येग्यायासहायरा शुर्व विद्वानी भी अप्ययाया इसका दी विवाया क्या विद्याया के या प्राप्त विवाया क्या विद्याया विद्याया क्या विद्याया क्या विद्याया क्या विद्याया निद्रा सिस्र उद्दर्शस्य उद्दर्भ निद्र मा विद्राय वदे ये वा सार द्र यर्ग्युर्ग विटःकुनःश्वेदःयर्गनेग्रयःयत्। । शःद्रगः इसःवुगःगर्धसः गुरकेरा वित्राधिताक्षेत्रके वित्राधिताया वित्राधित्राधिताया वित्राधिताया वित्राधिताय वित्राधिताया वित्राधिताया वित्राधिताय वित्राधिताया वित्राय वित्राधिताय वित्राष्त्राय वित्राधिताय वित्राधिताय वित्राधिताय वित्राधिताय वित्राधित

धराशुरा विकाशी विकर्णन में राजा विषया या परि वर्षे निवास स्था मश्रद्यःभेटा वियासंद्रःश्रुवःसमाटः च्यूटः देया विदःयः यदे खेम्यः सहरासरागुरा थिरावर्षियायारायीयासुरीयायासीया होता विस्रयास्तरिया ग्रीयाययायहर रेटा । व्हिन्यायानु र्वाटर् यहर्पाय हेया । विराया वरे लेग्रासहर्प्तरसूर। । यहसाक्त्राहिर्षायरे लेग्रासहर्। । वक्त ब्रिवःक्रम्यायदेः भ्रम्ययाद्मा विद्यूम् में गुवः ब्रीयायदे विष्या यःह्वाः हुः श्रुवः शुरूरः ठेवा । यदयः श्रुयः वर्षे दः वययः यश्रुः दवाः ददः। । श्रुः इससःगुन् श्रीःनससःयः धेस। विदःशीः वर्देदः देवः गदः धेवः य। विवःदेः देः र्रर त्युव सूर केवा । मर विषेश हिर कवा वरे खेवा श सूर। । मर वि हिन्रवानने खेन्या मुन् । हिन्रवा खस्य वर्षेन् नने सुर्रे व । हिन्र देन न्याः ग्राम्य ने विष्या । दिन्न स्थित । दिन्न स्थित । दिन्न । र्रेदिःग्राप्यायने खेनायाः निष्या । विष्यायान्यात्रः स्वर्यायात्रः विषया । विष्या ठनाः भेगाः परः अः गुरु देवा विकान हिन

न्यानिकाक्ती विक्ताक्षण विष्ण विष्ण

वळवार्नेरावर्नेराचरे येवाशास्त्री । श्रेश्रशास्त्रवारार्ना वर्ते प्रदर्शे वर्ते न। १८,८या.वसका.कर.८८८,५८५५, यहे. ज्याका.क्या विद्याका.की.८सारा.की. श्रेश्रासक्रें निर्देश्या । निर्वा १८ तुन् । सुर्वा १८ त्ये निर्वा । यरे लेग्राया विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य नरःश्रूरःवर्षेर्याग्रद्धा । श्रुःन्याः इस्रायः ह्याः हु स्रायः हेरा । हिनः ८८. सक्ष्ये स्कूरा क्षेत्राचा क्षेत्राचा स्वाप्ताचा स्वाप्ताच स्वाप्ताचा स्वाप्ताचा स्वाप्ताचा स्वा धेशन्दर्दर्दर्दर्वा अवस्थित ।देन्द्रवाश्वर्द्दवाश्वर्यम् गुरुष्यश्वर्यम् डिगा-बुन्ना कें यस पद्रसारा के ने संवेस वेस ग्रुप्त पद्रे हिन पत्र प्रदेश समुद्र বইুবা বর্ষার প্রান্থ্য

कुँ भोग स्वा असे न्द्र न्द्र न्य असे न्य असे स्व क्ष्य स्व क्ष्य

देवमा वर्डे अरभूव तद्यर्भे हैं है 'शे' प्रिवाय स्था है ने स्य हैं ना स्तर है ने स्था वर्डे अरभूव तद्यर हैं है 'शे' प्रिवाय स्था है के स्वाय है ना स्तर हैं ना स्वर्ध स्वर प्रकार हैं ना स्वर हैं ने स्वर हैं ना स्वर हैं ने स्वर हैं ना स

म्बित्रम्भ्यार्थे। मुन्द्रम्भ्यार्थे।

दे विशःश्रुवयः रुषः तुः इययः नश्लयः विदः नहन्यायः वयः वहेयः यः वः नश्रेयः हे स्र्ङ्कः वदेनयः यः या अहें अद्भिष्ट विश्व क्षा के किया के नसूत्रा ग्राप्यस्य ने निवेदानु मुर्यस्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य क्या युः वुः स्रयाद्देशः स्ट्रेंट प्रमः श्रुट्या श्रूट प्रिट प्रयाप्त प्राप्त वित्रेंट प्रयाप्त वित्र श्रूट प्र यशवहिं अपि देव से किये सुदारी राजुरा रदावी शासुवा शामित हैं विश्व द्र्याच्या प्राथित स्वास्त्र स्वास्त है। देवे बुग्रम् गान्य केंद्र वेर द्या हु से दार व्याप के स र्वे इंगासिती वैर्रे उंतु पा इड़ के हैं पा पृत्रु वातृ पा अहरे अध्या व यही हर्ने सर्हे हैं वे रागु से वे रे अने व कि सामित क्रिं में न्यून् विशायम् हेरामाडेमान ह्याँ विशासाय रीपार मुख्या हु हु साझ द्रशास है नायें।।।

देवशः भ्रेट्टिं प्यदेवशः प्रवेश्चेषः प्रवाप्त्रश्चा प्रवापाणे प्रवापाणे । विष्यः प्रवेशः प्

ल. श्रैश्री वृश्यस्य विश्व श्र स्वर्ध श्री स्वर्ध स्वर्ध श्री स्वर्ध स्वर्ध



भृष्ठभाव्यः अवश्वः व्यवः स्वान्तः स्वान्त

#### गश्रम् अर्केन् विश्वेष् व्यक्ष सुम् विश्वा

त्रिं स्वरुष्य स्वरुष्य स्वरुष्य स्वरुष्य स्वरुष्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य स्वरुष्य स्वरु

्रक्ष्माचे निस्तान्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त स्वात्त्र स्वा

## न्नुः संपी प्रमार्श्वे दे या रो मः श्रे स्था

७७। द्वि देग्राम्म गुर्नित निर्मा हिं न वर ग्राम्य परित्र प्राप्ता नभूयःन वरः कुयः नः कुः सर्वे : द्वा : र्या या । दिर्दे अ: दरः न कु दः परे : त्रुः अः त्रस्य अः उद्देश । वार्य रः क्षेत्रस्य सर्वेद्रः यः द्रव्यः वेदः स्युः वार्ये या । वहस्रान्यवान्यवार्भिः हे वहेवार्या हेनाना । हे नुः गाः सेवाराः सूर्याः क्रुन्से नवी धि न्यन् क्रिया वर्षे मास्र क्रिया स्था वर्षे मा भ्रुेमरामर्केन्याद्युवार्वे प्रवेशस्याम्या । इत्यारम्याम्या नरे नदे अर्केन । र्रेज अहर हे नर्द्ध में हे स्वा र्रेज मा । नाम मान्य मार्थ म र्ययः मृत्यायः वर्षे वस्र १८८ वा विशेष्टः भे स्र स्र स्र १८० विषयः वर्षे नवेशस्य नर्भया । विन्यम्य वर्षे व्यान विन्य में विन्य प्रमान विन्य प्रमान विन्य प्रमान विन्य प्रमान विन्य प्रमान वर्षान्त्रेराष्ट्रिम् मुवावनरानवे भू । क्र्रिं सम्दिन्त्र वार्ये के तर्रे सुना हुना यर्गेत्। ।गर्भरःश्चेययःयर्केन्यःत्र्वयःयः निव्यःशुःगर्यया ।वर्नेनः विस्रस्य निम्न स्था । स्थित विस्तर्भे विस्ति विस्तर्भे व यादर:रेशःश्री । दरायः अर्वे वः द्रारुवः कुः अर्वे : याद्रशः अदः द्रारु। याशेरः श्चेयमासर्केन्यावन्याविष्यं निवेषास्याविष्य । विन्यम्यमेवियन्यामाधिन् नविव के र नु र र । । यानव वर्गे मर्वे र हु व के र हु वे के न या ।

वर्देन खें त्र खें के वार्य में अर्थ वर्ते वर्ष की । के नर्शन नवाय वर्षे म र्वेरःग्रेःदर्भागुनःर्द्धेया ।यशमिवःग्रेःवरःर्थःवग्रुदःर्थःवग्रुदःर्रा । न्ययाः वेर्वेर्वाः नश्रूवः यान्युः याद्वेराः श्रीयाया। वर्देनः व्यवः श्रूवः यायेरः क्रुें अरु पर्दे प्रतुष भी । नर कर गुन रोष अधुन मुन अप । इस्रास्टाईस्रास्र्यान्तित्रं श्रुवार्वे सास्र्ये केंग्या । प्रवरानी सुयारी द्वारा राखुराश्चेट प्टा वि वि वि राज्य भव राज्य व स्ट्रिंट खुर कें वा राज्य व गर्भरःश्चेस्रायदी निवेशनर्धेयानिय विश्वेष्य स्थित । विवाद्या गाप्ता यर्दिन् अदे अर्वे व रें अर्के य । श्रून् अर्थदे रन्ट ह्या कुया के वर्शे खूदे रें विश्वा नवे विद्युत विश्व क्षा भूत्र पर सिंद्र । विद्य पर भूव परे के सिंद्र द्या के वे गर्डे। वि.स्व.क्ष्म.क्ष्म.क्ष्म.क्ष्म.व्य.क्ष्म.क्ष्म विश्व.वर्षेत्र.वर्षेत्र.व्येष नक्षनमामोरम्भे सभायत्। । निलेशमानर्षेयानदेयसे त्येत्रम्भ सुनमानर सहूरी विश्वरच्चरर्गाव्या हिंशःश्रियायपुर्वित्रश्चेष्ठित्रम्। विश्वराध्या मुःर्से नगर सं रे त्यर राया । वर्षु न इन न र न है र हि स न स न रायो र र भ्रेम्रम् । विवेशायान्येयान्ये पद्मेन्यम् भ्रून्यान्यस्यि । विगयः व्रवायक्षास्राम्बर्गन्ववायान्त्राचित्रीय । इटार्सेटाकेवारीयानवान्त्र्राम् या विशु न इन न रून है र हिन न स्वर्भ गर्भ र भ्रेस् समायने विश्वराय

श्चीयायद्वेयायश्चात्र्या । श्वेयाय्यायय।।

श्चीयायद्वेयायश्चात्र्या । श्वेयाय्य्याययः।

श्चीयायद्वयः विष्णायद्वयः विष्णायद्वयः विष्णायः व

# शुःसेदिःगारोरःसुसमा

चलेट्यामा | सामाङ्गाट्याप्यास्त्र, स्वान्त्र स्वान्त्र

सर्केन्द्रेन्द्रियानवे वस्त्रेन्य सर्मेन्। श्रिन्सें द्रमा मुर्नि सामें द्रमा वर्ग्यम् ग्रीमा । पार्ट् स्रुप्तः मृत्यामित्रः स्रुपामित्रः स्रुपः स्रुप योवेःयार्देदःठवः इसःयादेशःया । यार्श्यः यार्थः सर्वेदः देशेवः विशेषः यार्थः प्रश्लेषः यश्रासहित्। विग्रान्वेशक्तेःसेटासबेटानी वियानबटास। सिनार्थे हैं नबटा क्रिं राव अधीव नवर या । वाहर रागर तर्धे नवर यावत तर्धे अकेर खेला । गर्रेल वें सर्हेन नें नरें ल नदे तसे दाय रास हैन । में हे गुरम्म मार्थ र्शेवास्त्र नित्र नित्र मिल्लिक वर्षेव वर्ष मार्थे । विशेष्ट में स्थित स्थ केत्रक्ष्म्यानाषुयास्य स्त्रित्रं स्तरम् । स्वयानाष्य स्वयाने निर्देश्वेषाया इसराया । वार्रियायें सर्वे न नें नर्वे या नवे वही न यस सहित । वा वन पर र्यावि नर सूर हिंद गर नदी । भ्रु सुदे गर्दे र स्रे द से द से द से व से त वहें व:मा । नगव: गठव: विवेर सें प्राया मु अर्दे वे सें वाया हमाया । पारे वा में सकेंद्र दें नरें वा नवे वही वा या या हिंदी किया नहीं र न में र न म नडंदरन्दरमे अर्देग मिन्यमेन नडंदर्भे हे अर्केन में दर्भ निडंदर वर्षिमःशुरुष्यम् दुग्राद्याया । गर्शियावे सर्वे मर्दे पर्वे वर्षे । व्येव व्यमः सर्हे न्।।

### व्यक्तियायं विष्यायं विषयायं विषयं व

्था विवासः स्वाध्याः द्वाः वसः विवादसः विवादितः । भाषान्यसः स्वाध्याः स्वाध्यः स्वाध्याः स्वाध्याः स्वाध्याः स्वाध्याः स्वाध्याः स्वाध्याः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्य निव अर्गे व रें खु अ द्या ने गा हे रें ग्राया | निक्षे व अर्के द क्षु न प्रते खु द अर न्यास्त्रात्या विशेराश्चे ययास्त्रात्री यकेंद्रायादी यत्या विश्वा विश्वासी द्याह्म ज्ञानायाया क्राया अळव वेया अर्थे व त्याया त्याया प्रति द्या श्री प्रति हा से वर्नेश । वर्ष्ट्रवर्द्दरवर्धेर्चरगुवरवरके हेट्रवा । वर्षेवर्भुवयद्धर गहेत्रसासह्दावयान्य हैंग । गहेंद्र है तायदान्य नवदारीयायानसूत्रसा न्। कियार्ग्स्स्राक्तियायह्यार्द्वाह्म्हेरवेयाय। विनायम्यावयाद्धराद्ध्या मुयाविम् नरुषाय। विशेम् सुन सुन मुं सर्वे प्रायम प्रायम विश्वा न्यासी न्या हु म्या या रा मुला यळ द विया । क्रिंद त्यस र्वे पा रावे न्या ही । वर्ग्यात्रेश । वर्ष्ट्रवाद्यात्रात्रां वात्रवे विद्या । वर्षे वात्रवे विद्या । वर्षे वात्रवे विद्या । वर्षे वा न्युरामिकेन्यायह्नाम्यानरार्द्वेग वितुन्यरायार्थेग्यायनरानासूनः नत्त्र'न्ना । नामन्यः स्यानमेदे 'धे । ह्यन 'ठत् मी मामकेद्र । । प्रदे 'दर्ने । शुन्यान्स्याक्ष्याद्वाद्वाद्वात्या निर्मरश्चेष्यास्त्र श्चेष्यास्त्र श्चेष्यास्त्र । दर्यता ग्रीया । निया से निया है ग्रीयाया मिया सक्ष्य विया । क्षेत्र प्यया से या यवे न्या श्रे व र्युट से विदेश । विश्व न्य वर्शे न गुन व्य वर्षे से न व यर्गेत् भुन्य न् स्टामित्रेव या यह न वया नर हैं न हिंहे पळट न नर हैं

कुन्त्वाश्वास्य विश्व स्थान्य निष्य क्षेत्र विश्व क्षेत्र विष्य क्षेत्र विषय क्षेत

# श्रे'नकुर'ग्रोभेर'श्रेसभा

द्वी श्रुम्बर्धस्य मुद्दान्य स्वया प्रवास स्वया स्वया

गर्वेन श्चेत्र मार न न न र में प्रदा । अपिय श्वेर मार्थे र श्वेम प्रवित्य न प्रदा क्रॅंशर्र्भुट्यान्नृगृयाद्दा । दे व तुरासुर्ध्यायार्थेवाया । द्वीः धे स्वे तक्तुर वर्षिर नडराया । अर्के द राद्यार पदि वर्ष यो । वार्य र श्रुवार वार्ष र यायदी निवेशाया । निन्नानी यदें निर्मे सुना मुनासेया । यन निवेशान नुन हे वनार्च न्दा । नर्व कुषाणया भुन न्यर में न्दा । धुषा भुषा अदया ग्नु अरु न्दा । श्रेंग नद्ग कुष र्ये श्वेद प्रिवित न्दा के रा श्वेद प्रवित । न्यरःरा । श्रुःरा विश्वे विष्यायायिः र्री वा विष्ये विषयः । । नवी विश्वे वा से हि येग्रथं प्रत्रा । प्रार्थे हे त्रु वित्रे वित्र नरुराया । अर्केन्यन्ययायन्ति वनुषावी । वार्यम् स्रुव्ययाविदायावि नवेशया । नन्नानी पर्ने निर्मुन हुन स्था । नन्न से पा स्व रम् न्ता । याक्षेत्रः हे याक्षेत्रः वे स्वराज्यान्ता । शुः यत्त्रः वृ याः कृष्टं न्ता । गर्वेन श्रुव अव राश्चे भैवाय परा । या से श्रेन पार्विय परेन या । नड्नर्सं प्रमः भुद्रर्श्वेषा ये नद्दा । नद्दर्से रे हे वर्षे प्रमाद्दा । श्रेष नन्गःन्र्रमी विस्कुंग्रास्याया । ग्रायर नवे से नकुन्यिर नडस्या । सर्केन्यन्यन्यत्वे वर्षाक्ष्या । यासेन्स् भेष्यस्यान्यन्यत्वे स्ववे स्वया नन्गामी पर्ने न देव क्षुन हु न के ला वित्र सके वा कु या में कु या वित्र सके वा कु या वित्र सके व नगरः अर्केना विस्न भीरावार्षेर निरा । नन्न अर्केना सन् क्रिं में निरा नर्दन्यकेंगान्ने नर्दन्य मुम्में प्राप्त । मामकेंगान्धे भूरम्पर्रायदेन

८८। अि.अर्क्ट्यासिक्तार्थित्रः श्रीट्रिट्री विस्त्रित्रस्त्रे वास्त्रास्त्रः ८८। मियासक्तात्रात्रात्रीय राष्ट्रीय राष्ट्रीय विष्ट्रात्री विष्ट्रात्रीय विष्ट्रात्रीय विष्ट्रात्रीय नडराया । मर्केन्यन्यायायने यनुयाया । पार्यम् क्रीयरापार्यन्यायने निवेशाया निन्नानी वर्दे न देव श्रुव हुन सेया निस्ट नायश्र न्या थ्रूव श्रुवारान्दा । न्युदावित्रसार्थे माश्रुवारान्दा । कुः श्रे वर्नुन्नुश्रुवारा न्यायश्यानीतः हेरः श्रुवारान्दा । व्यवाः वार्षितः सुः वर्षतः श्रुवारान्दा । सेवाः न्दः श्रेदः न्दः अळव् अया श्रुम् । या बदः न्द्रः हेदः दुः श्रुवः यः श्रेवाया । श्रुवः यदे हे न कि न विस्तित्व कराया । अर्केन या न सम्मान विष्ति । वासेन भ्रेम्ययार्ग्टर्यादर्गनियाया । यद्यायी पर्देर्न्द्रम्य भ्राप्तीया । य नन्नान्त्रयाधित्रनार्भे न्ना । सुनन्नन्यार्ने यान्यार्भे न्ना । साधि खुः से नहरायाद्या विवायार्भेटाक्याकेराकेराकेरानिया । अर्वोदार्या नत्य द्वास्था ८८। । प्रियायदेवे यावे यद्या बस्य उत्तर्। । से सुद्या सुर्वे या सुद्रा । ब्रॅं ख़ुर्से क्रुव त्यः श्रें नाश्चा । सूरः श्रेन स्रें न सुन प्रस्थ र प्रा । सर्केन पा न्यायायदी प्रत्यायाँ । वार्यमा सुर्वे स्थायदी प्रत्ये । वार्वायो । पर्ने न ने ने ने ने निया । बेर नश्रुत्न श्रेष्ठ ना अने शत्रु न निरु न के निया । बेर नश्रुत्न श्रेष्ठ न निरु न विषेत्र न निरु न न निरु न न निरु न वेन्ग्यरः र्बेन् नु प्वर्ते निवेश्वे निक्किन्य केन्नि सेन्त्र सेन्त्र विश्वास्य स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति सेन्त्र स्वर्ति स्वरति র্ষুব'দ্'বের্ল্ল'ন'য়ৢ'নক্কুদ্'নইর্ম'য়নম'নাব্দুনম'মদম'ক্কুম'ঊ'নীম'য়ৼৢদ'দাইুনাম'র্মা।

### कुर-ह-नक्षेत्रकेंग

अश | भेर में अर्थे देवे से देव अप्या हे से माश्रा हु ए हु मही है कि माश्री की सिं सिं सु है है के प क्रिन्य प्रमान्य कर निवत्ता । क्रिया सहित क्षा स्थान मित्र सर्वे ना यशिषा । रिराय: मृ. शायय: पर्ची: यक्षेत्र: श्रुट: स्वीय: इस्य: ग्रीया । इत्य: पर्चेर: नन्गानी सुराहण्यरायान होता । यादानी सञ्चायमान वर्गा देवि न्स्राय देवा स् निरा । नगर सेंदे सेंग्राय क्रेन्य मार्से दान मार्थ विष्य । न्वःश्चेनःमशुर्वाञ्चेनःवःधी । इत्यःवर्द्धेनःवन्याःमीः द्वनःहः धनःवः वञ्चेन। । सृगाः सूरा तर्रे र नवे सुर ह प्यर पान सुर । । सेर सूर र र नवे सुर ह प्यर यानभ्रेत्। विश्वनाः भ्रमः भ्रेमः निरानितः सम्प्रानितः स्थानभ्रेत्। विष्टः स्थमः भ्रेमः निरानितः ह्मरम्परयानभ्रेत्। । श्रुःर्केन्यरानस्यानसेन्यरादेः ५५ श्रितः विवाया विटःहेदे: ५२.वेंबा शेट हेर वश्चेत्यारा धेया विवयः भवतः क्रूरम् क्रुरमें के से वाले विश्व के वि स्वाः स्रमः वर्षे मः वर्षे सुमः हा प्रमः वा वर्षे न्या । स्रोमः स्मान्य वर्षे सुमः सम्वरे सुमः हा प्रमः यानक्केन् । वर्षुनाःक्ष्रमःक्षेमानवे क्ष्ममः सम्यानक्केन् । विष्टाःक्ष्मः क्षेमानवे क्रूटःहः धरायात्रभेत्। क्रिटःहः धरायात्रभेतः प्रयो वहेवः वरायमें पर्वा श्रें र प्या श्रुपिट्ट र सेवाया । वे मेर प्या र पर्वे पर्वे परे देर स्तः न्याः भ्रेशः भूचा । ग्रीयः तर्शः श्रमः तर्ः तर्ः हुः ।

क्ष्मः न्याः भ्राः भूचा । ग्रीयः तर्शः श्रमः श्रमः हुं वायः श्रमः श्रमः श्रमः विद्याः श्रमः श्रमः श्रमः । विद्याः विद्याः श्रमः विद्याः विद्याः श्रमः विद्याः श्रमः विद्याः विद्यः विद्याः विद्याः विद्याः विद

वेशमायदे नशे रूट देव में रहे व्यक्ति नवट द्वा मान्य स्वर है शामी है है द्वा मान हमें दे विषा स्वर

নাধ্যমে মার্ট্রা ।

#### र्श्वेद के वा उद र श्रेंद द्या वी रेंद्य श्री

७७। |इस'न्गर'स्वा'नशस'त्तु'नते'न्त्रीय'विर्याया । स्वा' नस्यास्त्रान्याकें सार्वेदार्थे । विस्यस्य विषयानियः स्टानेदार्स्त्र शे'सर्ह्य |र्रे'सर्ह्य-पर्मी नर्गेद्र'म्य पर्मे नर्मे । द्रमे नर्भान्य न्दःस्वितःस्रुसःवर्गे निरे स्विष्ण । भ्रुः विदःभ्रुः नरःन्यः वर्गे रःहेनः र्वेनः उटा विवासकेवानिक्राविवर्षम्यात्रे वर्षाय्या हे या व ब्राह्मे विश्वराव्याय वनः सेंदिः श्रूदः नुः त्यु रः नरः न्वेग । यदि रः नदेः श्रुवः सर्वेदः श्रेदः ययः देयः वर्चरक्षे। विश्वरावि इत्यावश्चराविस्र म्यान्याविस्र विस्र न्यान्याविस् श्र्वार्यायान्वन् श्रुवा श्रुवा स्वाया । वस्रुवाया विश्वाया श्रुवाया स्वाया । ध्रेत्रं भेवा । मरानेत्राध्यायमाने मान्यावन नेत्राया । यह्वायि स्वयं केत् कुष श्रम जुर कुन सेसम। । नश्चेत ने धित जुग नशु निवेद कुसमः येव.जा । नर्झ्व.तव्यवाश.अक्ट्वा. इस. सर. श्रुट. नर. र्ज्या । वाशट. केव. र्हें हे ते त्य अ श्री तह ना क्षें के। | इस न न न न न न न न क्षेत्र क् हिरा | प्रेर्ट्स्यायुनः इप्ताप्त्रारक्षियायेयायात्र सुरा हो । प्रश्चेत्र पेशायायाया क्यापर्चेरास्त्रम्धेवार्वेग हिंहेयेख्यायाम्बदार्गम्बूवायायया । श्रेटा गदिः अरेगः र्से व्येतः सुनः र्से या है। । श्रुः रेंद् न श्रुः र द्वा यदे स्यादर्से र यश । विःश्चेरित्रत्वः वृदः वह्याः भुः र्वेनः विवा । यर्देरः वः नश्चवः दरः

नम्भन तहेन विनयः नहन छिटा । ध्युतः विनयः निनयः विनयः विषयः विषयः

श्चिम् श्चिम् स्वास्त्र स